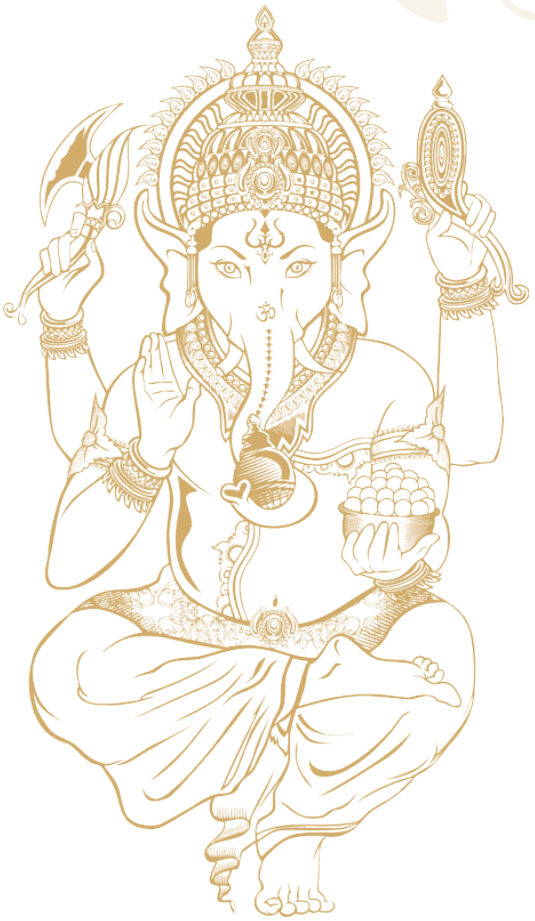

28 May 1964

12:32 AM

Nagaur

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 121028801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**27-28/05/1964**
दिन	बुध-गुरुवार
जन्म समय	**00:32:00 घंटे**
इष्ट	47:04:45 घटी
स्थान	**Nagaur**
राज्य	Rajasthan
देश	India

अक्षांश	27:12:00 उत्तर
रेखांश	73:44:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:35:04 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	23:56:56 घंटे
वेलान्तर	00:02:57 घंटे
साम्पातिक काल	16:18:23 घंटे
सूर्योदय	05:42:05 घंटे
सूर्यास्त	19:22:35 घंटे
दिनमान	13:40:29 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	ग्रीष्म
सूर्य के अंश	13:08:09 वृष
लग्न के अंश	02:08:33 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कुम्भ - शनि
राशि-स्वामी	**वृश्चिक - मंगल**
नक्षत्र-चरण	**ज्येष्ठा - 4**
नक्षत्र स्वामी	बुध
योग	साध्य
करण	तैतिल
गण	राक्षस
योनि	मृग
नाड़ी	आद्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	मृग
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	यू-युवराज
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मिथुन

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1886	ज्येष्ठ	7
पंजाबी	संवत : 2021	ज्येष्ठ	15
बंगाली	सन् : 1371	ज्येष्ठ	14
तमिल	संवत : 2021	वैकासी	15
केरल	कोल्लम : 1139	इदवम	15
नेपाली	संवत : 2021	ज्येष्ठ	15
चैत्रादि	संवत : 2021	ज्येष्ठ	कृष्ण 2
कार्तिकादि	संवत : 2021	वैशाख	कृष्ण 2

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 1
तिथि समाप्ति काल _____: 17:30:50
जन्म तिथि _____: 2
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: ज्येष्ठा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 27:58:56 घंटे
जन्म योग _____: ज्येष्ठा
सूर्योदय कालीन योग ____: सिद्ध
योग समाप्ति काल _____: 21:49:19 घंटे
जन्म योग _____: साध्य
सूर्योदय कालीन करण ____: कौलव
करण समाप्ति काल _____: 17:30:50 घंटे
जन्म करण _____: तैतिल
भयात _____: 59:09:57
भभोग _____: 67:47:16
भोग्य दशा काल _____: बुध 2 वर्ष 1 मा 28 दि

घात चक्र

मास _____: आश्विन
तिथि _____: 1-6-11
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: रेवती
योग _____: व्यतिपात
करण _____: गर
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: वृश्चिक
सूर्य _____: मकर
चन्द्र _____: वृष
मंगल _____: कुम्भ
बुध _____: वृश्चिक
गुरु _____: मीन
शुक्र _____: मेष
शनि _____: कर्क
राहु _____: वृष

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

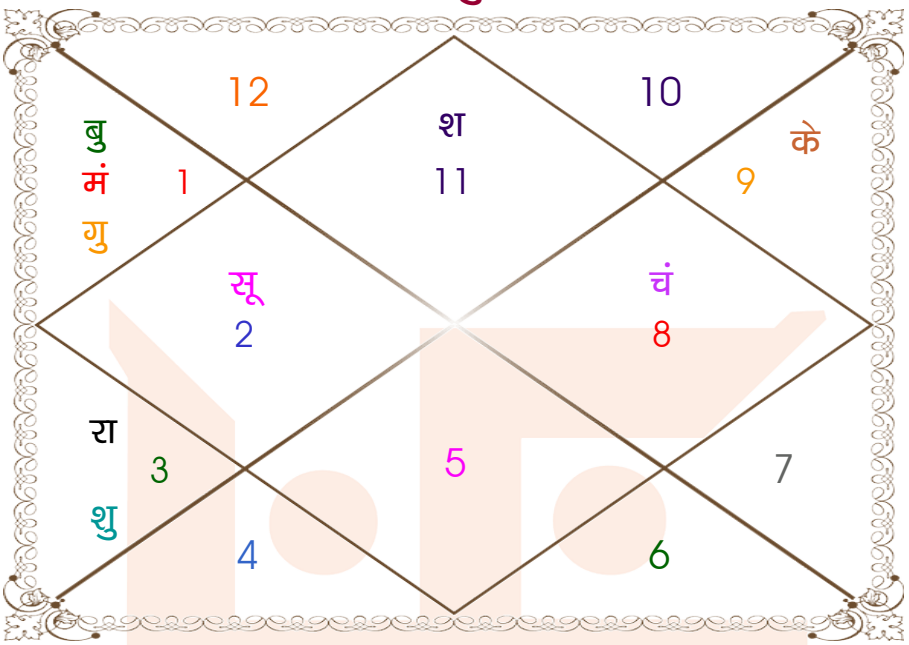

चन्द्र कुंडली

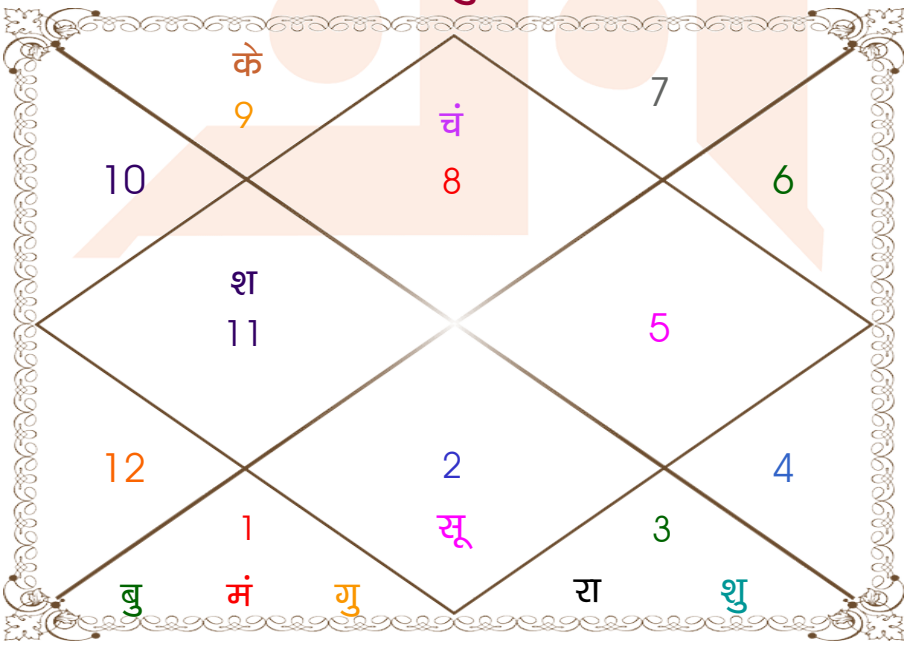

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

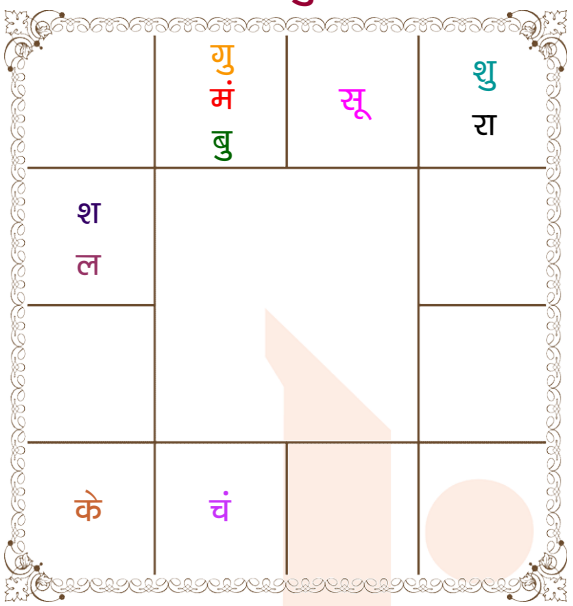

लग्न कुंडली

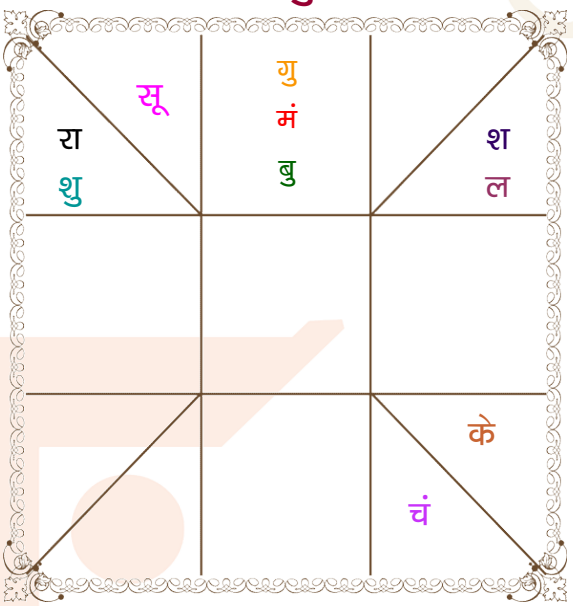

विंशोत्तरी
बुध 2वर्ष 1मा 28दि

बुध

28/05/1964

26/07/2069

बुध	26/07/1966
केतु	26/07/1973
शुक्र	26/07/1993
सूर्य	26/07/1999
चन्द्र	26/07/2009
मंगल	25/07/2016
राहु	26/07/2034
गुरु	26/07/2050
शनि	26/07/2069

योगिनी
भद्रिका 0वर्ष 7मा 19दि

धान्या

15/01/2025

15/01/2028

धान्या	16/04/2025
भ्रामरी	16/08/2025
भद्रिका	15/01/2026
उल्का	17/07/2026
सिद्धा	15/02/2027
संकटा	16/10/2027
मंगला	16/11/2027
पिंगला	15/01/2028

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	02:08:33	461:33:04	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	केतु	---
सूर्य			वृष	13:08:09	00:57:33	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	राहु	शत्रु राशि
चंद्र			वृश्चि	28:18:18	11:47:42	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	नीच राशि
मंगल			मेष	21:38:51	00:44:03	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	गुरु	स्वराशि
बुध			मेष	18:25:30	01:06:43	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	राहु	सम राशि
गुरु			मेष	17:24:30	00:13:37	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	मंगल	मित्र राशि
शुक्र			मिथु	13:27:59	00:03:48	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	बुध	मित्र राशि
शनि			कुंभ	11:24:24	00:01:48	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	मूलत्रिकोण
राहु	व		मिथु	08:45:05	00:01:02	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	गुरु	उच्च राशि
केतु	व		धनु	08:45:05	00:01:02	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	उच्च राशि
हर्ष			सिंह	12:39:06	00:00:46	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	---
नेप	व		तुला	22:33:52	00:01:30	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	---
प्लूटो			सिंह	18:14:29	00:00:09	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	राहु	---
दशम भाव			वृश्चि	13:05:56	--	अनुराधा	--	17	मंगल	शनि	राहु	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:21:17

लग्न-चलित

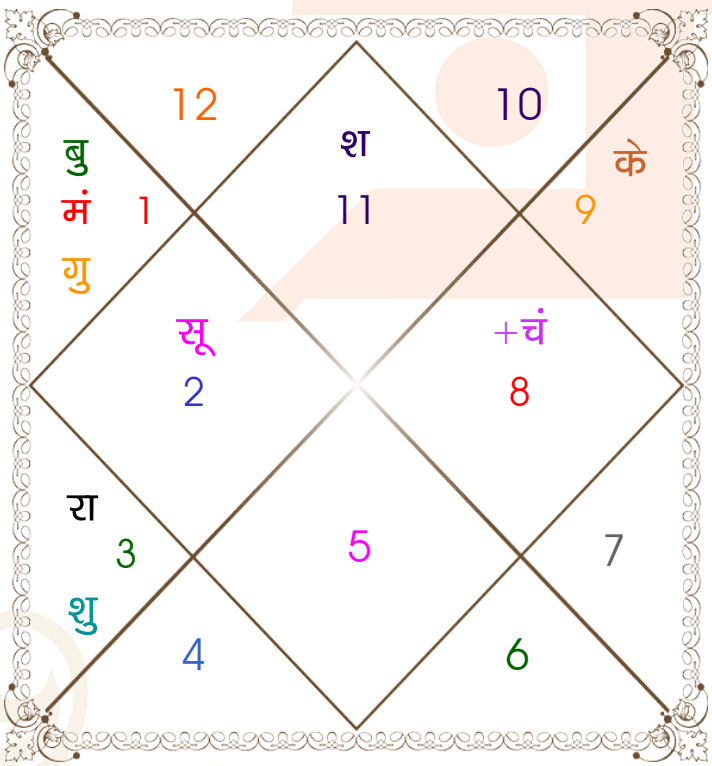

चन्द्र कुंडली

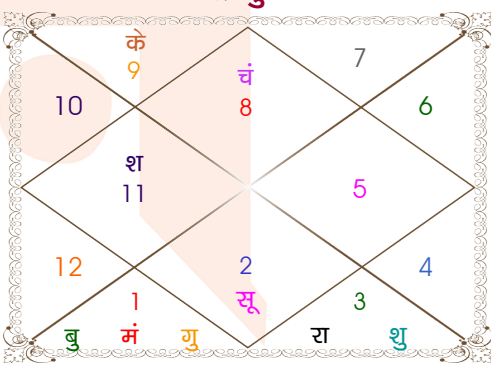

नवमांश कुंडली

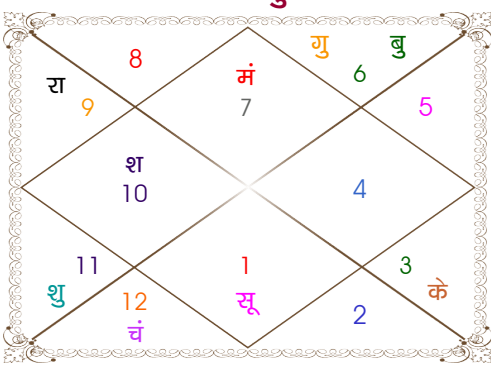

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मकर	18:58:06	कुम्भ	02:08:33
2	कुम्भ	18:58:06	मीन	05:47:40
3	मीन	22:37:14	मेष	09:26:48
4	मेष	26:16:22	वृष	13:05:56
5	वृष	26:16:22	मिथुन	09:26:48
6	मिथुन	22:37:14	कर्क	05:47:40
7	कर्क	18:58:06	सिंह	02:08:33
8	सिंह	18:58:06	कन्या	05:47:40
9	कन्या	22:37:14	तुला	09:26:48
10	तुला	26:16:22	वृश्चिक	13:05:56
11	वृश्चिक	26:16:22	धनु	09:26:48
12	धनु	22:37:14	मकर	05:47:40

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ	02:08:33
2	मीन	12:31:15
3	मेष	16:13:13
4	वृष	13:05:56
5	मिथुन	06:55:12
6	कर्क	01:39:15
7	सिंह	02:08:33
8	कन्या	12:31:15
9	तुला	16:13:13
10	वृश्चिक	13:05:56
11	धनु	06:55:12
12	मकर	01:39:15

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा

चलित कुंडली

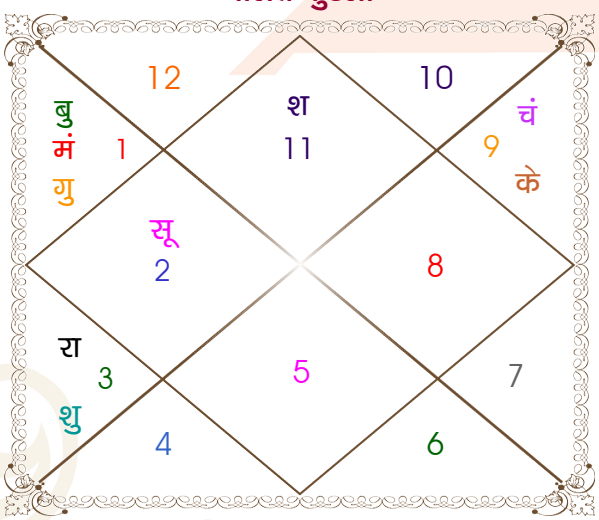

भाव कुंडली

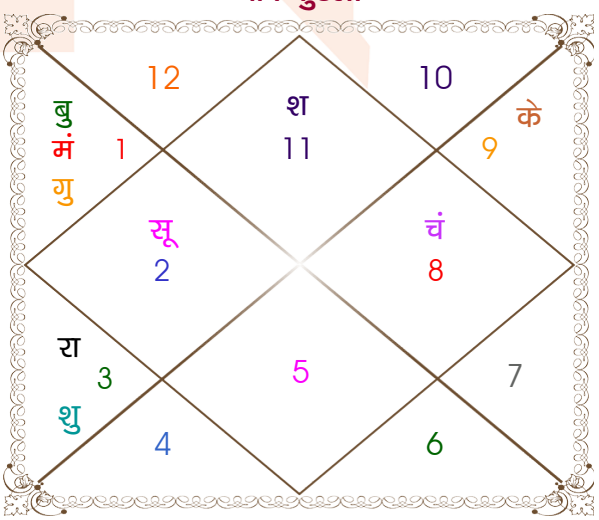

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	ज्ञाति	पितृ	युवा	खल	आगम	8.16	76 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	बाल	भीत	प्रकाश	0.63	67 %
मंगल	अमात्य	भ्रातृ	वृद्ध	स्वस्थ	नृत्यलिप्सा	4.01	35 %
बुध	भ्रातृ	ज्ञाति	वृद्ध	शक्त	प्रकाश	0.46	45 %
गुरु	मातृ	धन	युवा	मुदित	प्रकाश	3.98	47 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	युवा	मुदित	प्रकाश	6.14	71 %
शनि	कलत्र	आयु	कुमार	स्वस्थ	प्रकाश	3.81	47 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	दीप्त	प्रकाश	0.00	5 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	दीप्त	शयन	0.00	5 %
कुल						27.20	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा

चलित कुंडली

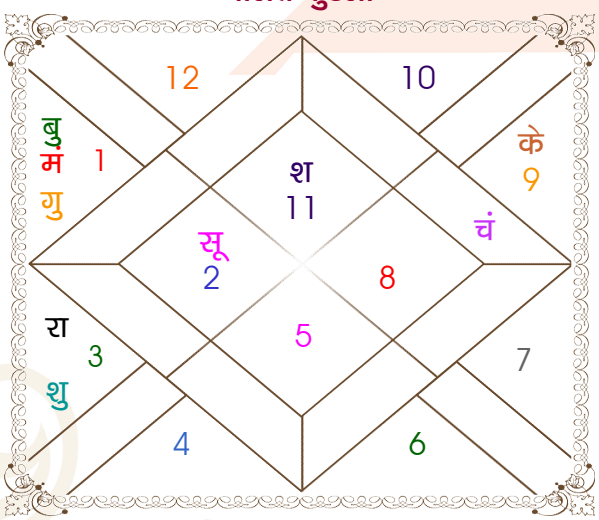

लग्न-चलित

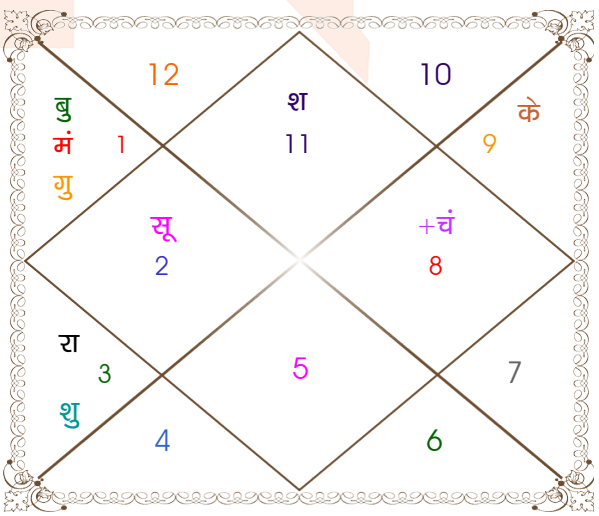

सुदर्शन चक्र

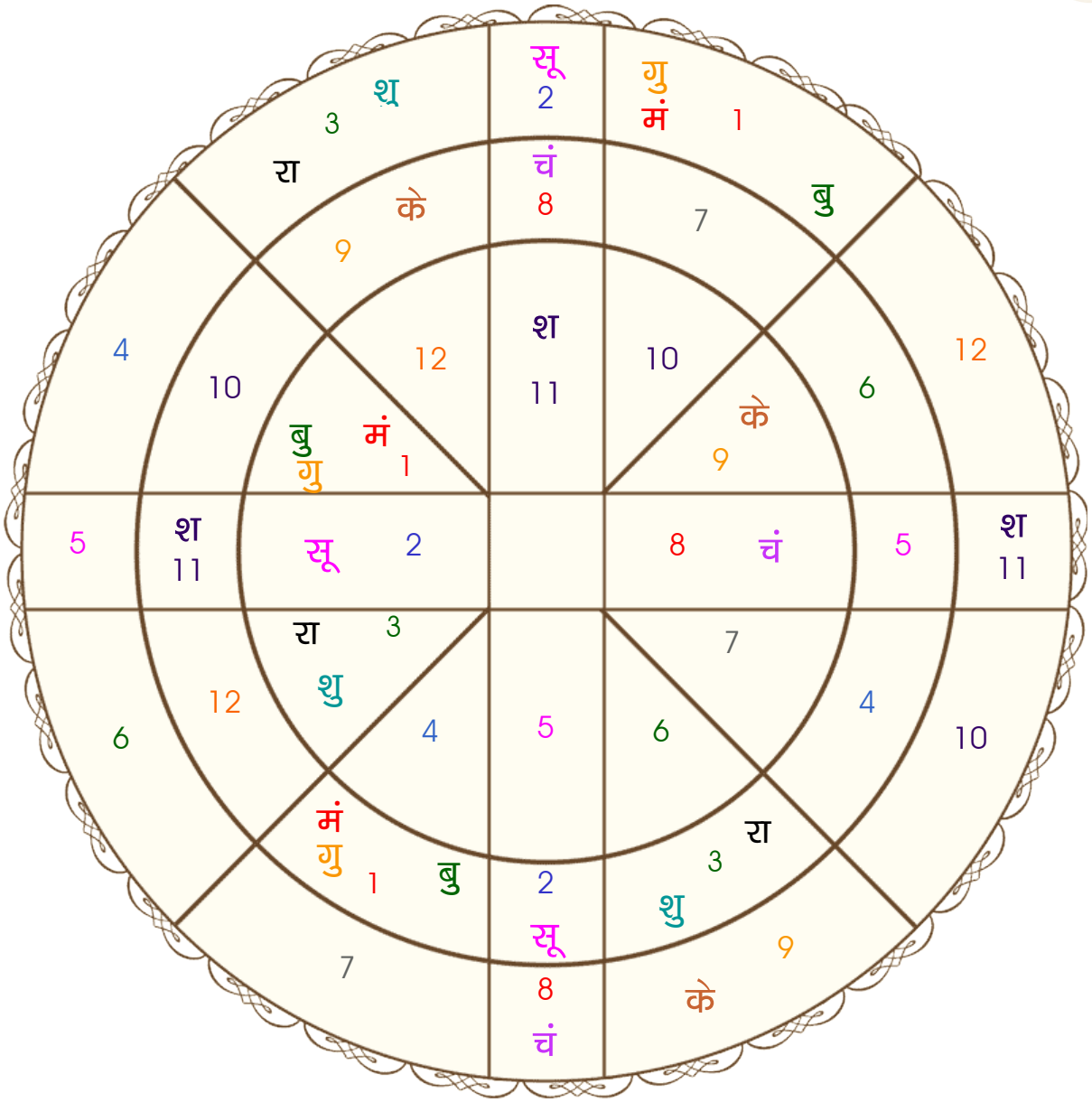

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : बुध 2 वर्ष 0 मास 13 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		वृष	13:13:56	शुक्र	चंद्र	राहु	शुक्र
चंद्र		वृश्चि	28:24:05	मंगल	बुध	शनि	बुध
मंगल		मेष	21:44:37	मंगल	शुक्र	गुरु	राहु
बुध		मेष	18:31:17	मंगल	शुक्र	राहु	गुरु
गुरु		मेष	17:30:17	मंगल	शुक्र	मंगल	गुरु
शुक्र		मिथु	13:33:46	बुध	राहु	बुध	मंगल
शनि		कुंभ	11:30:11	शनि	राहु	शनि	शुक्र
राहु	व	मिथु	08:50:52	बुध	राहु	गुरु	गुरु
केतु	व	धनु	08:50:52	गुरु	केतु	गुरु	चंद्र
हर्ष		सिंह	12:44:53	सूर्य	केतु	बुध	राहु
नेप	व	तुला	22:39:39	शुक्र	गुरु	शनि	शुक्र
प्लूटो		सिंह	18:20:16	सूर्य	शुक्र	राहु	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कुंभ	02:14:20	शनि	मंगल	केतु	राहु
2	मीन	12:37:01	गुरु	शनि	मंगल	केतु
3	मेष	16:19:00	मंगल	शुक्र	चंद्र	मंगल
4	वृष	13:11:43	शुक्र	चंद्र	राहु	शुक्र
5	मिथु	07:00:59	बुध	राहु	राहु	गुरु
6	कर्क	01:45:02	चंद्र	गुरु	राहु	गुरु
7	सिंह	02:14:20	सूर्य	केतु	शुक्र	शनि
8	कन्या	12:37:01	बुध	चंद्र	राहु	शनि
9	तुला	16:19:00	शुक्र	राहु	शुक्र	राहु
10	वृश्चि	13:11:43	मंगल	शनि	राहु	गुरु
11	धनु	07:00:59	गुरु	केतु	राहु	शुक्र
12	मक	01:45:02	शनि	सूर्य	गुरु	बुध

के.पी. अयनांश : 23:15:30

फॉरच्युना : सिंह 17:24:29

लग्न कुंडली

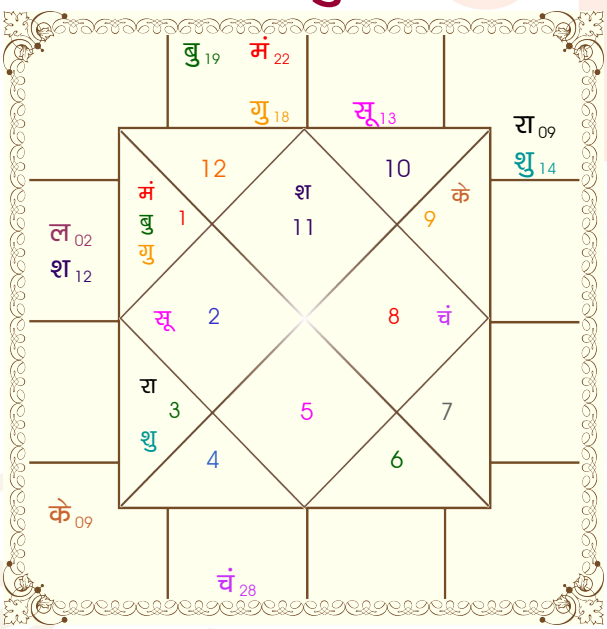

भाव कुंडली

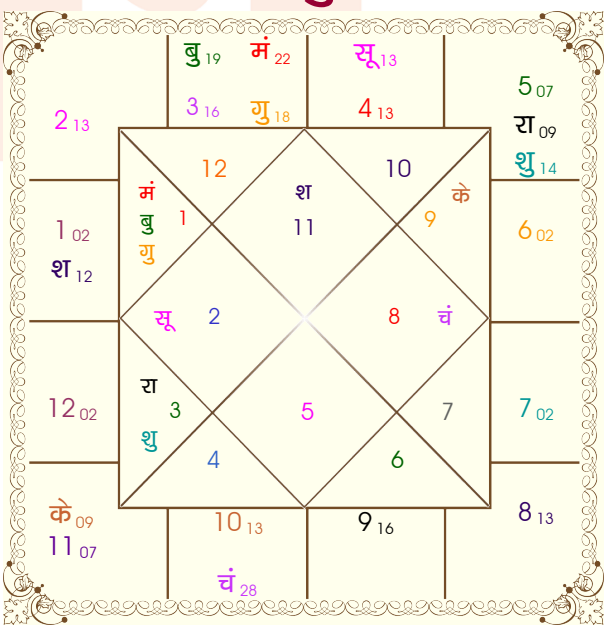

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शनि,
2	गुरु-
3	चंद्र, मंगल, बुध, गुरु,
4	सूर्य, मंगल- बुध- गुरु- शुक्र-
5	चंद्र- मंगल, बुध+ गुरु, शुक्र+ शनि, राहु+
6	सूर्य- चंद्र-
7	सूर्य-
8	चंद्र- बुध-
9	मंगल- बुध- गुरु- शुक्र-
10	सूर्य, चंद्र, मंगल-
11	गुरु- केतु+
12	शनि-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4, 6- 7- 10,
चंद्र	3, 5- 6- 8- 10,
मंगल	3, 4- 5, 9- 10-
बुध	3, 4- 5+ 8- 9-
गुरु	2- 3, 4- 5, 9- 11-
शुक्र	4- 5+ 9-
शनि	1, 5, 12-
राहु	5+
केतु	11+

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शनि
राशि नक्षत्र स्वामी	बुध
राशि स्वामी	मंगल
वार स्वामी	गुरु
लग्न अन्तर स्वामी	केतु
राशि अन्तर स्वामी	शनि

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	श	--	श
2	--	--	--	गु
3	चं	मं बु गु	--	मं
4	--	सू	मं बु गु	शु
5	मं बु गु शु श रा	शु रा	चं	बु
6	--	--	सू	चं
7	--	--	--	सू
8	--	--	चं	बु
9	--	--	मं बु गु	शु
10	सू	चं	--	मं
11	के	के	--	गु
12	--	--	--	श

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	7	12	वृष	4
चंद्र	6	4,8	वृश्चिक	10
मंगल	3,10	1	मेष	3
बुध	5,8	---	मेष	3
गुरु	2,11	6	मेष	3
शुक्र	4,9	3	मिथुन	5
शनि	1,12	2,10	कुम्भ	1
राहु	---	5,9	मिथुन	5
केतु	---	7,11	धनु	11

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	6	4,8	10	---	5,9	5
चंद्र	5,8	---	3	1,12	2,10	1
मंगल	4,9	3	5	2,11	6	3
बुध	4,9	3	5	---	5,9	5
गुरु	4,9	3	5	3,10	1	3
शुक्र	---	5,9	5	5,8	---	3
शनि	---	5,9	5	1,12	2,10	1
राहु	---	5,9	5	2,11	6	3
केतु	---	7,11	11	2,11	6	3

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य 43.14	चंद्र 238.31	मंगल 21.65	बुध 18.42	गुरु 17.41	शुक्र 73.47	शनि 311.41	राहु 68.75	केतु 248.75	हर्ष 132.65	नेप 202.56	प्लूटो 138.24
सूर्य	--	--	--	--	--	--	--	--	--	चतु	--	चतु
43.14	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.98	0.00	0.70
चंद्र	--	--	--	--	--	--	--	सप्त	युति	--	--	--
238.31	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.59	4.59	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	8वां	--	युति	युति	--	--	--	--	--	सप्त	पंच
21.65	0.00	7.67	0.00	9.44	9.03	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.95	1.88
बुध	--	--	युति	--	युति	तृती	--	--	--	पंच	सप्त	पंच
18.42	0.00	0.00	9.44	0.00	9.94	0.81	0.00	0.00	0.00	0.18	9.08	3.00
गुरु	--	--	युति	युति	--	तृती	--	--	9वां	5वां	सप्त	5वां
17.41	0.00	0.00	9.03	9.94	0.00	1.54	0.00	0.00	6.16	8.78	8.58	9.96
शुक्र	--	--	--	--	--	--	--	युति	सप्त	तृती	--	तृती
73.47	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.81	8.81	2.93	0.00	0.95
शनि	चतु	--	3रा	3रा	3रा	पंच	--	पंच	--	सप्त	--	सप्त
311.41	2.70	0.00	4.78	7.42	8.09	2.57	0.00	2.30	0.00	9.92	0.00	7.55
राहु	--	सप्त	--	--	--	युति	--	--	सप्त	तृती	--	--
68.75	0.00	4.59	0.00	0.00	0.00	8.81	0.00	0.00	10.00	1.57	0.00	0.00
केतु	--	युति	--	--	--	सप्त	तृती	सप्त	--	--	--	--
248.75	0.00	4.59	0.00	0.00	0.00	8.81	2.30	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	पंच	--	--	युति
132.65	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.92	0.00	1.57	0.00	0.00	8.34
नेप	--	--	सप्त	सप्त	सप्त	--	--	--	--	--	--	--
202.56	0.00	0.00	9.95	9.08	8.58	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	युति	तृती	--
138.24	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.55	0.00	0.00	8.34	1.28	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	302.14	335.79	9.45	43.10	69.45	95.79	122.14	155.79	189.45	223.10	249.45	275.79
सूर्य	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--
43.14	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00
चंद्र	तृती	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
238.31	1.61	0.00	0.00	0.00	3.93	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.93	0.00
मंगल	--	--	--	--	--	--	4था	अष्टां	सप्त	8वां	--	--
21.65	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.54	0.23	2.89	6.25	0.00	0.00
बुध	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
18.42	0.00	0.00	5.90	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.90	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	9वां	--
17.41	0.00	0.00	6.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.72	0.00	6.72	0.00
शुक्र	--	--	--	--	युति	--	--	--	पंच	षष्ठ	सप्त	--
73.47	0.00	0.00	0.00	0.00	9.13	0.00	0.00	0.00	1.49	0.84	9.13	0.00
शनि	युति	--	3रा	चतु	पंच	--	--	--	--	10वा	--	--
311.41	5.65	0.00	9.79	2.71	2.61	0.00	0.00	0.00	0.00	9.84	0.00	0.00
राहु	--	--	--	--	युति	--	--	--	पंच	--	सप्त	--
68.75	0.00	0.00	0.00	0.00	9.97	0.00	0.00	0.00	2.95	0.00	9.97	0.00
केतु	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
248.75	0.00	2.15	2.95	0.00	9.97	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.97	0.00
हर्ष	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	पंच	--
132.65	4.53	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.53	0.00	2.00	0.00	2.00	0.00
नेप	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--
202.56	0.00	0.00	1.96	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.96	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	--	--	--	--	--	चतु	--	--
138.24	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.67	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	302.14	342.52	16.22	43.10	66.92	91.65	122.14	162.52	196.22	223.10	246.92	271.65
सूर्य	--	--	--	युति	--	--	--	पंच	--	सप्त	--	--
43.14	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	2.96	0.00	10.00	0.00	0.00
चंद्र	तृती	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
238.31	1.61	0.00	0.00	0.00	6.20	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.20	0.00
मंगल	--	--	--	--	अष्ट	--	4था	--	सप्त	8वां	--	--
21.65	0.00	0.00	0.00	0.00	0.91	0.00	4.54	0.00	8.43	6.25	0.00	0.00
बुध	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
18.42	0.00	0.00	9.73	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.73	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	9वां	9वां
17.41	0.00	0.00	9.92	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.92	0.00	4.55	0.79
शुक्र	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--
73.47	0.00	0.00	0.00	0.00	7.74	0.00	0.00	2.91	2.25	0.84	7.74	0.00
शनि	युति	--	3रा	चतु	पंच	--	--	--	--	10वा	--	--
311.41	5.65	0.00	8.76	2.71	1.16	0.00	0.00	0.00	0.00	9.84	0.00	0.00
राहु	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--
68.75	0.00	0.00	0.00	0.00	9.82	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.82	0.00
केतु	--	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
248.75	0.00	1.65	0.00	0.00	9.82	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.82	0.00
हर्ष	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	पंच	--
132.65	4.53	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.53	0.00	1.78	0.00	0.21	0.00
नेप	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--
202.56	0.00	0.00	7.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.87	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	--	--	--	--	तृती	चतु	--	--
138.24	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.59	0.67	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

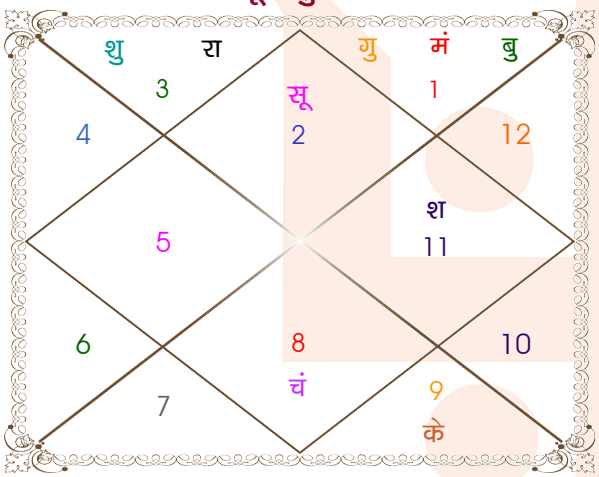

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

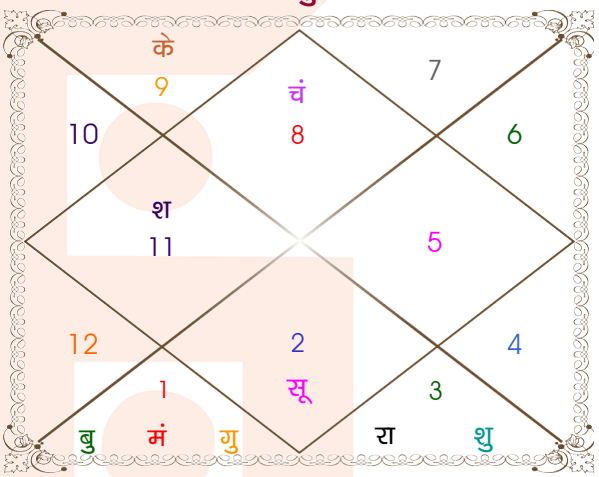

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

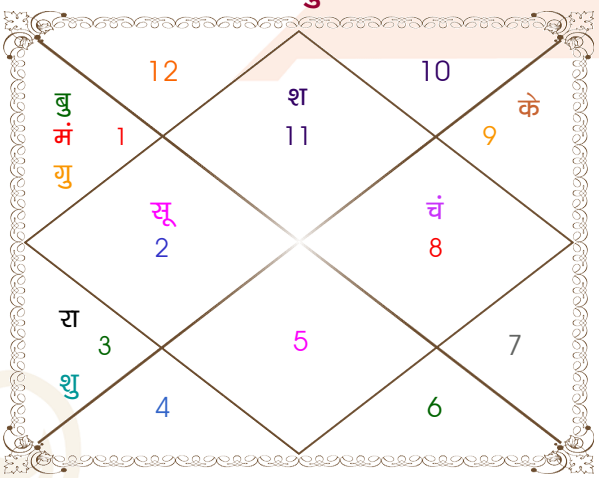

देह विचारः

होरा कुंडली

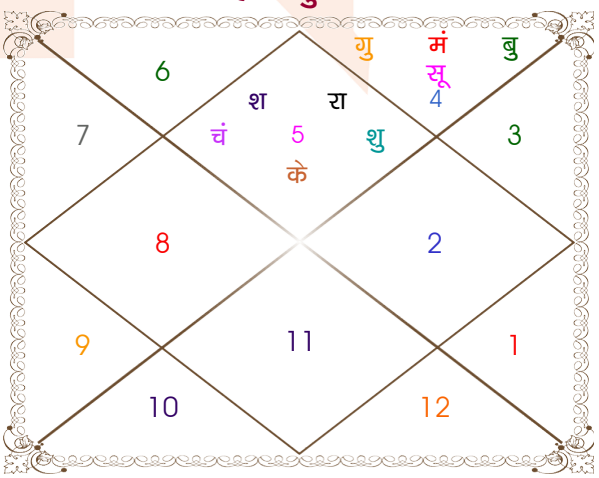

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

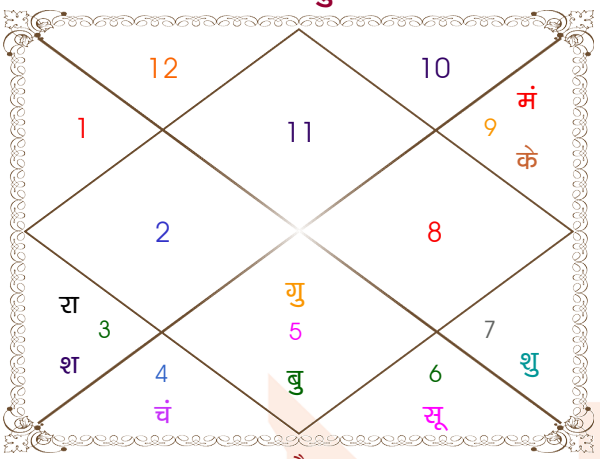

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

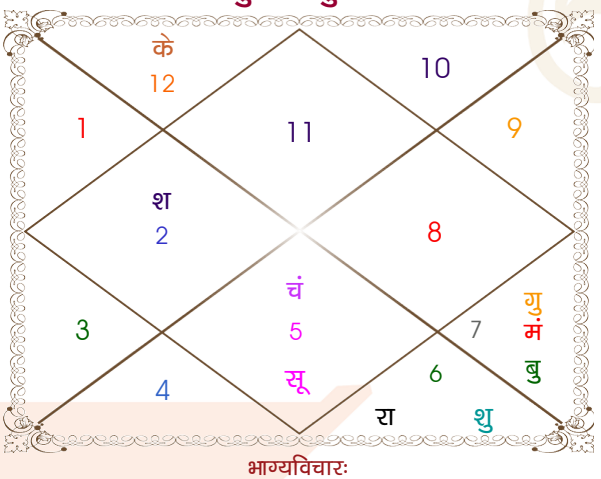

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

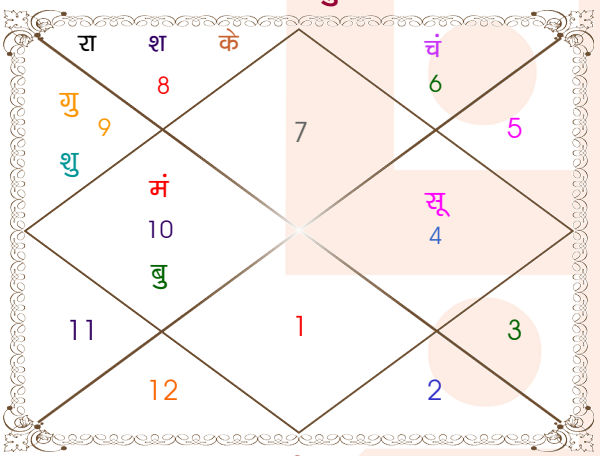

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

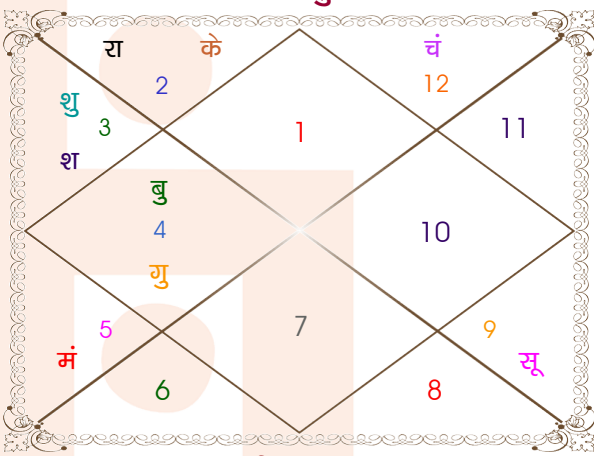

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

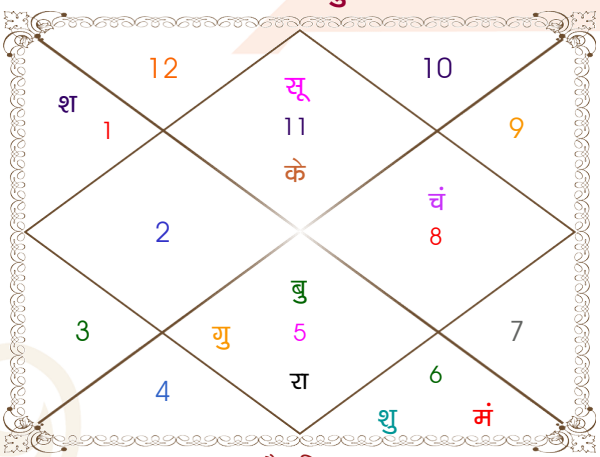

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

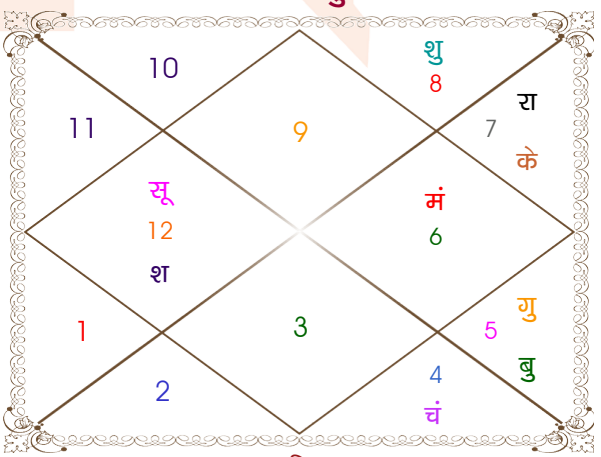

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

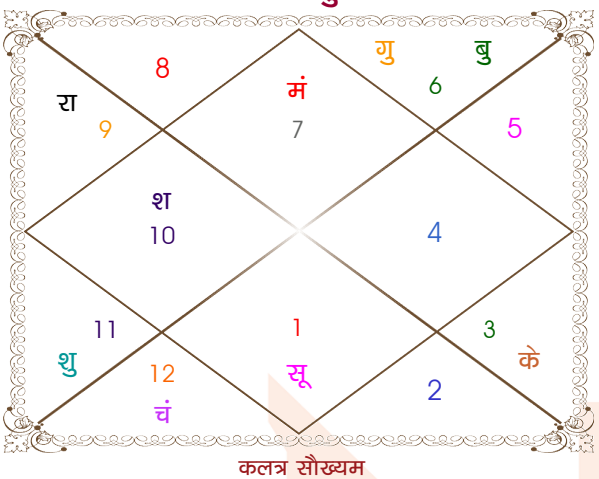

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

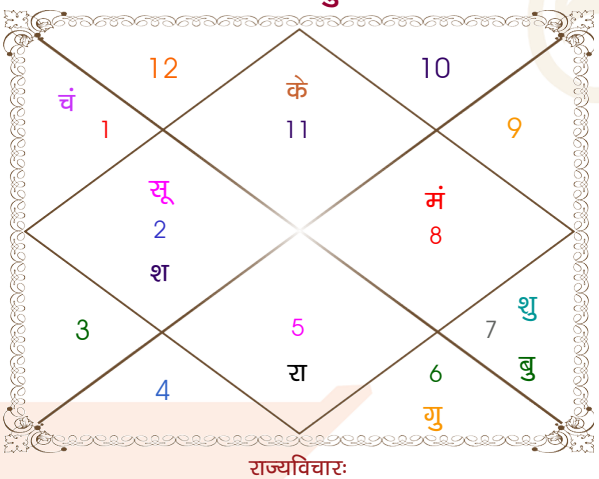

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

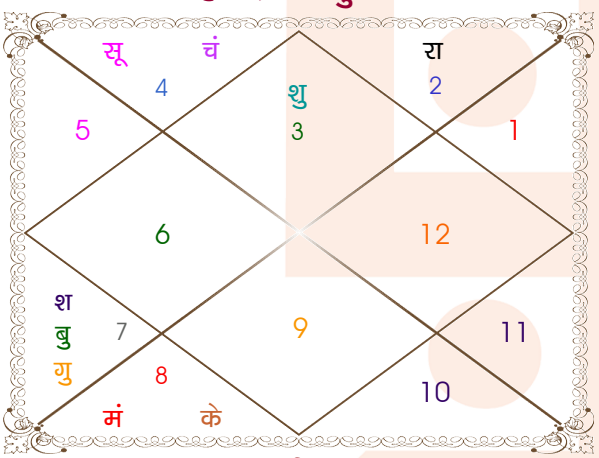

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

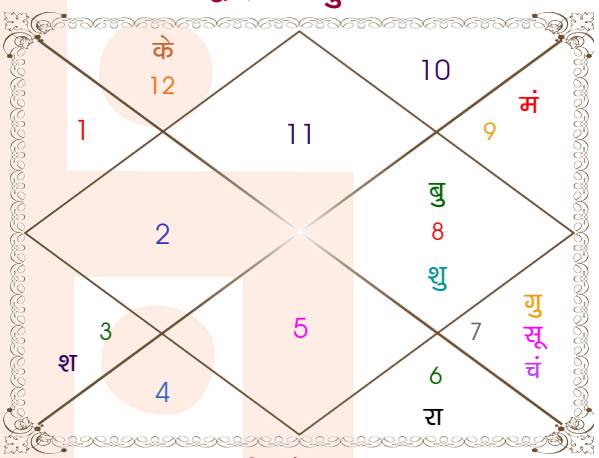

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

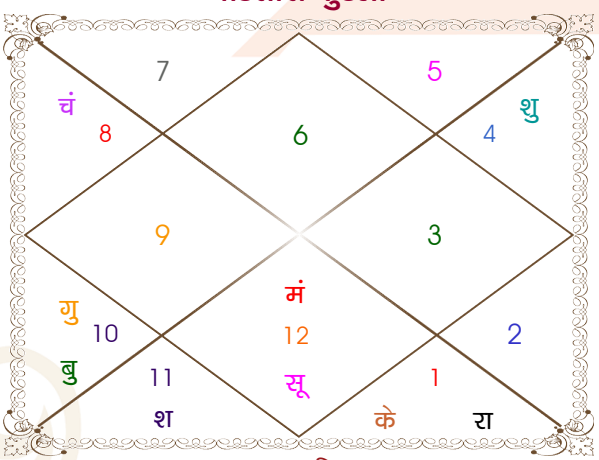

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

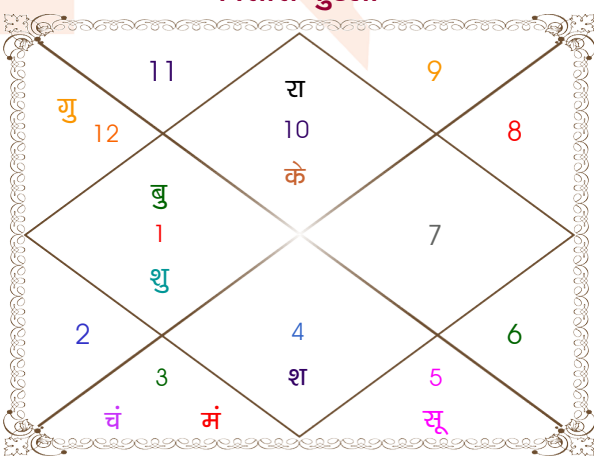

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

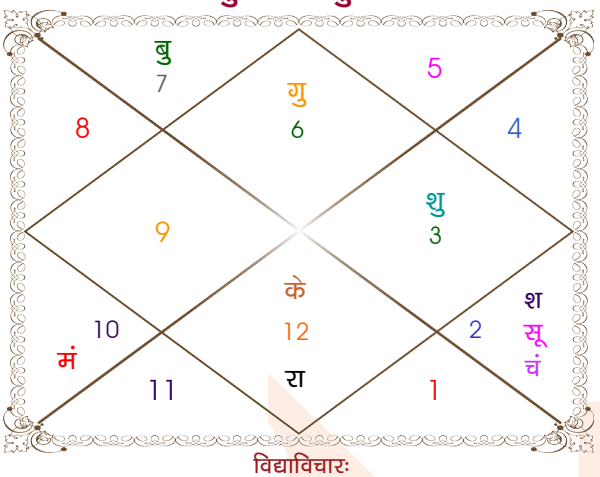

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

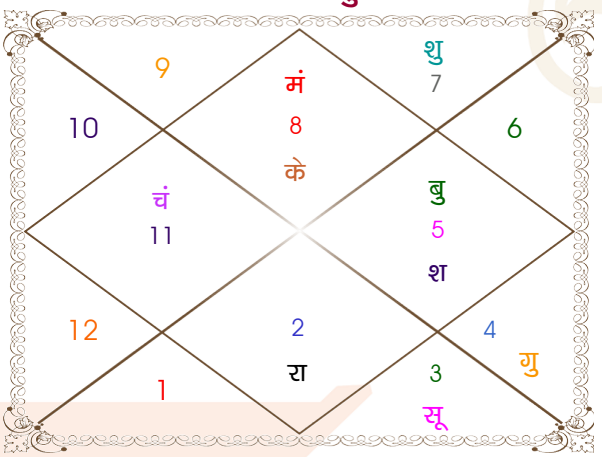

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

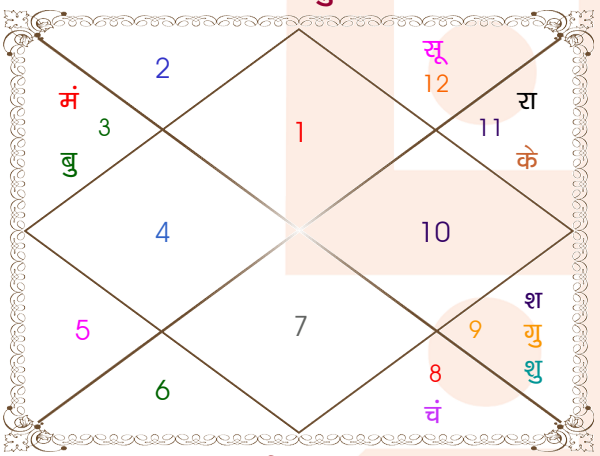

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

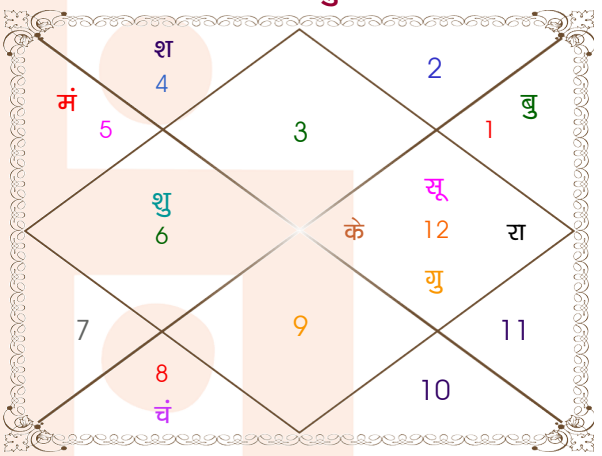

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

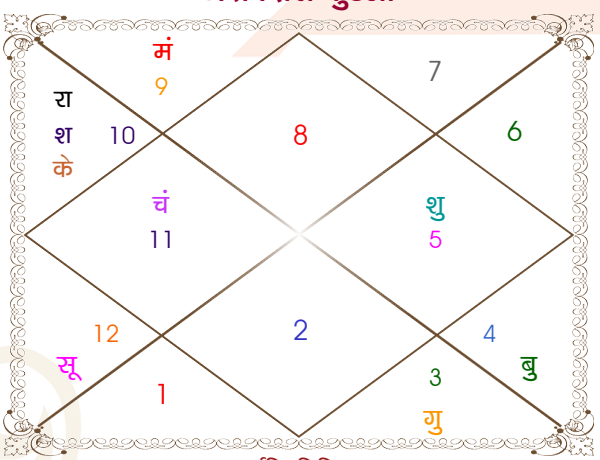

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

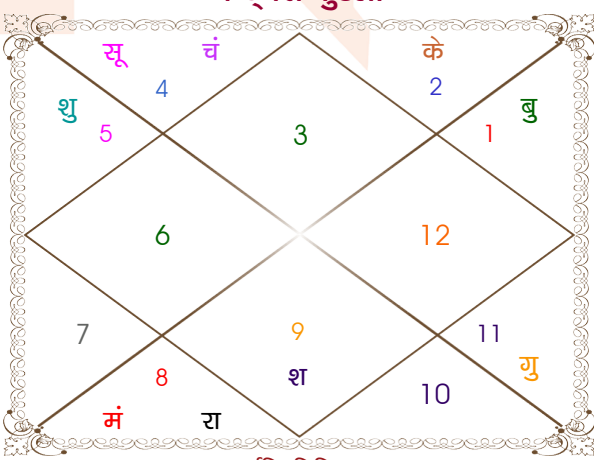

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कुंभ	वृष	वृश्चि	मेष	मेष	मेष	मिथु	कुंभ	मिथु	धनु
होरा	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	कुंभ	कन्या	कर्क	धनु	सिंह	सिंह	तुला	मिथु	मिथु	धनु
चतुर्थांश	कुंभ	सिंह	सिंह	तुला	तुला	तुला	कन्या	वृष	कन्या	मीन
सप्तमांश	कुंभ	कुंभ	वृश्चि	कन्या	सिंह	सिंह	कन्या	मेष	सिंह	कुंभ
नवमांश	तुला	मेष	मीन	तुला	कन्या	कन्या	कुंभ	मक	धनु	मिथु
दशमांश	कुंभ	वृष	मेष	वृश्चि	तुला	कन्या	तुला	वृष	सिंह	कुंभ
द्वादशांश	कुंभ	तुला	तुला	धनु	वृश्चि	तुला	वृश्चि	मिथु	कन्या	मीन
षोडशांश	कन्या	मीन	वृश्चि	मीन	मक	मक	कर्क	कुंभ	मेष	मेष
विंशांश	मक	सिंह	मिथु	मिथु	मेष	मीन	मेष	कर्क	मक	मक
चतुर्विंशांश	कन्या	वृष	वृष	मक	तुला	कन्या	मिथु	वृष	मीन	मीन
सप्तविंशांश	वृश्चि	मिथु	कुंभ	वृश्चि	सिंह	कर्क	तुला	सिंह	वृष	वृश्चि
त्रिंशांश	मेष	मीन	वृश्चि	मिथु	मिथु	धनु	धनु	धनु	कुंभ	कुंभ
खवेदांश	मिथु	मीन	वृश्चि	सिंह	मेष	मीन	कन्या	कर्क	मीन	मीन
अक्षवेदांश	वृश्चि	मीन	कुंभ	धनु	कर्क	मिथु	सिंह	मक	मक	मक
षष्ट्यंश	मिथु	कर्क	कर्क	वृश्चि	मेष	कुंभ	सिंह	धनु	वृश्चि	वृष

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम
चन्द्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
मंगल	1 ---	1 ---	3 उत्तम	5 कन्दुक
बुध	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
गुरु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	5 कन्दुक
शुक्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
शनि	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
राहु	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	4 नागपुष्प
केतु	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	6 केरल

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	13.40	9.90	14.00	12.90	10.85	15.15	18.15	14.25	6.95
सप्तवर्ग	12.95	9.25	12.75	13.40	11.58	15.25	17.00	13.63	7.33
दशवर्ग	12.18	11.45	14.38	11.88	12.83	13.68	15.83	11.88	8.50
षोडशवर्ग	13.68	10.95	14.95	12.18	11.98	13.20	16.35	12.38	8.33

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शनि	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	मित्र
राहु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	सम	मित्र	मित्र	सम	सम
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	शत्रु	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	सम	सम	अधिशत्रु	---	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	सम	सम	सम
शनि	सम	सम	सम	अतिमित्र	मित्र	सम	---	सम	सम
राहु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	मित्र	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	49	8	32	11	34	35	23
सप्तवर्गज बल	90	56	86	114	99	120	150
ओजयुग्मक बल	15	30	30	15	15	0	15
केन्द्र बल	60	60	15	15	15	30	60
द्रेष्काण बल	0	15	0	15	0	0	15
कुल स्थान बल	214	170	163	171	164	185	263
कुल दिग्बल	0	5	7	35	35	50	3
नतोन्नत बल	0	60	60	60	0	0	60
पक्ष बल	5	110	5	5	55	55	5
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	60	0
अब्द बल	15	0	0	0	0	0	0
मास बल	30	0	0	0	0	0	0
वार बल	0	0	0	45	0	0	0
होरा बल	0	0	60	0	0	0	0
अयन बल	115	60	51	50	50	60	43
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	165	230	176	160	165	175	108
कुल चेष्टाबल	0	0	49	25	9	51	31
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-4	-33	-16	-14	-14	3	9
कुल षट्बल	435	423	397	401	393	506	423
रूप षट्बल	7.3	7.0	6.6	6.7	6.5	8.4	7.0
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.5	1.2	1.3	1.0	1.0	1.5	1.4
संबंधित पद	2	5	4	7	6	1	3

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	50.53	21.53	39.66	16.66	17.81	41.88	26.52
कष्ट फल	9.30	16.15	17.54	41.40	36.21	15.29	32.95

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	423	393	397	506	401	423	435	401	506	397	393	423
भावदिग्बल	60	40	10	0	20	40	30	10	20	30	40	40
भावदृष्टि बल	22	14	2	-4	25	65	53	42	77	53	45	71
कुल भाव बल	504	447	409	503	447	527	518	454	603	480	478	534
रूप भाव बल	8.4	7.4	6.8	8.4	7.4	8.8	8.6	7.6	10.0	8.0	8.0	8.9
संबंधित पद	5	10	12	6	11	3	4	9	1	7	8	2

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

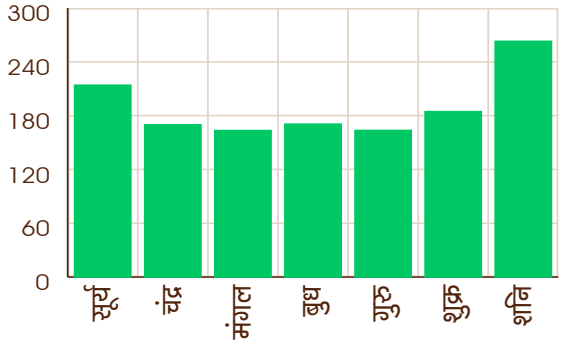

दिग्बल

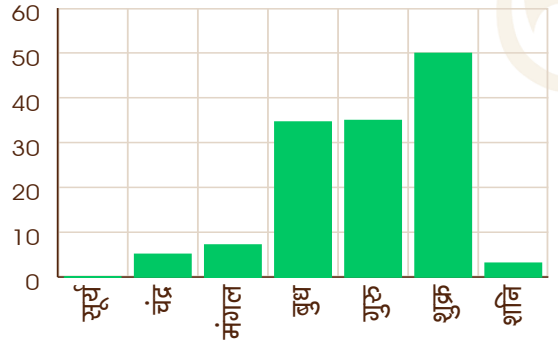

कालबल

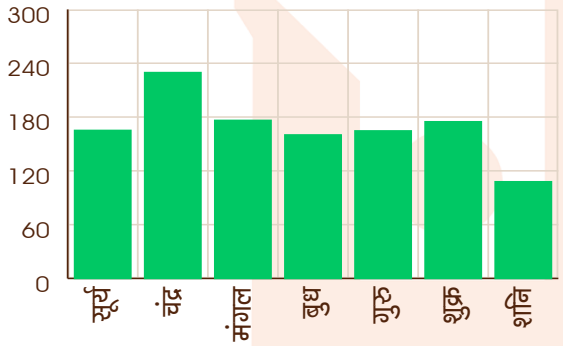

चेष्टाबल

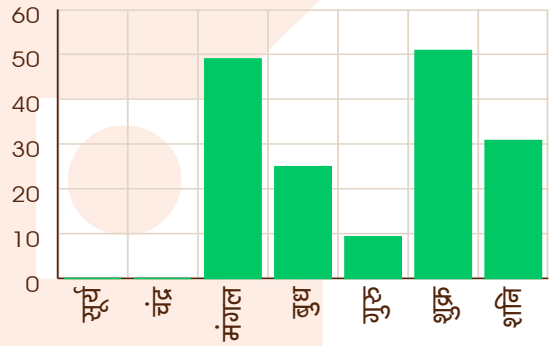

नैसर्गिक बल

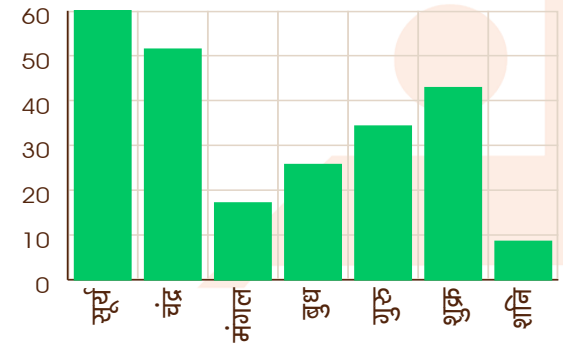

दृग्बल

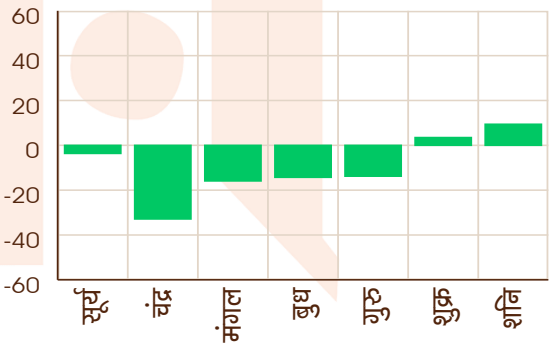

रूप षट्बल

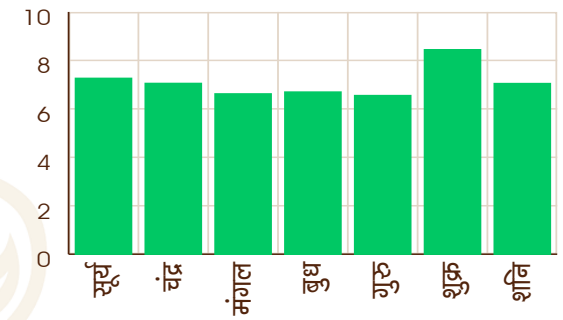

न्यूनतम षट्बल

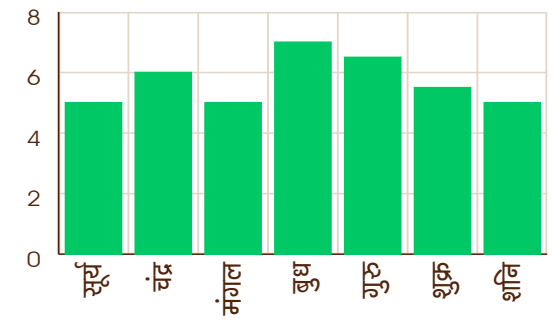

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

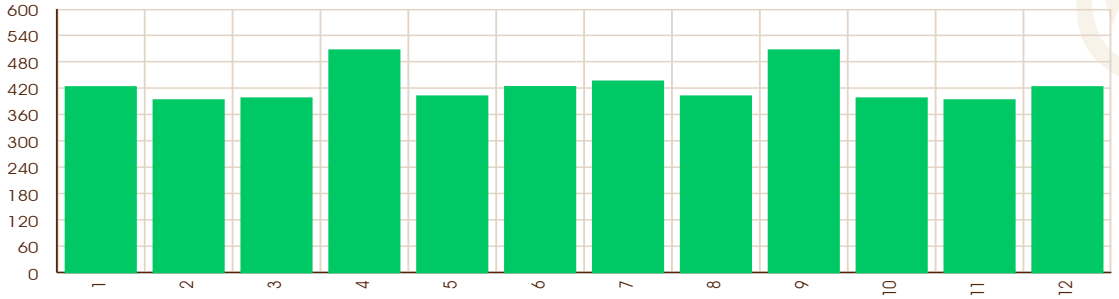

भावदिग्बल

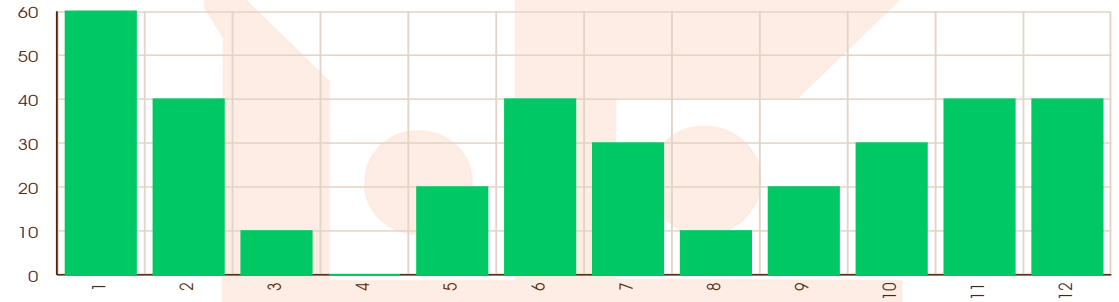

भावदृष्टि बल

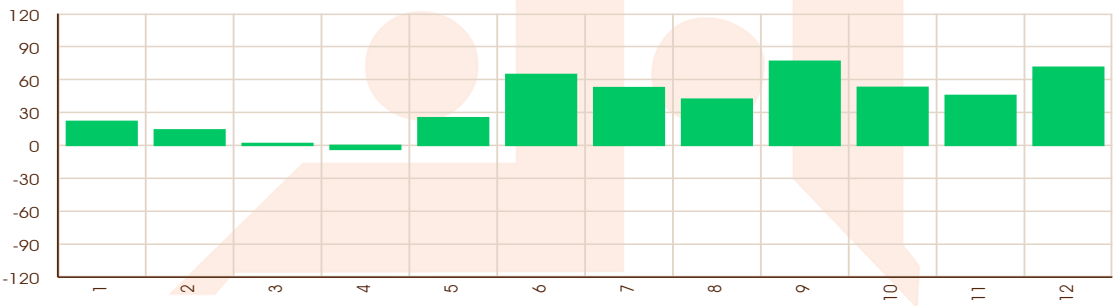

भाव बल

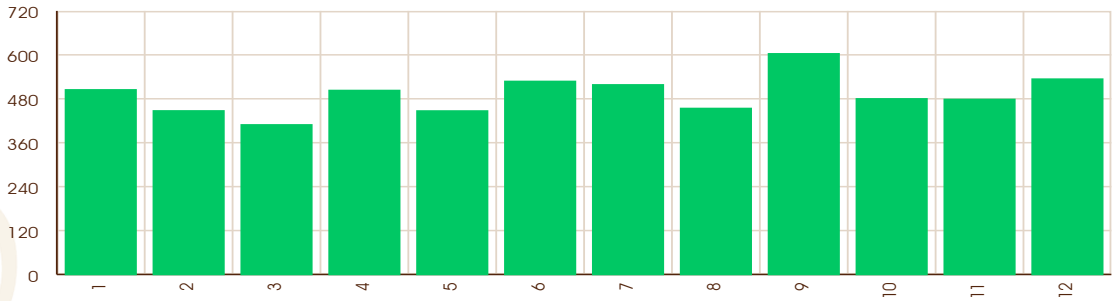

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

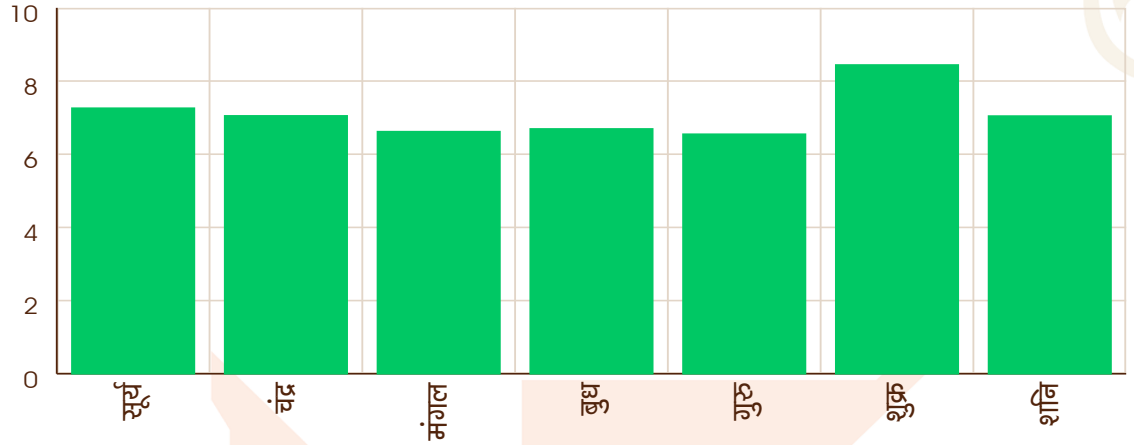

इष्ट - कष्ट फल

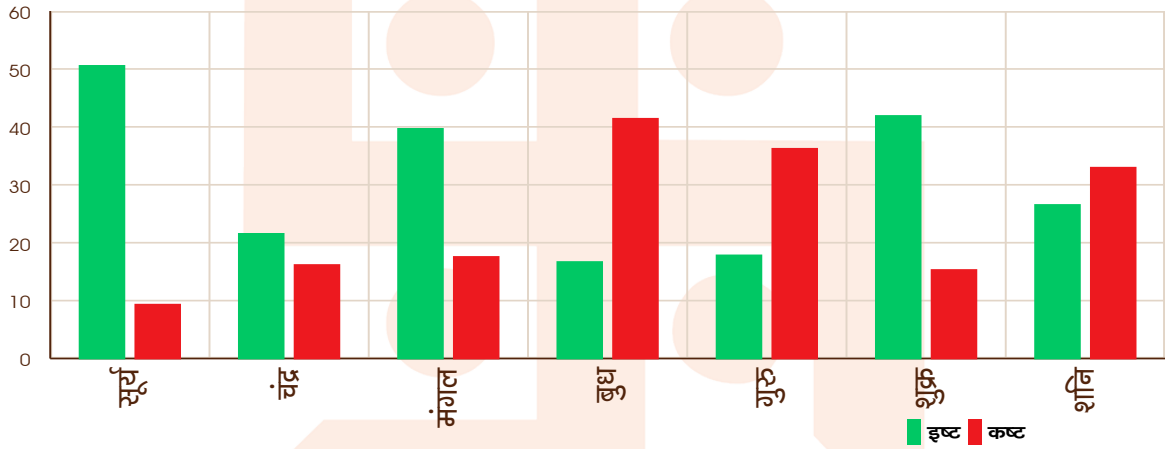

रूप भाव बल

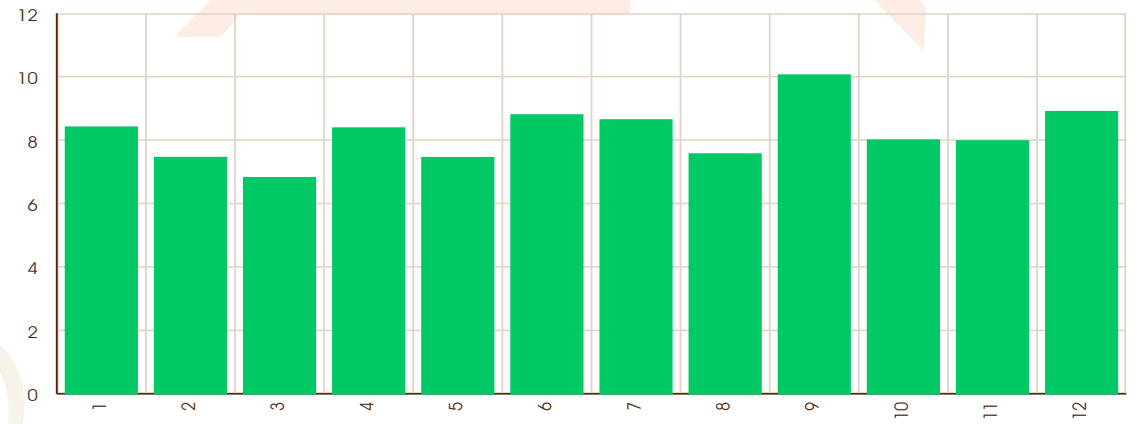

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	कुंभ	02:08:33	--	--	धनिष्ठा	3	23
गुलिक	गु	मीन	26:44:22	--	--	रेवती	4	27
काल	का	मेष	21:58:54	--	--	भरणी	3	2
मृत्यु	मृ	धनु	19:52:06	--	--	पूर्वाषाढ़ा	2	20
यमघंटक	यम	कुंभ	03:30:45	--	--	धनिष्ठा	4	23
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मक	10:27:27	--	--	श्रवण	1	22
धूम	धू	कन्या	26:28:09	--	--	चित्रा	1	14
व्यतिपात	व्य	तुला	03:31:51	--	--	चित्रा	4	14
परिवेश	परि	मेष	03:31:51	--	--	अश्विनी	2	1
इन्द्रचाप	इ	मीन	26:28:09	--	--	रेवती	3	27
उपकेतु	उप	मेष	13:08:09	--	--	अश्विनी	4	1

प्राणपद	:	कन्या	22:38:30	कारकाँश लग्न	:	मीन	14:44:45
भाव लग्न	:	कुंभ	25:36:40	होरा लग्न	:	धनु	08:05:11
घटी लग्न	:	मेष	15:30:44	वर्णद लग्न	:	तुला	10:13:43

उपग्रह कुंडली

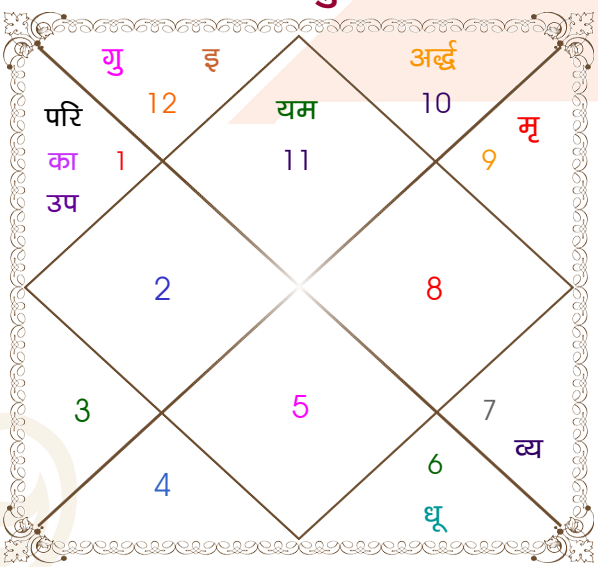

आरूढ़ कुंडली

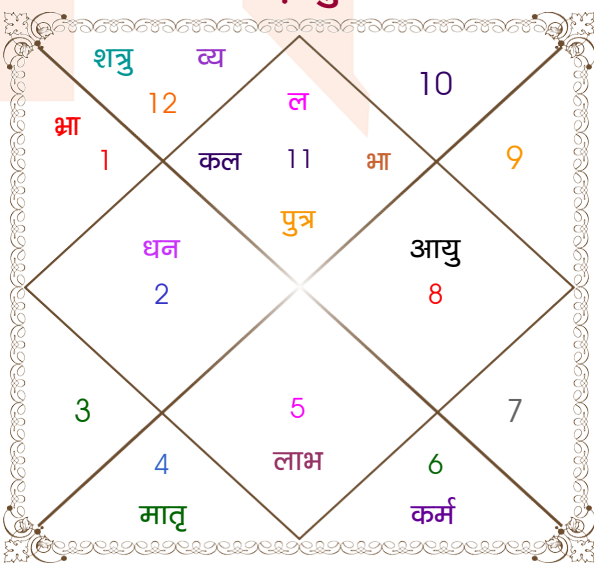

षन्नाडी चक्र

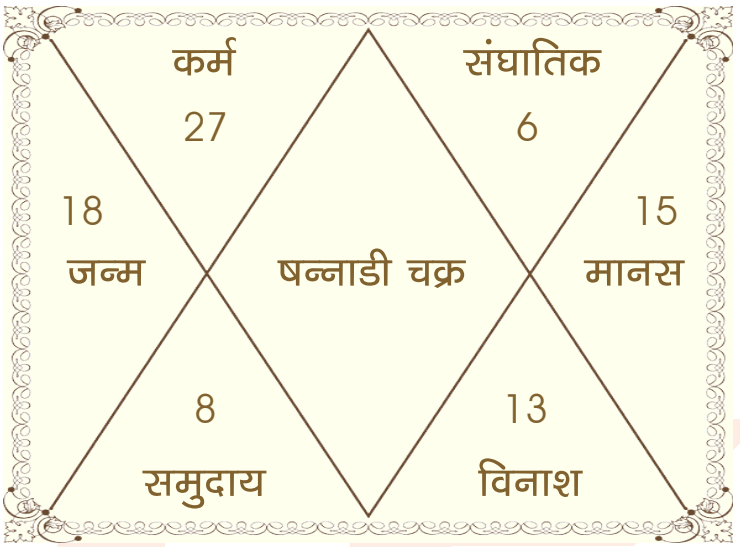

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र
केतु कुंडली	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु
गुरु कुंडली	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
केतु कुंडली	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु
गुरु कुंडली	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु
केतु कुंडली	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु
गुरु कुंडली	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
चंद्र	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
लग्न	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
कुल	5	2	2	5	4	2	5	7	5	5	3	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
गुरु	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
मंगल	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	6
शुक्र	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	7
बुध	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
कुल	5	4	4	5	2	6	3	3	6	4	3	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	7
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	5
शुक्र	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	4
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
चंद्र	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	5
कुल	4	3	1	3	2	5	3	4	2	4	6	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	5
शुक्र	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	6
लग्न	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	7
कुल	5	3	3	3	4	7	4	4	5	4	7	5	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	9
शुक्र	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	6
बुध	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	5
लग्न	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	9
कुल	5	6	4	8	3	2	4	5	4	5	6	4	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	7
गुरु	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	5
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	5
चंद्र	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	9
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	8
कुल	6	3	3	6	4	3	7	3	6	5	4	2	52

शनि का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	3
बुध	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	6
चंद्र	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	3
लग्न	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	6
कुल	5	4	4	3	3	2	3	4	0	4	4	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	6
गुरु	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	9
मंगल	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
सूर्य	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	6
शुक्र	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0	1	7
बुध	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	6	1	7	3	2	6	4	5	4	3	3	5	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	3	3	2	3	4	0	4	4	3	5	4	39
गुरु	5	6	4	8	3	2	4	5	4	5	6	4	56
मंगल	4	3	1	3	2	5	3	4	2	4	6	2	39
सूर्य	3	5	2	2	5	4	2	5	7	5	5	3	48
शुक्र	4	2	6	3	3	6	4	3	7	3	6	5	52
बुध	5	3	3	3	4	7	4	4	5	4	7	5	54
चंद्र	6	3	3	6	4	3	4	5	4	4	5	2	49
बिन्दु	31	25	22	27	24	31	21	30	33	28	40	25	337
रेखा	25	31	34	29	32	25	35	26	23	28	16	31	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	0	3	0	0	1	0	2	1	0	5	2	15
गुरु	2	4	0	4	0	0	0	1	1	3	2	0	17
मंगल	2	0	0	1	0	2	2	2	0	1	5	0	15
सूर्य	0	1	0	0	2	0	0	3	4	1	3	1	15
शुक्र	1	0	2	0	0	4	0	0	4	1	2	2	16
बुध	1	0	0	0	0	4	1	1	1	1	4	2	15
चंद्र	2	0	0	4	0	0	1	3	0	1	2	0	13
रेखा	9	5	5	9	2	11	4	12	11	8	23	7	106

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	0	3	0	0	0	0	2	1	0	5	1	13
गुरु	2	4	0	4	0	0	0	1	1	1	2	0	15
मंगल	2	0	0	1	0	2	2	2	0	0	5	0	14
सूर्य	0	1	0	0	2	0	0	3	3	0	3	1	13
शुक्र	1	0	2	0	0	2	0	0	2	0	2	2	11
बुध	1	0	0	0	0	4	1	1	1	0	4	1	13
चंद्र	2	0	0	4	0	0	1	3	0	0	2	0	12
रेखा	9	5	5	9	2	8	4	12	8	1	23	5	91

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	126	83	113	107	114	97	123
ग्रह पिंड	35	71	81	48	81	47	79
शोध्य पिंड	161	154	194	155	195	144	202

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

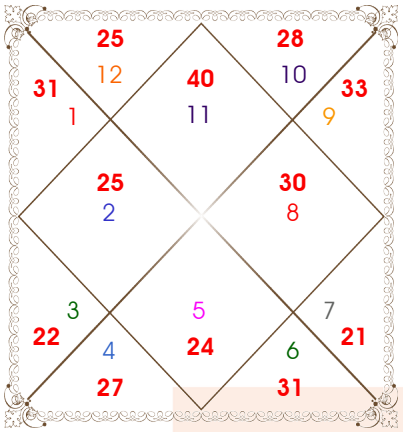

सूर्य का अष्टकवर्ग

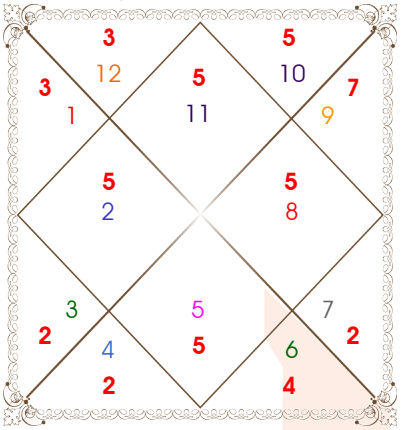

चंद्र का अष्टकवर्ग

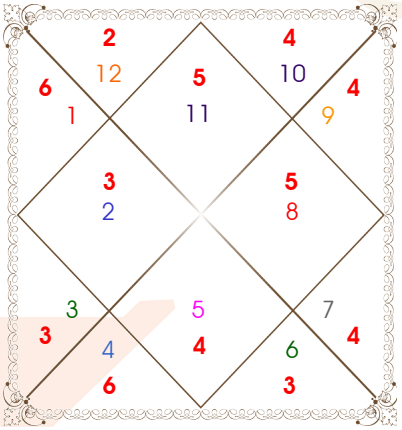

मंगल का अष्टकवर्ग

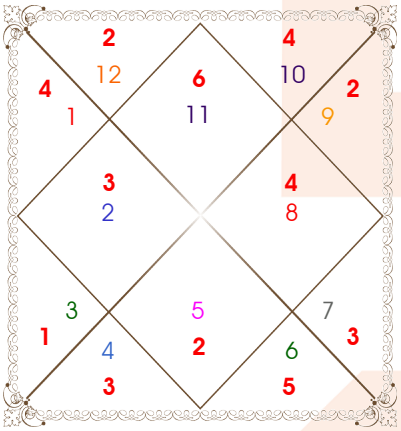

बुध का अष्टकवर्ग

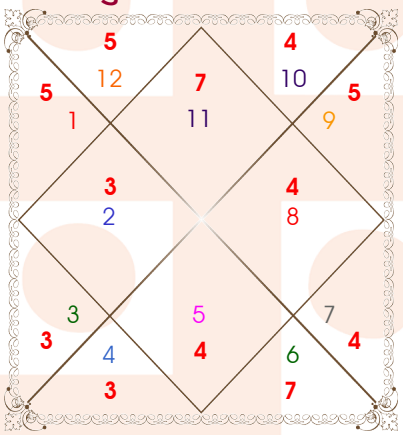

गुरू का अष्टकवर्ग

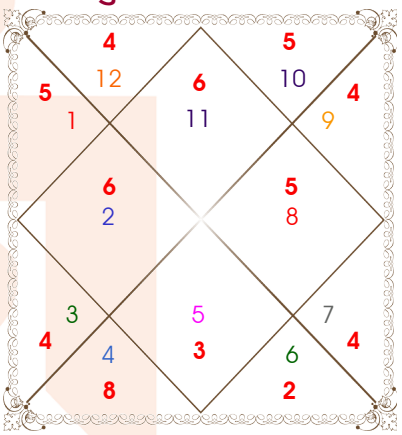

शुक्र का अष्टकवर्ग

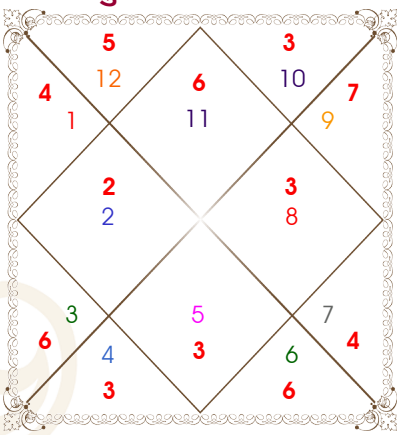

शनि का अष्टकवर्ग

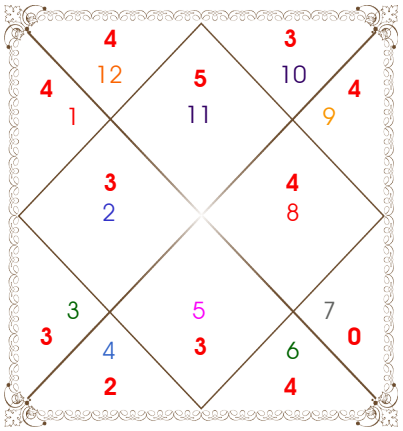

लग्न का अष्टकवर्ग

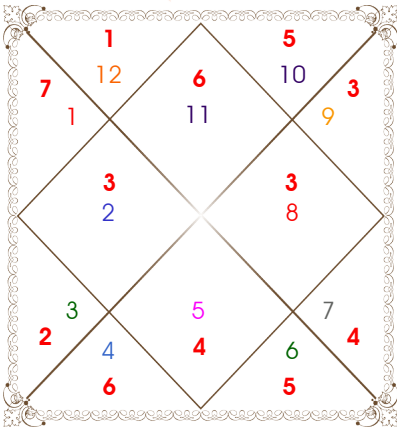

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

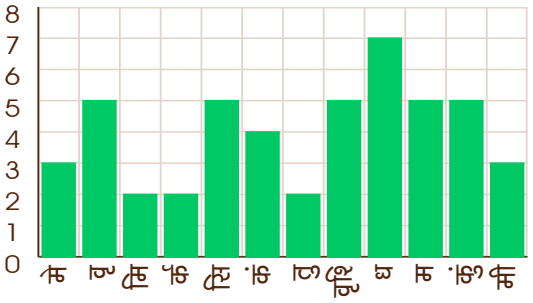

चन्द्र

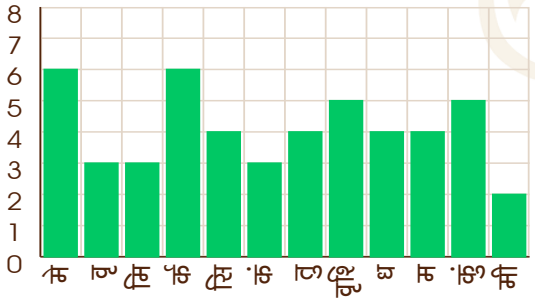

मंगल

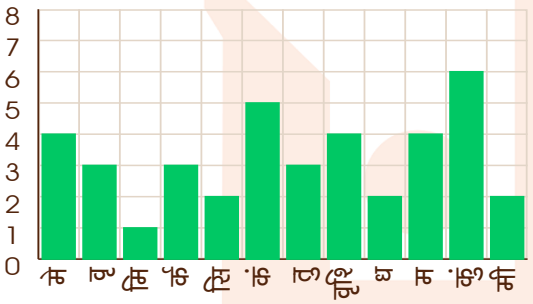

बुध

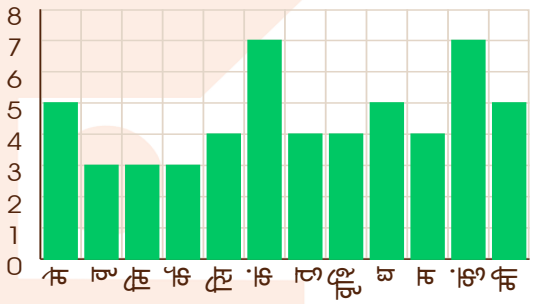

गुरु

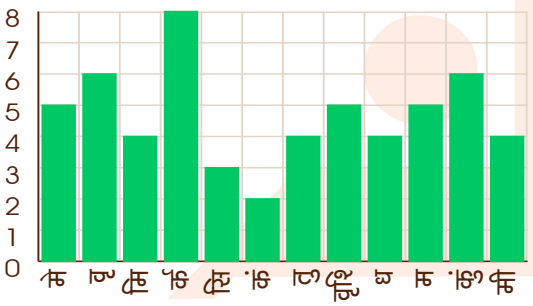

शुक्र

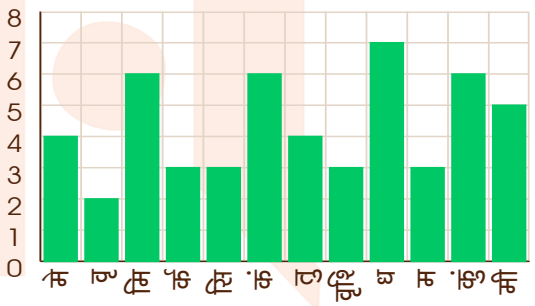

शनि

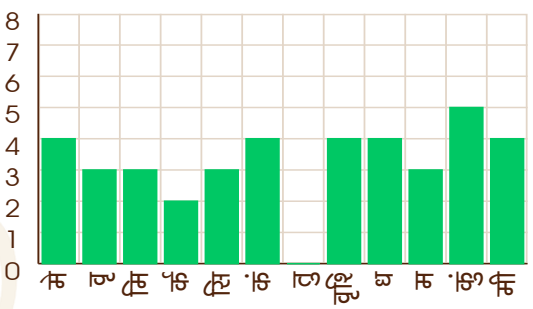

लग्न

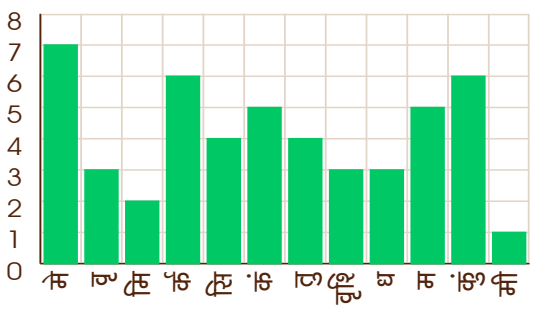

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

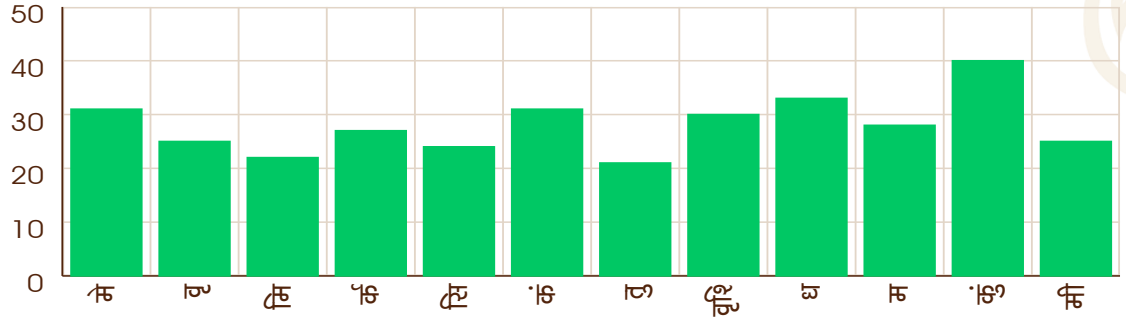

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

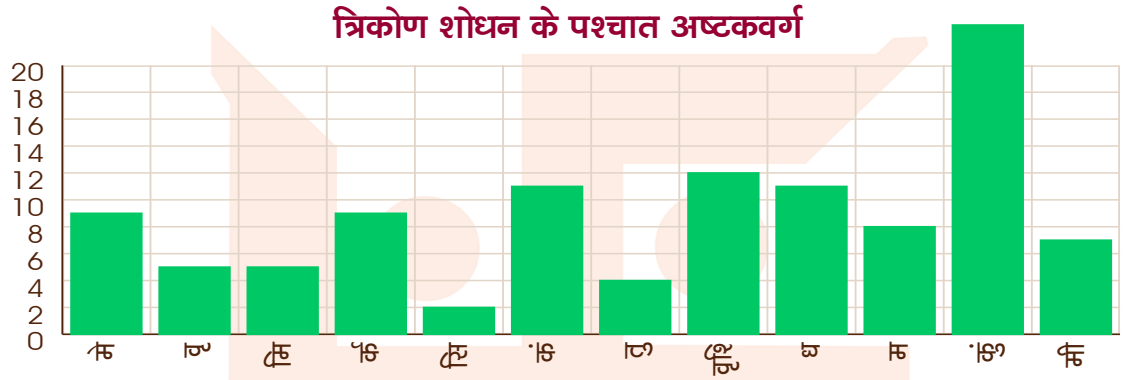

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

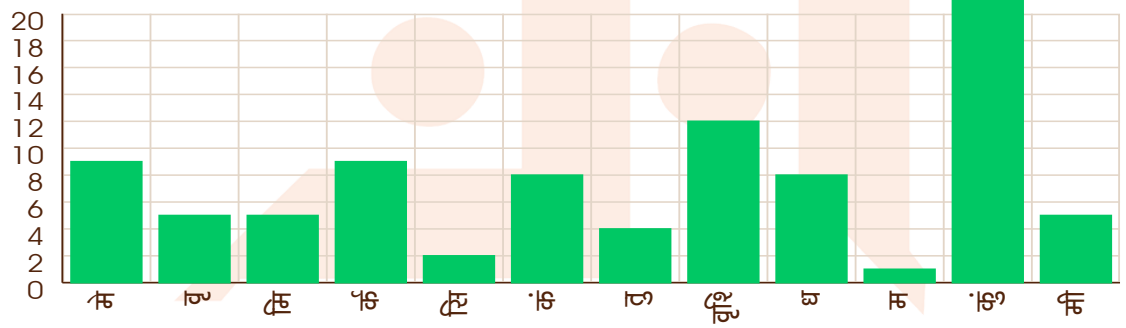

शोध्य पिंड

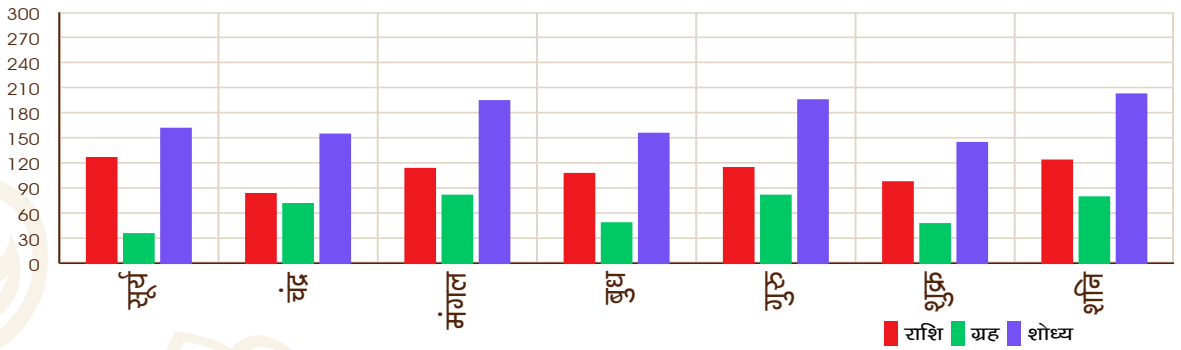

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 2 वर्ष 1 मास 28 दिन

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
28/05/1964		26/07/1966		26/07/1973		26/07/1993		26/07/1999	
26/07/1966		26/07/1973		26/07/1993		26/07/1999		26/07/2009	
	00/00/0000	केतु	22/12/1966	शुक्र	24/11/1976	सूर्य	12/11/1993	चंद्र	25/05/2000
	00/00/0000	शुक्र	21/02/1968	सूर्य	24/11/1977	चंद्र	14/05/1994	मंगल	25/12/2000
	00/00/0000	सूर्य	28/06/1968	चंद्र	26/07/1979	मंगल	19/09/1994	राहु	25/06/2002
	00/00/0000	चंद्र	27/01/1969	मंगल	24/09/1980	राहु	13/08/1995	गुरु	25/10/2003
	00/00/0000	मंगल	25/06/1969	राहु	25/09/1983	गुरु	01/06/1996	शनि	26/05/2005
	00/00/0000	राहु	14/07/1970	गुरु	26/05/1986	शनि	14/05/1997	बुध	25/10/2006
	00/00/0000	गुरु	20/06/1971	शनि	26/07/1989	बुध	20/03/1998	केतु	26/05/2007
	28/05/1964	शनि	28/07/1972	बुध	25/05/1992	केतु	26/07/1998	शुक्र	24/01/2009
शनि	26/07/1966	बुध	26/07/1973	केतु	26/07/1993	शुक्र	26/07/1999	सूर्य	26/07/2009

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
26/07/2009		25/07/2016		26/07/2034		26/07/2050		26/07/2069	
25/07/2016		26/07/2034		26/07/2050		26/07/2069		28/05/2084	
मंगल	22/12/2009	राहु	08/04/2019	गुरु	12/09/2036	शनि	29/07/2053	बुध	22/12/2071
राहु	09/01/2011	गुरु	31/08/2021	शनि	26/03/2039	बुध	07/04/2056	केतु	18/12/2072
गुरु	16/12/2011	शनि	07/07/2024	बुध	01/07/2041	केतु	17/05/2057	शुक्र	19/10/2075
शनि	24/01/2013	बुध	24/01/2027	केतु	07/06/2042	शुक्र	16/07/2060	सूर्य	25/08/2076
बुध	21/01/2014	केतु	12/02/2028	शुक्र	05/02/2045	सूर्य	28/06/2061	चंद्र	24/01/2078
केतु	19/06/2014	शुक्र	12/02/2031	सूर्य	24/11/2045	चंद्र	28/01/2063	मंगल	21/01/2079
शुक्र	19/08/2015	सूर्य	06/01/2032	चंद्र	26/03/2047	मंगल	07/03/2064	राहु	10/08/2081
सूर्य	25/12/2015	चंद्र	07/07/2033	मंगल	01/03/2048	राहु	12/01/2067	गुरु	16/11/2083
चंद्र	25/07/2016	मंगल	26/07/2034	राहु	26/07/2050	गुरु	26/07/2069	शनि	28/05/2084

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 2 वर्ष 1 मा 28 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
28/05/1964		26/07/1966		22/12/1966		21/02/1968		28/06/1968	
26/07/1966		22/12/1966		21/02/1968		28/06/1968		27/01/1969	
	28/05/1964	केतु	04/08/1966	शुक्र	03/03/1967	सूर्य	27/02/1968	चंद्र	16/07/1968
बुध	06/09/1964	शुक्र	28/08/1966	सूर्य	24/03/1967	चंद्र	09/03/1968	मंगल	28/07/1968
केतु	02/11/1964	सूर्य	05/09/1966	चंद्र	29/04/1967	मंगल	17/03/1968	राहु	29/08/1968
शुक्र	15/04/1965	चंद्र	17/09/1966	मंगल	24/05/1967	राहु	05/04/1968	गुरु	26/09/1968
सूर्य	03/06/1965	मंगल	26/09/1966	राहु	27/07/1967	गुरु	22/04/1968	शनि	30/10/1968
चंद्र	24/08/1965	राहु	18/10/1966	गुरु	21/09/1967	शनि	12/05/1968	बुध	29/11/1968
मंगल	20/10/1965	गुरु	07/11/1966	शनि	28/11/1967	बुध	30/05/1968	केतु	12/12/1968
राहु	17/03/1966	शनि	01/12/1966	बुध	27/01/1968	केतु	07/06/1968	शुक्र	16/01/1969
गुरु	26/07/1966	बुध	22/12/1966	केतु	21/02/1968	शुक्र	28/06/1968	सूर्य	27/01/1969

केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
27/01/1969		25/06/1969		14/07/1970		20/06/1971		28/07/1972	
25/06/1969		14/07/1970		20/06/1971		28/07/1972		26/07/1973	
मंगल	05/02/1969	राहु	22/08/1969	गुरु	28/08/1970	शनि	23/08/1971	बुध	18/09/1972
राहु	27/02/1969	गुरु	12/10/1969	शनि	21/10/1970	बुध	19/10/1971	केतु	09/10/1972
गुरु	19/03/1969	शनि	12/12/1969	बुध	08/12/1970	केतु	12/11/1971	शुक्र	08/12/1972
शनि	12/04/1969	बुध	04/02/1970	केतु	28/12/1970	शुक्र	18/01/1972	सूर्य	26/12/1972
बुध	03/05/1969	केतु	26/02/1970	शुक्र	23/02/1971	सूर्य	07/02/1972	चंद्र	25/01/1973
केतु	11/05/1969	शुक्र	01/05/1970	सूर्य	12/03/1971	चंद्र	12/03/1972	मंगल	16/02/1973
शुक्र	05/06/1969	सूर्य	20/05/1970	चंद्र	10/04/1971	मंगल	05/04/1972	राहु	11/04/1973
सूर्य	13/06/1969	चंद्र	21/06/1970	मंगल	29/04/1971	राहु	04/06/1972	गुरु	29/05/1973
चंद्र	25/06/1969	मंगल	14/07/1970	राहु	20/06/1971	गुरु	28/07/1972	शनि	26/07/1973

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
26/07/1973		24/11/1976		24/11/1977		26/07/1979		24/09/1980	
24/11/1976		24/11/1977		26/07/1979		24/09/1980		25/09/1983	
शुक्र	13/02/1974	सूर्य	12/12/1976	चंद्र	14/01/1978	मंगल	20/08/1979	राहु	08/03/1981
सूर्य	15/04/1974	चंद्र	12/01/1977	मंगल	19/02/1978	राहु	23/10/1979	गुरु	01/08/1981
चंद्र	26/07/1974	मंगल	02/02/1977	राहु	21/05/1978	गुरु	19/12/1979	शनि	21/01/1982
मंगल	05/10/1974	राहु	29/03/1977	गुरु	10/08/1978	शनि	24/02/1980	बुध	25/06/1982
राहु	05/04/1975	गुरु	17/05/1977	शनि	14/11/1978	बुध	25/04/1980	केतु	28/08/1982
गुरु	15/09/1975	शनि	13/07/1977	बुध	09/02/1979	केतु	19/05/1980	शुक्र	27/02/1983
शनि	26/03/1976	बुध	03/09/1977	केतु	16/03/1979	शुक्र	29/07/1980	सूर्य	23/04/1983
बुध	14/09/1976	केतु	24/09/1977	शुक्र	26/06/1979	सूर्य	20/08/1980	चंद्र	23/07/1983
केतु	24/11/1976	शुक्र	24/11/1977	सूर्य	26/07/1979	चंद्र	24/09/1980	मंगल	25/09/1983

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
25/09/1983		26/05/1986		26/07/1989		25/05/1992		26/07/1993	
26/05/1986		26/07/1989		25/05/1992		26/07/1993		12/11/1993	
गुरु	02/02/1984	शनि	25/11/1986	बुध	19/12/1989	केतु	19/06/1992	सूर्य	31/07/1993
शनि	05/07/1984	बुध	08/05/1987	केतु	18/02/1990	शुक्र	29/08/1992	चंद्र	09/08/1993
बुध	20/11/1984	केतु	14/07/1987	शुक्र	09/08/1990	सूर्य	20/09/1992	मंगल	16/08/1993
केतु	16/01/1985	शुक्र	23/01/1988	सूर्य	30/09/1990	चंद्र	25/10/1992	राहु	01/09/1993
शुक्र	27/06/1985	सूर्य	21/03/1988	चंद्र	25/12/1990	मंगल	19/11/1992	गुरु	16/09/1993
सूर्य	15/08/1985	चंद्र	25/06/1988	मंगल	23/02/1991	राहु	22/01/1993	शनि	03/10/1993
चंद्र	04/11/1985	मंगल	01/09/1988	राहु	29/07/1991	गुरु	20/03/1993	बुध	19/10/1993
मंगल	31/12/1985	राहु	21/02/1989	गुरु	14/12/1991	शनि	26/05/1993	केतु	25/10/1993
राहु	26/05/1986	गुरु	26/07/1989	शनि	25/05/1992	बुध	26/07/1993	शुक्र	12/11/1993

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
12/11/1993		14/05/1994		19/09/1994		13/08/1995		01/06/1996	
14/05/1994		19/09/1994		13/08/1995		01/06/1996		14/05/1997	
चंद्र	27/11/1993	मंगल	21/05/1994	राहु	07/11/1994	गुरु	21/09/1995	शनि	25/07/1996
मंगल	08/12/1993	राहु	09/06/1994	गुरु	21/12/1994	शनि	07/11/1995	बुध	13/09/1996
राहु	04/01/1994	गुरु	26/06/1994	शनि	11/02/1995	बुध	18/12/1995	केतु	03/10/1996
गुरु	29/01/1994	शनि	17/07/1994	बुध	29/03/1995	केतु	04/01/1996	शुक्र	30/11/1996
शनि	27/02/1994	बुध	04/08/1994	केतु	18/04/1995	शुक्र	22/02/1996	सूर्य	17/12/1996
बुध	25/03/1994	केतु	11/08/1994	शुक्र	11/06/1995	सूर्य	07/03/1996	चंद्र	15/01/1997
केतु	04/04/1994	शुक्र	02/09/1994	सूर्य	28/06/1995	चंद्र	01/04/1996	मंगल	04/02/1997
शुक्र	05/05/1994	सूर्य	08/09/1994	चंद्र	25/07/1995	मंगल	18/04/1996	राहु	28/03/1997
सूर्य	14/05/1994	चंद्र	19/09/1994	मंगल	13/08/1995	राहु	01/06/1996	गुरु	14/05/1997

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
14/05/1997		20/03/1998		26/07/1998		26/07/1999		25/05/2000	
20/03/1998		26/07/1998		26/07/1999		25/05/2000		25/12/2000	
बुध	27/06/1997	केतु	27/03/1998	शुक्र	25/09/1998	चंद्र	20/08/1999	मंगल	07/06/2000
केतु	15/07/1997	शुक्र	18/04/1998	सूर्य	13/10/1998	मंगल	07/09/1999	राहु	09/07/2000
शुक्र	04/09/1997	सूर्य	24/04/1998	चंद्र	12/11/1998	राहु	23/10/1999	गुरु	06/08/2000
सूर्य	20/09/1997	चंद्र	05/05/1998	मंगल	04/12/1998	गुरु	02/12/1999	शनि	09/09/2000
चंद्र	16/10/1997	मंगल	12/05/1998	राहु	28/01/1999	शनि	20/01/2000	बुध	09/10/2000
मंगल	03/11/1997	राहु	31/05/1998	गुरु	17/03/1999	बुध	03/03/2000	केतु	22/10/2000
राहु	19/12/1997	गुरु	17/06/1998	शनि	14/05/1999	केतु	21/03/2000	शुक्र	26/11/2000
गुरु	30/01/1998	शनि	08/07/1998	बुध	05/07/1999	शुक्र	10/05/2000	सूर्य	07/12/2000
शनि	20/03/1998	बुध	26/07/1998	केतु	26/07/1999	सूर्य	25/05/2000	चंद्र	25/12/2000

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
25/12/2000		25/06/2002		25/10/2003		26/05/2005		25/10/2006	
25/06/2002		25/10/2003		26/05/2005		25/10/2006		26/05/2007	
राहु	17/03/2001	गुरु	29/08/2002	शनि	25/01/2004	बुध	07/08/2005	केतु	07/11/2006
गुरु	29/05/2001	शनि	14/11/2002	बुध	16/04/2004	केतु	06/09/2005	शुक्र	12/12/2006
शनि	23/08/2001	बुध	22/01/2003	केतु	20/05/2004	शुक्र	01/12/2005	सूर्य	23/12/2006
बुध	09/11/2001	केतु	20/02/2003	शुक्र	24/08/2004	सूर्य	27/12/2005	चंद्र	09/01/2007
केतु	11/12/2001	शुक्र	12/05/2003	सूर्य	22/09/2004	चंद्र	08/02/2006	मंगल	22/01/2007
शुक्र	12/03/2002	सूर्य	05/06/2003	चंद्र	09/11/2004	मंगल	11/03/2006	राहु	23/02/2007
सूर्य	09/04/2002	चंद्र	16/07/2003	मंगल	13/12/2004	राहु	27/05/2006	गुरु	23/03/2007
चंद्र	24/05/2002	मंगल	13/08/2003	राहु	10/03/2005	गुरु	04/08/2006	शनि	26/04/2007
मंगल	25/06/2002	राहु	25/10/2003	गुरु	26/05/2005	शनि	25/10/2006	बुध	26/05/2007

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
26/05/2007		24/01/2009		26/07/2009		22/12/2009		09/01/2011	
24/01/2009		26/07/2009		22/12/2009		09/01/2011		16/12/2011	
शुक्र	05/09/2007	सूर्य	02/02/2009	मंगल	03/08/2009	राहु	17/02/2010	गुरु	24/02/2011
सूर्य	05/10/2007	चंद्र	17/02/2009	राहु	26/08/2009	गुरु	09/04/2010	शनि	19/04/2011
चंद्र	25/11/2007	मंगल	28/02/2009	गुरु	15/09/2009	शनि	09/06/2010	बुध	06/06/2011
मंगल	30/12/2007	राहु	27/03/2009	शनि	08/10/2009	बुध	02/08/2010	केतु	26/06/2011
राहु	31/03/2008	गुरु	21/04/2009	बुध	29/10/2009	केतु	25/08/2010	शुक्र	22/08/2011
गुरु	20/06/2008	शनि	20/05/2009	केतु	07/11/2009	शुक्र	28/10/2010	सूर्य	08/09/2011
शनि	24/09/2008	बुध	14/06/2009	शुक्र	02/12/2009	सूर्य	16/11/2010	चंद्र	06/10/2011
बुध	19/12/2008	केतु	25/06/2009	सूर्य	09/12/2009	चंद्र	18/12/2010	मंगल	26/10/2011
केतु	24/01/2009	शुक्र	26/07/2009	चंद्र	22/12/2009	मंगल	09/01/2011	राहु	16/12/2011

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
16/12/2011		24/01/2013		21/01/2014		19/06/2014		19/08/2015	
24/01/2013		21/01/2014		19/06/2014		19/08/2015		25/12/2015	
शनि	18/02/2012	बुध	16/03/2013	केतु	30/01/2014	शुक्र	29/08/2014	सूर्य	26/08/2015
बुध	16/04/2012	केतु	06/04/2013	शुक्र	24/02/2014	सूर्य	20/09/2014	चंद्र	05/09/2015
केतु	09/05/2012	शुक्र	06/06/2013	सूर्य	03/03/2014	चंद्र	25/10/2014	मंगल	13/09/2015
शुक्र	16/07/2012	सूर्य	24/06/2013	चंद्र	16/03/2014	मंगल	19/11/2014	राहु	02/10/2015
सूर्य	05/08/2012	चंद्र	24/07/2013	मंगल	24/03/2014	राहु	22/01/2015	गुरु	19/10/2015
चंद्र	08/09/2012	मंगल	14/08/2013	राहु	16/04/2014	गुरु	20/03/2015	शनि	08/11/2015
मंगल	01/10/2012	राहु	08/10/2013	गुरु	06/05/2014	शनि	26/05/2015	बुध	27/11/2015
राहु	01/12/2012	गुरु	25/11/2013	शनि	29/05/2014	बुध	26/07/2015	केतु	04/12/2015
गुरु	24/01/2013	शनि	21/01/2014	बुध	19/06/2014	केतु	19/08/2015	शुक्र	25/12/2015

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
25/12/2015		25/07/2016		08/04/2019		31/08/2021		07/07/2024	
25/07/2016		08/04/2019		31/08/2021		07/07/2024		24/01/2027	
चंद्र	12/01/2016	राहु	20/12/2016	गुरु	02/08/2019	शनि	12/02/2022	बुध	16/11/2024
मंगल	24/01/2016	गुरु	01/05/2017	शनि	19/12/2019	बुध	09/07/2022	केतु	09/01/2025
राहु	25/02/2016	शनि	04/10/2017	बुध	21/04/2020	केतु	08/09/2022	शुक्र	14/06/2025
गुरु	25/03/2016	बुध	21/02/2018	केतु	12/06/2020	शुक्र	01/03/2023	सूर्य	30/07/2025
शनि	28/04/2016	केतु	19/04/2018	शुक्र	05/11/2020	सूर्य	22/04/2023	चंद्र	16/10/2025
बुध	28/05/2016	शुक्र	30/09/2018	सूर्य	18/12/2020	चंद्र	17/07/2023	मंगल	09/12/2025
केतु	09/06/2016	सूर्य	19/11/2018	चंद्र	01/03/2021	मंगल	16/09/2023	राहु	28/04/2026
शुक्र	15/07/2016	चंद्र	09/02/2019	मंगल	22/04/2021	राहु	19/02/2024	गुरु	30/08/2026
सूर्य	25/07/2016	मंगल	08/04/2019	राहु	31/08/2021	गुरु	07/07/2024	शनि	24/01/2027

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
24/01/2027		12/02/2028		12/02/2031		06/01/2032		07/07/2033	
12/02/2028		12/02/2031		06/01/2032		07/07/2033		26/07/2034	
केतु	16/02/2027	शुक्र	13/08/2028	सूर्य	28/02/2031	चंद्र	21/02/2032	मंगल	30/07/2033
शुक्र	21/04/2027	सूर्य	06/10/2028	चंद्र	28/03/2031	मंगल	24/03/2032	राहु	25/09/2033
सूर्य	10/05/2027	चंद्र	06/01/2029	मंगल	16/04/2031	राहु	14/06/2032	गुरु	15/11/2033
चंद्र	11/06/2027	मंगल	11/03/2029	राहु	04/06/2031	गुरु	26/08/2032	शनि	15/01/2034
मंगल	03/07/2027	राहु	22/08/2029	गुरु	18/07/2031	शनि	21/11/2032	बुध	10/03/2034
राहु	30/08/2027	गुरु	15/01/2030	शनि	08/09/2031	बुध	07/02/2033	केतु	02/04/2034
गुरु	20/10/2027	शनि	08/07/2030	बुध	24/10/2031	केतु	11/03/2033	शुक्र	05/06/2034
शनि	20/12/2027	बुध	10/12/2030	केतु	13/11/2031	शुक्र	10/06/2033	सूर्य	24/06/2034
बुध	12/02/2028	केतु	12/02/2031	शुक्र	06/01/2032	सूर्य	07/07/2033	चंद्र	26/07/2034

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
26/07/2034		12/09/2036		26/03/2039		01/07/2041		07/06/2042	
12/09/2036		26/03/2039		01/07/2041		07/06/2042		05/02/2045	
गुरु	07/11/2034	शनि	06/02/2037	बुध	22/07/2039	केतु	21/07/2041	शुक्र	16/11/2042
शनि	10/03/2035	बुध	17/06/2037	केतु	08/09/2039	शुक्र	16/09/2041	सूर्य	04/01/2043
बुध	28/06/2035	केतु	10/08/2037	शुक्र	24/01/2040	सूर्य	03/10/2041	चंद्र	26/03/2043
केतु	13/08/2035	शुक्र	11/01/2038	सूर्य	05/03/2040	चंद्र	31/10/2041	मंगल	22/05/2043
शुक्र	21/12/2035	सूर्य	26/02/2038	चंद्र	13/05/2040	मंगल	20/11/2041	राहु	15/10/2043
सूर्य	29/01/2036	चंद्र	14/05/2038	मंगल	01/07/2040	राहु	10/01/2042	गुरु	22/02/2044
चंद्र	03/04/2036	मंगल	07/07/2038	राहु	02/11/2040	गुरु	25/02/2042	शनि	25/07/2044
मंगल	18/05/2036	राहु	23/11/2038	गुरु	20/02/2041	शनि	20/04/2042	बुध	10/12/2044
राहु	12/09/2036	गुरु	26/03/2039	शनि	01/07/2041	बुध	07/06/2042	केतु	05/02/2045

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
05/02/2045		24/11/2045		26/03/2047		01/03/2048		26/07/2050	
24/11/2045		26/03/2047		01/03/2048		26/07/2050		29/07/2053	
सूर्य	20/02/2045	चंद्र	04/01/2046	मंगल	15/04/2047	राहु	11/07/2048	शनि	16/01/2051
चंद्र	16/03/2045	मंगल	01/02/2046	राहु	05/06/2047	गुरु	05/11/2048	बुध	20/06/2051
मंगल	02/04/2045	राहु	15/04/2046	गुरु	21/07/2047	शनि	23/03/2049	केतु	24/08/2051
राहु	16/05/2045	गुरु	19/06/2046	शनि	13/09/2047	बुध	26/07/2049	शुक्र	23/02/2052
गुरु	24/06/2045	शनि	04/09/2046	बुध	31/10/2047	केतु	15/09/2049	सूर्य	18/04/2052
शनि	09/08/2045	बुध	12/11/2046	केतु	20/11/2047	शुक्र	08/02/2050	चंद्र	18/07/2052
बुध	20/09/2045	केतु	11/12/2046	शुक्र	16/01/2048	सूर्य	24/03/2050	मंगल	20/09/2052
केतु	07/10/2045	शुक्र	02/03/2047	सूर्य	02/02/2048	चंद्र	05/06/2050	राहु	04/03/2053
शुक्र	24/11/2045	सूर्य	26/03/2047	चंद्र	01/03/2048	मंगल	26/07/2050	गुरु	29/07/2053

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
29/07/2053		07/04/2056		17/05/2057		16/07/2060		28/06/2061	
07/04/2056		17/05/2057		16/07/2060		28/06/2061		28/01/2063	
बुध	15/12/2053	केतु	30/04/2056	शुक्र	25/11/2057	सूर्य	03/08/2060	चंद्र	15/08/2061
केतु	10/02/2054	शुक्र	07/07/2056	सूर्य	22/01/2058	चंद्र	31/08/2060	मंगल	18/09/2061
शुक्र	24/07/2054	सूर्य	27/07/2056	चंद्र	29/04/2058	मंगल	21/09/2060	राहु	14/12/2061
सूर्य	11/09/2054	चंद्र	30/08/2056	मंगल	05/07/2058	राहु	12/11/2060	गुरु	01/03/2062
चंद्र	02/12/2054	मंगल	22/09/2056	राहु	26/12/2058	गुरु	28/12/2060	शनि	01/06/2062
मंगल	29/01/2055	राहु	22/11/2056	गुरु	29/05/2059	शनि	21/02/2061	बुध	21/08/2062
राहु	25/06/2055	गुरु	15/01/2057	शनि	28/11/2059	बुध	11/04/2061	केतु	24/09/2062
गुरु	03/11/2055	शनि	20/03/2057	बुध	10/05/2060	केतु	01/05/2061	शुक्र	30/12/2062
शनि	07/04/2056	बुध	17/05/2057	केतु	16/07/2060	शुक्र	28/06/2061	सूर्य	28/01/2063

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
28/01/2063		07/03/2064		12/01/2067		26/07/2069		22/12/2071	
07/03/2064		12/01/2067		26/07/2069		22/12/2071		18/12/2072	
मंगल	20/02/2063	राहु	10/08/2064	गुरु	16/05/2067	बुध	27/11/2069	केतु	12/01/2072
राहु	22/04/2063	गुरु	27/12/2064	शनि	09/10/2067	केतु	18/01/2070	शुक्र	13/03/2072
गुरु	15/06/2063	शनि	10/06/2065	बुध	17/02/2068	शुक्र	13/06/2070	सूर्य	31/03/2072
शनि	18/08/2063	बुध	05/11/2065	केतु	11/04/2068	सूर्य	27/07/2070	चंद्र	30/04/2072
बुध	14/10/2063	केतु	04/01/2066	शुक्र	12/09/2068	चंद्र	08/10/2070	मंगल	21/05/2072
केतु	07/11/2063	शुक्र	27/06/2066	सूर्य	29/10/2068	मंगल	29/11/2070	राहु	14/07/2072
शुक्र	13/01/2064	सूर्य	18/08/2066	चंद्र	14/01/2069	राहु	10/04/2071	गुरु	01/09/2072
सूर्य	03/02/2064	चंद्र	13/11/2066	मंगल	09/03/2069	गुरु	05/08/2071	शनि	28/10/2072
चंद्र	07/03/2064	मंगल	12/01/2067	राहु	26/07/2069	शनि	22/12/2071	बुध	18/12/2072

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - बुध - राहु	
09/12/2025 14:16	
28/04/2026 07:15	
राहु	30/12/2025 13:13
गुरु	18/01/2026 04:17
शनि	09/02/2026 07:10
बुध	01/03/2026 02:11
केतु	09/03/2026 05:46
शुक्र	01/04/2026 12:36
सूर्य	08/04/2026 12:15
चंद्र	20/04/2026 03:40
मंगल	28/04/2026 07:15

राहु - बुध - गुरु	
28/04/2026 07:15	
30/08/2026 11:42	
गुरु	14/05/2026 20:39
शनि	03/06/2026 12:33
बुध	21/06/2026 02:47
केतु	28/06/2026 08:38
शुक्र	19/07/2026 01:23
सूर्य	25/07/2026 06:24
चंद्र	04/08/2026 14:46
मंगल	11/08/2026 20:38
राहु	30/08/2026 11:42

राहु - बुध - शनि	
30/08/2026 11:42	
24/01/2027 22:58	
शनि	22/09/2026 20:05
बुध	13/10/2026 17:29
केतु	22/10/2026 07:56
शुक्र	15/11/2026 21:49
सूर्य	23/11/2026 06:47
चंद्र	05/12/2026 13:43
मंगल	14/12/2026 04:11
राहु	05/01/2027 07:04
गुरु	24/01/2027 22:58

राहु - केतु - केतु	
24/01/2027 22:58	
16/02/2027 07:53	
केतु	26/01/2027 06:17
शुक्र	29/01/2027 23:47
सूर्य	31/01/2027 02:37
चंद्र	01/02/2027 23:22
मंगल	03/02/2027 06:41
राहु	06/02/2027 15:13
गुरु	09/02/2027 14:49
शनि	13/02/2027 03:49
बुध	16/02/2027 07:53

राहु - केतु - शुक्र	
16/02/2027 07:53	
21/04/2027 05:56	
शुक्र	26/02/2027 23:34
सूर्य	02/03/2027 04:16
चंद्र	07/03/2027 12:06
मंगल	11/03/2027 05:35
राहु	20/03/2027 19:42
गुरु	29/03/2027 08:14
शनि	08/04/2027 11:08
बुध	17/04/2027 12:27
केतु	21/04/2027 05:56

राहु - केतु - सूर्य	
21/04/2027 05:56	
10/05/2027 10:09	
सूर्य	22/04/2027 04:57
चंद्र	23/04/2027 19:18
मंगल	24/04/2027 22:09
राहु	27/04/2027 19:11
गुरु	30/04/2027 08:32
शनि	03/05/2027 09:24
बुध	06/05/2027 02:36
केतु	07/05/2027 05:27
शुक्र	10/05/2027 10:09

राहु - केतु - चंद्र	
10/05/2027 10:09	
11/06/2027 09:11	
चंद्र	13/05/2027 02:04
मंगल	14/05/2027 22:49
राहु	19/05/2027 17:52
गुरु	24/05/2027 00:08
शनि	29/05/2027 01:35
बुध	02/06/2027 14:15
केतु	04/06/2027 10:59
शुक्र	09/06/2027 18:50
सूर्य	11/06/2027 09:11

राहु - केतु - मंगल	
11/06/2027 09:11	
03/07/2027 18:06	
मंगल	12/06/2027 16:30
राहु	16/06/2027 01:02
गुरु	19/06/2027 00:37
शनि	22/06/2027 13:38
बुध	25/06/2027 17:42
केतु	27/06/2027 01:01
शुक्र	30/06/2027 18:30
सूर्य	01/07/2027 21:21
चंद्र	03/07/2027 18:06

राहु - केतु - राहु	
03/07/2027 18:06	
30/08/2027 06:44	
राहु	12/07/2027 09:12
गुरु	20/07/2027 01:17
शनि	29/07/2027 03:53
बुध	06/08/2027 07:28
केतु	09/08/2027 16:01
शुक्र	19/08/2027 06:07
सूर्य	22/08/2027 03:09
चंद्र	26/08/2027 22:12
मंगल	30/08/2027 06:44

राहु - केतु - गुरु	
30/08/2027 06:44	
20/10/2027 09:59	
गुरु	06/09/2027 02:22
शनि	14/09/2027 04:41
बुध	21/09/2027 10:33
केतु	24/09/2027 10:08
शुक्र	02/10/2027 22:40
सूर्य	05/10/2027 12:02
चंद्र	09/10/2027 18:18
मंगल	12/10/2027 17:54
राहु	20/10/2027 09:59

राहु - केतु - शनि	
20/10/2027 09:59	
20/12/2027 03:20	
शनि	30/10/2027 00:44
बुध	07/11/2027 15:11
केतु	11/11/2027 04:12
शुक्र	21/11/2027 07:05
सूर्य	24/11/2027 07:57
चंद्र	29/11/2027 09:24
मंगल	02/12/2027 22:25
राहु	12/12/2027 01:01
गुरु	20/12/2027 03:20

राहु - केतु - बुध	
20/12/2027 03:20	
12/02/2028 11:16	
बुध	27/12/2027 20:03
केतु	31/12/2027 00:07
शुक्र	09/01/2028 01:26
सूर्य	11/01/2028 18:38
चंद्र	16/01/2028 07:18
मंगल	19/01/2028 11:22
राहु	27/01/2028 14:57
गुरु	03/02/2028 20:49
शनि	12/02/2028 11:16

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - शुक्र - शुक्र	
12/02/2028 11:16	
13/08/2028 02:16	
शुक्र	13/03/2028 21:46
सूर्य	23/03/2028 00:55
चंद्र	07/04/2028 06:10
मंगल	17/04/2028 21:51
राहु	15/05/2028 07:18
गुरु	08/06/2028 15:42
शनि	07/07/2028 13:40
बुध	02/08/2028 10:36
केतु	13/08/2028 02:16

राहु - शुक्र - सूर्य	
13/08/2028 02:16	
06/10/2028 21:10	
सूर्य	15/08/2028 20:01
चंद्र	20/08/2028 09:35
मंगल	23/08/2028 14:18
राहु	31/08/2028 19:32
गुरु	08/09/2028 02:51
शनि	16/09/2028 19:02
बुध	24/09/2028 13:19
केतु	27/09/2028 18:01
शुक्र	06/10/2028 21:10

राहु - शुक्र - चंद्र	
06/10/2028 21:10	
06/01/2029 04:40	
चंद्र	14/10/2028 11:48
मंगल	19/10/2028 19:38
राहु	02/11/2028 12:21
गुरु	14/11/2028 16:33
शनि	29/11/2028 03:33
बुध	12/12/2028 02:00
केतु	17/12/2028 09:51
शुक्र	01/01/2029 15:06
सूर्य	06/01/2029 04:40

राहु - शुक्र - मंगल	
06/01/2029 04:40	
11/03/2029 02:43	
मंगल	09/01/2029 22:09
राहु	19/01/2029 12:16
गुरु	28/01/2029 00:48
शनि	07/02/2029 03:42
बुध	16/02/2029 05:01
केतु	19/02/2029 22:30
शुक्र	02/03/2029 14:11
सूर्य	05/03/2029 18:53
चंद्र	11/03/2029 02:43

राहु - शुक्र - राहु	
11/03/2029 02:43	
22/08/2029 11:25	
राहु	04/04/2029 18:26
गुरु	26/04/2029 16:23
शनि	22/05/2029 16:58
बुध	14/06/2029 23:48
केतु	24/06/2029 13:54
शुक्र	21/07/2029 23:21
सूर्य	30/07/2029 04:35
चंद्र	12/08/2029 21:19
मंगल	22/08/2029 11:25

राहु - शुक्र - गुरु	
22/08/2029 11:25	
15/01/2030 13:49	
गुरु	10/09/2029 22:56
शनि	04/10/2029 02:07
बुध	24/10/2029 18:52
केतु	02/11/2029 07:24
शुक्र	26/11/2029 15:48
सूर्य	03/12/2029 23:07
चंद्र	16/12/2029 03:19
मंगल	24/12/2029 15:52
राहु	15/01/2030 13:49

राहु - शुक्र - शनि	
15/01/2030 13:49	
08/07/2030 01:40	
शनि	12/02/2030 01:06
बुध	08/03/2030 14:59
केतु	18/03/2030 17:52
शुक्र	16/04/2030 15:50
सूर्य	25/04/2030 08:02
चंद्र	09/05/2030 19:01
मंगल	19/05/2030 21:55
राहु	14/06/2030 22:29
गुरु	08/07/2030 01:40

राहु - शुक्र - बुध	
08/07/2030 01:40	
10/12/2030 07:13	
बुध	30/07/2030 01:27
केतु	08/08/2030 02:47
शुक्र	02/09/2030 23:42
सूर्य	10/09/2030 17:59
चंद्र	23/09/2030 16:27
मंगल	02/10/2030 17:46
राहु	26/10/2030 00:36
गुरु	15/11/2030 17:20
शनि	10/12/2030 07:13

राहु - शुक्र - केतु	
10/12/2030 07:13	
12/02/2031 05:16	
केतु	14/12/2030 00:42
शुक्र	24/12/2030 16:23
सूर्य	27/12/2030 21:05
चंद्र	02/01/2031 04:55
मंगल	05/01/2031 22:24
राहु	15/01/2031 12:31
गुरु	24/01/2031 01:03
शनि	03/02/2031 03:57
बुध	12/02/2031 05:16

राहु - सूर्य - सूर्य	
12/02/2031 05:16	
28/02/2031 15:44	
सूर्य	13/02/2031 01:00
चंद्र	14/02/2031 09:52
मंगल	15/02/2031 08:53
राहु	17/02/2031 20:03
गुरु	20/02/2031 00:39
शनि	22/02/2031 15:06
बुध	24/02/2031 22:59
केतु	25/02/2031 22:00
शुक्र	28/02/2031 15:44

राहु - सूर्य - चंद्र	
28/02/2031 15:44	
28/03/2031 01:11	
चंद्र	02/03/2031 22:32
मंगल	04/03/2031 12:53
राहु	08/03/2031 15:30
गुरु	12/03/2031 07:09
शनि	16/03/2031 15:15
बुध	20/03/2031 12:23
केतु	22/03/2031 02:45
शुक्र	26/03/2031 16:19
सूर्य	28/03/2031 01:11

राहु - सूर्य - मंगल	
28/03/2031 01:11	
16/04/2031 05:24	
मंगल	29/03/2031 04:02
राहु	01/04/2031 01:04
गुरु	03/04/2031 14:26
शनि	06/04/2031 15:18
बुध	09/04/2031 08:30
केतु	10/04/2031 11:20
शुक्र	13/04/2031 16:03
सूर्य	14/04/2031 15:03
चंद्र	16/04/2031 05:24

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - सूर्य - राहु	
16/04/2031 05:24	
04/06/2031 12:49	
राहु	23/04/2031 14:55
गुरु	30/04/2031 04:42
शनि	08/05/2031 00:05
बुध	14/05/2031 23:44
केतु	17/05/2031 20:46
शुक्र	26/05/2031 02:00
सूर्य	28/05/2031 13:10
चंद्र	01/06/2031 15:47
मंगल	04/06/2031 12:49

राहु - सूर्य - गुरु	
04/06/2031 12:49	
18/07/2031 08:44	
गुरु	10/06/2031 09:04
शनि	17/06/2031 07:38
बुध	23/06/2031 12:39
केतु	26/06/2031 02:01
शुक्र	03/07/2031 09:20
सूर्य	05/07/2031 13:56
चंद्र	09/07/2031 05:35
मंगल	11/07/2031 18:57
राहु	18/07/2031 08:44

राहु - सूर्य - शनि	
18/07/2031 08:44	
08/09/2031 09:53	
शनि	26/07/2031 14:31
बुध	02/08/2031 23:29
केतु	06/08/2031 00:21
शुक्र	14/08/2031 16:33
सूर्य	17/08/2031 07:00
चंद्र	21/08/2031 15:06
मंगल	24/08/2031 15:58
राहु	01/09/2031 11:20
गुरु	08/09/2031 09:53

राहु - सूर्य - बुध	
08/09/2031 09:53	
24/10/2031 23:33	
बुध	15/09/2031 00:14
केतु	17/09/2031 17:25
शुक्र	25/09/2031 11:42
सूर्य	27/09/2031 19:35
चंद्र	01/10/2031 16:43
मंगल	04/10/2031 09:55
राहु	11/10/2031 09:34
गुरु	17/10/2031 14:36
शनि	24/10/2031 23:33

राहु - सूर्य - केतु	
24/10/2031 23:33	
13/11/2031 03:46	
केतु	26/10/2031 02:24
शुक्र	29/10/2031 07:06
सूर्य	30/10/2031 06:07
चंद्र	31/10/2031 20:28
मंगल	01/11/2031 23:19
राहु	04/11/2031 20:21
गुरु	07/11/2031 09:42
शनि	10/11/2031 10:34
बुध	13/11/2031 03:46

राहु - सूर्य - शुक्र	
13/11/2031 03:46	
06/01/2032 22:40	
शुक्र	22/11/2031 06:55
सूर्य	25/11/2031 00:40
चंद्र	29/11/2031 14:14
मंगल	02/12/2031 18:57
राहु	11/12/2031 00:11
गुरु	18/12/2031 07:30
शनि	26/12/2031 23:41
बुध	03/01/2032 17:58
केतु	06/01/2032 22:40

राहु - चंद्र - चंद्र	
06/01/2032 22:40	
21/02/2032 14:25	
चंद्र	10/01/2032 17:59
मंगल	13/01/2032 09:54
राहु	20/01/2032 06:16
गुरु	26/01/2032 08:22
शनि	02/02/2032 13:51
बुध	09/02/2032 01:05
केतु	11/02/2032 17:00
शुक्र	19/02/2032 07:38
सूर्य	21/02/2032 14:25

राहु - चंद्र - मंगल	
21/02/2032 14:25	
24/03/2032 13:27	
मंगल	23/02/2032 11:10
राहु	28/02/2032 06:13
गुरु	03/03/2032 12:29
शनि	08/03/2032 13:56
बुध	13/03/2032 02:36
केतु	14/03/2032 23:20
शुक्र	20/03/2032 07:11
सूर्य	21/03/2032 21:32
चंद्र	24/03/2032 13:27

राहु - चंद्र - राहु	
24/03/2032 13:27	
14/06/2032 17:48	
राहु	05/04/2032 21:18
गुरु	16/04/2032 20:17
शनि	29/04/2032 20:34
बुध	11/05/2032 11:59
केतु	16/05/2032 07:02
शुक्र	29/05/2032 23:46
सूर्य	03/06/2032 02:23
चंद्र	09/06/2032 22:44
मंगल	14/06/2032 17:48

राहु - चंद्र - गुरु	
14/06/2032 17:48	
26/08/2032 19:00	
गुरु	24/06/2032 11:33
शनि	06/07/2032 01:09
बुध	16/07/2032 09:31
केतु	20/07/2032 15:47
शुक्र	01/08/2032 19:59
सूर्य	05/08/2032 11:39
चंद्र	11/08/2032 13:45
मंगल	15/08/2032 20:01
राहु	26/08/2032 19:00

राहु - चंद्र - शनि	
26/08/2032 19:00	
21/11/2032 12:55	
शनि	09/09/2032 12:38
बुध	21/09/2032 19:34
केतु	26/09/2032 21:01
शुक्र	11/10/2032 08:00
सूर्य	15/10/2032 16:06
चंद्र	22/10/2032 21:36
मंगल	27/10/2032 23:02
राहु	09/11/2032 23:20
गुरु	21/11/2032 12:55

राहु - चंद्र - बुध	
21/11/2032 12:55	
07/02/2033 03:42	
बुध	02/12/2032 12:49
केतु	07/12/2032 01:29
शुक्र	19/12/2032 23:56
सूर्य	23/12/2032 21:05
चंद्र	30/12/2032 08:18
मंगल	03/01/2033 20:58
राहु	15/01/2033 12:23
गुरु	25/01/2033 20:45
शनि	07/02/2033 03:42

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - चंद्र - केतु		राहु - चंद्र - शुक्र		राहु - चंद्र - सूर्य		राहु - मंगल - मंगल	
07/02/2033 03:42		11/03/2033 02:43		10/06/2033 10:13		07/07/2033 19:40	
11/03/2033 02:43		10/06/2033 10:13		07/07/2033 19:40		30/07/2033 04:35	
केतु	09/02/2033 00:26	शुक्र	26/03/2033 07:58	सूर्य	11/06/2033 19:06	मंगल	09/07/2033 02:59
शुक्र	14/02/2033 08:17	सूर्य	30/03/2033 21:33	चंद्र	14/06/2033 01:53	राहु	12/07/2033 11:32
सूर्य	15/02/2033 22:38	चंद्र	07/04/2033 12:10	मंगल	15/06/2033 16:14	गुरु	15/07/2033 11:07
चंद्र	18/02/2033 14:33	मंगल	12/04/2033 20:00	राहु	19/06/2033 18:51	शनि	19/07/2033 00:08
मंगल	20/02/2033 11:17	राहु	26/04/2033 12:44	गुरु	23/06/2033 10:31	बुध	22/07/2033 04:12
राहु	25/02/2033 06:21	गुरु	08/05/2033 16:56	शनि	27/06/2033 18:36	केतु	23/07/2033 11:31
गुरु	01/03/2033 12:37	शनि	23/05/2033 03:55	बुध	01/07/2033 15:45	शुक्र	27/07/2033 05:00
शनि	06/03/2033 14:04	बुध	05/06/2033 02:23	केतु	03/07/2033 06:06	सूर्य	28/07/2033 07:51
बुध	11/03/2033 02:43	केतु	10/06/2033 10:13	शुक्र	07/07/2033 19:40	चंद्र	30/07/2033 04:35

राहु - मंगल - राहु		राहु - मंगल - गुरु		राहु - मंगल - शनि		राहु - मंगल - बुध	
30/07/2033 04:35		25/09/2033 17:14		15/11/2033 20:28		15/01/2034 13:49	
25/09/2033 17:14		15/11/2033 20:28		15/01/2034 13:49		10/03/2034 21:46	
राहु	07/08/2033 19:41	गुरु	02/10/2033 12:52	शनि	25/11/2033 11:13	बुध	23/01/2034 06:33
गुरु	15/08/2033 11:46	शनि	10/10/2033 15:11	बुध	04/12/2033 01:41	केतु	26/01/2034 10:37
शनि	24/08/2033 14:22	बुध	17/10/2033 21:02	केतु	07/12/2033 14:41	शुक्र	04/02/2034 11:56
बुध	01/09/2033 17:58	केतु	20/10/2033 20:38	शुक्र	17/12/2033 17:35	सूर्य	07/02/2034 05:08
केतु	05/09/2033 02:30	शुक्र	29/10/2033 09:10	सूर्य	20/12/2033 18:27	चंद्र	11/02/2034 17:47
शुक्र	14/09/2033 16:37	सूर्य	31/10/2033 22:32	चंद्र	25/12/2033 19:54	मंगल	14/02/2034 21:51
सूर्य	17/09/2033 13:38	चंद्र	05/11/2033 04:48	मंगल	29/12/2033 08:54	राहु	23/02/2034 01:27
चंद्र	22/09/2033 08:42	मंगल	08/11/2033 04:23	राहु	07/01/2034 11:30	गुरु	02/03/2034 07:18
मंगल	25/09/2033 17:14	राहु	15/11/2033 20:28	गुरु	15/01/2034 13:49	शनि	10/03/2034 21:46

राहु - मंगल - केतु		राहु - मंगल - शुक्र		राहु - मंगल - सूर्य		राहु - मंगल - चंद्र	
10/03/2034 21:46		02/04/2034 06:41		05/06/2034 04:44		24/06/2034 08:57	
02/04/2034 06:41		05/06/2034 04:44		24/06/2034 08:57		26/07/2034 07:58	
केतु	12/03/2034 05:05	शुक्र	12/04/2034 22:21	सूर्य	06/06/2034 03:44	चंद्र	27/06/2034 00:52
शुक्र	15/03/2034 22:34	सूर्य	16/04/2034 03:03	चंद्र	07/06/2034 18:06	मंगल	28/06/2034 21:36
सूर्य	17/03/2034 01:25	चंद्र	21/04/2034 10:54	मंगल	08/06/2034 20:56	राहु	03/07/2034 16:40
चंद्र	18/03/2034 22:09	मंगल	25/04/2034 04:23	राहु	11/06/2034 17:58	गुरु	07/07/2034 22:56
मंगल	20/03/2034 05:29	राहु	04/05/2034 18:29	गुरु	14/06/2034 07:20	शनि	13/07/2034 00:23
राहु	23/03/2034 14:01	गुरु	13/05/2034 07:02	शनि	17/06/2034 08:12	बुध	17/07/2034 13:02
गुरु	26/03/2034 13:36	शनि	23/05/2034 09:55	बुध	20/06/2034 01:24	केतु	19/07/2034 09:47
शनि	30/03/2034 02:37	बुध	01/06/2034 11:15	केतु	21/06/2034 04:15	शुक्र	24/07/2034 17:37
बुध	02/04/2034 06:41	केतु	05/06/2034 04:44	शुक्र	24/06/2034 08:57	सूर्य	26/07/2034 07:58

विंशोत्तरी दशा - प्राण

राहु - बुध - राहु - शनि	
18/01/2026 04:17	
09/02/2026 07:10	
शनि	21/01/2026 16:20
बुध	24/01/2026 19:33
केतु	26/01/2026 02:31
शुक्र	29/01/2026 19:00
सूर्य	30/01/2026 21:32
चंद्र	01/02/2026 17:47
मंगल	03/02/2026 00:45
राहु	06/02/2026 08:23
गुरु	09/02/2026 07:10

राहु - बुध - राहु - बुध	
09/02/2026 07:10	
01/03/2026 02:11	
बुध	12/02/2026 02:28
केतु	13/02/2026 06:10
शुक्र	16/02/2026 13:20
सूर्य	17/02/2026 13:05
चंद्र	19/02/2026 04:40
मंगल	20/02/2026 08:23
राहु	23/02/2026 07:38
गुरु	25/02/2026 22:58
शनि	01/03/2026 02:11

राहु - बुध - राहु - केतु	
01/03/2026 02:11	
09/03/2026 05:46	
केतु	01/03/2026 13:35
शुक्र	02/03/2026 22:11
सूर्य	03/03/2026 07:58
चंद्र	04/03/2026 00:16
मंगल	04/03/2026 11:40
राहु	05/03/2026 17:01
गुरु	06/03/2026 19:05
शनि	08/03/2026 02:04
बुध	09/03/2026 05:46

राहु - बुध - राहु - शुक्र	
09/03/2026 05:46	
01/04/2026 12:36	
शुक्र	13/03/2026 02:54
सूर्य	14/03/2026 06:51
चंद्र	16/03/2026 05:25
मंगल	17/03/2026 14:01
राहु	21/03/2026 01:50
गुरु	24/03/2026 04:21
शनि	27/03/2026 20:50
बुध	31/03/2026 04:00
केतु	01/04/2026 12:36

राहु - बुध - राहु - सूर्य	
01/04/2026 12:36	
08/04/2026 12:15	
सूर्य	01/04/2026 20:59
चंद्र	02/04/2026 10:57
मंगल	02/04/2026 20:44
राहु	03/04/2026 21:53
गुरु	04/04/2026 20:14
शनि	05/04/2026 22:47
बुध	06/04/2026 22:32
केतु	07/04/2026 08:19
शुक्र	08/04/2026 12:15

राहु - बुध - राहु - चंद्र	
08/04/2026 12:15	
20/04/2026 03:40	
चंद्र	09/04/2026 11:32
मंगल	10/04/2026 03:50
राहु	11/04/2026 21:45
गुरु	13/04/2026 11:00
शनि	15/04/2026 07:15
बुध	16/04/2026 22:50
केतु	17/04/2026 15:08
शुक्र	19/04/2026 13:42
सूर्य	20/04/2026 03:40

राहु - बुध - राहु - मंगल	
20/04/2026 03:40	
28/04/2026 07:15	
मंगल	20/04/2026 15:05
राहु	21/04/2026 20:25
गुरु	22/04/2026 22:30
शनि	24/04/2026 05:28
बुध	25/04/2026 09:10
केतु	25/04/2026 20:35
शुक्र	27/04/2026 05:11
सूर्य	27/04/2026 14:58
चंद्र	28/04/2026 07:15

राहु - बुध - गुरु - गुरु	
28/04/2026 07:15	
14/05/2026 20:39	
गुरु	30/04/2026 12:15
शनि	03/05/2026 03:10
बुध	05/05/2026 11:28
केतु	06/05/2026 10:39
शुक्र	09/05/2026 04:52
सूर्य	10/05/2026 00:45
चंद्र	11/05/2026 09:52
मंगल	12/05/2026 09:02
राहु	14/05/2026 20:39

राहु - बुध - गुरु - शनि	
14/05/2026 20:39	
03/06/2026 12:33	
शनि	17/05/2026 23:22
बुध	20/05/2026 18:13
केतु	21/05/2026 21:45
शुक्र	25/05/2026 04:24
सूर्य	26/05/2026 04:00
चंद्र	27/05/2026 19:19
मंगल	28/05/2026 22:51
राहु	31/05/2026 21:38
गुरु	03/06/2026 12:33

राहु - बुध - गुरु - बुध	
03/06/2026 12:33	
21/06/2026 02:47	
बुध	06/06/2026 00:22
केतु	07/06/2026 01:00
शुक्र	09/06/2026 23:22
सूर्य	10/06/2026 20:29
चंद्र	12/06/2026 07:40
मंगल	13/06/2026 08:18
राहु	15/06/2026 23:38
गुरु	18/06/2026 07:56
शनि	21/06/2026 02:47

राहु - बुध - गुरु - केतु	
21/06/2026 02:47	
28/06/2026 08:38	
केतु	21/06/2026 12:55
शुक्र	22/06/2026 17:54
सूर्य	23/06/2026 02:36
चंद्र	23/06/2026 17:05
मंगल	24/06/2026 03:13
राहु	25/06/2026 05:18
गुरु	26/06/2026 04:29
शनि	27/06/2026 08:01
बुध	28/06/2026 08:38

राहु - बुध - गुरु - शुक्र	
28/06/2026 08:38	
19/07/2026 01:23	
शुक्र	01/07/2026 19:26
सूर्य	02/07/2026 20:16
चंद्र	04/07/2026 13:40
मंगल	05/07/2026 18:38
राहु	08/07/2026 21:09
गुरु	11/07/2026 15:23
शनि	14/07/2026 22:02
बुध	17/07/2026 20:24
केतु	19/07/2026 01:23

विंशोत्तरी दशा - प्राण

राहु - बुध - गुरु - सूर्य	
19/07/2026 01:23	
25/07/2026 06:24	
सूर्य	19/07/2026 08:50
चंद्र	19/07/2026 21:15
मंगल	20/07/2026 05:57
राहु	21/07/2026 04:18
गुरु	22/07/2026 00:10
शनि	22/07/2026 23:46
बुध	23/07/2026 20:52
केतु	24/07/2026 05:34
शुक्र	25/07/2026 06:24

राहु - बुध - गुरु - चंद्र	
25/07/2026 06:24	
04/08/2026 14:46	
चंद्र	26/07/2026 03:06
मंगल	26/07/2026 17:35
राहु	28/07/2026 06:51
गुरु	29/07/2026 15:58
शनि	31/07/2026 07:17
बुध	01/08/2026 18:28
केतु	02/08/2026 08:58
शुक्र	04/08/2026 02:21
सूर्य	04/08/2026 14:46

राहु - बुध - गुरु - मंगल	
04/08/2026 14:46	
11/08/2026 20:38	
मंगल	05/08/2026 00:55
राहु	06/08/2026 03:00
गुरु	07/08/2026 02:10
शनि	08/08/2026 05:42
बुध	09/08/2026 06:20
केतु	09/08/2026 16:28
शुक्र	10/08/2026 21:27
सूर्य	11/08/2026 06:09
चंद्र	11/08/2026 20:38

राहु - बुध - गुरु - राहु	
11/08/2026 20:38	
30/08/2026 11:42	
राहु	14/08/2026 15:42
गुरु	17/08/2026 03:18
शनि	20/08/2026 02:05
बुध	22/08/2026 17:25
केतु	23/08/2026 19:30
शुक्र	26/08/2026 22:01
सूर्य	27/08/2026 20:22
चंद्र	29/08/2026 09:37
मंगल	30/08/2026 11:42

राहु - बुध - शनि - शनि	
30/08/2026 11:42	
22/09/2026 20:05	
शनि	03/09/2026 04:26
बुध	06/09/2026 11:49
केतु	07/09/2026 20:30
शुक्र	11/09/2026 17:54
सूर्य	12/09/2026 21:55
चंद्र	14/09/2026 20:37
मंगल	16/09/2026 05:18
राहु	19/09/2026 17:22
गुरु	22/09/2026 20:05

राहु - बुध - शनि - बुध	
22/09/2026 20:05	
13/10/2026 17:29	
बुध	25/09/2026 19:07
केतु	27/09/2026 00:22
शुक्र	30/09/2026 11:56
सूर्य	01/10/2026 13:00
चंद्र	03/10/2026 06:47
मंगल	04/10/2026 12:02
राहु	07/10/2026 15:14
गुरु	10/10/2026 10:06
शनि	13/10/2026 17:29

राहु - बुध - शनि - केतु	
13/10/2026 17:29	
22/10/2026 07:56	
केतु	14/10/2026 05:31
शुक्र	15/10/2026 15:56
सूर्य	16/10/2026 02:15
चंद्र	16/10/2026 19:28
मंगल	17/10/2026 07:30
राहु	18/10/2026 14:28
गुरु	19/10/2026 18:00
शनि	21/10/2026 02:41
बुध	22/10/2026 07:56

राहु - बुध - शनि - शुक्र	
22/10/2026 07:56	
15/11/2026 21:49	
शुक्र	26/10/2026 10:15
सूर्य	27/10/2026 15:45
चंद्र	29/10/2026 16:54
मंगल	31/10/2026 03:19
राहु	03/11/2026 19:48
गुरु	07/11/2026 02:27
शनि	10/11/2026 23:50
बुध	14/11/2026 11:24
केतु	15/11/2026 21:49

राहु - बुध - शनि - सूर्य	
15/11/2026 21:49	
23/11/2026 06:47	
सूर्य	16/11/2026 06:40
चंद्र	16/11/2026 21:25
मंगल	17/11/2026 07:44
राहु	18/11/2026 10:17
गुरु	19/11/2026 09:52
शनि	20/11/2026 13:54
बुध	21/11/2026 14:58
केतु	22/11/2026 01:17
शुक्र	23/11/2026 06:47

राहु - बुध - शनि - चंद्र	
23/11/2026 06:47	
05/12/2026 13:43	
चंद्र	24/11/2026 07:21
मंगल	25/11/2026 00:34
राहु	26/11/2026 20:48
गुरु	28/11/2026 12:08
शनि	30/11/2026 10:50
बुध	02/12/2026 04:37
केतु	02/12/2026 21:49
शुक्र	04/12/2026 22:58
सूर्य	05/12/2026 13:43

राहु - बुध - शनि - मंगल	
05/12/2026 13:43	
14/12/2026 04:11	
मंगल	06/12/2026 01:46
राहु	07/12/2026 08:44
गुरु	08/12/2026 12:16
शनि	09/12/2026 20:57
बुध	11/12/2026 02:12
केतु	11/12/2026 14:14
शुक्र	13/12/2026 00:39
सूर्य	13/12/2026 10:58
चंद्र	14/12/2026 04:11

राहु - बुध - शनि - राहु	
14/12/2026 04:11	
05/01/2027 07:04	
राहु	17/12/2026 11:49
गुरु	20/12/2026 10:36
शनि	23/12/2026 22:39
बुध	27/12/2026 01:52
केतु	28/12/2026 08:50
शुक्र	01/01/2027 01:19
सूर्य	02/01/2027 03:51
चंद्र	04/01/2027 00:06
मंगल	05/01/2027 07:04

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 1 वर्ष 7 मास 25 दिन

गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
28/05/1964		21/01/1966		22/01/1980		21/01/1995		21/01/2011	
21/01/1966		22/01/1980		21/01/1995		21/01/2011		22/01/2028	
	00/00/0000	शनि	30/09/1967	केतु	30/12/1981	चंद्र	06/04/1997	बुध	19/07/2013
	00/00/0000	केतु	22/07/1969	चंद्र	25/01/1984	बुध	11/08/1999	शुक्र	09/03/2016
	00/00/0000	चंद्र	28/06/1971	बुध	07/04/1986	शुक्र	03/02/2002	सूर्य	19/10/2017
	00/00/0000	बुध	16/07/1973	शुक्र	04/08/1988	सूर्य	11/08/2003	मंगल	23/07/2019
	00/00/0000	शुक्र	18/09/1975	सूर्य	05/01/1990	मंगल	06/04/2005	गुरु	18/06/2021
	28/05/1964	सूर्य	15/01/1977	मंगल	26/07/1991	गुरु	21/01/2007	शनि	07/07/2023
सूर्य	17/09/1964	मंगल	28/06/1978	गुरु	31/03/1993	शनि	27/12/2008	केतु	17/09/2025
मंगल	21/01/1966	गुरु	22/01/1980	शनि	21/01/1995	केतु	21/01/2011	चंद्र	22/01/2028

शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष	
22/01/2028		21/01/2046		21/01/2057		21/01/2069	
21/01/2046		21/01/2057		21/01/2069		00/00/0000	
शुक्र	07/11/2030	सूर्य	06/02/2047	मंगल	19/04/2058	गुरु	07/07/2070
सूर्य	22/07/2032	मंगल	28/03/2048	गुरु	23/08/2059	शनि	31/01/2072
मंगल	02/06/2034	गुरु	21/06/2049	शनि	02/02/2061	केतु	06/10/2073
गुरु	08/06/2036	शनि	19/10/2050	केतु	23/08/2062	चंद्र	23/07/2075
शनि	11/08/2038	केतु	21/03/2052	चंद्र	19/04/2064	बुध	18/06/2077
केतु	08/12/2040	चंद्र	27/09/2053	बुध	21/01/2066	शुक्र	25/06/2079
चंद्र	03/06/2043	बुध	08/05/2055	शुक्र	02/12/2067	सूर्य	28/05/2080
बुध	21/01/2046	शुक्र	21/01/2057	सूर्य	21/01/2069		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र	
28/05/1964		17/09/1964		21/01/1966		30/09/1967		22/07/1969	
17/09/1964		21/01/1966		30/09/1967		22/07/1969		28/06/1971	
	00/00/0000	मंगल	07/11/1964	शनि	06/04/1966	केतु	25/12/1967	चंद्र	28/10/1969
	00/00/0000	गुरु	01/01/1965	केतु	24/06/1966	चंद्र	25/03/1968	बुध	08/02/1970
	00/00/0000	शनि	01/03/1965	चंद्र	18/09/1966	बुध	30/06/1968	शुक्र	29/05/1970
	00/00/0000	केतु	04/05/1965	बुध	17/12/1966	शुक्र	10/10/1968	सूर्य	03/08/1970
	00/00/0000	चंद्र	10/07/1965	शुक्र	23/03/1967	सूर्य	12/12/1968	मंगल	15/10/1970
	28/05/1964	बुध	20/09/1965	सूर्य	20/05/1967	मंगल	19/02/1969	गुरु	02/01/1971
बुध	09/07/1964	शुक्र	06/12/1965	मंगल	23/07/1967	गुरु	04/05/1969	शनि	29/03/1971
शुक्र	17/09/1964	सूर्य	21/01/1966	गुरु	30/09/1967	शनि	22/07/1969	केतु	28/06/1971

शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल		शनि - गुरु	
28/06/1971		16/07/1973		18/09/1975		15/01/1977		28/06/1978	
16/07/1973		18/09/1975		15/01/1977		28/06/1978		22/01/1980	
बुध	16/10/1971	शुक्र	16/11/1973	सूर्य	03/11/1975	मंगल	10/03/1977	गुरु	31/08/1978
शुक्र	09/02/1972	सूर्य	31/01/1974	मंगल	23/12/1975	गुरु	09/05/1977	शनि	08/11/1978
सूर्य	20/04/1972	मंगल	23/04/1974	गुरु	15/02/1976	शनि	11/07/1977	केतु	21/01/1979
मंगल	06/07/1972	गुरु	21/07/1974	शनि	14/04/1976	केतु	18/09/1977	चंद्र	10/04/1979
गुरु	28/09/1972	शनि	24/10/1974	केतु	15/06/1976	चंद्र	30/11/1977	बुध	03/07/1979
शनि	28/12/1972	केतु	04/02/1975	चंद्र	21/08/1976	बुध	15/02/1978	शुक्र	30/09/1979
केतु	04/04/1973	चंद्र	24/05/1975	बुध	31/10/1976	शुक्र	08/05/1978	सूर्य	23/11/1979
चंद्र	16/07/1973	बुध	18/09/1975	शुक्र	15/01/1977	सूर्य	28/06/1978	मंगल	22/01/1980

केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
22/01/1980		30/12/1981		25/01/1984		07/04/1986		04/08/1988	
30/12/1981		25/01/1984		07/04/1986		04/08/1988		05/01/1990	
केतु	22/04/1980	चंद्र	13/04/1982	बुध	21/05/1984	शुक्र	17/08/1986	सूर्य	22/09/1988
चंद्र	29/07/1980	बुध	02/08/1982	शुक्र	23/09/1984	सूर्य	05/11/1986	मंगल	15/11/1988
बुध	10/11/1980	शुक्र	27/11/1982	सूर्य	08/12/1984	मंगल	01/02/1987	गुरु	12/01/1989
शुक्र	28/02/1981	सूर्य	07/02/1983	मंगल	01/03/1985	गुरु	07/05/1987	शनि	16/03/1989
सूर्य	06/05/1981	मंगल	26/04/1983	गुरु	30/05/1985	शनि	18/08/1987	केतु	22/05/1989
मंगल	18/07/1981	गुरु	20/07/1983	शनि	04/09/1985	केतु	06/12/1987	चंद्र	02/08/1989
गुरु	06/10/1981	शनि	19/10/1983	केतु	17/12/1985	चंद्र	01/04/1988	बुध	17/10/1989
शनि	30/12/1981	केतु	25/01/1984	चंद्र	07/04/1986	बुध	04/08/1988	शुक्र	05/01/1990

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - मंगल	
05/01/1990	
26/07/1991	
मंगल	05/03/1990
गुरु	08/05/1990
शनि	15/07/1990
केतु	26/09/1990
चंद्र	13/12/1990
बुध	06/03/1991
शुक्र	02/06/1991
सूर्य	26/07/1991

केतु - गुरु	
26/07/1991	
31/03/1993	
गुरु	03/10/1991
शनि	16/12/1991
केतु	04/03/1992
चंद्र	28/05/1992
बुध	26/08/1992
शुक्र	29/11/1992
सूर्य	27/01/1993
मंगल	31/03/1993

केतु - शनि	
31/03/1993	
21/01/1995	
शनि	19/06/1993
केतु	12/09/1993
चंद्र	13/12/1993
बुध	20/03/1994
शुक्र	30/06/1994
सूर्य	01/09/1994
मंगल	08/11/1994
गुरु	21/01/1995

चंद्र - चंद्र	
21/01/1995	
06/04/1997	
चंद्र	13/05/1995
बुध	08/09/1995
शुक्र	11/01/1996
सूर्य	27/03/1996
मंगल	19/06/1996
गुरु	17/09/1996
शनि	23/12/1996
केतु	06/04/1997

चंद्र - बुध	
06/04/1997	
11/08/1999	
बुध	10/08/1997
शुक्र	21/12/1997
सूर्य	12/03/1998
मंगल	09/06/1998
गुरु	13/09/1998
शनि	25/12/1998
केतु	15/04/1999
चंद्र	11/08/1999

चंद्र - शुक्र	
11/08/1999	
03/02/2002	
शुक्र	30/12/1999
सूर्य	25/03/2000
मंगल	26/06/2000
गुरु	06/10/2000
शनि	23/01/2001
केतु	21/05/2001
चंद्र	23/09/2001
बुध	03/02/2002

चंद्र - सूर्य	
03/02/2002	
11/08/2003	
सूर्य	27/03/2002
मंगल	24/05/2002
गुरु	25/07/2002
शनि	30/09/2002
केतु	10/12/2002
चंद्र	25/02/2003
बुध	17/05/2003
शुक्र	11/08/2003

चंद्र - मंगल	
11/08/2003	
06/04/2005	
मंगल	12/10/2003
गुरु	19/12/2003
शनि	01/03/2004
केतु	18/05/2004
चंद्र	10/08/2004
बुध	06/11/2004
शुक्र	08/02/2005
सूर्य	06/04/2005

चंद्र - गुरु	
06/04/2005	
21/01/2007	
गुरु	19/06/2005
शनि	06/09/2005
केतु	30/11/2005
चंद्र	28/02/2006
बुध	04/06/2006
शुक्र	14/09/2006
सूर्य	15/11/2006
मंगल	21/01/2007

चंद्र - शनि	
21/01/2007	
27/12/2008	
शनि	16/04/2007
केतु	17/07/2007
चंद्र	22/10/2007
बुध	02/02/2008
शुक्र	22/05/2008
सूर्य	28/07/2008
मंगल	09/10/2008
गुरु	27/12/2008

चंद्र - केतु	
27/12/2008	
21/01/2011	
केतु	03/04/2009
चंद्र	17/07/2009
बुध	04/11/2009
शुक्र	02/03/2010
सूर्य	12/05/2010
मंगल	29/07/2010
गुरु	22/10/2010
शनि	21/01/2011

बुध - बुध	
21/01/2011	
19/07/2013	
बुध	04/06/2011
शुक्र	23/10/2011
सूर्य	17/01/2012
मंगल	20/04/2012
गुरु	31/07/2012
शनि	18/11/2012
केतु	16/03/2013
चंद्र	19/07/2013

बुध - शुक्र	
19/07/2013	
09/03/2016	
शुक्र	16/12/2013
सूर्य	17/03/2014
मंगल	25/06/2014
गुरु	11/10/2014
शनि	04/02/2015
केतु	09/06/2015
चंद्र	20/10/2015
बुध	09/03/2016

बुध - सूर्य	
09/03/2016	
19/10/2017	
सूर्य	04/05/2016
मंगल	04/07/2016
गुरु	08/09/2016
शनि	18/11/2016
केतु	02/02/2017
चंद्र	24/04/2017
बुध	19/07/2017
शुक्र	19/10/2017

बुध - मंगल	
19/10/2017	
23/07/2019	
मंगल	24/12/2017
गुरु	06/03/2018
शनि	23/05/2018
केतु	14/08/2018
चंद्र	10/11/2018
बुध	12/02/2019
शुक्र	23/05/2019
सूर्य	23/07/2019

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र	
23/07/2019		18/06/2021		07/07/2023		17/09/2025		22/01/2028	
18/06/2021		07/07/2023		17/09/2025		22/01/2028		07/11/2030	
गुरु	09/10/2019	शनि	16/09/2021	केतु	19/10/2023	चंद्र	13/01/2026	शुक्र	28/06/2028
शनि	01/01/2020	केतु	22/12/2021	चंद्र	07/02/2024	बुध	19/05/2026	सूर्य	03/10/2028
केतु	31/03/2020	चंद्र	05/04/2022	बुध	03/06/2024	शुक्र	29/09/2026	मंगल	16/01/2029
चंद्र	05/07/2020	बुध	23/07/2022	शुक्र	06/10/2024	सूर्य	19/12/2026	गुरु	11/05/2029
बुध	15/10/2020	शुक्र	17/11/2022	सूर्य	21/12/2024	मंगल	18/03/2027	शनि	11/09/2029
शुक्र	31/01/2021	सूर्य	27/01/2023	मंगल	14/03/2025	गुरु	22/06/2027	केतु	21/01/2030
सूर्य	07/04/2021	मंगल	14/04/2023	गुरु	12/06/2025	शनि	03/10/2027	चंद्र	10/06/2030
मंगल	18/06/2021	गुरु	07/07/2023	शनि	17/09/2025	केतु	22/01/2028	बुध	07/11/2030

शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - केतु	
07/11/2030		22/07/2032		02/06/2034		08/06/2036		11/08/2038	
22/07/2032		02/06/2034		08/06/2036		11/08/2038		08/12/2040	
सूर्य	05/01/2031	मंगल	01/10/2032	गुरु	24/08/2034	शनि	12/09/2036	केतु	29/11/2038
मंगल	10/03/2031	गुरु	16/12/2032	शनि	21/11/2034	केतु	24/12/2036	चंद्र	26/03/2039
गुरु	19/05/2031	शनि	08/03/2033	केतु	24/02/2035	चंद्र	12/04/2037	बुध	28/07/2039
शनि	03/08/2031	केतु	04/06/2033	चंद्र	06/06/2035	बुध	06/08/2037	शुक्र	07/12/2039
केतु	22/10/2031	चंद्र	06/09/2033	बुध	22/09/2035	शुक्र	07/12/2037	सूर्य	26/02/2040
चंद्र	16/01/2032	बुध	14/12/2033	शुक्र	14/01/2036	सूर्य	21/02/2038	मंगल	24/05/2040
बुध	16/04/2032	शुक्र	30/03/2034	सूर्य	24/03/2036	मंगल	14/05/2038	गुरु	27/08/2040
शुक्र	22/07/2032	सूर्य	02/06/2034	मंगल	08/06/2036	गुरु	11/08/2038	शनि	08/12/2040

शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु	
08/12/2040		03/06/2043		21/01/2046		06/02/2047		28/03/2048	
03/06/2043		21/01/2046		06/02/2047		28/03/2048		21/06/2049	
चंद्र	12/04/2041	बुध	22/10/2043	सूर्य	26/02/2046	मंगल	21/03/2047	गुरु	17/05/2048
बुध	23/08/2041	शुक्र	19/03/2044	मंगल	07/04/2046	गुरु	07/05/2047	शनि	11/07/2048
शुक्र	10/01/2042	सूर्य	19/06/2044	गुरु	19/05/2046	शनि	26/06/2047	केतु	07/09/2048
सूर्य	06/04/2042	मंगल	26/09/2044	शनि	04/07/2046	केतु	19/08/2047	चंद्र	08/11/2048
मंगल	09/07/2042	गुरु	12/01/2045	केतु	23/08/2046	चंद्र	15/10/2047	बुध	13/01/2049
गुरु	19/10/2042	शनि	09/05/2045	चंद्र	14/10/2046	बुध	15/12/2047	शुक्र	24/03/2049
शनि	05/02/2043	केतु	10/09/2045	बुध	09/12/2046	शुक्र	17/02/2048	सूर्य	05/05/2049
केतु	03/06/2043	चंद्र	21/01/2046	शुक्र	06/02/2047	सूर्य	28/03/2048	मंगल	21/06/2049

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र	
21/06/2049		19/10/2050		21/03/2052		27/09/2053		08/05/2055	
19/10/2050		21/03/2052		27/09/2053		08/05/2055		21/01/2057	
शनि	19/08/2049	केतु	25/12/2050	चंद्र	06/06/2052	बुध	22/12/2053	शुक्र	13/08/2055
केतु	20/10/2049	चंद्र	07/03/2051	बुध	26/08/2052	शुक्र	23/03/2054	सूर्य	11/10/2055
चंद्र	26/12/2049	बुध	22/05/2051	शुक्र	20/11/2052	सूर्य	18/05/2054	मंगल	15/12/2055
बुध	07/03/2050	शुक्र	10/08/2051	सूर्य	12/01/2053	मंगल	18/07/2054	गुरु	23/02/2056
शुक्र	21/05/2050	सूर्य	29/09/2051	मंगल	10/03/2053	गुरु	22/09/2054	शनि	08/05/2056
सूर्य	06/07/2050	मंगल	22/11/2051	गुरु	11/05/2053	शनि	02/12/2054	केतु	28/07/2056
मंगल	26/08/2050	गुरु	19/01/2052	शनि	17/07/2053	केतु	16/02/2055	चंद्र	21/10/2056
गुरु	19/10/2050	शनि	21/03/2052	केतु	27/09/2053	चंद्र	08/05/2055	बुध	21/01/2057

मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु		मंगल - चंद्र	
21/01/2057		19/04/2058		23/08/2059		02/02/2061		23/08/2062	
19/04/2058		23/08/2059		02/02/2061		23/08/2062		19/04/2064	
मंगल	09/03/2057	गुरु	13/06/2058	शनि	26/10/2059	केतु	17/04/2061	चंद्र	15/11/2062
गुरु	29/04/2057	शनि	12/08/2058	केतु	03/01/2060	चंद्र	04/07/2061	बुध	11/02/2063
शनि	22/06/2057	केतु	14/10/2058	चंद्र	16/03/2060	बुध	25/09/2061	शुक्र	16/05/2063
केतु	20/08/2057	चंद्र	21/12/2058	बुध	01/06/2060	शुक्र	22/12/2061	सूर्य	12/07/2063
चंद्र	21/10/2057	बुध	03/03/2059	शुक्र	22/08/2060	सूर्य	14/02/2062	मंगल	13/09/2063
बुध	27/12/2057	शुक्र	18/05/2059	सूर्य	11/10/2060	मंगल	13/04/2062	गुरु	20/11/2063
शुक्र	07/03/2058	सूर्य	04/07/2059	मंगल	05/12/2060	गुरु	16/06/2062	शनि	01/02/2064
सूर्य	19/04/2058	मंगल	23/08/2059	गुरु	02/02/2061	शनि	23/08/2062	केतु	19/04/2064

मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
19/04/2064		21/01/2066		02/12/2067		21/01/2069		07/07/2070	
21/01/2066		02/12/2067		21/01/2069		07/07/2070		31/01/2072	
बुध	22/07/2064	शुक्र	07/05/2066	सूर्य	11/01/2068	गुरु	21/03/2069	शनि	14/09/2070
शुक्र	30/10/2064	सूर्य	10/07/2066	मंगल	23/02/2068	शनि	25/05/2069	केतु	27/11/2070
सूर्य	29/12/2064	मंगल	18/09/2066	गुरु	09/04/2068	केतु	02/08/2069	चंद्र	14/02/2071
मंगल	06/03/2065	गुरु	04/12/2066	शनि	29/05/2068	चंद्र	14/10/2069	बुध	09/05/2071
गुरु	17/05/2065	शनि	24/02/2067	केतु	22/07/2068	बुध	31/12/2069	शुक्र	06/08/2071
शनि	02/08/2065	केतु	23/05/2067	चंद्र	17/09/2068	शुक्र	23/03/2070	सूर्य	30/09/2071
केतु	25/10/2065	चंद्र	25/08/2067	बुध	17/11/2068	सूर्य	13/05/2070	मंगल	28/11/2071
चंद्र	21/01/2066	बुध	02/12/2067	शुक्र	21/01/2069	मंगल	07/07/2070	गुरु	31/01/2072

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 1 वर्ष 5 मास 8 दिन

बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष	
28/05/1964		05/11/1965		06/07/1970		05/11/1983		05/11/1987	
05/11/1965		06/07/1970		05/11/1983		05/11/1987		06/07/1994	
00/00/0000		केतु	12/02/1966	शुक्र	25/09/1972	सूर्य	17/01/1984	चंद्र	26/05/1988
00/00/0000		शुक्र	23/11/1966	सूर्य	26/05/1973	चंद्र	18/05/1984	मंगल	15/10/1988
00/00/0000		सूर्य	16/02/1967	चंद्र	06/07/1974	मंगल	11/08/1984	राहु	15/10/1989
00/00/0000		चंद्र	09/07/1967	मंगल	16/04/1975	राहु	18/03/1985	गुरु	05/09/1990
00/00/0000		मंगल	16/10/1967	राहु	16/04/1977	गुरु	29/09/1985	शनि	26/09/1991
00/00/0000		राहु	28/06/1968	गुरु	25/01/1979	शनि	19/05/1986	बुध	05/09/1992
00/00/0000		गुरु	10/02/1969	शनि	06/03/1981	बुध	12/12/1986	केतु	25/01/1993
28/05/1964		शनि	07/11/1969	बुध	25/01/1983	केतु	07/03/1987	शुक्र	06/03/1994
शनि	05/11/1965	बुध	06/07/1970	केतु	05/11/1983	शुक्र	05/11/1987	सूर्य	06/07/1994

मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष	
06/07/1994		07/03/1999		07/03/2011		05/11/2021		06/07/2034	
07/03/1999		07/03/2011		05/11/2021		06/07/2034		28/05/2044	
मंगल	14/10/1994	राहु	23/12/2000	गुरु	07/08/2012	शनि	07/11/2023	बुध	13/02/2036
राहु	26/06/1995	गुरु	31/07/2002	शनि	16/04/2014	बुध	24/08/2025	केतु	11/10/2036
गुरु	09/02/1996	शनि	24/06/2004	बुध	20/10/2015	केतु	21/05/2026	शुक्र	01/09/2038
शनि	04/11/1996	बुध	06/03/2006	केतु	03/06/2016	शुक्र	30/06/2028	सूर्य	27/03/2039
बुध	04/07/1997	केतु	17/11/2006	शुक्र	15/03/2018	सूर्य	16/02/2029	चंद्र	06/03/2040
केतु	11/10/1997	शुक्र	17/11/2008	सूर्य	25/09/2018	चंद्र	09/03/2030	मंगल	02/11/2040
शुक्र	22/07/1998	सूर्य	24/06/2009	चंद्र	16/08/2019	मंगल	03/12/2030	राहु	16/07/2042
सूर्य	16/10/1998	चंद्र	24/06/2010	मंगल	30/03/2020	राहु	27/10/2032	गुरु	19/01/2044
चंद्र	07/03/1999	मंगल	07/03/2011	राहु	05/11/2021	गुरु	06/07/2034	शनि	28/05/2044

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
28/05/1964		05/11/1965		12/02/1966		23/11/1966		16/02/1967	
05/11/1965		12/02/1966		23/11/1966		16/02/1967		09/07/1967	
	28/05/1964	केतु	11/11/1965	शुक्र	01/04/1966	सूर्य	28/11/1966	चंद्र	28/02/1967
बुध	03/08/1964	शुक्र	27/11/1965	सूर्य	15/04/1966	चंद्र	05/12/1966	मंगल	09/03/1967
केतु	10/09/1964	सूर्य	02/12/1965	चंद्र	08/05/1966	मंगल	10/12/1966	राहु	30/03/1967
शुक्र	28/12/1964	चंद्र	10/12/1965	मंगल	25/05/1966	राहु	22/12/1966	गुरु	18/04/1967
सूर्य	30/01/1965	मंगल	16/12/1965	राहु	07/07/1966	गुरु	03/01/1967	शनि	10/05/1967
चंद्र	26/03/1965	राहु	31/12/1965	गुरु	13/08/1966	शनि	16/01/1967	बुध	30/05/1967
मंगल	03/05/1965	गुरु	13/01/1966	शनि	27/09/1966	बुध	28/01/1967	केतु	08/06/1967
राहु	09/08/1965	शनि	29/01/1966	बुध	07/11/1966	केतु	02/02/1967	शुक्र	01/07/1967
गुरु	05/11/1965	बुध	12/02/1966	केतु	23/11/1966	शुक्र	16/02/1967	सूर्य	09/07/1967

केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
09/07/1967		16/10/1967		28/06/1968		10/02/1969		07/11/1969	
16/10/1967		28/06/1968		10/02/1969		07/11/1969		06/07/1970	
मंगल	14/07/1967	राहु	23/11/1967	गुरु	28/07/1968	शनि	25/03/1969	बुध	11/12/1969
राहु	29/07/1967	गुरु	27/12/1967	शनि	02/09/1968	बुध	02/05/1969	केतु	25/12/1969
गुरु	11/08/1967	शनि	06/02/1968	बुध	04/10/1968	केतु	18/05/1969	शुक्र	03/02/1970
शनि	27/08/1967	बुध	13/03/1968	केतु	17/10/1968	शुक्र	02/07/1969	सूर्य	15/02/1970
बुध	10/09/1967	केतु	28/03/1968	शुक्र	24/11/1968	सूर्य	15/07/1969	चंद्र	07/03/1970
केतु	16/09/1967	शुक्र	10/05/1968	सूर्य	06/12/1968	चंद्र	07/08/1969	मंगल	22/03/1970
शुक्र	03/10/1967	सूर्य	22/05/1968	चंद्र	25/12/1968	मंगल	22/08/1969	राहु	27/04/1970
सूर्य	08/10/1967	चंद्र	13/06/1968	मंगल	07/01/1969	राहु	02/10/1969	गुरु	29/05/1970
चंद्र	16/10/1967	मंगल	28/06/1968	राहु	10/02/1969	गुरु	07/11/1969	शनि	06/07/1970

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
06/07/1970		25/09/1972		26/05/1973		06/07/1974		16/04/1975	
25/09/1972		26/05/1973		06/07/1974		16/04/1975		16/04/1977	
शुक्र	19/11/1970	सूर्य	07/10/1972	चंद्र	29/06/1973	मंगल	23/07/1974	राहु	04/08/1975
सूर्य	29/12/1970	चंद्र	27/10/1972	मंगल	23/07/1973	राहु	03/09/1974	गुरु	09/11/1975
चंद्र	07/03/1971	मंगल	11/11/1972	राहु	22/09/1973	गुरु	11/10/1974	शनि	04/03/1976
मंगल	23/04/1971	राहु	17/12/1972	गुरु	15/11/1973	शनि	25/11/1974	बुध	15/06/1976
राहु	23/08/1971	गुरु	19/01/1973	शनि	18/01/1974	बुध	05/01/1975	केतु	28/07/1976
गुरु	09/12/1971	शनि	26/02/1973	बुध	17/03/1974	केतु	21/01/1975	शुक्र	27/11/1976
शनि	16/04/1972	बुध	02/04/1973	केतु	09/04/1974	शुक्र	09/03/1975	सूर्य	02/01/1977
बुध	09/08/1972	केतु	16/04/1973	शुक्र	16/06/1974	सूर्य	24/03/1975	चंद्र	04/03/1977
केतु	25/09/1972	शुक्र	26/05/1973	सूर्य	06/07/1974	चंद्र	16/04/1975	मंगल	16/04/1977

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
16/04/1977		25/01/1979		06/03/1981		25/01/1983		05/11/1983	
25/01/1979		06/03/1981		25/01/1983		05/11/1983		17/01/1984	
गुरु	11/07/1977	शनि	27/05/1979	बुध	12/06/1981	केतु	11/02/1983	सूर्य	09/11/1983
शनि	22/10/1977	बुध	13/09/1979	केतु	22/07/1981	शुक्र	30/03/1983	चंद्र	15/11/1983
बुध	22/01/1978	केतु	28/10/1979	शुक्र	14/11/1981	सूर्य	13/04/1983	मंगल	19/11/1983
केतु	01/03/1978	शुक्र	05/03/1980	सूर्य	19/12/1981	चंद्र	07/05/1983	राहु	30/11/1983
शुक्र	17/06/1978	सूर्य	13/04/1980	चंद्र	14/02/1982	मंगल	24/05/1983	गुरु	10/12/1983
सूर्य	20/07/1978	चंद्र	16/06/1980	मंगल	26/03/1982	राहु	05/07/1983	शनि	21/12/1983
चंद्र	12/09/1978	मंगल	31/07/1980	राहु	08/07/1982	गुरु	12/08/1983	बुध	01/01/1984
मंगल	20/10/1978	राहु	23/11/1980	गुरु	08/10/1982	शनि	26/09/1983	केतु	05/01/1984
राहु	25/01/1979	गुरु	06/03/1981	शनि	25/01/1983	बुध	05/11/1983	शुक्र	17/01/1984

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
17/01/1984		18/05/1984		11/08/1984		18/03/1985		29/09/1985	
18/05/1984		11/08/1984		18/03/1985		29/09/1985		19/05/1986	
चंद्र	27/01/1984	मंगल	23/05/1984	राहु	13/09/1984	गुरु	13/04/1985	शनि	05/11/1985
मंगल	04/02/1984	राहु	05/06/1984	गुरु	12/10/1984	शनि	14/05/1985	बुध	08/12/1985
राहु	22/02/1984	गुरु	16/06/1984	शनि	16/11/1984	बुध	11/06/1985	केतु	21/12/1985
गुरु	09/03/1984	शनि	30/06/1984	बुध	17/12/1984	केतु	22/06/1985	शुक्र	29/01/1986
शनि	28/03/1984	बुध	12/07/1984	केतु	30/12/1984	शुक्र	25/07/1985	सूर्य	09/02/1986
बुध	15/04/1984	केतु	17/07/1984	शुक्र	04/02/1985	सूर्य	03/08/1985	चंद्र	28/02/1986
केतु	22/04/1984	शुक्र	31/07/1984	सूर्य	15/02/1985	चंद्र	20/08/1985	मंगल	14/03/1986
शुक्र	12/05/1984	सूर्य	04/08/1984	चंद्र	06/03/1985	मंगल	31/08/1985	राहु	18/04/1986
सूर्य	18/05/1984	चंद्र	11/08/1984	मंगल	18/03/1985	राहु	29/09/1985	गुरु	19/05/1986

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
19/05/1986		12/12/1986		07/03/1987		05/11/1987		26/05/1988	
12/12/1986		07/03/1987		05/11/1987		26/05/1988		15/10/1988	
बुध	17/06/1986	केतु	16/12/1986	शुक्र	16/04/1987	चंद्र	22/11/1987	मंगल	03/06/1988
केतु	29/06/1986	शुक्र	31/12/1986	सूर्य	28/04/1987	मंगल	04/12/1987	राहु	25/06/1988
शुक्र	02/08/1986	सूर्य	04/01/1987	चंद्र	19/05/1987	राहु	03/01/1988	गुरु	14/07/1988
सूर्य	13/08/1986	चंद्र	11/01/1987	मंगल	02/06/1987	गुरु	30/01/1988	शनि	05/08/1988
चंद्र	30/08/1986	मंगल	16/01/1987	राहु	09/07/1987	शनि	03/03/1988	बुध	25/08/1988
मंगल	11/09/1986	राहु	29/01/1987	गुरु	10/08/1987	बुध	31/03/1988	केतु	03/09/1988
राहु	12/10/1986	गुरु	09/02/1987	शनि	18/09/1987	केतु	12/04/1988	शुक्र	26/09/1988
गुरु	09/11/1986	शनि	23/02/1987	बुध	22/10/1987	शुक्र	16/05/1988	सूर्य	03/10/1988
शनि	12/12/1986	बुध	07/03/1987	केतु	05/11/1987	सूर्य	26/05/1988	चंद्र	15/10/1988

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
15/10/1988		15/10/1989		05/09/1990		26/09/1991		05/09/1992	
15/10/1989		05/09/1990		26/09/1991		05/09/1992		25/01/1993	
राहु	09/12/1988	गुरु	28/11/1989	शनि	05/11/1990	बुध	14/11/1991	केतु	13/09/1992
गुरु	27/01/1989	शनि	18/01/1990	बुध	30/12/1990	केतु	04/12/1991	शुक्र	07/10/1992
शनि	26/03/1989	बुध	05/03/1990	केतु	21/01/1991	शुक्र	30/01/1992	सूर्य	14/10/1992
बुध	16/05/1989	केतु	24/03/1990	शुक्र	27/03/1991	सूर्य	16/02/1992	चंद्र	26/10/1992
केतु	07/06/1989	शुक्र	17/05/1990	सूर्य	15/04/1991	चंद्र	16/03/1992	मंगल	03/11/1992
शुक्र	06/08/1989	सूर्य	02/06/1990	चंद्र	17/05/1991	मंगल	05/04/1992	राहु	24/11/1992
सूर्य	25/08/1989	चंद्र	29/06/1990	मंगल	08/06/1991	राहु	27/05/1992	गुरु	13/12/1992
चंद्र	24/09/1989	मंगल	18/07/1990	राहु	05/08/1991	गुरु	12/07/1992	शनि	05/01/1993
मंगल	15/10/1989	राहु	05/09/1990	गुरु	26/09/1991	शनि	05/09/1992	बुध	25/01/1993

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
25/01/1993		06/03/1994		06/07/1994		14/10/1994		26/06/1995	
06/03/1994		06/07/1994		14/10/1994		26/06/1995		09/02/1996	
शुक्र	02/04/1993	सूर्य	13/03/1994	मंगल	12/07/1994	राहु	21/11/1994	गुरु	27/07/1995
सूर्य	23/04/1993	चंद्र	23/03/1994	राहु	27/07/1994	गुरु	25/12/1994	शनि	01/09/1995
चंद्र	26/05/1993	मंगल	30/03/1994	गुरु	09/08/1994	शनि	04/02/1995	बुध	03/10/1995
मंगल	19/06/1993	राहु	17/04/1994	शनि	25/08/1994	बुध	12/03/1995	केतु	16/10/1995
राहु	19/08/1993	गुरु	03/05/1994	बुध	08/09/1994	केतु	27/03/1995	शुक्र	23/11/1995
गुरु	12/10/1993	शनि	23/05/1994	केतु	14/09/1994	शुक्र	08/05/1995	सूर्य	04/12/1995
शनि	15/12/1993	बुध	09/06/1994	शुक्र	30/09/1994	सूर्य	21/05/1995	चंद्र	23/12/1995
बुध	11/02/1994	केतु	16/06/1994	सूर्य	05/10/1994	चंद्र	11/06/1995	मंगल	06/01/1996
केतु	06/03/1994	शुक्र	06/07/1994	चंद्र	14/10/1994	मंगल	26/06/1995	राहु	09/02/1996

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
09/02/1996		04/11/1996		04/07/1997		11/10/1997		22/07/1998	
04/11/1996		04/07/1997		11/10/1997		22/07/1998		16/10/1998	
शनि	22/03/1996	बुध	09/12/1996	केतु	10/07/1997	शुक्र	28/11/1997	सूर्य	27/07/1998
बुध	30/04/1996	केतु	23/12/1996	शुक्र	26/07/1997	सूर्य	12/12/1997	चंद्र	03/08/1998
केतु	15/05/1996	शुक्र	01/02/1997	सूर्य	31/07/1997	चंद्र	05/01/1998	मंगल	08/08/1998
शुक्र	29/06/1996	सूर्य	13/02/1997	चंद्र	09/08/1997	मंगल	21/01/1998	राहु	21/08/1998
सूर्य	13/07/1996	चंद्र	05/03/1997	मंगल	14/08/1997	राहु	05/03/1998	गुरु	01/09/1998
चंद्र	04/08/1996	मंगल	19/03/1997	राहु	29/08/1997	गुरु	12/04/1998	शनि	14/09/1998
मंगल	20/08/1996	राहु	25/04/1997	गुरु	12/09/1997	शनि	27/05/1998	बुध	27/09/1998
राहु	29/09/1996	गुरु	27/05/1997	शनि	27/09/1997	बुध	06/07/1998	केतु	01/10/1998
गुरु	04/11/1996	शनि	04/07/1997	बुध	11/10/1997	केतु	22/07/1998	शुक्र	16/10/1998

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
16/10/1998		07/03/1999		23/12/2000		31/07/2002		24/06/2004	
07/03/1999		23/12/2000		31/07/2002		24/06/2004		06/03/2006	
चंद्र	28/10/1998	राहु	13/06/1999	गुरु	11/03/2001	शनि	17/11/2002	बुध	20/09/2004
मंगल	05/11/1998	गुरु	09/09/1999	शनि	12/06/2001	बुध	24/02/2003	केतु	26/10/2004
राहु	26/11/1998	शनि	22/12/1999	बुध	02/09/2001	केतु	05/04/2003	शुक्र	06/02/2005
गुरु	15/12/1998	बुध	24/03/2000	केतु	07/10/2001	शुक्र	30/07/2003	सूर्य	09/03/2005
शनि	07/01/1999	केतु	02/05/2000	शुक्र	12/01/2002	सूर्य	03/09/2003	चंद्र	30/04/2005
बुध	27/01/1999	शुक्र	19/08/2000	सूर्य	10/02/2002	चंद्र	30/10/2003	मंगल	05/06/2005
केतु	04/02/1999	सूर्य	21/09/2000	चंद्र	31/03/2002	मंगल	10/12/2003	राहु	06/09/2005
शुक्र	28/02/1999	चंद्र	15/11/2000	मंगल	04/05/2002	राहु	23/03/2004	गुरु	28/11/2005
सूर्य	07/03/1999	मंगल	23/12/2000	राहु	31/07/2002	गुरु	24/06/2004	शनि	06/03/2006

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
06/03/2006		17/11/2006		17/11/2008		24/06/2009		24/06/2010	
17/11/2006		17/11/2008		24/06/2009		24/06/2010		07/03/2011	
केतु	21/03/2006	शुक्र	19/03/2007	सूर्य	28/11/2008	चंद्र	24/07/2009	मंगल	09/07/2010
शुक्र	03/05/2006	सूर्य	24/04/2007	चंद्र	16/12/2008	मंगल	15/08/2009	राहु	16/08/2010
सूर्य	16/05/2006	चंद्र	24/06/2007	मंगल	29/12/2008	राहु	08/10/2009	गुरु	19/09/2010
चंद्र	06/06/2006	मंगल	06/08/2007	राहु	31/01/2009	गुरु	26/11/2009	शनि	30/10/2010
मंगल	21/06/2006	राहु	23/11/2007	गुरु	01/03/2009	शनि	23/01/2010	बुध	05/12/2010
राहु	29/07/2006	गुरु	29/02/2008	शनि	04/04/2009	बुध	16/03/2010	केतु	20/12/2010
गुरु	01/09/2006	शनि	24/06/2008	बुध	05/05/2009	केतु	06/04/2010	शुक्र	01/02/2011
शनि	12/10/2006	बुध	05/10/2008	केतु	18/05/2009	शुक्र	06/06/2010	सूर्य	13/02/2011
बुध	17/11/2006	केतु	17/11/2008	शुक्र	24/06/2009	सूर्य	24/06/2010	चंद्र	07/03/2011

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
07/03/2011		07/08/2012		16/04/2014		20/10/2015		03/06/2016	
07/08/2012		16/04/2014		20/10/2015		03/06/2016		15/03/2018	
गुरु	15/05/2011	शनि	13/11/2012	बुध	03/07/2014	केतु	02/11/2015	शुक्र	19/09/2016
शनि	05/08/2011	बुध	08/02/2013	केतु	04/08/2014	शुक्र	10/12/2015	सूर्य	22/10/2016
बुध	18/10/2011	केतु	16/03/2013	शुक्र	04/11/2014	सूर्य	21/12/2015	चंद्र	15/12/2016
केतु	17/11/2011	शुक्र	27/06/2013	सूर्य	02/12/2014	चंद्र	09/01/2016	मंगल	22/01/2017
शुक्र	12/02/2012	सूर्य	28/07/2013	चंद्र	17/01/2015	मंगल	23/01/2016	राहु	29/04/2017
सूर्य	09/03/2012	चंद्र	17/09/2013	मंगल	18/02/2015	राहु	26/02/2016	गुरु	25/07/2017
चंद्र	21/04/2012	मंगल	23/10/2013	राहु	12/05/2015	गुरु	27/03/2016	शनि	05/11/2017
मंगल	21/05/2012	राहु	24/01/2014	गुरु	25/07/2015	शनि	02/05/2016	बुध	05/02/2018
राहु	07/08/2012	गुरु	16/04/2014	शनि	20/10/2015	बुध	03/06/2016	केतु	15/03/2018

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
15/03/2018		25/09/2018		16/08/2019		30/03/2020		05/11/2021	
25/09/2018		16/08/2019		30/03/2020		05/11/2021		07/11/2023	
सूर्य	24/03/2018	चंद्र	22/10/2018	मंगल	29/08/2019	राहु	26/06/2020	शनि	01/03/2022
चंद्र	10/04/2018	मंगल	10/11/2018	राहु	02/10/2019	गुरु	12/09/2020	बुध	12/06/2022
मंगल	21/04/2018	राहु	29/12/2018	गुरु	02/11/2019	शनि	13/12/2020	केतु	25/07/2022
राहु	20/05/2018	गुरु	10/02/2019	शनि	08/12/2019	बुध	06/03/2021	शुक्र	24/11/2022
गुरु	15/06/2018	शनि	03/04/2019	बुध	09/01/2020	केतु	09/04/2021	सूर्य	31/12/2022
शनि	16/07/2018	बुध	19/05/2019	केतु	22/01/2020	शुक्र	16/07/2021	चंद्र	02/03/2023
बुध	13/08/2018	केतु	07/06/2019	शुक्र	29/02/2020	सूर्य	14/08/2021	मंगल	14/04/2023
केतु	24/08/2018	शुक्र	31/07/2019	सूर्य	11/03/2020	चंद्र	02/10/2021	राहु	02/08/2023
शुक्र	25/09/2018	सूर्य	16/08/2019	चंद्र	30/03/2020	मंगल	05/11/2021	गुरु	07/11/2023

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
07/11/2023		24/08/2025		21/05/2026		30/06/2028		16/02/2029	
24/08/2025		21/05/2026		30/06/2028		16/02/2029		09/03/2030	
बुध	08/02/2024	केतु	08/09/2025	शुक्र	26/09/2026	सूर्य	11/07/2028	चंद्र	20/03/2029
केतु	17/03/2024	शुक्र	23/10/2025	सूर्य	04/11/2026	चंद्र	30/07/2028	मंगल	12/04/2029
शुक्र	05/07/2024	सूर्य	06/11/2025	चंद्र	07/01/2027	मंगल	13/08/2028	राहु	08/06/2029
सूर्य	06/08/2024	चंद्र	28/11/2025	मंगल	21/02/2027	राहु	17/09/2028	गुरु	30/07/2029
चंद्र	30/09/2024	मंगल	14/12/2025	राहु	17/06/2027	गुरु	18/10/2028	शनि	29/09/2029
मंगल	07/11/2024	राहु	24/01/2026	गुरु	27/09/2027	शनि	23/11/2028	बुध	22/11/2029
राहु	14/02/2025	गुरु	01/03/2026	शनि	27/01/2028	बुध	26/12/2028	केतु	15/12/2029
गुरु	12/05/2025	शनि	12/04/2026	बुध	16/05/2028	केतु	08/01/2029	शुक्र	17/02/2030
शनि	24/08/2025	बुध	21/05/2026	केतु	30/06/2028	शुक्र	16/02/2029	सूर्य	09/03/2030

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
09/03/2030		03/12/2030		27/10/2032		06/07/2034		13/02/2036	
03/12/2030		27/10/2032		06/07/2034		13/02/2036		11/10/2036	
मंगल	24/03/2030	राहु	17/03/2031	गुरु	18/01/2033	बुध	27/09/2034	केतु	27/02/2036
राहु	04/05/2030	गुरु	18/06/2031	शनि	25/04/2033	केतु	01/11/2034	शुक्र	07/04/2036
गुरु	09/06/2030	शनि	06/10/2031	बुध	22/07/2033	शुक्र	06/02/2035	सूर्य	19/04/2036
शनि	21/07/2030	बुध	12/01/2032	केतु	27/08/2033	सूर्य	08/03/2035	चंद्र	09/05/2036
बुध	29/08/2030	केतु	22/02/2032	शुक्र	07/12/2033	चंद्र	25/04/2035	मंगल	23/05/2036
केतु	13/09/2030	शुक्र	16/06/2032	सूर्य	07/01/2034	मंगल	30/05/2035	राहु	28/06/2036
शुक्र	28/10/2030	सूर्य	21/07/2032	चंद्र	28/02/2034	राहु	26/08/2035	गुरु	31/07/2036
सूर्य	11/11/2030	चंद्र	17/09/2032	मंगल	05/04/2034	गुरु	12/11/2035	शनि	07/09/2036
चंद्र	03/12/2030	मंगल	27/10/2032	राहु	06/07/2034	शनि	13/02/2036	बुध	11/10/2036

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 4 वर्ष 9 मास 14 दिन

बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष	
28/05/1964		12/03/1969		13/03/1979		12/03/1998		12/03/2010	
12/03/1969		13/03/1979		12/03/1998		12/03/2010		13/03/2031	
	00/00/0000	शनि	13/02/1970	गुरु	16/07/1982	राहु	12/07/1999	शुक्र	12/04/2014
	00/00/0000	गुरु	18/11/1971	राहु	25/08/1984	शुक्र	11/11/2001	सूर्य	12/06/2015
	00/00/0000	राहु	28/12/1972	शुक्र	05/05/1988	सूर्य	12/07/2002	चंद्र	12/05/2018
	28/05/1964	शुक्र	08/12/1974	सूर्य	26/05/1989	चंद्र	12/03/2004	मंगल	01/12/2019
शुक्र	18/08/1964	सूर्य	29/06/1975	चंद्र	14/01/1992	मंगल	31/01/2005	बुध	23/03/2023
सूर्य	29/07/1965	चंद्र	17/11/1976	मंगल	11/06/1993	बुध	21/12/2006	शनि	02/03/2025
चंद्र	08/12/1967	मंगल	15/08/1977	बुध	08/06/1996	शनि	31/01/2008	गुरु	10/11/2028
मंगल	12/03/1969	बुध	13/03/1979	शनि	12/03/1998	गुरु	12/03/2010	राहु	13/03/2031

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
13/03/2031		12/03/2037		12/03/2052		12/03/2060	
12/03/2037		12/03/2052		12/03/2060		00/00/0000	
सूर्य	12/07/2031	चंद्र	12/04/2039	मंगल	14/10/2052	बुध	14/11/2062
चंद्र	12/05/2032	मंगल	22/05/2040	बुध	17/01/2054	शनि	11/06/2064
मंगल	21/10/2032	बुध	01/10/2042	शनि	15/10/2054	गुरु	09/06/2067
बुध	01/10/2033	शनि	21/02/2044	गुरु	12/03/2056	राहु	29/04/2069
शनि	22/04/2034	गुरु	11/10/2046	राहु	31/01/2057	शुक्र	28/05/2072
गुरु	13/05/2035	राहु	11/06/2048	शुक्र	22/08/2058		00/00/0000
राहु	11/01/2036	शुक्र	13/05/2051	सूर्य	31/01/2059		00/00/0000
शुक्र	12/03/2037	सूर्य	12/03/2052	चंद्र	12/03/2060		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि	
28/05/1964		18/08/1964		29/07/1965		08/12/1967		12/03/1969	
18/08/1964		29/07/1965		08/12/1967		12/03/1969		13/02/1970	
	00/00/0000	सूर्य	06/09/1964	चंद्र	26/11/1965	मंगल	11/01/1968	शनि	12/04/1969
	00/00/0000	चंद्र	24/10/1964	मंगल	28/01/1966	बुध	24/03/1968	गुरु	11/06/1969
	00/00/0000	मंगल	18/11/1964	बुध	13/06/1966	शनि	05/05/1968	राहु	19/07/1969
	00/00/0000	बुध	12/01/1965	शनि	01/09/1966	गुरु	25/07/1968	शुक्र	22/09/1969
	00/00/0000	शनि	13/02/1965	गुरु	31/01/1967	राहु	14/09/1968	सूर्य	11/10/1969
	00/00/0000	गुरु	14/04/1965	राहु	07/05/1967	शुक्र	13/12/1968	चंद्र	27/11/1969
	28/05/1964	राहु	23/05/1965	शुक्र	21/10/1967	सूर्य	07/01/1969	मंगल	22/12/1969
राहु	18/08/1964	शुक्र	29/07/1965	सूर्य	08/12/1967	चंद्र	12/03/1969	बुध	13/02/1970

शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
13/02/1970		18/11/1971		28/12/1972		08/12/1974		29/06/1975	
18/11/1971		28/12/1972		08/12/1974		29/06/1975		17/11/1976	
गुरु	06/06/1970	राहु	02/01/1972	शुक्र	15/05/1973	सूर्य	19/12/1974	चंद्र	07/09/1975
राहु	17/08/1970	शुक्र	21/03/1972	सूर्य	23/06/1973	चंद्र	16/01/1975	मंगल	15/10/1975
शुक्र	20/12/1970	सूर्य	12/04/1972	चंद्र	30/09/1973	मंगल	31/01/1975	बुध	03/01/1976
सूर्य	24/01/1971	चंद्र	08/06/1972	मंगल	22/11/1973	बुध	04/03/1975	शनि	19/02/1976
चंद्र	24/04/1971	मंगल	08/07/1972	बुध	13/03/1974	शनि	23/03/1975	गुरु	18/05/1976
मंगल	10/06/1971	बुध	10/09/1972	शनि	18/05/1974	गुरु	28/04/1975	राहु	13/07/1976
बुध	19/09/1971	शनि	17/10/1972	गुरु	20/09/1974	राहु	20/05/1975	शुक्र	20/10/1976
शनि	18/11/1971	गुरु	28/12/1972	राहु	08/12/1974	शुक्र	29/06/1975	सूर्य	17/11/1976

शनि - मंगल		शनि - बुध		गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र	
17/11/1976		15/08/1977		13/03/1979		16/07/1982		25/08/1984	
15/08/1977		13/03/1979		16/07/1982		25/08/1984		05/05/1988	
मंगल	07/12/1976	बुध	13/11/1977	गुरु	13/10/1979	राहु	09/10/1982	शुक्र	14/05/1985
बुध	19/01/1977	शनि	05/01/1978	राहु	26/02/1980	शुक्र	08/03/1983	सूर्य	28/07/1985
शनि	13/02/1977	गुरु	17/04/1978	शुक्र	20/10/1980	सूर्य	20/04/1983	चंद्र	31/01/1986
गुरु	01/04/1977	राहु	19/06/1978	सूर्य	27/12/1980	चंद्र	05/08/1983	मंगल	11/05/1986
राहु	02/05/1977	शुक्र	09/10/1978	चंद्र	15/06/1981	मंगल	01/10/1983	बुध	10/12/1986
शुक्र	23/06/1977	सूर्य	10/11/1978	मंगल	13/09/1981	बुध	31/01/1984	शनि	14/04/1987
सूर्य	08/07/1977	चंद्र	29/01/1979	बुध	24/03/1982	शनि	11/04/1984	गुरु	07/12/1987
चंद्र	15/08/1977	मंगल	13/03/1979	शनि	16/07/1982	गुरु	25/08/1984	राहु	05/05/1988

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि	
05/05/1988		26/05/1989		14/01/1992		11/06/1993		08/06/1996	
26/05/1989		14/01/1992		11/06/1993		08/06/1996		12/03/1998	
सूर्य	26/05/1988	चंद्र	06/10/1989	मंगल	21/02/1992	बुध	30/11/1993	शनि	06/08/1996
चंद्र	19/07/1988	मंगल	17/12/1989	बुध	12/05/1992	शनि	12/03/1994	गुरु	27/11/1996
मंगल	17/08/1988	बुध	18/05/1990	शनि	29/06/1992	गुरु	20/09/1994	राहु	07/02/1997
बुध	16/10/1988	शनि	15/08/1990	गुरु	27/09/1992	राहु	19/01/1995	शुक्र	12/06/1997
शनि	21/11/1988	गुरु	31/01/1991	राहु	24/11/1992	शुक्र	20/08/1995	सूर्य	17/07/1997
गुरु	28/01/1989	राहु	18/05/1991	शुक्र	04/03/1993	सूर्य	19/10/1995	चंद्र	15/10/1997
राहु	12/03/1989	शुक्र	22/11/1991	सूर्य	01/04/1993	चंद्र	19/03/1996	मंगल	01/12/1997
शुक्र	26/05/1989	सूर्य	14/01/1992	चंद्र	11/06/1993	मंगल	08/06/1996	बुध	12/03/1998

राहु - राहु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
12/03/1998		12/07/1999		11/11/2001		12/07/2002		12/03/2004	
12/07/1999		11/11/2001		12/07/2002		12/03/2004		31/01/2005	
राहु	06/05/1998	शुक्र	25/12/1999	सूर्य	24/11/2001	चंद्र	05/10/2002	मंगल	05/04/2004
शुक्र	08/08/1998	सूर्य	10/02/2000	चंद्र	28/12/2001	मंगल	19/11/2002	बुध	26/05/2004
सूर्य	04/09/1998	चंद्र	08/06/2000	मंगल	15/01/2002	बुध	23/02/2003	शनि	25/06/2004
चंद्र	11/11/1998	मंगल	10/08/2000	बुध	22/02/2002	शनि	20/04/2003	गुरु	21/08/2004
मंगल	17/12/1998	बुध	22/12/2000	शनि	17/03/2002	गुरु	05/08/2003	राहु	26/09/2004
बुध	04/03/1999	शनि	11/03/2001	गुरु	29/04/2002	राहु	12/10/2003	शुक्र	28/11/2004
शनि	18/04/1999	गुरु	08/08/2001	राहु	26/05/2002	शुक्र	07/02/2004	सूर्य	16/12/2004
गुरु	12/07/1999	राहु	11/11/2001	शुक्र	12/07/2002	सूर्य	12/03/2004	चंद्र	31/01/2005

राहु - बुध		राहु - शनि		राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
31/01/2005		21/12/2006		31/01/2008		12/03/2010		12/04/2014	
21/12/2006		31/01/2008		12/03/2010		12/04/2014		12/06/2015	
बुध	19/05/2005	शनि	28/01/2007	गुरु	15/06/2008	शुक्र	27/12/2010	सूर्य	06/05/2014
शनि	22/07/2005	गुरु	09/04/2007	राहु	09/09/2008	सूर्य	20/03/2011	चंद्र	04/07/2014
गुरु	20/11/2005	राहु	25/05/2007	शुक्र	06/02/2009	चंद्र	13/10/2011	मंगल	04/08/2014
राहु	05/02/2006	शुक्र	11/08/2007	सूर्य	20/03/2009	मंगल	01/02/2012	बुध	10/10/2014
शुक्र	19/06/2006	सूर्य	03/09/2007	चंद्र	06/07/2009	बुध	23/09/2012	शनि	19/11/2014
सूर्य	28/07/2006	चंद्र	29/10/2007	मंगल	01/09/2009	शनि	08/02/2013	गुरु	02/02/2015
चंद्र	31/10/2006	मंगल	28/11/2007	बुध	31/12/2009	गुरु	28/10/2013	राहु	21/03/2015
मंगल	21/12/2006	बुध	31/01/2008	शनि	12/03/2010	राहु	12/04/2014	शुक्र	12/06/2015

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु	
12/06/2015		12/05/2018		01/12/2019		23/03/2023		02/03/2025	
12/05/2018		01/12/2019		23/03/2023		02/03/2025		10/11/2028	
चंद्र	07/11/2015	मंगल	23/06/2018	बुध	09/06/2020	शनि	28/05/2023	गुरु	25/10/2025
मंगल	25/01/2016	बुध	21/09/2018	शनि	28/09/2020	गुरु	30/09/2023	राहु	24/03/2026
बुध	11/07/2016	शनि	12/11/2018	गुरु	29/04/2021	राहु	17/12/2023	शुक्र	12/12/2026
शनि	17/10/2016	गुरु	20/02/2019	राहु	10/09/2021	शुक्र	04/05/2024	सूर्य	25/02/2027
गुरु	23/04/2017	राहु	25/04/2019	शुक्र	03/05/2022	सूर्य	12/06/2024	चंद्र	31/08/2027
राहु	19/08/2017	शुक्र	13/08/2019	सूर्य	09/07/2022	चंद्र	19/09/2024	मंगल	09/12/2027
शुक्र	14/03/2018	सूर्य	14/09/2019	चंद्र	23/12/2022	मंगल	10/11/2024	बुध	08/07/2028
सूर्य	12/05/2018	चंद्र	01/12/2019	मंगल	23/03/2023	बुध	02/03/2025	शनि	10/11/2028

शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध	
10/11/2028		13/03/2031		12/07/2031		12/05/2032		21/10/2032	
13/03/2031		12/07/2031		12/05/2032		21/10/2032		01/10/2033	
राहु	13/02/2029	सूर्य	19/03/2031	चंद्र	24/08/2031	मंगल	24/05/2032	बुध	14/12/2032
शुक्र	29/07/2029	चंद्र	05/04/2031	मंगल	15/09/2031	बुध	18/06/2032	शनि	15/01/2033
सूर्य	14/09/2029	मंगल	14/04/2031	बुध	02/11/2031	शनि	03/07/2032	गुरु	17/03/2033
चंद्र	11/01/2030	बुध	04/05/2031	शनि	30/11/2031	गुरु	01/08/2032	राहु	24/04/2033
मंगल	15/03/2030	शनि	15/05/2031	गुरु	23/01/2032	राहु	19/08/2032	शुक्र	30/06/2033
बुध	27/07/2030	गुरु	05/06/2031	राहु	26/02/2032	शुक्र	20/09/2032	सूर्य	20/07/2033
शनि	14/10/2030	राहु	19/06/2031	शुक्र	25/04/2032	सूर्य	29/09/2032	चंद्र	06/09/2033
गुरु	13/03/2031	शुक्र	12/07/2031	सूर्य	12/05/2032	चंद्र	21/10/2032	मंगल	01/10/2033

सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
01/10/2033		22/04/2034		13/05/2035		11/01/2036		12/03/2037	
22/04/2034		13/05/2035		11/01/2036		12/03/2037		12/04/2039	
शनि	20/10/2033	गुरु	29/06/2034	राहु	09/06/2035	शुक्र	03/04/2036	चंद्र	26/06/2037
गुरु	25/11/2033	राहु	11/08/2034	शुक्र	26/07/2035	सूर्य	27/04/2036	मंगल	21/08/2037
राहु	17/12/2033	शुक्र	25/10/2034	सूर्य	08/08/2035	चंद्र	25/06/2036	बुध	19/12/2037
शुक्र	26/01/2034	सूर्य	15/11/2034	चंद्र	11/09/2035	मंगल	26/07/2036	शनि	27/02/2038
सूर्य	06/02/2034	चंद्र	08/01/2035	मंगल	29/09/2035	बुध	01/10/2036	गुरु	11/07/2038
चंद्र	06/03/2034	मंगल	05/02/2035	बुध	07/11/2035	शनि	10/11/2036	राहु	04/10/2038
मंगल	21/03/2034	बुध	07/04/2035	शनि	29/11/2035	गुरु	24/01/2037	शुक्र	01/03/2039
बुध	22/04/2034	शनि	13/05/2035	गुरु	11/01/2036	राहु	12/03/2037	सूर्य	12/04/2039

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु	
12/04/2039		22/05/2040		01/10/2042		21/02/2044		11/10/2046	
22/05/2040		01/10/2042		21/02/2044		11/10/2046		11/06/2048	
मंगल	12/05/2039	बुध	05/10/2040	शनि	17/11/2042	गुरु	08/08/2044	राहु	18/12/2046
बुध	15/07/2039	शनि	24/12/2040	गुरु	15/02/2043	राहु	23/11/2044	शुक्र	15/04/2047
शनि	22/08/2039	गुरु	24/05/2041	राहु	12/04/2043	शुक्र	30/05/2045	सूर्य	19/05/2047
गुरु	01/11/2039	राहु	28/08/2041	शुक्र	20/07/2043	सूर्य	22/07/2045	चंद्र	12/08/2047
राहु	16/12/2039	शुक्र	12/02/2042	सूर्य	17/08/2043	चंद्र	03/12/2045	मंगल	26/09/2047
शुक्र	04/03/2040	सूर्य	01/04/2042	चंद्र	26/10/2043	मंगल	13/02/2046	बुध	31/12/2047
सूर्य	27/03/2040	चंद्र	29/07/2042	मंगल	03/12/2043	बुध	14/07/2046	शनि	25/02/2048
चंद्र	22/05/2040	मंगल	01/10/2042	बुध	21/02/2044	शनि	11/10/2046	गुरु	11/06/2048

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि	
11/06/2048		13/05/2051		12/03/2052		14/10/2052		17/01/2054	
13/05/2051		12/03/2052		14/10/2052		17/01/2054		15/10/2054	
शुक्र	04/01/2049	सूर्य	29/05/2051	मंगल	28/03/2052	बुध	26/12/2052	शनि	11/02/2054
सूर्य	05/03/2049	चंद्र	11/07/2051	बुध	01/05/2052	शनि	06/02/2053	गुरु	31/03/2054
चंद्र	31/07/2049	मंगल	02/08/2051	शनि	21/05/2052	गुरु	28/04/2053	राहु	30/04/2054
मंगल	17/10/2049	बुध	19/09/2051	गुरु	28/06/2052	राहु	18/06/2053	शुक्र	22/06/2054
बुध	03/04/2050	शनि	17/10/2051	राहु	22/07/2052	शुक्र	16/09/2053	सूर्य	07/07/2054
शनि	11/07/2050	गुरु	10/12/2051	शुक्र	02/09/2052	सूर्य	11/10/2053	चंद्र	13/08/2054
गुरु	14/01/2051	राहु	13/01/2052	सूर्य	14/09/2052	चंद्र	14/12/2053	मंगल	02/09/2054
राहु	13/05/2051	शुक्र	12/03/2052	चंद्र	14/10/2052	मंगल	17/01/2054	बुध	15/10/2054

मंगल - गुरु		मंगल - राहु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
15/10/2054		12/03/2056		31/01/2057		22/08/2058		31/01/2059	
12/03/2056		31/01/2057		22/08/2058		31/01/2059		12/03/2060	
गुरु	13/01/2055	राहु	17/04/2056	शुक्र	21/05/2057	सूर्य	31/08/2058	चंद्र	28/03/2059
राहु	11/03/2055	शुक्र	19/06/2056	सूर्य	22/06/2057	चंद्र	22/09/2058	मंगल	28/04/2059
शुक्र	19/06/2055	सूर्य	07/07/2056	चंद्र	09/09/2057	मंगल	04/10/2058	बुध	30/06/2059
सूर्य	18/07/2055	चंद्र	21/08/2056	मंगल	21/10/2057	बुध	30/10/2058	शनि	07/08/2059
चंद्र	27/09/2055	मंगल	14/09/2056	बुध	18/01/2058	शनि	14/11/2058	गुरु	17/10/2059
मंगल	04/11/2055	बुध	04/11/2056	शनि	12/03/2058	गुरु	12/12/2058	राहु	01/12/2059
बुध	24/01/2056	शनि	04/12/2056	गुरु	20/06/2058	राहु	31/12/2058	शुक्र	18/02/2060
शनि	12/03/2056	गुरु	31/01/2057	राहु	22/08/2058	शुक्र	31/01/2059	सूर्य	12/03/2060

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भद्रिका 0 वर्ष 7 मास 19 दिन

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
28/05/1964		15/01/1965		15/01/1971		15/01/1978		15/01/1986	
15/01/1965		15/01/1971		15/01/1978		15/01/1986		15/01/1987	
	00/00/0000	उल्क	15/01/1966	सिद्ध	26/05/1972	संक	26/10/1979	मंग	25/01/1986
	00/00/0000	सिद्ध	17/03/1967	संक	15/12/1973	मंग	15/01/1980	पिंग	14/02/1986
	00/00/0000	संक	16/07/1968	मंग	25/02/1974	पिंग	26/06/1980	धांय	17/03/1986
	00/00/0000	मंग	15/09/1968	पिंग	17/07/1974	धांय	24/02/1981	भाम	26/04/1986
	00/00/0000	पिंग	15/01/1969	धांय	15/02/1975	भाम	15/01/1982	भद्रि	16/06/1986
	28/05/1964	धांय	16/07/1969	भाम	26/11/1975	भद्रि	25/02/1983	उल्क	16/08/1986
धांय	26/06/1964	भाम	17/03/1970	भद्रि	15/11/1976	उल्क	26/06/1984	सिद्ध	26/10/1986
भाम	15/01/1965	भद्रि	15/01/1971	उल्क	15/01/1978	सिद्ध	15/01/1986	संक	15/01/1987

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
15/01/1987		15/01/1989		15/01/1992		15/01/1996		15/01/2001	
15/01/1989		15/01/1992		15/01/1996		15/01/2001		15/01/2007	
पिंग	25/02/1987	धांय	16/04/1989	भाम	26/06/1992	भद्रि	25/09/1996	उल्क	15/01/2002
धांय	27/04/1987	भाम	16/08/1989	भद्रि	15/01/1993	उल्क	26/07/1997	सिद्ध	17/03/2003
भाम	17/07/1987	भद्रि	15/01/1990	उल्क	15/09/1993	सिद्ध	17/07/1998	संक	16/07/2004
भद्रि	26/10/1987	उल्क	17/07/1990	सिद्ध	26/06/1994	संक	26/08/1999	मंग	15/09/2004
उल्क	25/02/1988	सिद्ध	15/02/1991	संक	17/05/1995	मंग	16/10/1999	पिंग	15/01/2005
सिद्ध	16/07/1988	संक	16/10/1991	मंग	27/06/1995	पिंग	26/01/2000	धांय	16/07/2005
संक	25/12/1988	मंग	16/11/1991	पिंग	16/09/1995	धांय	26/06/2000	भाम	17/03/2006
मंग	15/01/1989	पिंग	15/01/1992	धांय	15/01/1996	भाम	15/01/2001	भद्रि	15/01/2007

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
15/01/2007		15/01/2014		15/01/2022		15/01/2023		15/01/2025	
15/01/2014		15/01/2022		15/01/2023		15/01/2025		15/01/2028	
सिद्ध	26/05/2008	संक	26/10/2015	मंग	25/01/2022	पिंग	25/02/2023	धांय	16/04/2025
संक	15/12/2009	मंग	15/01/2016	पिंग	14/02/2022	धांय	27/04/2023	भ्राम	16/08/2025
मंग	25/02/2010	पिंग	26/06/2016	धांय	17/03/2022	भ्राम	17/07/2023	भद्रि	15/01/2026
पिंग	17/07/2010	धांय	24/02/2017	भ्राम	26/04/2022	भद्रि	26/10/2023	उल्क	17/07/2026
धांय	15/02/2011	भ्राम	15/01/2018	भद्रि	16/06/2022	उल्क	25/02/2024	सिद्ध	15/02/2027
भ्राम	26/11/2011	भद्रि	25/02/2019	उल्क	16/08/2022	सिद्ध	16/07/2024	संक	16/10/2027
भद्रि	15/11/2012	उल्क	26/06/2020	सिद्ध	26/10/2022	संक	25/12/2024	मंग	16/11/2027
उल्क	15/01/2014	सिद्ध	15/01/2022	संक	15/01/2023	मंग	15/01/2025	पिंग	15/01/2028

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
15/01/2028		15/01/2032		15/01/2037		15/01/2043		15/01/2050	
15/01/2032		15/01/2037		15/01/2043		15/01/2050		15/01/2058	
भ्राम	26/06/2028	भद्रि	25/09/2032	उल्क	15/01/2038	सिद्ध	26/05/2044	संक	26/10/2051
भद्रि	15/01/2029	उल्क	26/07/2033	सिद्ध	17/03/2039	संक	15/12/2045	मंग	15/01/2052
उल्क	15/09/2029	सिद्ध	17/07/2034	संक	16/07/2040	मंग	25/02/2046	पिंग	26/06/2052
सिद्ध	26/06/2030	संक	26/08/2035	मंग	15/09/2040	पिंग	17/07/2046	धांय	24/02/2053
संक	17/05/2031	मंग	16/10/2035	पिंग	15/01/2041	धांय	15/02/2047	भ्राम	15/01/2054
मंग	27/06/2031	पिंग	26/01/2036	धांय	16/07/2041	भ्राम	26/11/2047	भद्रि	25/02/2055
पिंग	16/09/2031	धांय	26/06/2036	भ्राम	17/03/2042	भद्रि	15/11/2048	उल्क	26/06/2056
धांय	15/01/2032	भ्राम	15/01/2037	भद्रि	15/01/2043	उल्क	15/01/2050	सिद्ध	15/01/2058

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
15/01/2058		15/01/2059		15/01/2061		15/01/2064		15/01/2068	
15/01/2059		15/01/2061		15/01/2064		15/01/2068		00/00/0000	
मंग	25/01/2058	पिंग	25/02/2059	धांय	16/04/2061	भ्राम	26/06/2064	भद्रि	25/09/2068
पिंग	14/02/2058	धांय	27/04/2059	भ्राम	16/08/2061	भद्रि	15/01/2065	उल्क	26/07/2069
धांय	17/03/2058	भ्राम	17/07/2059	भद्रि	15/01/2062	उल्क	15/09/2065	सिद्ध	17/07/2070
भ्राम	26/04/2058	भद्रि	26/10/2059	उल्क	17/07/2062	सिद्ध	26/06/2066	संक	26/08/2071
भद्रि	16/06/2058	उल्क	25/02/2060	सिद्ध	15/02/2063	संक	17/05/2067	मंग	16/10/2071
उल्क	16/08/2058	सिद्ध	16/07/2060	संक	16/10/2063	मंग	27/06/2067	पिंग	26/01/2072
सिद्ध	26/10/2058	संक	25/12/2060	मंग	16/11/2063	पिंग	16/09/2067	धांय	28/05/2072
संक	15/01/2059	मंग	15/01/2061	पिंग	15/01/2064	धांय	15/01/2068		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

धांय - उल्क		धांय - सिद्ध		धांय - संक		धांय - मंग		धांय - पिंग	
15/01/2026		17/07/2026		15/02/2027		16/10/2027		16/11/2027	
17/07/2026		15/02/2027		16/10/2027		16/11/2027		15/01/2028	
उल्क	14/02/2026	सिद्ध	27/08/2026	संक	10/04/2027	मंग	17/10/2027	पिंग	19/11/2027
सिद्ध	22/03/2026	संक	13/10/2026	मंग	16/04/2027	पिंग	19/10/2027	धांय	24/11/2027
संक	01/05/2026	मंग	19/10/2026	पिंग	30/04/2027	धांय	21/10/2027	भ्राम	01/12/2027
मंग	07/05/2026	पिंग	31/10/2026	धांय	20/05/2027	भ्राम	25/10/2027	भद्रि	09/12/2027
पिंग	17/05/2026	धांय	18/11/2026	भ्राम	16/06/2027	भद्रि	29/10/2027	उल्क	19/12/2027
धांय	01/06/2026	भ्राम	12/12/2026	भद्रि	20/07/2027	उल्क	03/11/2027	सिद्ध	31/12/2027
भ्राम	21/06/2026	भद्रि	10/01/2027	उल्क	30/08/2027	सिद्ध	09/11/2027	संक	14/01/2028
भद्रि	17/07/2026	उल्क	15/02/2027	सिद्ध	16/10/2027	संक	16/11/2027	मंग	15/01/2028

भ्राम - भ्राम		भ्राम - भद्रि		भ्राम - उल्क		भ्राम - सिद्ध		भ्राम - संक	
15/01/2028		26/06/2028		15/01/2029		15/09/2029		26/06/2030	
26/06/2028		15/01/2029		15/09/2029		26/06/2030		17/05/2031	
भ्राम	02/02/2028	भद्रि	24/07/2028	उल्क	24/02/2029	सिद्ध	09/11/2029	संक	06/09/2030
भद्रि	25/02/2028	उल्क	27/08/2028	सिद्ध	13/04/2029	संक	12/01/2030	मंग	15/09/2030
उल्क	23/03/2028	सिद्ध	05/10/2028	संक	06/06/2029	मंग	19/01/2030	पिंग	03/10/2030
सिद्ध	24/04/2028	संक	19/11/2028	मंग	12/06/2029	पिंग	04/02/2030	धांय	31/10/2030
संक	30/05/2028	मंग	25/11/2028	पिंग	26/06/2029	धांय	28/02/2030	भ्राम	06/12/2030
मंग	03/06/2028	पिंग	06/12/2028	धांय	16/07/2029	भ्राम	31/03/2030	भद्रि	20/01/2031
पिंग	12/06/2028	धांय	23/12/2028	भ्राम	12/08/2029	भद्रि	10/05/2030	उल्क	15/03/2031
धांय	26/06/2028	भ्राम	15/01/2029	भद्रि	15/09/2029	उल्क	26/06/2030	सिद्ध	17/05/2031

भ्राम - मंग		भ्राम - पिंग		भ्राम - धांय		भद्रि - भद्रि		भद्रि - उल्क	
17/05/2031		27/06/2031		16/09/2031		15/01/2032		25/09/2032	
27/06/2031		16/09/2031		15/01/2032		25/09/2032		26/07/2033	
मंग	18/05/2031	पिंग	01/07/2031	धांय	26/09/2031	भद्रि	20/02/2032	उल्क	15/11/2032
पिंग	20/05/2031	धांय	08/07/2031	भ्राम	09/10/2031	उल्क	02/04/2032	सिद्ध	13/01/2033
धांय	24/05/2031	भ्राम	17/07/2031	भद्रि	26/10/2031	सिद्ध	21/05/2032	संक	22/03/2033
भ्राम	28/05/2031	भद्रि	28/07/2031	उल्क	16/11/2031	संक	17/07/2032	मंग	30/03/2033
भद्रि	03/06/2031	उल्क	11/08/2031	सिद्ध	09/12/2031	मंग	24/07/2032	पिंग	16/04/2033
उल्क	10/06/2031	सिद्ध	26/08/2031	संक	05/01/2032	पिंग	07/08/2032	धांय	11/05/2033
सिद्ध	17/06/2031	संक	13/09/2031	मंग	09/01/2032	धांय	28/08/2032	भ्राम	14/06/2033
संक	27/06/2031	मंग	16/09/2031	पिंग	15/01/2032	भ्राम	25/09/2032	भद्रि	26/07/2033

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

भद्रि - सिद्ध		भद्रि - संक		भद्रि - मंग		भद्रि - पिंग		भद्रि - धांय	
26/07/2033		17/07/2034		26/08/2035		16/10/2035		26/01/2036	
17/07/2034		26/08/2035		16/10/2035		26/01/2036		26/06/2036	
सिद्ध	03/10/2033	संक	15/10/2034	मंग	28/08/2035	पिंग	22/10/2035	धांय	07/02/2036
संक	21/12/2033	मंग	26/10/2034	पिंग	31/08/2035	धांय	30/10/2035	भ्राम	24/02/2036
मंग	31/12/2033	पिंग	18/11/2034	धांय	04/09/2035	भ्राम	10/11/2035	भद्रि	16/03/2036
पिंग	20/01/2034	धांय	21/12/2034	भ्राम	09/09/2035	भद्रि	25/11/2035	उल्क	11/04/2036
धांय	19/02/2034	भ्राम	04/02/2035	भद्रि	17/09/2035	उल्क	11/12/2035	सिद्ध	10/05/2036
भ्राम	30/03/2034	भद्रि	02/04/2035	उल्क	25/09/2035	सिद्ध	31/12/2035	संक	13/06/2036
भद्रि	18/05/2034	उल्क	08/06/2035	सिद्ध	05/10/2035	संक	23/01/2036	मंग	17/06/2036
उल्क	17/07/2034	सिद्ध	26/08/2035	संक	16/10/2035	मंग	26/01/2036	पिंग	26/06/2036

भद्रि - भ्राम		उल्क - उल्क		उल्क - सिद्ध		उल्क - संक		उल्क - मंग	
26/06/2036		15/01/2037		15/01/2038		17/03/2039		16/07/2040	
15/01/2037		15/01/2038		17/03/2039		16/07/2040		15/09/2040	
भ्राम	18/07/2036	उल्क	17/03/2037	सिद्ध	08/04/2038	संक	03/07/2039	मंग	18/07/2040
भद्रि	15/08/2036	सिद्ध	27/05/2037	संक	11/07/2038	मंग	17/07/2039	पिंग	21/07/2040
उल्क	18/09/2036	संक	16/08/2037	मंग	23/07/2038	पिंग	13/08/2039	धांय	26/07/2040
सिद्ध	28/10/2036	मंग	26/08/2037	पिंग	16/08/2038	धांय	22/09/2039	भ्राम	02/08/2040
संक	12/12/2036	पिंग	15/09/2037	धांय	20/09/2038	भ्राम	16/11/2039	भद्रि	10/08/2040
मंग	17/12/2036	धांय	16/10/2037	भ्राम	07/11/2038	भद्रि	22/01/2040	उल्क	21/08/2040
पिंग	29/12/2036	भ्राम	25/11/2037	भद्रि	05/01/2039	उल्क	12/04/2040	सिद्ध	01/09/2040
धांय	15/01/2037	भद्रि	15/01/2038	उल्क	17/03/2039	सिद्ध	16/07/2040	संक	15/09/2040

उल्क - पिंग		उल्क - धांय		उल्क - भ्राम		उल्क - भद्रि		सिद्ध - सिद्ध	
15/09/2040		15/01/2041		16/07/2041		17/03/2042		15/01/2043	
15/01/2041		16/07/2041		17/03/2042		15/01/2043		26/05/2044	
पिंग	22/09/2040	धांय	30/01/2041	भ्राम	12/08/2041	भद्रि	28/04/2042	सिद्ध	22/04/2043
धांय	02/10/2040	भ्राम	19/02/2041	भद्रि	15/09/2041	उल्क	18/06/2042	संक	10/08/2043
भ्राम	15/10/2040	भद्रि	17/03/2041	उल्क	26/10/2041	सिद्ध	16/08/2042	मंग	24/08/2043
भद्रि	01/11/2040	उल्क	16/04/2041	सिद्ध	12/12/2041	संक	23/10/2042	पिंग	21/09/2043
उल्क	22/11/2040	सिद्ध	21/05/2041	संक	04/02/2042	मंग	31/10/2042	धांय	01/11/2043
सिद्ध	15/12/2040	संक	01/07/2041	मंग	11/02/2042	पिंग	17/11/2042	भ्राम	26/12/2043
संक	11/01/2041	मंग	06/07/2041	पिंग	25/02/2042	धांय	12/12/2042	भद्रि	04/03/2044
मंग	15/01/2041	पिंग	16/07/2041	धांय	17/03/2042	भ्राम	15/01/2043	उल्क	26/05/2044

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : कर्क 18 वर्ष 10 मास 5 दिन
कुल दशाकाल : 100 वर्ष
तिथि : ज्येष्ठा - 4 अपसव्य
देह : वृश्चिक जीव : मीन

कर्क 21 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष		धनु 10 वर्ष	
28/05/1964		03/04/1983		02/04/1992		02/04/2008		03/04/2015	
03/04/1983		02/04/1992		02/04/2008		03/04/2015		02/04/2025	
कर्क	30/08/1966	मिथु	23/01/1984	वृष	24/10/1994	मेष	28/09/2008	धनु	02/04/2016
मिथु	20/07/1968	वृष	02/07/1985	मेष	07/12/1995	धनु	10/06/2009	वृश्चि	13/12/2016
वृष	30/11/1971	मेष	17/02/1986	धनु	13/07/1997	वृश्चि	06/12/2009	तुला	21/07/2018
मेष	20/05/1973	धनु	12/01/1987	वृश्चि	26/08/1998	तुला	19/01/2011	कन्या	15/06/2019
धनु	26/06/1975	वृश्चि	30/08/1987	तुला	18/03/2001	कन्या	07/09/2011	सिंह	14/12/2019
वृश्चि	13/12/1976	तुला	06/02/1989	कन्या	26/08/2002	सिंह	12/01/2012	कर्क	19/01/2022
तुला	24/04/1980	कन्या	29/11/1989	सिंह	15/06/2003	कर्क	02/07/2013	मिथु	14/12/2022
कन्या	15/03/1982	सिंह	12/05/1990	कर्क	24/10/2006	मिथु	17/02/2014	वृष	20/07/2024
सिंह	03/04/1983	कर्क	02/04/1992	मिथु	02/04/2008	वृष	03/04/2015	मेष	02/04/2025

वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		कर्क 21 वर्ष	
02/04/2025		02/04/2032		02/04/2048		02/04/2057		02/04/2062	
02/04/2032		02/04/2048		02/04/2057		02/04/2062		00/00/0000	
वृश्चि	28/09/2025	तुला	24/10/2034	कन्या	23/01/2049	सिंह	02/07/2057	कर्क	28/05/2064
तुला	11/11/2026	कन्या	02/04/2036	सिंह	06/07/2049	कर्क	21/07/2058		00/00/0000
कन्या	29/06/2027	सिंह	19/01/2037	कर्क	27/05/2051	मिथु	01/01/2059		00/00/0000
सिंह	04/11/2027	कर्क	30/05/2040	मिथु	18/03/2052	वृष	20/10/2059		00/00/0000
कर्क	24/04/2029	मिथु	07/11/2041	वृष	26/08/2053	मेष	25/02/2060		00/00/0000
मिथु	10/12/2029	वृष	30/05/2044	मेष	13/04/2054	धनु	26/08/2060		00/00/0000
वृष	23/01/2031	मेष	13/07/2045	धनु	08/03/2055	वृश्चि	01/01/2061		00/00/0000
मेष	21/07/2031	धनु	18/02/2047	वृश्चि	24/10/2055	तुला	20/10/2061		00/00/0000
धनु	02/04/2032	वृश्चि	02/04/2048	तुला	02/04/2057	कन्या	02/04/2062		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृश्चि - तुला		वृश्चि - कन्या		वृश्चि - सिंह		वृश्चि - कर्क		वृश्चि - मिथु	
28/09/2025		11/11/2026		29/06/2027		04/11/2027		24/04/2029	
11/11/2026		29/06/2027		04/11/2027		24/04/2029		10/12/2029	
तुला	02/12/2025	कन्या	02/12/2026	सिंह	06/07/2027	कर्क	25/02/2028	मिथु	15/05/2029
कन्या	08/01/2026	सिंह	13/12/2026	कर्क	01/08/2027	मिथु	13/04/2028	वृष	20/06/2029
सिंह	29/01/2026	कर्क	31/01/2027	मिथु	13/08/2027	वृष	08/07/2028	मेष	07/07/2029
कर्क	25/04/2026	मिथु	20/02/2027	वृष	02/09/2027	मेष	15/08/2028	धनु	30/07/2029
मिथु	31/05/2026	वृष	29/03/2027	मेष	11/09/2027	धनु	07/10/2028	वृश्चि	15/08/2029
वृष	05/08/2026	मेष	14/04/2027	धनु	24/09/2027	वृश्चि	14/11/2028	तुला	21/09/2029
मेष	03/09/2026	धनु	07/05/2027	वृश्चि	03/10/2027	तुला	08/02/2029	कन्या	11/10/2029
धनु	13/10/2026	वृश्चि	23/05/2027	तुला	24/10/2027	कन्या	28/03/2029	सिंह	23/10/2029
वृश्चि	11/11/2026	तुला	29/06/2027	कन्या	04/11/2027	सिंह	24/04/2029	कर्क	10/12/2029

वृश्चि - वृष		वृश्चि - मेष		वृश्चि - धनु		तुला - तुला		तुला - कन्या	
10/12/2029		23/01/2031		21/07/2031		02/04/2032		24/10/2034	
23/01/2031		21/07/2031		02/04/2032		24/10/2034		02/04/2036	
वृष	13/02/2030	मेष	05/02/2031	धनु	16/08/2031	तुला	29/08/2032	कन्या	10/12/2034
मेष	14/03/2030	धनु	23/02/2031	वृश्चि	03/09/2031	कन्या	22/11/2032	सिंह	05/01/2035
धनु	24/04/2030	वृश्चि	07/03/2031	तुला	13/10/2031	सिंह	07/01/2033	कर्क	26/04/2035
वृश्चि	23/05/2030	तुला	05/04/2031	कन्या	05/11/2031	कर्क	23/07/2033	मिथु	12/06/2035
तुला	27/07/2030	कन्या	21/04/2031	सिंह	18/11/2031	मिथु	15/10/2033	वृष	04/09/2035
कन्या	02/09/2030	सिंह	30/04/2031	कर्क	11/01/2032	वृष	13/03/2034	मेष	11/10/2035
सिंह	22/09/2030	कर्क	06/06/2031	मिथु	03/02/2032	मेष	18/05/2034	धनु	03/12/2035
कर्क	17/12/2030	मिथु	22/06/2031	वृष	15/03/2032	धनु	19/08/2034	वृश्चि	09/01/2036
मिथु	23/01/2031	वृष	21/07/2031	मेष	02/04/2032	वृश्चि	24/10/2034	तुला	02/04/2036

तुला - सिंह		तुला - कर्क		तुला - मिथु		तुला - वृष		तुला - मेष	
02/04/2036		19/01/2037		30/05/2040		07/11/2041		30/05/2044	
19/01/2037		30/05/2040		07/11/2041		30/05/2044		13/07/2045	
सिंह	16/04/2036	कर्क	04/10/2037	मिथु	17/07/2040	वृष	06/04/2042	मेष	28/06/2044
कर्क	17/06/2036	मिथु	22/01/2038	वृष	09/10/2040	मेष	10/06/2042	धनु	08/08/2044
मिथु	13/07/2036	वृष	06/08/2038	मेष	15/11/2040	धनु	12/09/2042	वृश्चि	05/09/2044
वृष	29/08/2036	मेष	31/10/2038	धनु	06/01/2041	वृश्चि	16/11/2042	तुला	10/11/2044
मेष	18/09/2036	धनु	03/03/2039	वृश्चि	12/02/2041	तुला	15/04/2043	कन्या	17/12/2044
धनु	17/10/2036	वृश्चि	28/05/2039	तुला	07/05/2041	कन्या	08/07/2043	सिंह	06/01/2045
वृश्चि	07/11/2036	तुला	10/12/2039	कन्या	23/06/2041	सिंह	24/08/2043	कर्क	02/04/2045
तुला	24/12/2036	कन्या	30/03/2040	सिंह	20/07/2041	कर्क	07/03/2044	मिथु	09/05/2045
कन्या	19/01/2037	सिंह	30/05/2040	कर्क	07/11/2041	मिथु	30/05/2044	वृष	13/07/2045

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

तुला - धनु		तुला - वृश्चि		कन्या - कन्या		कन्या - सिंह		कन्या - कर्क	
13/07/2045		18/02/2047		02/04/2048		23/01/2049		06/07/2049	
18/02/2047		02/04/2048		23/01/2049		06/07/2049		27/05/2051	
धनु	10/09/2045	वृश्चि	18/03/2047	कन्या	28/04/2048	सिंह	31/01/2049	कर्क	28/11/2049
वृश्चि	21/10/2045	तुला	23/05/2047	सिंह	13/05/2048	कर्क	06/03/2049	मिथु	29/01/2050
तुला	22/01/2046	कन्या	29/06/2047	कर्क	14/07/2048	मिथु	21/03/2049	वृष	20/05/2050
कन्या	16/03/2046	सिंह	19/07/2047	मिथु	10/08/2048	वृष	16/04/2049	मेष	07/07/2050
सिंह	14/04/2046	कर्क	13/10/2047	वृष	26/09/2048	मेष	28/04/2049	धनु	14/09/2050
कर्क	15/08/2046	मिथु	19/11/2047	मेष	17/10/2048	धनु	14/05/2049	वृश्चि	01/11/2050
मिथु	06/10/2046	वृष	23/01/2048	धनु	16/11/2048	वृश्चि	26/05/2049	तुला	20/02/2051
वृष	08/01/2047	मेष	21/02/2048	वृश्चि	06/12/2048	तुला	21/06/2049	कन्या	23/04/2051
मेष	18/02/2047	धनु	02/04/2048	तुला	23/01/2049	कन्या	06/07/2049	सिंह	27/05/2051

कन्या - मिथु		कन्या - वृष		कन्या - मेष		कन्या - धनु		कन्या - वृश्चि	
27/05/2051		18/03/2052		26/08/2053		13/04/2054		08/03/2055	
18/03/2052		26/08/2053		13/04/2054		08/03/2055		24/10/2055	
मिथु	23/06/2051	वृष	10/06/2052	मेष	11/09/2053	धनु	16/05/2054	वृश्चि	24/03/2055
वृष	09/08/2051	मेष	17/07/2052	धनु	04/10/2053	वृश्चि	08/06/2054	तुला	30/04/2055
मेष	30/08/2051	धनु	08/09/2052	वृश्चि	20/10/2053	तुला	31/07/2054	कन्या	21/05/2055
धनु	29/09/2051	वृश्चि	15/10/2052	तुला	26/11/2053	कन्या	29/08/2054	सिंह	01/06/2055
वृश्चि	19/10/2051	तुला	07/01/2053	कन्या	17/12/2053	सिंह	15/09/2054	कर्क	19/07/2055
तुला	06/12/2051	कन्या	23/02/2053	सिंह	28/12/2053	कर्क	23/11/2054	मिथु	09/08/2055
कन्या	01/01/2052	सिंह	21/03/2053	कर्क	15/02/2054	मिथु	22/12/2054	वृष	15/09/2055
सिंह	16/01/2052	कर्क	10/07/2053	मिथु	07/03/2054	वृष	13/02/2055	मेष	01/10/2055
कर्क	18/03/2052	मिथु	26/08/2053	वृष	13/04/2054	मेष	08/03/2055	धनु	24/10/2055

कन्या - तुला		सिंह - सिंह		सिंह - कर्क		सिंह - मिथु		सिंह - वृष	
24/10/2055		02/04/2057		02/07/2057		21/07/2058		01/01/2059	
02/04/2057		02/07/2057		21/07/2058		01/01/2059		20/10/2059	
तुला	16/01/2056	सिंह	07/04/2057	कर्क	21/09/2057	मिथु	05/08/2058	वृष	17/02/2059
कन्या	04/03/2056	कर्क	26/04/2057	मिथु	25/10/2057	वृष	31/08/2058	मेष	09/03/2059
सिंह	30/03/2056	मिथु	04/05/2057	वृष	26/12/2057	मेष	11/09/2058	धनु	08/04/2059
कर्क	18/07/2056	वृष	19/05/2057	मेष	22/01/2058	धनु	28/09/2058	वृश्चि	28/04/2059
मिथु	04/09/2056	मेष	25/05/2057	धनु	01/03/2058	वृश्चि	09/10/2058	तुला	14/06/2059
वृष	27/11/2056	धनु	03/06/2057	वृश्चि	28/03/2058	तुला	05/11/2058	कन्या	10/07/2059
मेष	03/01/2057	वृश्चि	10/06/2057	तुला	28/05/2058	कन्या	19/11/2058	सिंह	25/07/2059
धनु	24/02/2057	तुला	24/06/2057	कन्या	02/07/2058	सिंह	28/11/2058	कर्क	24/09/2059
वृश्चि	02/04/2057	कन्या	02/07/2057	सिंह	21/07/2058	कर्क	01/01/2059	मिथु	20/10/2059

चर दशा

भोग्य दशा काल : कुम्भ 8 वर्ष 0 मास 0 दिन

कुम्भ 8 वर्ष	
28/05/1964	
28/05/1972	
मीन	26/01/1965
मेष	27/09/1965
वृष	28/05/1966
मिथु	27/01/1967
कर्क	27/09/1967
सिंह	28/05/1968
कन्या	26/01/1969
तुला	27/09/1969
वृश्चि	28/05/1970
धनु	27/01/1971
मक	27/09/1971
कुंभ	28/05/1972

मीन 11 वर्ष	
28/05/1972	
28/05/1983	
मेष	27/04/1973
वृष	28/03/1974
मिथु	26/02/1975
कर्क	27/01/1976
सिंह	27/12/1976
कन्या	26/11/1977
तुला	27/10/1978
वृश्चि	27/09/1979
धनु	27/08/1980
मक	28/07/1981
कुंभ	27/06/1982
मीन	28/05/1983

मेष 12 वर्ष	
28/05/1983	
28/05/1995	
वृष	28/05/1984
मिथु	28/05/1985
कर्क	28/05/1986
सिंह	28/05/1987
कन्या	28/05/1988
तुला	28/05/1989
वृश्चि	28/05/1990
धनु	28/05/1991
मक	28/05/1992
कुंभ	28/05/1993
मीन	28/05/1994
मेष	28/05/1995

वृष 1 वर्ष	
28/05/1995	
28/05/1996	
मेष	28/06/1995
मीन	28/07/1995
कुंभ	28/08/1995
मक	27/09/1995
धनु	27/10/1995
वृश्चि	27/11/1995
तुला	27/12/1995
कन्या	27/01/1996
सिंह	26/02/1996
कर्क	28/03/1996
मिथु	27/04/1996
वृष	28/05/1996

मिथुन 10 वर्ष	
28/05/1996	
28/05/2006	
वृष	28/03/1997
मेष	26/01/1998
मीन	27/11/1998
कुंभ	27/09/1999
मक	27/07/2000
धनु	28/05/2001
वृश्चि	28/03/2002
तुला	27/01/2003
कन्या	27/11/2003
सिंह	26/09/2004
कर्क	28/07/2005
मिथु	28/05/2006

कर्क 8 वर्ष	
28/05/2006	
28/05/2014	
मिथु	27/01/2007
वृष	27/09/2007
मेष	28/05/2008
मीन	26/01/2009
कुंभ	27/09/2009
मक	28/05/2010
धनु	27/01/2011
वृश्चि	27/09/2011
तुला	28/05/2012
कन्या	26/01/2013
सिंह	27/09/2013
कर्क	28/05/2014

सिंह 3 वर्ष	
28/05/2014	
28/05/2017	
कन्या	27/08/2014
तुला	27/11/2014
वृश्चि	26/02/2015
धनु	28/05/2015
मक	28/08/2015
कुंभ	27/11/2015
मीन	26/02/2016
मेष	28/05/2016
वृष	27/08/2016
मिथु	26/11/2016
कर्क	25/02/2017
सिंह	28/05/2017

कन्या 5 वर्ष	
28/05/2017	
28/05/2022	
तुला	27/10/2017
वृश्चि	28/03/2018
धनु	27/08/2018
मक	27/01/2019
कुंभ	28/06/2019
मीन	27/11/2019
मेष	27/04/2020
वृष	26/09/2020
मिथु	25/02/2021
कर्क	28/07/2021
सिंह	27/12/2021
कन्या	28/05/2022

तुला 8 वर्ष	
28/05/2022	
28/05/2030	
वृश्चि	27/01/2023
धनु	27/09/2023
मक	28/05/2024
कुंभ	26/01/2025
मीन	27/09/2025
मेष	28/05/2026
वृष	27/01/2027
मिथु	27/09/2027
कर्क	28/05/2028
सिंह	26/01/2029
कन्या	27/09/2029
तुला	28/05/2030

वृश्चिक 5 वर्ष	
28/05/2030	
28/05/2035	
तुला	27/10/2030
कन्या	28/03/2031
सिंह	28/08/2031
कर्क	27/01/2032
मिथु	27/06/2032
वृष	26/11/2032
मेष	27/04/2033
मीन	27/09/2033
कुंभ	26/02/2034
मक	28/07/2034
धनु	27/12/2034
वृश्चि	28/05/2035

धनु 4 वर्ष	
28/05/2035	
28/05/2039	
वृश्चि	27/09/2035
तुला	27/01/2036
कन्या	28/05/2036
सिंह	26/09/2036
कर्क	26/01/2037
मिथु	28/05/2037
वृष	27/09/2037
मेष	26/01/2038
मीन	28/05/2038
कुंभ	27/09/2038
मक	27/01/2039
धनु	28/05/2039

मकर 11 वर्ष	
28/05/2039	
28/05/2050	
धनु	27/04/2040
वृश्चि	28/03/2041
तुला	26/02/2042
कन्या	27/01/2043
सिंह	27/12/2043
कर्क	26/11/2044
मिथु	27/10/2045
वृष	27/09/2046
मेष	28/08/2047
मीन	27/07/2048
कुंभ	27/06/2049
मक	28/05/2050

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

तुला - मेष		तुला - वृष		तुला - मिथु		तुला - कर्क		तुला - सिंह	
27/09/2025		28/05/2026		27/01/2027		27/09/2027		28/05/2028	
28/05/2026		27/01/2027		27/09/2027		28/05/2028		26/01/2029	
वृष	17/10/2025	मेष	17/06/2026	वृष	16/02/2027	मिथु	17/10/2027	कन्या	17/06/2028
मिथु	06/11/2025	मीन	08/07/2026	मेष	08/03/2027	वृष	07/11/2027	तुला	07/07/2028
कर्क	26/11/2025	कुंभ	28/07/2026	मीन	28/03/2027	मेष	27/11/2027	वृश्चि	27/07/2028
सिंह	17/12/2025	मक	17/08/2026	कुंभ	18/04/2027	मीन	17/12/2027	धनु	17/08/2028
कन्या	06/01/2026	धनु	06/09/2026	मक	08/05/2027	कुंभ	06/01/2028	मक	06/09/2028
तुला	26/01/2026	वृश्चि	27/09/2026	धनु	28/05/2027	मक	27/01/2028	कुंभ	26/09/2028
वृश्चि	16/02/2026	तुला	17/10/2026	वृश्चि	18/06/2027	धनु	16/02/2028	मीन	17/10/2028
धनु	08/03/2026	कन्या	06/11/2026	तुला	08/07/2027	वृश्चि	07/03/2028	मेष	06/11/2028
मक	28/03/2026	सिंह	27/11/2026	कन्या	28/07/2027	तुला	28/03/2028	वृष	26/11/2028
कुंभ	17/04/2026	कर्क	17/12/2026	सिंह	17/08/2027	कन्या	17/04/2028	मिथु	16/12/2028
मीन	08/05/2026	मिथु	06/01/2027	कर्क	07/09/2027	सिंह	07/05/2028	कर्क	06/01/2029
मेष	28/05/2026	वृष	27/01/2027	मिथु	27/09/2027	कर्क	28/05/2028	सिंह	26/01/2029

तुला - कन्या		तुला - तुला		वृश्चि - तुला		वृश्चि - कन्या		वृश्चि - सिंह	
26/01/2029		27/09/2029		28/05/2030		27/10/2030		28/03/2031	
27/09/2029		28/05/2030		27/10/2030		28/03/2031		28/08/2031	
तुला	15/02/2029	वृश्चि	17/10/2029	वृश्चि	10/06/2030	तुला	09/11/2030	कन्या	10/04/2031
वृश्चि	08/03/2029	धनु	06/11/2029	धनु	22/06/2030	वृश्चि	22/11/2030	तुला	23/04/2031
धनु	28/03/2029	मक	26/11/2029	मक	05/07/2030	धनु	04/12/2030	वृश्चि	05/05/2031
मक	17/04/2029	कुंभ	17/12/2029	कुंभ	18/07/2030	मक	17/12/2030	धनु	18/05/2031
कुंभ	07/05/2029	मीन	06/01/2030	मीन	30/07/2030	कुंभ	30/12/2030	मक	31/05/2031
मीन	28/05/2029	मेष	26/01/2030	मेष	12/08/2030	मीन	11/01/2031	कुंभ	12/06/2031
मेष	17/06/2029	वृष	16/02/2030	वृष	25/08/2030	मेष	24/01/2031	मीन	25/06/2031
वृष	07/07/2029	मिथु	08/03/2030	मिथु	06/09/2030	वृष	06/02/2031	मेष	08/07/2031
मिथु	28/07/2029	कर्क	28/03/2030	कर्क	19/09/2030	मिथु	18/02/2031	वृष	21/07/2031
कर्क	17/08/2029	सिंह	17/04/2030	सिंह	02/10/2030	कर्क	03/03/2031	मिथु	02/08/2031
सिंह	06/09/2029	कन्या	08/05/2030	कन्या	15/10/2030	सिंह	16/03/2031	कर्क	15/08/2031
कन्या	27/09/2029	तुला	28/05/2030	तुला	27/10/2030	कन्या	28/03/2031	सिंह	28/08/2031

वृश्चि - कर्क		वृश्चि - मिथु		वृश्चि - वृष		वृश्चि - मेष		वृश्चि - मीन	
28/08/2031		27/01/2032		27/06/2032		26/11/2032		27/04/2033	
27/01/2032		27/06/2032		26/11/2032		27/04/2033		27/09/2033	
मिथु	09/09/2031	वृष	08/02/2032	मेष	10/07/2032	वृष	09/12/2032	मेष	10/05/2033
वृष	22/09/2031	मेष	21/02/2032	मीन	22/07/2032	मिथु	22/12/2032	वृष	23/05/2033
मेष	05/10/2031	मीन	05/03/2032	कुंभ	04/08/2032	कर्क	03/01/2033	मिथु	04/06/2033
मीन	17/10/2031	कुंभ	18/03/2032	मक	17/08/2032	सिंह	16/01/2033	कर्क	17/06/2033
कुंभ	30/10/2031	मक	30/03/2032	धनु	29/08/2032	कन्या	29/01/2033	सिंह	30/06/2033
मक	12/11/2031	धनु	12/04/2032	वृश्चि	11/09/2032	तुला	10/02/2033	कन्या	12/07/2033
धनु	24/11/2031	वृश्चि	25/04/2032	तुला	24/09/2032	वृश्चि	23/02/2033	तुला	25/07/2033
वृश्चि	07/12/2031	तुला	07/05/2032	कन्या	06/10/2032	धनु	08/03/2033	वृश्चि	07/08/2033
तुला	20/12/2031	कन्या	20/05/2032	सिंह	19/10/2032	मक	20/03/2033	धनु	19/08/2033
कन्या	01/01/2032	सिंह	02/06/2032	कर्क	01/11/2032	कुंभ	02/04/2033	मक	01/09/2033
सिंह	14/01/2032	कर्क	14/06/2032	मिथु	13/11/2032	मीन	15/04/2033	कुंभ	14/09/2033
कर्क	27/01/2032	मिथु	27/06/2032	वृष	26/11/2032	मेष	27/04/2033	मीन	27/09/2033

चर दशा - प्रत्यन्तर

वृश्चि - कुंभ		वृश्चि - मक		वृश्चि - धनु		वृश्चि - वृश्चि		धनु - वृश्चि	
27/09/2033		26/02/2034		28/07/2034		27/12/2034		28/05/2035	
26/02/2034		28/07/2034		27/12/2034		28/05/2035		27/09/2035	
मीन	09/10/2033	धनु	10/03/2034	वृश्चि	10/08/2034	तुला	09/01/2035	तुला	07/06/2035
मेष	22/10/2033	वृश्चि	23/03/2034	तुला	22/08/2034	कन्या	21/01/2035	कन्या	18/06/2035
वृष	04/11/2033	तुला	05/04/2034	कन्या	04/09/2034	सिंह	03/02/2035	सिंह	28/06/2035
मिथु	16/11/2033	कन्या	17/04/2034	सिंह	17/09/2034	कर्क	16/02/2035	कर्क	08/07/2035
कर्क	29/11/2033	सिंह	30/04/2034	कर्क	29/09/2034	मिथु	28/02/2035	मिथु	18/07/2035
सिंह	12/12/2033	कर्क	13/05/2034	मिथु	12/10/2034	वृष	13/03/2035	वृष	28/07/2035
कन्या	24/12/2033	मिथु	25/05/2034	वृष	25/10/2034	मेष	26/03/2035	मेष	07/08/2035
तुला	06/01/2034	वृष	07/06/2034	मेष	06/11/2034	मीन	08/04/2035	मीन	17/08/2035
वृश्चि	19/01/2034	मेष	20/06/2034	मीन	19/11/2034	कुंभ	20/04/2035	कुंभ	28/08/2035
धनु	31/01/2034	मीन	03/07/2034	कुंभ	02/12/2034	मक	03/05/2035	मक	07/09/2035
मक	13/02/2034	कुंभ	15/07/2034	मक	14/12/2034	धनु	16/05/2035	धनु	17/09/2035
कुंभ	26/02/2034	मक	28/07/2034	धनु	27/12/2034	वृश्चि	28/05/2035	वृश्चि	27/09/2035

धनु - तुला		धनु - कन्या		धनु - सिंह		धनु - कर्क		धनु - मिथु	
27/09/2035		27/01/2036		28/05/2036		26/09/2036		26/01/2037	
27/01/2036		28/05/2036		26/09/2036		26/01/2037		28/05/2037	
वृश्चि	07/10/2035	तुला	06/02/2036	कन्या	07/06/2036	मिथु	06/10/2036	वृष	05/02/2037
धनु	17/10/2035	वृश्चि	16/02/2036	तुला	17/06/2036	वृष	17/10/2036	मेष	15/02/2037
मक	27/10/2035	धनु	26/02/2036	वृश्चि	27/06/2036	मेष	27/10/2036	मीन	25/02/2037
कुंभ	07/11/2035	मक	07/03/2036	धनु	07/07/2036	मीन	06/11/2036	कुंभ	08/03/2037
मीन	17/11/2035	कुंभ	18/03/2036	मक	17/07/2036	कुंभ	16/11/2036	मक	18/03/2037
मेष	27/11/2035	मीन	28/03/2036	कुंभ	27/07/2036	मक	26/11/2036	धनु	28/03/2037
वृष	07/12/2035	मेष	07/04/2036	मीन	07/08/2036	धनु	06/12/2036	वृश्चि	07/04/2037
मिथु	17/12/2035	वृष	17/04/2036	मेष	17/08/2036	वृश्चि	16/12/2036	तुला	17/04/2037
कर्क	27/12/2035	मिथु	27/04/2036	वृष	27/08/2036	तुला	27/12/2036	कन्या	27/04/2037
सिंह	06/01/2036	कर्क	07/05/2036	मिथु	06/09/2036	कन्या	06/01/2037	सिंह	07/05/2037
कन्या	17/01/2036	सिंह	17/05/2036	कर्क	16/09/2036	सिंह	16/01/2037	कर्क	18/05/2037
तुला	27/01/2036	कन्या	28/05/2036	सिंह	26/09/2036	कर्क	26/01/2037	मिथु	28/05/2037

धनु - वृष		धनु - मेष		धनु - मीन		धनु - कुंभ		धनु - मक	
28/05/2037		27/09/2037		26/01/2038		28/05/2038		27/09/2038	
27/09/2037		26/01/2038		28/05/2038		27/09/2038		27/01/2039	
मेष	07/06/2037	वृष	07/10/2037	मेष	05/02/2038	मीन	07/06/2038	धनु	07/10/2038
मीन	17/06/2037	मिथु	17/10/2037	वृष	16/02/2038	मेष	17/06/2038	वृश्चि	17/10/2038
कुंभ	27/06/2037	कर्क	27/10/2037	मिथु	26/02/2038	वृष	27/06/2038	तुला	27/10/2038
मक	07/07/2037	सिंह	06/11/2037	कर्क	08/03/2038	मिथु	08/07/2038	कन्या	06/11/2038
धनु	18/07/2037	कन्या	16/11/2037	सिंह	18/03/2038	कर्क	18/07/2038	सिंह	17/11/2038
वृश्चि	28/07/2037	तुला	26/11/2037	कन्या	28/03/2038	सिंह	28/07/2038	कर्क	27/11/2038
तुला	07/08/2037	वृश्चि	07/12/2037	तुला	07/04/2038	कन्या	07/08/2038	मिथु	07/12/2038
कन्या	17/08/2037	धनु	17/12/2037	वृश्चि	17/04/2038	तुला	17/08/2038	वृष	17/12/2038
सिंह	27/08/2037	मक	27/12/2037	धनु	28/04/2038	वृश्चि	27/08/2038	मेष	27/12/2038
कर्क	06/09/2037	कुंभ	06/01/2038	मक	08/05/2038	धनु	06/09/2038	मीन	06/01/2039
मिथु	16/09/2037	मीन	16/01/2038	कुंभ	18/05/2038	मक	17/09/2038	कुंभ	16/01/2039
वृष	27/09/2037	मेष	26/01/2038	मीन	28/05/2038	कुंभ	27/09/2038	मक	27/01/2039

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	8
मित्र अंक	1, 4, 8, 9
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	शुक्र, शनि, मंगल
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगल
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	वृष, तुला, धनु
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	97%	सन्तति सुख, सुख, भाग्योदय
नीलम	शनि	89%	स्वास्थ्य, कम खर्च
गोमेद	राहु	73%	सन्तति सुख, पराक्रम
मूंगा	मंगल	70%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
पुखराज	गुरु	64%	पराक्रम, धनार्जन, धन
लहसुनिया	केतु	61%	धनार्जन, पराक्रम
पन्ना	बुध	56%	पराक्रम, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
माणिक्य	सूर्य	55%	सुख, दम्पति
मोती	चंद्र	3%	व्यावसायिक हानि, शत्रु व रोग

रत्न की शुभता

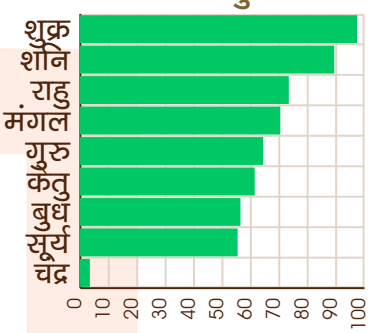

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	26/07/1966	61%	0%	70%	69%	64%	100%	89%	73%	61%
केतु	26/07/1973	34%	0%	76%	56%	64%	100%	77%	61%	73%
शुक्र	26/07/1993	34%	0%	70%	62%	64%	100%	96%	80%	67%
सूर्य	26/07/1999	67%	16%	76%	56%	70%	84%	77%	61%	47%
चंद्र	26/07/2009	61%	28%	70%	62%	64%	97%	89%	61%	47%
मंगल	25/07/2016	61%	16%	82%	38%	70%	97%	89%	61%	67%
राहु	26/07/2034	34%	0%	58%	56%	64%	100%	96%	86%	47%
गुरु	26/07/2050	61%	16%	76%	38%	77%	84%	89%	73%	61%
शनि	26/07/2069	34%	0%	58%	62%	64%	100%	100%	80%	47%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए हीरा व नीलम रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए गोमेद, मूंगा, पुखराज, लहसुनिया, पन्ना एवं माणिक्य रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मोती पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र पंचम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको कविताओं, ललितकलाओं और लेखन में गहरी रुचि देगा। संगत, कला और सौंदर्य सम्पन्न और सद्गुणी

बनाएगा। आप आस्तिक और उदार व्यक्ति बनेंगे। हीरे रत्न प्रभाव से आप विद्वान, प्रतिभाशाली और अच्छे वक्ता सिद्ध होंगे। इस रत्न की शुभता से आप राजनीतिज्ञ मंत्री या न्यायाधीस भी हो सकते हैं। साथ ही यह रत्न वाहनों का सुख, उत्तम व विश्वसनीय मित्र देगा। संतान सुख के पक्ष से भी यह रत्न शुभदायक रहेगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में शुक्र चतुर्थेश एवं नवमेश है। आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। शुक्र रत्न आपको सुख-सुविधा युक्त वाहन, साज सज्जा युक्त घर एवं भूमि-भवन प्राप्त करने में सहयोग कर सकता है। इसकी शुभता से आप संचित धन एवं माध्यमिक शिक्षा प्राप्ति में अनुकूल फल दिला सकता है। हीरा रत्न शुक्र का रत्न होने के कारण आपको आकर्षक बना सकता है। शुक्र रत्न हीरा आपको धर्म मार्ग से जोड़ेगा, पुण्य, भाग्यवर्धक, गुरु, तीर्थ यात्रा, पिता का सुख एवं दूर स्थानों की यात्राएं करा सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि लग्न भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। शनि रत्न नीलम आपकी परिश्रम क्षमता एवं कार्यकुशलता में वृद्धि करेगा। सरकारी पक्ष व पिता से सहयोग प्राप्त होगा। प्रथम भाव में स्थित शनि की दृष्टि तृतीय, सप्तम एवं दशम भाव पर आ रही है। शनि रत्न नीलम की शुभता से भाग्योदय, सम्मान एवं लाभ की प्राप्ति होगी। जीवन साथी से सहयोग प्राप्त होगा। भाई-बंधुओं से सुख-स्नेह प्राप्ति में भी यह रत्न सहयोग करेगा। नीलम रत्न आपके पुरुषार्थ भाव में वृद्धि कर रहे है।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में शनि लग्नेश एवं द्वादशेश है। शनि की शुभता में वृद्धि करने के लिए आप नीलम रत्न धारण कर सकते है। नीलम रत्न शनि का रत्न होने के कारण आपको निरोगी, स्वस्थ और शारीरिक कुशलता दे सकता है। इस रत्न को आप अपने जीवन रत्न के रूप में भी धारण कर सकते है। नीलम रत्न की शुभता से आपके व्यर्थ व्यय नियंत्रित रहेंगे। अस्पताल व जेल इत्यादि क्षेत्रों से आपको परेशानी अधिक नहीं होगी। शनि रत्न नीलम का प्रभाव आपकी निद्रा सुख को भी बढ़ाएगा। समुद्रिक यात्रा, विदेश यात्रा का सुख भी यह रत्न आपको दे सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु पंचम भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न आपको तीक्ष्णबुद्धिवान, विभिन्न शास्त्रों का ज्ञाता, दयालु और कर्मठ बनायेगा। इसकी शुभता से आपके भाग्य में शुभता आयेगी। व्यवसायिक कार्यो में आपको रत्न शुभता प्रदान कर सफलता देगा। रत्न प्रभाव से आपकी लेखनकला में कुशलता आयेगी। आर्थिक स्थिति प्रबल होगी। गोमेद रत्न आपको सदमार्ग पर चलने में सहयोग करेगा। रत्न प्रभाव से धन संग्रह करना आपके लिए सहज होगा। गोमेद रत्न आपको चिकित्सा क्षेत्र में सफलता देगा।

राहु मिथुन राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध तीसरे भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप बुद्धि और पराक्रम दोनों का प्रयोग कर सफलता पाने का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको परम प्रतापी और अत्यन्त प्रभावशाली बनाएगा। आपको सब प्रकार के सुखों से युक्त करेगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको भाई बहनों का सुख प्राप्त होगा। यह रत्न आपके भाग्योदय में सहायक बन आपको अत्यधिक धन प्राप्त करने के अवसर दे सकता है। रत्न शुभता आपके अरिष्टों का नाश करेगी। एवं यह रत्न आपको दृढ़-विवेकी, योगाभ्यासी बनाएगा और आप विद्वान और तीव्र स्मरण शक्ति के स्वामी होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

मूंगा

आपकी कुंड़ली में मंगल तीसरे भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको धैर्यवान, साहसी बना रहा है। मूंगा रत्न आपको पराक्रमी, शत्रु पर विजय, युद्ध कला में निपुणता देगा। यह रत्न धारण करने के बाद आपको परिवार जनों से सुख प्राप्ति, छोटे भाई से स्नेह की प्राप्ति एवं यात्रा का प्रेमी बनाता है। मूंगा अनुकूल रत्न होने के कारण इसकी शुभता से आपको सम्मान व धन की प्राप्ति भी होगी। मूंगा रत्न आपको विनम्र बनाकर लाभान्वित करेगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं दशमेश है। आप मंगल रत्न मूंगा धारण कर सकते है। यह मूंगा सेवकों एवं सहोदरों से आपके संबंध मजबूत कर सकता है। रत्न शुभता से आपको कंप्यूटर तकनीक एवं इंजीनियरिंग क्षेत्र में शुभ फल प्रदान कर सकता है। मूंगा रत्न आपके लिए आजीविका क्षेत्र का रत्न है। अतः इस रत्न को धारण कर आप अपने पुरुषार्थ से कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते है. आप यह रत्न धारण कर अपनी नेतृत्व योग्यता, प्रभुता, व्यापार, अधिकार, राज्य एवं साहस भाव में वृद्धि कर शुभ फल प्राप्त कर सकते है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु तीसरे भाव में स्थित है। आप गुरु रत्न पुखराज धारण करें। पुखराज रत्न आपको अपने बड़े भाईयों से स्नेह दिलायेगा। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोग करेगा। पुखराज रत्न की शुभता आपको स्वतन्त्र व्यापार की ओर अग्रसर कर सकती है। भाग्य और आय क्षेत्र में सफलता प्राप्ति होती है। पुखराज रत्न आपको सहोदर भ्राताओं का सुख प्राप्त करायेगा। धन, सुख-सौभाग्य के लिए भी पुखराज रत्न शुभदायक रत्न है।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में गुरु दवितीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी है। आप गुरु रत्न पुखराज धारण कर सकते है। पुखराज रत्न की शुभता से आपके धन, लाभ व

उन्नति में उत्तरोत्तर वृद्धि हो सकती हैं। रत्न शुभता से आपके बडी उम्र के दोस्त, सभी प्रकार के लाभ, इच्छापूर्ति की संभावना, दया, सलाहकार, अनुयायी एवं शुभ चिन्तक भी प्राप्त हो सकते हैं। रत्न प्रभाव आपको उत्तम आय वाला, शूर, निरोगी, स्वस्थ, धनी, दीर्घायु, स्थिर संपत्ति वाला तथा अनेक आयामों से सौभाग्यशाली कर सकता हैं।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु एकादश भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न धारण करने से आपके शत्रु आपसे भयभीत होंगे। आपकी चिंताओं का निवारण होगी। संतान संबंधी चिंताओं को शीघ्र दूर करने में सफल होंगे। आपका घर सुंदर सज्जायुक्त हो सकता है। पेट के रोगों से आपको राहत मिलेगी। आमदनी के साधनों में वृद्धि होगी। लहसुनिया रत्न आपको तेजस्वी, मनोहरी व्यक्तित्व और संतोषी जीवन देगा। आपको आय क्षेत्रों में प्रशंसा प्राप्त होगी।

केतु धनु राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु तीसरे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया धारण करने से आप बुद्धि और पराक्रम दोनों का प्रयोग कर सफलता पाने का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको परम प्रतापी और अत्यन्त प्रभावशाली बनाएगा। आपको सब प्रकार के सुखों से युक्त करेगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको भाई बहनों का सुख प्राप्त होगा। यह रत्न आपके भाग्योदय में सहायक बन आपको अत्यधिक धन प्राप्त करने के अवसर दे सकता है। रत्न शुभता आपके अरिष्टों का नाश करेगी। एवं यह रत्न आपको दृढ़-विवेकी, योगाभ्यासी बनाएगा और आप विद्वान और तीव्र स्मरण शक्ति के स्वामी होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल

लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको व्यापारी सफलता देगा। व्यापारी वर्ग से मित्रवत संबंध स्थापित करेगा। व्यापारादि कार्यों रुचि आती है। आपको भाई-बंधुओं से लाभ प्राप्ति के संयोग बनेगें। रत्न प्रभाव से शौर्य, पराक्रम और वीरता के स्थान पर बुद्धि बल का प्रयोग अधिक करेंगे। लेखन और कला के पक्ष से भी पन्ना रत्न अनुकूल फल देगा। यह रत्न आपको विचार एवं भाव अभिव्यक्ति की योग्यता देगा। स्मरणशक्ति बढ़ाने के लिये आप यह रत्न धारण कर सकते है।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते है। बुध रत्न पन्ना धारण कर आप शिक्षा क्षेत्र में योग्यता से अधिक सफलता प्राप्त कर सकते है। रत्न शुभता से आपके बुद्धिबल का विकास हो सकता है। आप की स्मरण शक्ति प्रबल हो सकती है। यह रत्न आपकी विद्या ग्रहण शक्ति का विकास कर सकता है। बुध रत्न आपके लिए शुभ रत्न है तथा इसकी शुभता से आपके संतान सुख में भी वृद्धि होगी। पन्ना रत्न आपके आत्मविश्वास को प्रबल, प्रबंध क्षमता उत्तम, गणितीय योग्यता उत्तम, नियोजन कुशलता श्रेष्ठ रख सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपकी सुख-समृद्धि को बढ़ायेगा। इस रत्न को धारण कर आप धन दौलत से परिपूर्ण होंगे। यह रत्न आपको शीघ्र ही लोकप्रियता देगा। पिता से संबंध मजबूत करेगा। भाईयों व बंधुओं के स्नेह का पात्र बनेंगे। प्रवास में अधिक रहना पड़ सकता है। मित्रवर्ग में सूर्य रत्न माणिक्य आपको विशेष अधिकार दिला सकता है। सूर्य रत्न आपको माणिक्य ऊंच पदवी, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं सम्मानजनक स्थिति देगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में सूर्य सप्तम भाव के स्वामी है। आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते है। माणिक्य रत्न की शुभता से आपको स्वास्थ्य अनुकूलता प्राप्त हो सकती है। आप तेजस्वी बन सकते है। यह रत्न आपको शक्तिशाली बना सकता है। दांपत्य जीवन को आनन्दमय बनाए रखने के लिए भी आप माणिक्य रत्न धारण कर सकते है। सप्तम भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण सूर्य आपको स्वतंत्र व्यापार करने का गुण दे सकता है। माणिक्य रत्न सूर्य का रत्न होने के कारण आपको सरकारी क्षेत्रों में अनुकूलता देगा।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपकी महत्वकांक्षा भावना बढ़ सकती है। आपके दायित्वों का विस्तार हो सकता है। आपको अपने व्यवसाय में कई बार परिवर्तन करने पड़ सकते है। इस रत्न को पहनने पर कार्यक्षेत्र में आपके अधिकांश स्त्रियों से संबंध मधुर न रहें। मोती रत्न आपको आंशिक रूप से अत्यधिक संवेदनशील बना सकता है। जिसके कारण आप अव्यवहारिक हो सकते है। व्यापार और व्यवसाय के मामलों में आपको कार्यकुशलता की कमी का अनुभव हो सकता है। यह रत्न आपकी लोकप्रियता में कमी कर सकता है। अधिक से अधिक की प्राप्ति के लिए आप प्रयासरत हो सकते है। मोती रत्न आपके पिता के स्वास्थ्य में अस्थिरता ला सकता है।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती आपको शारीरिक रूप से कमजोर कर सकता है। इस रत्न प्रभाव से आपका रुग्ण शरीर व शीत विकारयुक्त हो सकता है। मोती रत्न आपको भय व चिंताग्रस्त कर सकता है। छठे भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण मोती आपको शत्रुओं पर संघर्ष के बाद विजय देगा। कभी कभी आप अपने शत्रुओं को कमजोर समझकर पूर्ण शक्ति से विरोध नहीं करते है। रत्न धारण से आपको ननिहाल पक्ष से हानि की स्थिति बन सकती है। साथ ही यह रत्न आपको जीवन साथी से वैचारिक मतभेद दे सकता है। चंद्र रत्न मोती पहनने पर आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

राहु
(25/07/2016 - 26/07/2034)

राहु की दशा में आपका हीरा, नीलम व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, मूंगा व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(26/07/2034 - 26/07/2050)

गुरु की दशा में आपका नीलम, हीरा, पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, माणिक्य व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(26/07/2050 - 26/07/2069)

शनि की दशा में आपका हीरा, नीलम व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, पन्ना व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

बुध - 26/07/1966

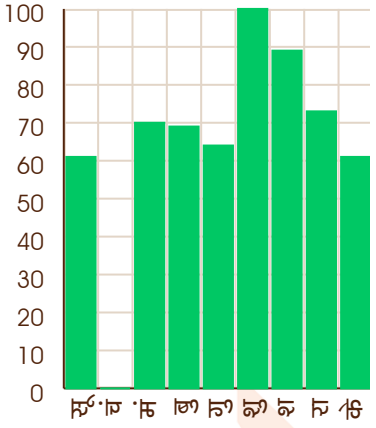

केतु - 26/07/1973

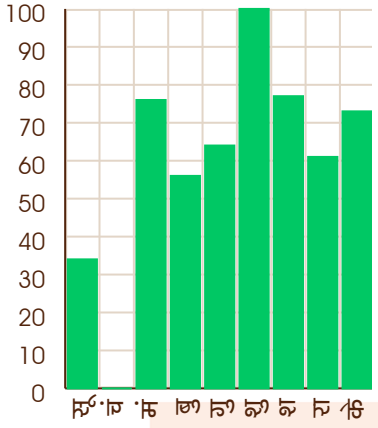

शुक्र - 26/07/1993

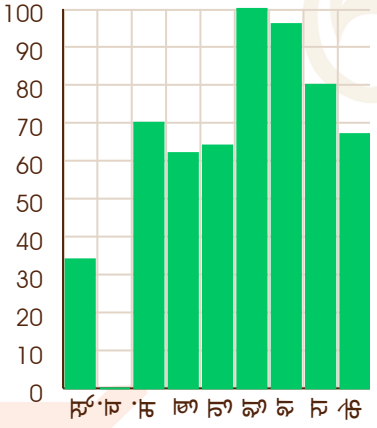

सूर्य - 26/07/1999

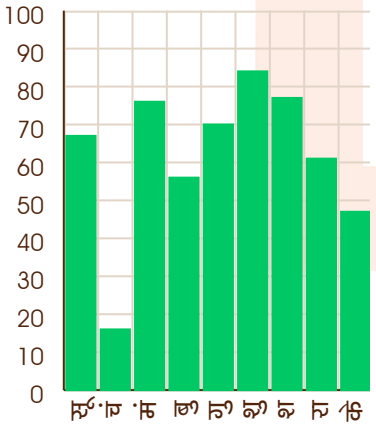

चन्द्र - 26/07/2009

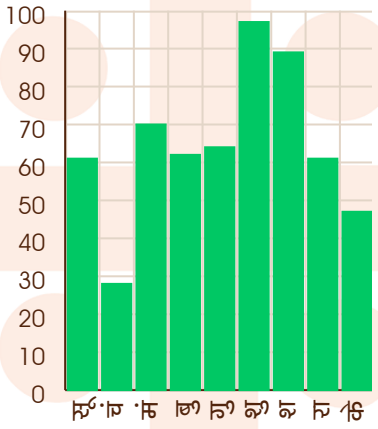

मंगल - 25/07/2016

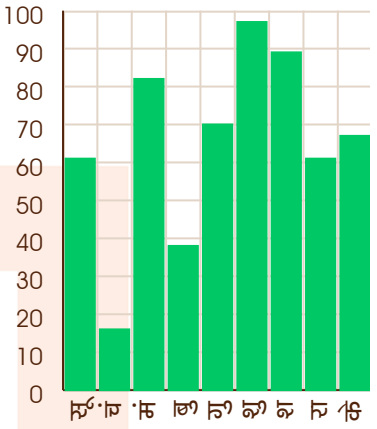

राहु - 26/07/2034

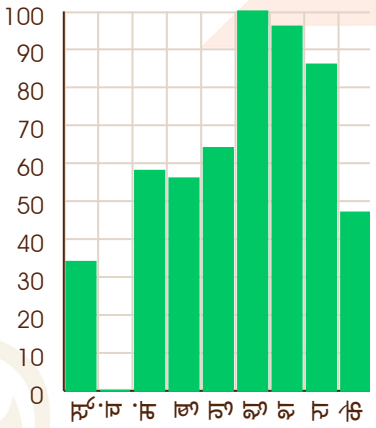

गुरु - 26/07/2050

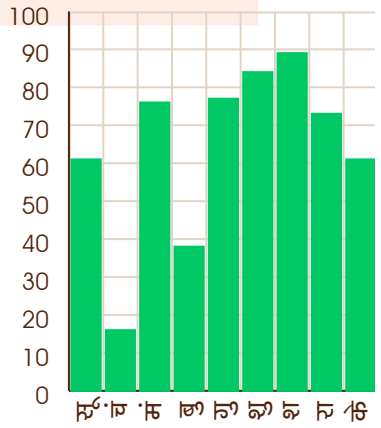

शनि - 26/07/2069

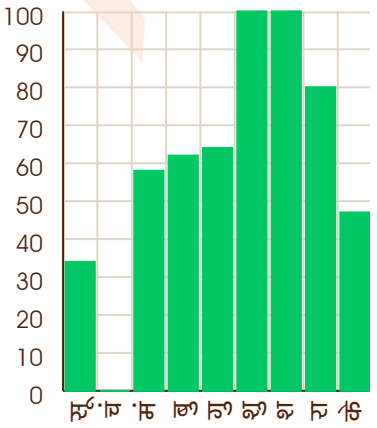

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - ऐमेथिस्ट

आपका जन्म कुंभ राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शनि होता है। शनि सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि इसको न्याय के साथसजा देने का अधिकार प्राप्त है तथा न्यायप्रिय ग्रह माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः कुंभ राशि के लग्न वाले जातकों को कुंभ राशि के स्वामी ग्रह शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शनि ग्रह के लिये एमेथिस्ट रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे तो शनि को सेवक का पद प्राप्त है तथा एकाग्रचित व साधना का प्रतिनिधि ग्रह है इससे जातक को अच्छी नौकरी की प्राप्ति, लाभ व विद्यार्थियों को एकाग्रता प्रदान करता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने अधीनस्थ कर्मचारियों एवं सेवकों का सहयोग तथा सुख प्राप्त होता है। शनि ग्रह राजसेवक का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको जोड़ों के दर्द व लाइलाज रोगों से परेशानी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा आत्मिक बल की प्राप्ति होती है जिससे आध्यात्मिक गुण, योग साधना में अपनी सफलता प्राप्त करते हैं।

ऐमेथिस्ट रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है । ऐमेथिस्ट रत्न शनि का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त काल से एक घंटे के अंदर अंगूठी को धारण कर लेना चाहिए। ऐमेथिस्ट को यदि रविवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ऐमेथिस्ट को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर काले या नीले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, बुध के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ऊँ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे काली उड़द, सवा

मीटर काले कपड़े का दान करें तो ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सेवकों या अधीनस्थ कर्मचारियों व जमादार को यथोचित समय-समय पर वस्त्र या पैसे आदि का दान करें तो यह ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव महाराज की उपासना करें तथा शनिदेवजी का सरसों के तेल से अभिषेक करें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

कुंभ लग्न वाले जातक यदि ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कुम्भ लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई रहेगा। आप दिल के साफ और महत्वकांक्षी व्यक्ति हैं। अपने कार्य में किसी का हस्तक्षेप आप सहन नहीं करते हैं। आप परोपकारी और उदार हैं। समूह के साथ कार्य करना आपको अच्छा लगता है इसलिए आपके मित्र भी अधिक हो सकते हैं। आपको लोगों को साथ लेकर चलना अच्छा लगता हैं। अपने द्वारा किये हुए कार्यों का श्रेय लेने का प्रयास आप नहीं करते हैं। और हमेशा पीछे रहकर ही कार्य करना पसंद होता है।

आपको खुलकर अपनी बात कहने का प्रयास करना चाहिए और आपको दूसरों की बातें सुनना और अपनी बातों को खुलकर बोलने की आदत डालनी चाहिए। आप विषयों की

गहराई मे जाकर सोचते हैं, परन्तु इनकी सोच और लोगों की सोच से भिन्न होती है इसलिए लोग इनकी बातों को आसानी से समझ नहीं पाते। आप बहुत धीरे-धीरे सोच समझकर कार्य करते हैं और संघर्षशील हो सकते हैं। आपका व्यवहार अलग और संयमशील है। कभी-कभी आपका स्वाभिमान अहंकार में परिवर्तित होने लगता है। कभी-कभी दूसरों की खुशी का भी ध्यान रखकर कार्य कर लेना चाहिए।

त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव है। द्वादश भाव अष्टम भाव के बाद दूसरा सबसे अधिक अशुभ भाव समझा जाता हैं। 6, 8 व 12 भाव के स्वामी जिस भाव में स्थित होते है, अथवा जिस भाव के स्वामी के साथ सम्बन्ध बनाते हैं। उन भावों की अशुभता में वृद्धि करते हैं। इन तीन भावों के स्वामी की महादशा-अन्तर्दशा में प्राप्त होने वाले परिणाम शुभफलदायक नहीं होते हैं। 6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

आपके कुम्भ लग्न में चन्द्र षष्ठेश, बुध अष्टमेश व पंचमेश तथा शनि द्वादशेश व लग्नेश हैं। आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में कर्क राशि है। कुंडली के छठे भाव से बाधा, परेशानी, रोग, शत्रु, मामा, नौकर का विचार किया जाता हैं। इसके अलावा इस भाव से ऋण और शत्रु भी देखे जाते हैं। छठे भाव के अलावा कुंडली का अष्टम भाव सबसे अधिक अशुभ भावों में आता हैं। अष्टम भाव से आयु, मृत्यु, लम्बी अवधि के रोगों का विचार किया जाता हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 4, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/05/1964-09/04/1966	03/11/1966-20/12/1966	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/06/1973-23/07/1975	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	----------

द्वितीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
साढेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------

तृतीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धनार्जन

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है। यह भाव पराक्रम मित्र एवं भाई बहनों का प्रतिनिधि भाव है तथा मंगल इनका कारक है अतः तृतीय भाव में मंगल की स्थिति शुभ मानी जाती है। इसके प्रभाव से आप एक पराक्रमी पुरुष होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक कार्य कलापों को आप निर्भय होकर सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको समय समय पर इच्छित सफलता प्राप्त होगी। साथ ही भाई बहनों से भी आवश्यक सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी तथा अपने परिश्रम एवं पराक्रम से आप संचार साधनों को भी अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

कुंडली में तृतीयस्थ मंगल की चतुर्थ दृष्टि षष्ठ भाव पर पड़ेगी इसके प्रभाव से शत्रु वर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे तथा प्रतियोगी परीक्षाओं मुकद्दमों या चुनाव आदि में आपको जीवन में सामान्यतया सफलताएं मिलती रहेंगी। साथ ही इच्छित मात्रा में धनऐश्वर्य की भी प्राप्ति होगी परन्तु पित गर्मी अथवा रक्त विकार संबंधी किसी परेशानी से शारीरिक कष्ट हो सकता है। नवम भाव पर सप्तमस्थ दृष्टि से धर्म एवं धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा भाग्य की अपेक्षा कर्म करने पर ही आप अधिक विश्वास करेंगे। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप स्वपराक्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। यद्यपि इनमें आपको न्यूनाधिक समस्याओं एवं व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अंततोगत्वा आप अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल रहेंगे। लेकिन पिता के स्वास्थ्य के लिए यह स्थिति मध्यम रहेगी परन्तु समाज में वे सम्मानीय पुरुष होंगे तथा अन्य जनों से पूर्ण आदर प्राप्त करेंगे।

इस प्रकार मंगल की इस स्थिति के प्रभाव से आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुख शान्ति से परिपूर्ण रहेगा तथा परिवार का यथोचित पालन करने में आप समर्थ रहेंगे।

पारिवारिक जनों से आपको यथोचित सहयोग एवं प्रोत्साहन मिलता रहेगा जिससे आप उत्साह पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में पद्म नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक को थोड़ा विलम्ब से सन्तान प्राप्त होती है या फिर उसके होने में आंशिक रूप में व्यवधान उपस्थित होता है और जातक को पुत्र सन्तान की प्रायः चिन्ता बनी रहती है। ऐसे जातक को सन्तान सुख अल्प मात्रा में ही मिलता है और अक्सर सन्तान से दूर रहता है। जातक को वंश वृद्धि के लिए थोड़ी बहुत चिन्ता बनी रहती है। विद्याध्ययन में आंशिक रूप से रूकावट आती हैं। पर कालान्तर में व्यवधान स्वतः समाप्त हो जाता है।

इस योग के कारण जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी किसी भी समय कष्टमय हो जाता है। पारिवारिक सदस्यों से जातक को अपयश मिलता है। घर की सुख-शान्ति में थोड़ा अभाव रहता है और जातक के मित्रगण स्वार्थी होते हैं। वे समय-समय पर धोखा दे जाते हैं। जातक के शत्रु षड्यन्त्र रचते रहते हैं, जिससे जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। इस योग के प्रभाव से लाभ मार्ग में आंशिक रूप से बाधा, चिन्ता एवं कष्ट के कारण जीवन संघर्षमय बना रहता है।

इसके प्रभाव से जातक को गुप्त रोग व्याधि कभी घेर लेती है। जिसमें धन अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है और जातक द्वारा संग्रहीत सम्पत्ति को प्रायः दूसरे लोग हरण कर लेते हैं। जातक वृद्धावस्था को लेकर थोड़ा बहुत चिन्तित रहता है। कभी जातक के मन में सन्यास ग्रहण करने की भावना जागृत हो जाती है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक को राजनीति में बहुत सफलता मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।

10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में बुध, शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में

खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 28 है। दो एवं आठ के योग से एक आपका मूलांक होता है। मूलांक एक का स्वामी सूर्य ग्रह है। अंक दो का चन्द्र तथा आठ का शनि है। इन तीनों ही ग्रहों का संयुक्त प्रभाव आपके जीवन में आयेगा।

मूलांक एक का स्वामी सूर्य जीवनदाता है एवं ब्रह्माण्ड में स्थिर ग्रह है। अन्य सभी ग्रह तो सूर्य के चक्कर लगाते हैं। अतः सूर्य ग्रह के प्रभाववश आप एक स्थिर प्रकृति के महत्वाकांक्षी, उदीयमान, प्रतिभाशाली व्यक्ति के रूप में पहचाने जायेंगे। आप स्वतंत्र विचार धारा के धनी होंगे। पराधीन कार्य करने में असुविधा महसूस होगी। आप प्रत्येक कार्य को स्वतंत्रता पूर्वक निष्पक्ष संपादन करने के हिमायती रहेंगे। इससे आपको प्रतिद्वन्दियों के विरोध का सामना करना पड़ेगा। आप स्थायी एवं दीर्घ कालीन संबंध बनाने पर विश्वास करेंगे। आपकी कोशिश हमेशा यही रहेगी कि जब भी आप किसी के साथ मित्रता, व्यापारिक, सामाजिक, राजनैतिक अथवा प्रेम, रोमांस, इत्यादि के जो भी संबंध बनाऐं उनमें स्थायित्व रहे।

सूर्य जिस तरह प्रकाशित ग्रह है। उसी भाँति आप भी अपने जीवन में सदा प्रकाशित रहना पसन्द करेंगे। समाज वर्ग विशेष में मुखिया की भूमिका आप बखूबी निभाने की क्षमता रखेंगे। अपनी मेहनत के बल पर आप सभा-सोसायटी, संगठनों इत्यादि में प्रमुख पद को प्राप्त करेंगे।

अंक दो के स्वामी चन्द्र के कारण आपमें कल्पनाशीलता अच्छी रहेगी। आप जो भी सृजन करेंगे उसमें मौलिकता रहेगी। अंक आठ का स्वामी शनि ग्रह के प्रभाव से कभी-कभी आपके अन्दर नैराश्य भाव जाग्रत होगा। आलस्य में वृद्धि होगी और बनते हुये कार्यों में रुकावटें आयेंगी।

भाग्यांक आठ का स्वामी शनि ग्रह को माना गया है। शनि ग्रह अति धीमा होने से तीस वर्ष में एक राशिपथ भ्रमणचक्र पूर्ण करता है। इसके प्रभाव से आपका भाग्योदय भी धीरे-धीरे होगा। आप भले ही कितनी भी गरीबी में उत्पन्न हुए हों आपका भाग्य सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ता चला जायेगा। इस मध्य रुकावटें भी आयेंगी, जिन्हें आप धैर्य एवं अपने श्रम से पार कर लेंगे। आलस्य एवं निराशा आपकी तरक्की की बाधाऐं रहेंगी। इन पर विजय प्राप्त करना आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

आप अपने कार्यक्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्राप्त करेंगे। आपकी सभी सफलताएं विध्नों से युक्त होते हुये भी आप आसानी से अपनी तरक्की के रास्ते स्वयं निर्मित कर लेंगे। आपका भाग्योदय 35 वर्ष की अवस्था के पश्चात ही होगा। बचपन की अपेक्षा मध्य तथा अन्तिम अवस्था आपके भाग्योदय में विशेष सहायक होगी। अन्तिम अवस्था आपकी अच्छी रहेगी एवं धन सम्पत्ति का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे।

आपका मूलांक 1 तथा भाग्यांक 8 है। मूलांक के स्वामी सूर्य ग्रह का भाग्यांक 8 के स्वामी ग्रह शनि से मित्र संबंध होने के कारण आपको इन दोनों ही ग्रहों के मिलेजुले फल

प्राप्त होंगे। सूर्य एवं शनि के प्रभाव से आपकी सामाजिक स्थिति धीरे-धीरे उन्नतिशील हो कर स्थायी ख्याति एवं लाभ प्राप्त होगा। सूर्य के प्रभाव से आप प्रकाशित होंगे एवं शनि के प्रभाव से स्थिरता प्राप्त होगी। सूर्य शीघ्र सफलता देता है, शनि अवरोध पैदा करता है। अतः आपके कार्य रुकावटों के साथ पूर्ण होंगे। शनि के प्रभाव से आप नीचे से, अपनी मेहनत के द्वारा, धीरे-धीरे ऊपर की ओर उच्चता को प्राप्त करेंगे। आपके कार्यों में देरी अवश्य होगी, लेकिन कार्य स्थायी बनेंगे।

मूलांक 1 तथा भाग्यांक 8 के प्रभाववश आपका प्रारंभिक भाग्योदय 26 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 28 वर्ष की अवस्था तक विशेष सफलताएं अर्जित करेगा। इसके पश्चात् 35 वर्ष की अवस्था से 37 वर्ष की अवस्था के मध्य विशेष लाभ प्राप्त होंगे।

आपके मूलांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है तथा भाग्यांक 8 की मित्रता 1 एवं 4 से है। अतः आपके जीवन में 1, 4, 8 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक की आपके भाग्यांक से मित्रता होने से मूलांक-भाग्यांक के फल आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षो में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, या उपर्युक्त वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, अप्रैल, अगस्त के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 4, 8 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

उपर्यक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

पाश्चात्य मतानुसार दिनांक 21 मार्च से 20 अप्रैल तथा 24 जुलाई से 23 अगस्त एवं भारतीय मतानुसार दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितंबर तक गोचर में सूर्य मेष तथा सिंह राशि में रहता है। मेष में सूर्य उच्च का तथा सिंह में अपने घर में होता है। इस समय में सूर्य की किरणें प्रखर एवं तेजस्वी होने से मूलांक एक के लिए यह समय सभी दृष्टियों से उन्नतिशील तथा कार्यों में प्रगति देने वाला रहेगा। इस समय में किये गये कार्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

अनुकूल दिवस

रविवार एवं सोमवार के दिन आपके लिये विशेष शुभ फलदायक रहेंगे। यदि आपकी अनुकूल तारीखों में से ही किसी तारीख को रविवार या सोमवार पड़ रहा हो तो ऐसा दिन आपके लिए अधिक अनुकूल और श्रेष्ठ फलदायक होगा।

शुभ तारीखें

अपने उच्च अधिकारी से मिलने जाना हो या पत्र लिखना अथवा किसी से मिलना, कोई नया कार्य या व्यापार आदि प्रारंभ करने हेतु आपको किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28, और 31 तारीखें अनुकूल रहेंगी। अतः आप यदि कोई कार्य इन तारीखों को ही प्रारंभ करें तो अधिक सुविधापूर्ण एवं शीघ्र सफल होगा।

अशुभ तारीखें

आपके लिए किसी भी माह की 5, 6, 14, 15, 23, एवं 24 तारीखें कोई भी नया कार्य करने हेतु प्रतिकूल हो सकती हैं। अतः उक्त तरीखों में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य न करें।

मित्रता या साझेदारी

आप ऐसे व्यक्तियों से मित्रता या साझेदारी स्थापित करें जिनका जन्म 1, 10, 19, और 28 तारीखों को अथवा दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितंबर के मध्य हुआ हो। ऐसे व्यक्ति आपके लिए अनुकूल सहयोगी एवं विश्वासपात्र सिद्ध होंगे। इस प्रकार के व्यक्तियों से आपकी मित्रता स्थायी एवं दीर्घ रहेगी तथा रोजगार, व्यवसाय, साझेदारी आदि में सहायक होगी।

प्रेम संबंध एवं विवाह

मूलांक 1, 4, या 8 से प्रभावित महिलाएं आपकी अच्छी साथी सिद्ध हो सकती हैं। उक्त मूलांक वाली महिलाओं से आप सहज ही प्रेम संबंध स्थापित कर सकते हैं तथा उसमें सफल भी हो सकते हैं। जिनका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28, और 31 तारीखों में हुआ हो वे सभी स्त्रियां आपके लिए सहायक एवं लाभ पूर्ण रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए अधिक अनुकूल रंग पीला या ताम्रवर्ण है। पीला भी पूर्णतः पीला नहीं, अपितु सुनहरा पीला होना चाहिए। आप यथासंभव इसी रंग का उपयोग ड्राइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि में लें। हो सके तो अपने पास इस रंग का रुमाल तो आप हर समय रक्खें। स्वास्थ्य की क्षीणता के समय भी आप इसी रंग के वस्त्र पहनेंगे तो आपका स्वास्थ्य शीघ्र ठीक हो जाएगा।

वास्तु एवं निवास

आपके ऐसे राष्ट्र, देश, प्रदेश, शहर, ग्राम, बाजार, मकान, कॉम्प्लैक्स या फ्लैट में निवास करना शुभ रहेगा, जिसका मूलांक या नामांक एक हो। पूर्व दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। अतः आप अपने शहर के पूर्वी क्षेत्र में, या भवन के पूर्वी क्षेत्र में निवास करें। आपकी बैठक पूर्व दिशा की ओर होना लाभप्रद रहेगा। आपके लिए पूर्वी क्षेत्र के व्यक्ति, पूर्वी देशों, पूर्वी स्थानों में नौकरी, रोजगार, व्यापार करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय भूरा, पीला, सुनहरी रंगों का समावेश आपके कपड़ों में होने से आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा। भवन, वाहन, दीवारें, पर्दे, फर्नीचर इत्यादि का रंग भी यदि आप पीला, सुनहरी या भूरा रखेंगे तो आपके पारिवारिक वातावरण में खुशहाली बढ़ेगी।

शुभ वाहन नं

यदि आप वाहन आदि खरीदते हैं तो उसके पंजीकरण के लिए नंबर आपके अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल रखने वाले अंकों को लेना हितकर रहेगा।

आपका मूलांक 1 है। अतः आपके लिए अंक 1,4,8, अच्छे रहेंगे। इसलिए आपके वाहन पंजीकरण क्रमांक का योग 1, 4 या 8 रहेगा, जो अधिक अच्छा रहेगा, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5230 = 1 इत्यादि। आपकी यात्रा के वाहनों के अंक भी यदि 1, 4, या 8 हैं तो आपकी यात्रा लाभप्रद रहेगी। यदि आप होटल में कमरा बुक करवाते हैं तो उसका नंबर 100 = 1 इत्यादि होगा, तब वह कमरा आपके लिए हितकर रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

हृदय पक्ष आपका कमजोर रहेगा तथा हृदय संबंधी कोई कष्ट आपको अधिक उम्र पर हो सकता है। रक्त संबंधी बीमारियां भी यदा - कदा हो सकती हैं। वृद्धावस्था में रक्त चाप, 'हार्टअटैक' तथा नेत्र पीड़ा जैसे रोगों की संभावना रहेगी, जिसे आप सूर्योपासना द्वारा दूर कर सकते हैं। जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको डिप्थीरिया, अपच, रक्त दोष, गठिया, रक्तचाप, स्नायविक दुर्बलता, नेत्र पीड़ा आदि रोग होंगे। उक्त रोगों से आपको हर समय सावधान रहना चाहिए। रोग, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको सूर्योपासना पर बल देना चाहिए तथा रविवार के दिन नमक रहित एक समय भोजन करना चाहिए।

व्यवसाय

आपके लिए हुकूमत, प्रशासक, नेतृत्व, अधिकारी, आभूषण, जौहरी का कार्य, स्वर्णकारिता, विद्युत की वस्तुएं, चिकित्सा, मेडिकल स्टोर, अन्न का व्यवसाय, भूप्रबंध, मुख्यावास या उच्च स्थान प्राप्ति, मकानों की ठेकेदारी, राजनीतिक कार्य, शतरंज के खेल, अग्नि सेवा कार्य, सैन्य विभाग, राजदूत, प्रधान पद, जलप्रदाय विभाग, श्रमशील कार्य आदि के क्षेत्र में रोजगार-व्यापार करना लाभप्रद रहेगा।

व्रतोपवास

आपको रविवार का व्रत रखना लाभप्रद एवं रोग मुक्तिकारक रहेगा। एक समय भोजन करें । भोजन के साथ नमक का सेवन न करने से यह विशेष फलदायक रहता है। व्रत के दिन भोजन करने से पूर्व प्रातः स्नान के पश्चात सुगंधित अगरबत्ती जला कर 'आदित्य हृदय स्तोत्र' का पाठ करें। तब आपको स्वयं अनुभव होगा कि आप विभिन्न बाधाओं से मुक्त हो रहे हैं एवं बीमारियां आपसे दूर रहेंगी। यह व्रत एक वर्ष, तीस या बारह रविवारों को करें। व्रत के दिन लाल वस्त्र धारण करें, सूर्य गायत्री मंत्र से सूर्य को अर्घ्य दें। तांबे का अर्घ्य पात्र लें। उसमें जल भरें। जल में लाल चंदन, रोली, चावल, लाल फूल एवं दूब डाल कर, सूर्य भगवान का दर्शन करते हुए अर्घ्य प्रदान करें। पश्चात् सूर्य के मंत्र का यथाशक्ति, सूर्य मणि माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

माणिक आपका प्रधान रत्न है। माणिक के अभाव में गारनेट, तामड़ा, लालड़ी, सूर्यमणि या लाल हकीक शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन, लाभ के चौघड़िया मुहूर्त में, सोने की अंगूठी में, लगभग पांच रत्ती का, दायें हाथ की अनामिका उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप सूर्योपासना करें तथा उगते सूर्य का दर्शन करते हुए नित्य एक लोटा अर्घ्य (रोली, चावल जल में डाल कर) ग्यारह या इक्कीस बार सूर्य गायत्री मंत्र का जप करते हुए, सूर्य भगवान को प्रदान करें। सूर्य जीवनदाता है। अतः इस किया को करने पर आप विभिन्न रोंगो तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो माणिक जड़ी स्वर्ण अंगूठी के दर्शन कर लें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए, सूर्य के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, सूर्य के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

सूर्य गायत्री मंत्र - आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप सूर्य का ध्यान करें, मन में सूर्य की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ सूर्य को अनुकूल बनाने हेतु सूर्य के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान साठ माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।। जप संख्या 6000।।

वनस्पति धारण

आप रविवार के दिन बिल्वपत्र की एक इंच लंबी जड़ लाकर, गुलाबी धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधें अथवा स्वर्ण या तांबे के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे सूर्य ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक रविवार को एक बाल्टी या बर्तन में कनेर, दुपहरिया, नागरमोथा, देवदारु, मैनसिल, केसर, इलायची, पद्माख, महुआ के फूल, सुगंध बाला आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति दायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ सूर्य के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्रदान करेगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, इन सबको मिलाकर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें, तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

योग्य व्यक्ति के लिए सूर्य की शांति हेतु सूर्य के पदार्थ गेहूं, गुड़, रक्त चंदन, लाल वस्त्र, सोना, माणिक्य आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

सूर्य को अनुकूल बनाए रखने हेतु सूर्य यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध (केसर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या लाल धागे में, रविवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में कुंभ लग्नोदय काल हुआ था। आपके जन्म के समय मेदिनीय क्षितिज पर तुला राशि का नवमांश एवं कुंभ राशि का द्रेष्काण भी उदित था। आपके जन्म लग्नादिक समन्वित आकृति से ऐसा सूचित हो रहा है कि आप एक सैद्धांतिक व्यक्ति हैं। आपका लक्ष्य सर्वोतम जीवन की प्राप्ति है न कि किसी भी प्रकार से धन संचय करना। आप धन को मात्र आवश्यकता की पूर्ति का साध्य समझते हैं। आप धन को संसार का अस्तित्व समझते हैं। परंतु ऐसा संदेह है कि आप धन की खोज में व्यस्त नहीं रहते। धन तो आपके पास निश्चित रूप से आएगा।

संप्रति आप चाहे जैसे भी हो सम्पत्ति उपार्जन में संलग्न रहने के कोई अधिक महत्व नहीं देते हैं। आप अपने जीवन में संतोषप्रद समय व्यतीत करेंगे। आपकी स्पष्टवादिता एक नाटकीय संबंध स्थापित करेगा। तथापि आप अपने आरामदायक जीवन व्यतीत करने के लिए वास्तविक लाभांश प्राप्त करने हेतु समर्थ हैं। आप अपने एवं अपने पारिवारिक आवश्यक आवश्यकता हेतु उपयुक्त साधन प्राप्त कर लेंगे।

आप कठिन श्रम साध्य की साधना से भिन्न हैं तथा यह जानते हैं कि अपनी उन्नति हेतु अपने मालिक का किस प्रकार प्रसन्न एवं अनुकूल रखा जाएगा। आप धन्नादि से संपन्न एवं आपकी स्मरण शक्ति विशाल है तथा आप शुद्ध चित्त से किसी भी विषय पर विचार करते हैं। आप में ऐसी संगठनात्मक क्षमता विद्यमान हो सकती है कि किसी भी बड़े कार्य को दिन प्रतिदिन संचालन हेतु कैसा नेतृत्व चाहिए। तथापि आप ऊपर से आधुनिक मेधावी हैं। आप गंभीर रूप से मूल विचार को सुगमता पूर्वक कार्यान्वित करने के लिए पर्याप्त हैं।

इस संदर्भ में ऐसा ज्ञात होता है कि आप अभाग्यता से युक्त होकर भी भाग्यशाली हैं। अभाग्यता की भूमिका आपके स्वास्थ्य से युक्त है। इसमें संदेह नहीं है कि आपका जीवन उत्तम, सुखद एवं आनंददायक होगा। परंतु आपकी शक्ति सीमित रोगादि के कारण शक्ति क्षीण हो जाएगी। इस प्रकार निःसंदेह ऐसा लगता है कि आपको किसी भी रोग से निरोग होने में कुछ समय लग जाएगा। इसलिए आपको इस विंदु पर विचार करना चाहिए कि इस प्रकार के कार्य-कलाप को परित्याग कर देना चाहिए। जिसके प्रभाव से आप रोगग्रस्त हो जाएं तथा शीघ्रता पूर्वक आपको चिकित्सक का परामर्श लेना चाहिए।

कुंभ राशीय प्रभाव से ऐसा संदेह है कि आपको छूआ-छूत अथवा विषाणुयुक्त रोग हो सकता है। ऐसा हो सकता है कि गले का रोग, दांत या आंखों में दिक्कते आ सकती हैं। आपको अपने जीवन की 15 वें 23 वें एवं 29 वें वर्ष में इसके संबंध में ध्यान देकर स्वास्थ्य रक्षा हेतु सतर्क रहना चाहिए।

आप धार्मिक प्रवृत्ति के प्राणी हैं। आप में ऐसा गुण विद्यमान है कि सांसारिक सुखों से युक्त रहकर सुखद जीवन का विस्तार करेंगे। बल्कि आप अपने परिवार के साथ संयुक्त रह कर भी आप स्वतः धार्मिक कार्यों से संलग्न रहेंगे। परंतु वास्तव में आप मानवीय भावनाओं एवं समर्पित भाव से अपनी पत्नी एवं अपनी संतान से संबंधित रहेंगे।

आप अपनी प्रतिभा एवं प्रवृति के अनुसार संबंधित कार्य-व्यवसाय का चयन कर धन प्राप्ति करेंगे। अतएव आप कंपनी के कार्यकारी अधिकारी पद, वैज्ञानिक कार्य, ज्योतिषीय कार्य, प्रोफेसर एवं शैक्षणिक सलाहकार, विधि एवं धन संबंधी कार्य-कलाप आपके लिए लाभदायक होगा। आयात-निर्यात् कार्य-व्यवसाय भी सर्वथा आपके लिए अनुकूल हो सकता है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में भाग्यशाली दिन शनिवार, एवं शुक्रवार का दिन अनुकूल प्रमाणित है। आपके लिए शेष तीन रविवार, सोमवार, एवं मंगलवार का दिन सर्वथा प्रतिकूल एवं अव्यवहारणीय है।

अंकों में आपके हित अनुकूल एवं भाग्यशाली अंक 2, 3, 7 एवं 9 अंक प्रमाणित हैं। परंतु अंक 1, 4, 5 एवं 8 अंकों का त्याग करना आपके लिए उत्तम है।

आप रंगों में नारंगी, हरा एवं नीले रंगों का परित्याग करें एवं आपके लिए सफेद, क्रीम, लाल एवं पीला रंग उत्तम एवं संतोषप्रदायक है।

ग्रह फल

सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

वृष राशि में रवि हो तो जातक शान्त, व्यवहार कुशल, पाप भीरु, स्वाभिमानी मुखरोगी एवं स्त्रीद्वेषी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रूचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप

सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

मंगल

तृतीयभाव में मंगल हो तो जातक कटुभाष, भ्रतृकष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, सर्वगुणी, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। शक्ति, साहस तथा पराक्रम से वे युक्त रहेंगे। साथ ही जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। धन धान्य से भी वे युक्त रहेंगे एवं समयानुसार आपकी आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में आपकी पूरी सहायता करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी एवं सर्वदा विषम परिस्थितियों में भी उनका पूर्ण सहयोग करेंगे। आप के परस्पर संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा मतवैमिन्यता के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु वह अल्प समय के लिए रहेगा कुछ समय बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप भाई बहिनों के सुख मध्यम रूप से ही अर्जित कर सकेंगे।

बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरू, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभ्रातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

मेष राशि में बुध हो तो जातक चतुर, प्रेमी, सत्यप्रिय, नट, रतिप्रिय कृशदेही, लेखक, ऋणी, मिलनसार, अविश्वस्त एवं बुरे विचार वाला होता है।

गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उस्वभाव, धनी, विद्वान, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्त्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया कुम्भ लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ बलवान एवं चंचलता के भाव से युक्त रहते हैं तथा इनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग इनसे प्रभावित रहते हैं। ये प्रारम्भ से ही प्रगतिशील एवं क्रांतिकारी विचारों के व्यक्ति होते हैं तथा पुराने रीति रिवाजों को कम ही पसंद करते हैं अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम एवं सहानुभूति का भाव रहता है परन्तु धार्मिकता के भाव की न्यूनता रहती है। साथ ही आधुनिकता के भाव से परिपूर्ण रहते हैं। साहित्य एवं कला में रूचि के साथ साथ ये उत्तम वक्ता भी होते हैं।

इनका सांसारिक दृष्टि कोण विशाल होता है तथा किसी भी प्रकार से भेद भाव की भावना इनमें नहीं रहती है अध्ययन के प्रति इनकी रूचि रहती है तथा परिश्रम पूर्वक विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में सामाजिक सम्मान एवं आदर प्राप्त करते हैं। अवसरानुकूल नेतृत्व प्राप्त करने में भी सफल रहते हैं। भावुकता की इनमें न्यूनता रहती है तथा बुद्धिमता से अपने अधिकांश कार्य कलापों को सम्पन्न करते हैं। अतः धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगे परन्तु मन में स्थिरता कम ही रहेगी। आप अपनी विद्वता एवं बुद्धिमता से शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आप सूक्ष्म दृष्टि के व्यक्ति होंगे तथा अन्य जनों को प्रभावित करके उनके विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप परिश्रम पूर्वक धनार्जन करेंगे तथा अपने पराक्रम से उन्नति मार्ग प्रशस्त करेंगे।

लग्न में शनि की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप प्रारंभ से ही पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव के रहेंगे तथा अपने इन्हीं गुणों के द्वारा जीवन में सफलताएं अर्जित करेंगे। धनैश्वर्य की आपके पास प्रचुरता रहेगी तथा आय स्रोतों में वृद्धि करके इच्छित धन होगा।

समाज में आप एक सम्मानित तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में आप समर्थ होंगे तथा सपरिवार उनका उपभोग करने में प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आप श्रेष्ठ कार्यों को करने में रूचिशील दौरान आपकी- उत्कृष्ट कार्यों से सभी लोग प्रभावित रहेंगे। आपकी प्रवृति भ्रमण प्रिय रहेगी तथा अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगे। साथ ही यदा कदा आप आवश्यकता से अधिक व्यय करेंगे। अतः ऐसी प्रवृति पर नियंत्रण रखने का प्रयास करें।

मित्र एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार आप बुद्धिमान विद्वान पराक्रमी एवं परिश्रमी पुरूष होंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करने में समर्थ होंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप दार्शनिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा स्वप्न दृष्टा प्रवृति भी होगी। आप स्पष्ट वक्ता होंगे तथा अपनी वाणी को स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कहेंगे। साथ ही आप अत्यंत ही उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के प्रति आप पूर्ण सचेष्ट रहेंगे तथा उनकी सेवा तथा सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपका स्वभाव विनम्र होगा तथा अजनबी व्यक्ति भी प्रथम मुलाकात में ही आपसे प्रभावित होकर आपका मित्र बनने के लिए उत्सुक हो जाएगा। अपने विचारों को व्यक्त करते समय आप श्रोताओं की इच्छा के अनुसार ही अपने वक्तव्य को नया स्वरूप प्रदान करने की क्षमता रखेंगे जिससे लोग आपसे अत्यंत ही प्रभवित रहेंगे परन्तु यदा कदा आप में आत्म विश्वास की अल्पता होगी।

पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि आप की अच्छी रहेगी तथा परिवार की खुशहाली के लिए आप अपने विचारों को समय समय पर परिवर्तित करते रहेंगे इसका मूल उददे्श्य पारिवारिक जनों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करना रहेगा। आपको सुन्दर एवं स्वादिष्ट भोजन अच्छा लगेगा परन्तु मीठा एवं नमकीन स्वाद आपके विशेष प्रिय रहेंगे। सामान्यतया आपके स्वाद अन्य जनों से भिन्न रहेंगे। आपकी वाणी में भी मधुरता रहेगी तथा अन्य जन आपकी वाणी से प्रभावित रहेंगे साथ ही प्रकृतिक दृष्यों का अवलोकन करना आपको प्रिय लगेगा। जमीन, जायदाद, वाहन तथा बहुमूल्य द्रव्यों का भी आप अर्जित करेंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त अचानक धन प्राप्ति एवं माता पिता की पैतृक सम्पति से भी आप धन वान होंगे तथा सुखपूर्वक अपना पारिवारिक जीवन व्यतीत करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मेष राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा बौद्धिक कार्य सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। साथ ही आप एक बुद्धिमान तथा विद्वान व्यक्ति भी होंगे। जीवन में भाईयों के सुख एवं सहयोग को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। यद्यपि उनका स्वभाव तेज होगा परन्तु बुद्धिमता से युक्त दौरान आपकी- प्रति वे आज्ञाकारी एवं कर्तव्य परायण रहेंगे। पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए आप एक दूसरे की गलतियों की उपेक्षा करेंगे तथा परस्पर प्रेम पूर्वक रहेंगे। यदा कदा आप लोगों के मध्य वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकते है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप हृदय से विशाल होंगे तथा अन्य जनों के प्रति आपके मन में दया तथा सहानुभूति की भावना विद्यमान रहेगी। इसके साथ ही आप अपने ही तरीके से सोचेंगे तथा उसी को कार्य रूप में परिणित करेंगे।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से सांसारिक कार्यो में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही समाज में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप आधुनिक संचार सुविधाओं यथा टेलीफोन , वाहन, दूरदर्शन आदि उपकरणों से भी युक्त रहेंगे। संगीत या कला आदि के प्रति भी आपके मन में रूचि रहेगी तथा समयानुसार आप इससे मनोंरजन करेंगे । दूर समीप की यात्राओं से आपको समय समय पर लाभ होगा तथा इससे आपकी ख्याति में वृद्धि होगी। अच्छी एवं ज्ञानवर्द्धक पुस्तको को पढ़ने में आपकी रूचि रहेगी साथ ही लेखन कार्य भी आप सम्पन्न कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त सज्जनों से मित्रता करने वाले परोपकारी तथा विद्वान होंगे एवं सरकार से समय समय पर सम्मान प्राप्त करते रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में वृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा सूर्य भी चतुर्थभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुखसंसाधनों एवं भौतिक उपकरणों को भी स्वपराक्रम एवं परिश्रम से अर्जित करके सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप एक वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में सम्माननीय स्थिति को प्राप्त करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व आपको प्राप्त होगा। पिता से भी आपको प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जिससे आपके ऐश्वर्य एवं समृद्धि में वृद्धि होगी। अपनी बुद्धिमता एवं परिश्रम से भी आप अवसरानुकूल वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति करेंगे। आपको विवादित सम्पत्ति से दूर ही रहना चाहिए अन्यथा अनावश्यक परेशानियां उत्पन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त अचल सम्पत्ति से आपको शीघ्र लाभ होगा।

जीवन में आपको उचित आवास की प्राप्ति होगी तथा आपका घर आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त होगा एवं भौतिक उपकरणों की भी इसमें अधिकता होगी जिससे इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण में वृद्धि होगी। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे तथा संबंधों में भी अनुकूलता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन से भी आप युक्त होंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी सुन्दर, तेजस्वी, शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा आधुनिकता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा। वह एक कर्तव्य परायण महिला होंगी तथा पारिवारिक जनों का पूर्ण ध्यान रखेंगे जिससे परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा एवं सभी लोग उन्हें वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर वांछित, नैतिक एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी उन्नति में उनका विशेष योगदान होगा। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से कोई कष्ट नहीं होने देंगे। इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी रूचि होगी तथा छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करने में समर्थ होंगे। स्नातक परीक्षा में भी आप परिश्रम पूर्वक अच्छे अंको में सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य में उन्नति के मार्ग भी प्रशस्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप कोई तकनीकी या व्यावसायिक पाठ्यक्रम में उच्चशिक्षा अर्जित करने में समर्थ होंगे।

शुक्र की राशि में सूर्य की स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको मध्यावस्था में किंचित रक्तचाप या हृदय संबंधी परेशानी की अनुभूति कर सकते है। अतः यदि रक्तचाप एवं हृदय को प्रभावित करने वाले पदार्थो का सीमित मात्रा में उपयोग किया जाय तो उपरोक्त समस्याओं में कमी आएगी तथा आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी बुध है तथा उच्च राहु भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीक्ष्ण बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने कार्य-कलापों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करके उनमें वांछित सफलताएं अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेकर समय समय पर विशिष्ट लाभ एवं सफलताएं भी अर्जित करेंगे। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन के प्रति आपकी रूचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास, कला एवं पाश्चात्य साहित्य में आप विशेष रूचि शील होंगे तथा इनके ज्ञानार्जन में नित्य तत्पर रहेंगे एवं इन क्षेत्रों में विशिष्ट ज्ञानार्जन करके अपनी विद्वता से सामाजिक जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे।

पंचमभाव में राहु की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रुचि होगी तथा ऐसे प्रसंगों से आपको आत्मसन्तुष्टि एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। लेकिन प्रेम-प्रसंगों में आपको नैतिकता एवं मर्यादा का अवश्य पालन करना चाहिए एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण रखना चाहिए। इससे आप अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों से सुरक्षित रहेंगे तथा प्रेम सम्बन्धों से पूर्ण प्रसन्नता प्राप्त होगी।

संतति भाव में उच्च राहु के प्रभाव से आपको संतति की यथासमय प्राप्ति होगी तथा एक पुत्र अवश्य होगा। आपकी संतति पराक्रमी , तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे। माता-पिता के प्रति उनका आदर एवं सम्मान का भाव होगा तथा अवसरानुकूल आज्ञापालन में तत्पर रहेंगे। वे स्वच्छन्द वृति होने के कारण किसी भी कार्य को अपनी ही इच्छा से सम्पन्न करना चाहेंगे तथा इसमें माता-पिता या अन्य जनो की सलाह एवं सहयोग कम ही लेंगे लेकिन इसकी आपको विशेष चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे आपके सम्बन्धों में मधुरता एवं सदभाव बना रहेगा। इसके अतिरिक्त वे वृद्धावस्था में माता-पिता का पूर्ण ध्यान रखेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली माने जायेंगे।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली होगी तथा स्वपरिश्रम से वांछित सफलताएं अर्जित करके अपने उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा का उच्चस्तर पर प्रबन्ध करेंगे एवं अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं आने देंगे। वे व्यवहार कुशल सक्रिय एवं उत्तम कार्य कलापों को करने वाले होंगे तथा वांछित स्नेह एवं प्रोत्साहन प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप बच्चों से वांछित सुख एवं सहयोग अर्जित करने में समर्थ होंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से रक्त सम्बन्धियों या मित्रों से आपको यदा कदा विरोध या शत्रुता का सामना करना पड़ेगा तथा वे अकारण ही आपसे शत्रुता का भाव रखेंगे साथ ही अन्य क्षेत्रों में भी आपको विरोध का सामना करना पड़ सकता है। आपकी खुशहाली एवं वैभवता को देखकर लोग ईर्ष्यालु होंगे आपके शत्रु आप पर अपना प्रभाव जमाना चाहेंगे तथा आपकी सामाजिक छवि को भी धूमिल करना चाहेंगे। लेकिन आप अपनी चतुराई बुद्धिमता, विनम्रता एवं कूटनीति से शत्रुवर्ग को पराजित तथा उत्पन्न समस्याओं का सामना एवं समाधान करने में सफल होंगे।

आपके सेवक ईमानदारी तथा निष्ठापूर्वक आपकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे साथ ही आपके लिए वे आज्ञाकारी तथा विश्वासपात्र भी रहेंगे परन्तु यदि उन्हें उचित पारिश्रमिक नहीं दिया गया तो वे चोरी आदि भी कर सकते है अतः इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए साथ ही कई बार वे आपके गुप्त रहस्यों को भी वे अपनी बातूनी प्रवृत्ति के कारण अन्य जनों से कह सकते है। इस प्रकार हो सकता है कि आप समय समय पर नौकरों का परिवर्तन करते रहें।

आप अपने व्यय पर नियंत्रण रखने में सफल रहेंगे क्योंकि आप धन संग्रह के प्रति विशेष रूचि रखेंगे। यही कारण है कि आप सबसे मित्रतापूर्ण संबंध रखने में प्रायः असफल से रहेंगे। साथ ही यदा कदा अनावश्यक पूंजी निवेश के कारण ऋण आदि की भी स्थिति आ सकती है तथा ऋण दाता द्वारा आपके लिए समस्याएं उत्पन्न होंगी। आपके मामा मामी प्रवृत्ति से अच्छे व्यक्ति होंगे तथा आपके साथ उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। यद्यपि मामी से आपको पूर्ण सहयोग नहीं मिलेगा परन्तु मामा से आप समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे। आप जीवन में फौजदारी मुकद्दमे से सम्बन्धित रहेंगे तथा इन पर आपका काफी समय एवं धन बर्बाद होगा परन्तु अपनी बुद्धिमता तथा अन्य गुप्त सूत्रों के द्वारा अन्त में विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त उत्तम स्वास्थ्य के लिए दैनिक खान पान में सावधानी रखें तथा मानसिक चिन्ताओं से भी दूर ही रहें अन्यथा आप शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त कर सकते है।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है सामान्यतया सिंह राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी पराक्रमी साहसी एवं स्वाभिमानी होता है तथा उसमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके स्वभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी। सांसारिक कार्य कलापों को वह परिश्रम एवं पराक्रम से सम्पन्न करेंगी तथा अपने साहसिक कार्यो से अन्य जनों को प्रभावित करेंगी। वे अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी जिससे परिवार एवं समाज में आपकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

आपकी पत्नी गौर वर्ण की आकर्षक महिला होंगी एवं उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी पतली होगी तथा शरीर के अन्य अंग पुष्टता से युक्त रहेंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा व्यक्तित्व में भी आकर्षण आएगा। पाश्चात्य समाज एवं संस्कृति के प्रति भी उनका रूझान रहेगा। भौतिकता के प्रति भी उनका आकर्षण होगा एवं सुंदर तथा कलात्मक वस्तुएं प्रिय होंगी तथा उनके संग्रह में तत्पर रहेंगी।

सप्तम भाव में सिंह राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथा समय सम्पन्न होगा तथा इसमें अनावश्यक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा या आप स्वयं भी प्रेम विवाह कर सकते है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्य सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति मन में आकर्षण एवं प्रेम की भावना भी होगी आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा एक दूसरे के सहयोग से सांसारिक कार्यो को पूर्ण करेंगे। इससे आपस में प्रेम विश्वास एवं सदभाव बना रहेगा।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा आर्थिक रूप से वे सुदृढ़ रहेंगे। विवाह के समय दहेज के रूप में आपको प्रचुर मात्रा में धन सम्पति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके संबंध सामान्य रहेंगे तथा एक दूसरे से सम्मान एवं सहयोग अवसरानुकूल मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की सेवा की भावना होगी तथा उनका सुख दुख में पूरा ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननद भी उनके व्यवहार एवं वाणी से सन्तुष्ट रहेंगे तथा उन्हें वांछित सम्मान देंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति अच्छी रहेगी तथा आपके पूर्वाभास एवं भविष्य वाणियां सत्य होंगी अध्यात्म, ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा यत्नपूर्वक इनका ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे लेकिन व्यवहारिक के ज्ञान की अपेक्षा अंतर्प्रज्ञा शक्ति ही अधिक सहायक सिद्ध होगी। आपके अधिकाशं कार्य अध्यात्म के अनुसार ही सम्पन्न होंगे अतः कई बार आप वास्तविकता से दूर हो जाएंगे। आपको न्यूनाधिक मात्रा में पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी परन्तु बाद में आपको छोड़नी पड़ेगी जिससे आपको काफी मानसिक कष्ट होगा तथा इसके कारण वातावरण अशान्त होगा। साथ ही पुनः जायदाद जोड़ने के लिए आपको ऋण आदि भी लेना पड़ सकता है। बन्धु एवं सम्बन्धियों से भी जायदाद के बारे में विवाद रहेगा जिससे परस्पर बन्धुत्व के भाव की अपेक्षा वैमनस्य का भाव ही उत्पन्न होगा ।

शादी के समय आपको किंचित धन आभूषण या अन्य चीजें दहेज के रूप में प्राप्त हो सकती हैं परन्तु आपके ससुराल वाले बार बार इस दहेज के बारे में आपको याद दिलाएंगे जिससे आपकी आधी खुशी उनके इस व्यवहार से खत्म हो जाएगी। बीमे के रूप में आपको विशेष लाभ की प्राप्ति नहीं होगी यह केवल जितनी हानि या नुकसान हुआ है उसी के लिए पर्याप्त होगी। आपके जीवन में कोई विशेष दुर्घटना या चोरी आदि का योग नहीं है यदि ये भी घटित भी होती है तो इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा सामान्यतया सुख पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आदर्श एवं उदार प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में काफी श्रद्धा रहेगी। आप दिखावे में विश्वास नहीं करते तथा जो कुछ भी करेंगे हृदय से सच्ची भावना से सम्पन्न करेंगे। साथ ही मनुष्य मात्र की भलाई के लिए भी कार्यो को सम्पन्न करते रहेंगे। दैनिक जीवन में आप पूजा तथा योग एवं धर्मानिषठ कार्य नित्य करते रहेंगे। साथ ही मानसिक एवं आत्मिक शान्ति के लिए तीर्थ स्थानों की यात्रा भी करेंगे। धार्मिक उत्सवों के प्रति आपकी आदर की भावना रहेगी तथा अपने धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्मो का भी पूर्ण सम्मान करेंगे साथ ही पारिवारिक परम्परा, रीति रिवाजों के अनुसार धर्म का अनुपालन करेंगे।

आप ईश्वर की सत्ता में विश्वास करेंगे तथा जीवन में विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करने के लिए अथक परिश्रम करेंगे। साथ ही भाग्य भी आपका प्रबल रहेगा। योग ध्यान या आध्यात्म संबधी महत्वपूर्ण ग्रंथों का आप अध्ययन करके ज्ञानार्जन करेंगे। इसके अतिरिक्त ज्योतिष आदि में भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा अर्न्तप्रज्ञा शक्ति की प्रबलता से सही भविष्यवाणियां करने में भी समर्थ रहेंगे।

आप धार्मिक तथा व्यावसायिक उददे्श्य की पूर्ति के लिए जीवन में लम्बी यात्राओं को सम्पन्न करेंगे तथा इनसे आपको मान सम्मान ख्याति तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा साथ ही सामाजिक जनों के परोपकार संबधी कार्य भी सम्पन्न करेंगे लेकिन कभी कभी स्वार्थ वश कंजूसी का भी प्रदर्शन करेंगे लेकिन यह अल्प मात्रा में होगा। आप एक ख्याति प्राप्त व्यक्ति होंगे तथा आपके अनुयायी या सहायक भी रहेंगे पौत्रों से आपको पूर्ण सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होगी तथा अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के प्रभाव से इस जीवन को ऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर व्यतीत करेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी मंगल है। साथ ही चन्द्रमा भी दशम भाव मे ही स्थित है। वृश्चिक राशि एवं चंद्रमा दोनों जलतत्व युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रदान होगा तथा कार्य क्षेत्र में समय समय पर परिवर्तन भी करेंगे। ऐसे प्रयत्नों से आपको लाभ भी होगा परंतु कई बार अनावश्यक परेशानिया भी उत्पन्न हो सकती हैं। अतः ऐसी प्रवृति की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए जलविभाग, वस्त्र उत्पादन फैक्टरी, स्टेनो ग्राफर, कैमिकल्स, कार्यालय सहायक, सचिव, जलसेना, जहाजरानी विभाग अनुकूल रहेंगे। इन विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा मानसिक रूप से भी आप सतुष्टि की अनुभूति करेंगे।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए जलोत्पन्न पदार्थ यथा शंख, मोती, प्रवाल, मछली का व्यापार, मिटटी के खिलोने, बालू, ईट, रेत का कार्य, द्रवपपदार्थ यथा दूध, घी दही का कार्य सफेद एवं मूल्यवान वस्त्रों का व्यापार, समुद्री आयात निर्यात तथा कला एवं चित्रकारी के क्षेत्र में कार्यारंभ करने से वांछित धन एवं लाभ अर्जित कर सकते है। साथ ही इसमें आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा अनावशयक समस्याओं तथा व्यवधानो का सामना नही करना पड़ेगा। अतः इन्हीं क्षेत्रों में आपको अपने व्यापार का प्रारम्भ करना चाहिए।

दशमभावस्थ चंद्रमा के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान सम्मान की प्राप्ति होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से किसी सम्मानित एवं अधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। समाज में आपका प्रभाव रहेगा तथा लोगों से यथोचित सम्मान प्राप्त होगा। साथ ही यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। आप किसी संस्था या क्लब में भी सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी के रूप में मनोनीत हो सकते है। लेकिन नीचस्थ चन्द्रमा के प्रभाव से मान सम्मान एवं यश की प्राप्ति में विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है। अतः इससे आपको निराश नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता तेजस्वी विद्वान बुद्धिमान एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे तथा समाज में वे सभी लोगों के मध्य आदरणीय समझें जाएंगे। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का यथोचित प्रबंध करके आपको योग्य व्यक्ति बनाने में तत्पर रहेंगे। आपकी कार्यक्षेत्र की प्रारंभिक उन्नति एवं सफलता में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। आप भी एक योग्य एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही पिता के सम्मान में भी वृद्धि करेंगे। लेकिन आपसी संबंधों में मधुरता की न्यूनता होगी एवं वैचारिक तथा सैद्धान्तिक मतभेद बने रहेंगे। साथ ही आप में आज्ञाकारिता का भाव भी कम होगा जिससे महत्वपूर्ण कार्यो में पिता की सलाह कम ही लेंगे। अतः इसमें मधुरता के लिए आपको उपरोक्त परिस्थितियों की उपेक्षा करनी चाहिए।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में धनु राशि स्थित है जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप पराक्रमी स्वस्थ्य तथा महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा जीवन में परिश्रम एवं योग्यता से इच्छाओं तथा आकाक्षांओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। आप जीवन में समस्त सुख साधनों से युक्त होंगे तथा निरन्तर रूप से आय एवं धनार्जन होता रहेगा जिससे आर्थिक समृद्धि बनी रहेगी। आप शिक्षा, बैंक, ब्याज या प्रशासनिक कार्यो से इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेंगे या तो आप इन क्षेत्रों में कार्यरत होंगे अथवा आपको इनसे संबंधित विभागों एवं लोगों से समय समय पर इच्छित लाभ प्राप्त होता रहेगा। साथ ही इनके द्वारा आपके आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी।

आपका बड़े भाई से पूर्ण लगाव रहेगा तथा उनसे आपको इच्छित सुख सहयोग एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा वे आपका पुत्रवत् पालन करेंगे। जीवन में आपको वे आर्थिक रूप से निर्भर बनाएंगे तथा समय समय पर आपका मार्ग निर्देशन भी करते रहेंगे। आप भी उनका पितृवत मान सम्मान करेंगे। आपको विद्वान मित्रों की हमेशा इच्छा रहेगी जो जीवन दर्शन के विषय में आपका मार्ग दर्शन कर सकें अतः विद्वान एवं शिक्षित लोग ही अधिक रूप से आपके मित्र होंगे। साथ ही अवस्था के साथ साथ आप युवावस्था के लोगों को उपदेश भी प्रदान करेंगे। आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा अपने क्षेत्र एवं समाज में प्रसिद्ध तथा आदरणीय रहेंगे तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको अपना मित्र समझेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा तथा समस्त सुविधाओं से आप युक्त रहेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अपनी योग्यता एवं परिश्रम के फलस्वरूप किसी भी माध्यम के द्वारा इच्छित उन्नति सफलता एवं ख्याति अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। आप एक आत्म विश्वासी पुरूष होंगे तथा आर्थिक एवं अन्य क्षेत्र की उन्नति के लिए खतरे उठाने में भी नहीं झिझकेंगे जिससे आपको अन्ततः लाभ ही होगा। आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया अच्छी ही रहेगी तथा आर्थिक सुदृढ़ता के कारण आप उन्मुक्त भाव से जीवन में आनन्द, सुख एवं शान्ति प्राप्त करने के लिए व्ययशील रहेंगे।

आप पारिवारिक जनों के प्रति पूर्ण समर्पित रहेंगे तथा उनकी सुख सुविधाओं रहन सहन, खान पान तथा अन्यत्र उच्च स्तर बनाए रखने के लिए प्रचुर मात्रा में व्यय करेंगे साथ ही अपने सामाजिक स्तर की वृद्धि करने के लिए भी आपको काफी व्यय करना पड़ेगा। चूंकि आपके पास धन एवं सम्मान की कमी नहीं रहेंगी अतः आप उपरोक्त क्षेत्र में आनन्द प्राप्त करेंगे। साथ ही अपरिचित लोगों तथा सामाजिक जनों की सेवा तथा सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगे एवं अवसरनुसार उन्हें उचित आर्थिक सहयोग देंगे जिससे लोग आपकी दानशीलता से प्रभावित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अपनी संगठन शक्ति से जीवन में इच्छित सफलता अर्जित करेंगे।

आप व्यवसाय या कार्य क्षेत्र से संबंधित दूर समीप की यात्राएं करेंगे। इसी संदर्भ में आप विदेश की यात्रा भी करेंगे। यद्यपि इसमें व्यय अधिक परन्तु भविष्य में आपको उचित लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी।

नक्षत्रफल

आप ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, नाड़ी आद्य, योनि मृग, गण राक्षस तथा वर्ग मृग होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "यु" या "यू" से प्रारम्भ होगा।

आप गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न हुए हैं। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न होने से जातक के पिता को अरिष्ट होता हैं। अतः जन्म समय में इस नक्षत्र की शास्त्रीय विधि विधान से शान्ति सम्पन्न करा लेनी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करवाने चाहिए। 27 दिन बाद जब यह नक्षत्र पुनः आवे तो उस दिन जपे हुए नक्षत्रों के दशांश का हवन करना चाहिए। यह सारा कार्य किसी योग्य एवं विद्वान व्यक्ति से सम्पन्न करवाना चाहिए। इस प्रकार विधि विधान द्वारा शान्ति करने से इसका दोष नष्ट हो जाता है तथा संबंधित जातक सुखपूर्वक रहता हैं।

मंत्र- ऊं मातेव पुत्रं पृथ्वीं पुरीष्यमग्निं स्वेवोनावभारूयतां।
विस्वैर्दिवैर्ऋतुभिः सविद्वानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुत्रचतु।।
जातकाभरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आपकी प्रसिद्धि समाज में दूर दूर तक व्याप्त रहेगी तथा सभी लोग आपके विषय में पूर्ण ज्ञान रखेंगे। आपका स्वरूप देखने में सुन्दर तथा आकर्षक रहेगा तथा कान्ति एवं कोमलता से युक्त रहेगा। सर्वप्रकार से आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा वैभव एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही सामर्थ्य का भी आप में अभाव नही रहेगा। आप एक प्रतापी पुरूष होंगे तथा समाज में अपना पूर्ण प्रभुत्व स्थापित रखेंगे। अपने क्षेत्र में आप एक प्रतिष्ठित तथा श्रेष्ठ पुरूष समझे जाएंगे तथा सभी लोग आपको श्रद्धापूर्वक मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप एक उच्चकोटि के वक्ता होंगे तथा अपने वक्तव्यों से जनसाधारण को भी प्रभावित करने में सफल रहेंगे।

सत्कीर्तिकान्ति विभुतासमेतो वितान्वितोत्यन्तलसन्प्रतापः।
श्रेष्ठः प्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोत्पन्नः स्यात्पुरूषोविशेषात्।।
जातका भरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक उत्तम कोटि के यश ओर प्रभुता से युत, धनी, सत्प्रतापी, नेता, लोकमान्य तथा उत्तम वक्ता होता है।

आप को क्रोध शीघ्र ही आएगा इसमें कई बार आपको मानसिक तथा आर्थिक कष्ट

का भी सामना करना पड़ेगा। आपके सामाजिक संबंध विस्तृत होने के कारण महिलावर्ग से भी आपके मैत्रीपूर्ण संबंध रहेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिक रहेगी तथा ईश्वर एवं धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण निष्ठा विद्यमान रहेगी।

ज्येष्ठायामतिकोपवान परवधूसक्तो विभुधार्मिकः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक अत्याधिक क्रोधी, अन्य स्त्रियों में आसक्त, सामर्थ्यवान तथा धार्मिक होता है।

आपकी मित्रता का क्षेत्र विस्तृत होगा तथा बहुत से लोगों से आपकी मित्रता रहेगी परन्तु आप इसमें मुख्य तथा लोकप्रिय रहेंगे। साथ ही आप प्रवृति से ही सन्तोषी होंगे तथा वर्तमान उपलब्धि पर ही सन्तुष्ट रहेंगे। लेकिन धर्म का पालन करते हुए भी क्रोध पर नियंत्रण करने में आप सर्वदा असफल सिद्ध होंगे।

ज्येष्ठासु बहुमित्रः सन्तुष्टो धर्मकृत्प्रचुरक्रोधः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुत मित्रों वाला, सन्तोषी, धर्माचरणकर्ता तथा क्रोधी होता है।

लेखन कार्य में आपकी रूचि प्रारम्भ से ही रहेगी। अतः आप काव्य सृजन के क्षेत्र में सफल हो सकेंगे। आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा सुख दुःख को आप समान रूप से मांगने वाले होंगे। आप अत्यन्त ही चतुर व्यक्ति होंगे तथा इसी चतुराई से जीवन में सफलता अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त निम्न श्रेणी के लोगों के लिए आप अत्यन्त ही पूज्य तथा श्रद्धेय रहेंगे। ये लोग मन से आपका सम्मान करेंगे।

बहुमित्र प्रधानश्च कविर्दान्तो विचक्षणः।
ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्र पूजितः।।
मानसागरी

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अधिकांश मित्रों के कारण स्वयं प्रधान, काव्यकर्ता, सहनशील, परम चतुर, धर्म में रत एवं शूद्रों द्वारा पूजित होता है।

ताम्र पाद में उत्पन्न होने के कारण आप राज्य या सरकार से धन लाभ अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। आप सन्तोषी प्रवृति के होंगे तथा अनावश्यक इच्छाओं को मन में उत्पन्न नहीं करेंगे। आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे तथा सभी लोग आपका आदर सत्कार करेंगे। विविध प्रकार की धन सम्पतियों तथा सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। माता पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनसे

भी आप पूर्ण धन सम्पति को प्राप्त करेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगे तथा नाना प्रकार के वाहन एवं भूमि से भी युक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे। आप में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा सज्जन पुरूषों का आप नित्य आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

वृश्चिक राशि में जन्म लेने के कारण आपका वक्षस्थल विशाल होगा तथा आखें भी बड़ी एवं सुन्दर होंगी। आपकी पिंडलियां तथा जाघें गोलाकार रहेंगी। आपके वर्ण में श्यामलता का भी अल्प मात्रा में मिश्रण रहेगा। आपके हाथ या पैर में मछली का चिन्ह अकित रहेगा एवं अधिकांश हस्त रेखाएं वज्र या पक्षी के आकार की होंगी। पिता तथा गुरूजनों से आप सामान्य में सहयोग प्राप्त करेंगे तथा बाल्यकाल में काफी बीमार भी रहेंगे। आप एक बुद्धिमान तथा योग्य व्यक्ति होंगे तथा अपनी योग्यता के बल पर राज्य में किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को सुशोभित करने में सफल रहेंगे। आप अधिकांशतया कूर तथा कठोर कर्मों को ही सम्पन्न करेंगे। अतः सेना, पुलिस या सर्जरी आदि विभागों को अपना कार्यक्षेत्र चुनेंगे। कभी कभी आप अत्यन्त ही दुष्टता का भी प्रदर्शन करेंगे जिससे अन्य व्यक्ति कष्ट की अनुभूति करेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः कूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका पेट तथा मस्तक भी दीर्घ आकार का होगा तथा आपके स्वभाव में लोलुपता का भाव भी रहेगा। अन्य जनों की सुन्दर वस्तुओं को देखकर आपका मन अत्यन्त ही लालयित रहेगा। साथ ही शरीर में कोमलता भी विधमान रहेंगी। आप का धर्म तथा ईश्वर में विश्वास रहेगा। आपकी दाढ़ी तथा नाखून में चोट के निशान भी रहेंगे। आप एक समृद्धशाली पुरूष होंगे तथा धनैश्वर्य का आपके पास अभाव नहीं रहेगा। आप किसी न किसी कार्य को करने में तत्पर रहेंगे तथा इन्हे सम्पन्न करने में अत्यन्त ही चतुर रहेंगे। आपको बन्धुजनों से इच्छित सहयोग की प्राप्ति होगी। आप एक पराक्रमी पुरूष होंगे तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभुत्व स्थापित रहेगा। आप स्वभाव से ही उग्र रहेंगे तथा सरकार के द्वारा आर्थिक हानि प्राप्त करेंगे।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः कूरचेष्टः।
चौरो बालो रूगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा अपने परिश्रम के अतिरिक्त अन्य कई जनों का पालन पोषण करने में सक्षम रहेंगे। स्त्रियों के विषय में आप एक सौभाग्यशाली पुरूष होंगे।

इनसे आपको पूर्ण सहयोग, सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होगी। आपकी सरकारी सेवा में भी नियुक्ति हो सकेगी। दूसरे के धन को प्राप्त करने में भी आपके मन में बलवती इच्छा रहेगी तथा आजीवन आप इसके लिए प्रयत्नशील भी रहेंगे। आप अत्यन्त ही दृढसंकल्प के व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त कार्यों को दृढता से सम्पन्न करेंगे। आप एक बहादुर व्यक्ति होंगे।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

जीवन में कभी कभी आप जुआ आदि खेलने के लिए भी उद्यत रहेंगे परन्तु इसमें आपको लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। आपकी प्रवृति विवाद करने के लिए भी रूचिशील रहेगी तथा अन्य जनों से आपका विवाद होता रहेगा। आप कभी कभी अपने आपको हृदय से अत्यन्त ही कमजोर समझेंगे। तथा जीवन में आपको अधिकांश अशान्ति की ही प्राप्ति होगी।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आप बचपन से ही घर से बाहर निवास करेंगे तथा भ्रमण के भी आप अत्यन्त शौकीन होंगे। आपका स्वभाव अभिमानी रहेगा तथा समय समय पर अन्य जनों में आप इसका प्रदर्शन करते रहेंगे। अपने बन्धु वर्ग तथा संबंधियों के प्रति भी आपके मन में प्रेम का भाव रहेगा। परन्तु जीवन में अपने साहस के द्वारा धनार्जन करने में आप पूर्ण रूपेण सफलता अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त आप निपुण भी रहेंगे।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप का स्वभाव कभी कभी व्यर्थ की बातें बोलने वाला होगा। आप हृदय से भी कठोर रहेंगे तथा दयाभाव का प्रदर्शन कम ही करेंगे। साहस का आप में अभाव नहीं रहेगा तथा इसके द्वारा अपने अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आपका स्वभाव उग्रता से युक्त रहेगा तथा शीघ्र ही क्रोधित होना आपकी प्रवृति रहेगी। समाज में अन्य लोगों से आपका परस्पर विवाद होता रहेगा। आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। अतः शारीरिक शक्ति का आप में अभाव परिलक्षित नही होगा परन्तु अधिकांश जनों का आपके प्रति हमेशा विवाद का भाव रहेगा।

जीवन में आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुलता की अनुभूति कर सकते हैं।

आपकी शारीरिक आकृति सुन्दर होगी परन्तु आपकी वाणी कभी कभी कठोर होगी जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः आप को आपने सम्भाषण में यत्नपूर्वक मधुर शब्दो का प्रयोग करना चहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मृग योनि में जन्म होने के कारण आप स्वच्छन्द प्रिय रहेंगे तथा समस्त कार्यकलापों को बिना किसी बाह्य हस्तक्षेप के सम्पन्न करेंगे। आपकी प्रवृति हिंसात्मक नहीं होगी अपितु शान्त रहेगी। साथ ही श्रेष्ठ साधनों के द्वारा आप अपनी आजीविका का अर्जन करेंगे। सत्य के अनुपालन में आप सर्वथा तत्पर रहेंगे तथा यत्नपूर्वक इसे पूर्ण करेंगे। अपने बन्धु तथा स्वजनों के मध्य आप अत्यन्त ही प्रिय एवं स्नेह से युक्त रहेंगे। ईश्वर तथा धर्म के प्रति आप पूर्ण रूप से निष्ठावान रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप परस्पर विवाद आदि में भी सर्वथा बहादुरी का परिचय देंगे तथा इसमें विजय प्राप्त करेंगे।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त

रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रूचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। शक्ति, साहस तथा पराक्रम से वे युक्त रहेंगे। साथ ही जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। धन धान्य से भी वे युक्त रहेंगे एवं समयानुसार आपकी आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में आपकी पूरी सहायता करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी एवं सर्वदा विषम परिस्थितियों में भी उनका पूर्ण सहयोग करेंगे। आप के परस्पर संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा मतवैमिन्यता के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु वह अल्प समय के लिए रहेगा कुछ समय बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप भाई बहिनों के सुख मध्यम रूप से ही अर्जित कर सकेंगे।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपात योग, गरकरण, शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, रेवती नक्षत्र व्यतिपातयोग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में असफलता तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध नहीं हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव भगवान शिव की उपासना करनी चाहिए एवं नित्य प्रातः शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए साथ ही सोमवार तथा वृहस्पतिवार के उपवास भी करने चाहिए। इसके अतिरिक्त सोना, मूँगा, ताँबा, रक्तवस्त्र, रक्तचन्दन, गेहूँ, मलका इत्यादि पदार्थों का किसी योग्य पात्र को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए तथा मंगल के तांत्रीय मंत्र का किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 7000 जप पूर्ण करवाने चाहिए। इससे आपको पूर्ण रूपेण मानसिक शान्ति मिलेगी तथा अशुभफलों में न्यूनता होगी एवं भविष्य के लिए लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ॐ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ शीं भौमाय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्वऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या अधिक से अधिक दस-दस रुपये जितने भी रुपये सभी दे सकें) इकट्ठा कर के धर्म स्थान पर सामूहिक यज्ञ करें।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का

अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का

उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली के चौथे खाने में सूर्य है। इसकी वजह से आप धन एकत्र करते रहेंगे। उस धन का लाभ दूसरे को मिलेगा मगर आपकी संतान करोड़पति होगी। आप नये अविष्कार से लाभ प्राप्त करेंगे। नये कार्यों में सफलता मिलेगी। आप अपना पैतृक कार्य छोड़ कर नया काम करेंगे तो खूब लाभ होगा। आप विदेश में निवास करेंगे। पिता के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे। पैतृक संपत्ति का लाभ मिलेगा। आप घर में हैंडपंप, कुंआ आदि लगावएं तो शुभ फल होगा और आपके मन में शांति रहेगी। आप 25 से 50 वर्ष की आयु तक खूब लाभ कमाएंगे। आप कपड़े, पानी और दूध के व्यवसाय से खूब लाभ प्राप्त करेंगे। आपको कपड़े के व्यवसाय से अधिक लाभ मिलेगा। आप काफी धन संग्रह कर सकेंगे। आप फलों वाले पेड़-पौधे लगाएंगे। आपका भाग्य अच्छा है। आप अपने काम रात में करें तो अधिक लाभ होगा। आपके घर पर कोई मुसीबत नहीं आएगी। सरकारी विभाग या समुद्र की यात्रा से लाभ मिलेगा, वाहनों से संबंधित कामों में लाभ होगा। पत्नी से लाभ होगा या पत्नी की नौकरी में तरक्की होगी।

यदि आपको चोरी की आदत होगी, दूसरे लोगों के बनते काम बिगाड़े, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखें या किसी स्त्री से बदतमीजी की तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से औलाद पर बुरा असर पड़ेगा। माता एवं बहन के सुख में हानि हो सकती है। समस्या न होने पर भी आप उदास रहेंगे। माता का मन अशांत एवं स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। जीवन में कई कठिनाइयां आ सकती हैं। अगर आप दूसरों के बने बनाये काम बिगाड़ेगे तो रक्तचाप का भय और आपके कार्यों में रुकावटें पैदा होंगी और माता-पिता का सुख कम हो जायेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चोरी की आदत से बचें।
2. स्त्रियों के झगड़े में न पड़ें।

उपाय :

1. अंधों को भोजन देवें।
2. शरीर पर शुद्ध सोना पहनें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप कुल की नैया पार लगायेंगे। आपको चीर-फाड़ के या सर्जिकल के सामान से अधिक लाभ होगा। आप चिकित्सक होकर भी डॉक्टर का काम नहीं करें। यदि डाक्टर बन कर डाक्टर का कार्य करते हैं तो अपने पास से दवाई न देवें। आपको माता-पिता का पूरा सुख मिलेगा। आपको मकान और

ससुराल वालों से लाभ मिलेगा। व्यापार में लाभ होगा।

यदि आप डाक्टर हैं और अपने पास से रोगी को लिक्विड दवाई दी, समाज विरोधी कार्य किये, बड़े-बुजुर्गों का अपमान किया, रात के समय अपने मकान की नींव रखी तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपकी प्रेमिका या विधवा स्त्रियों के कारण धन की बर्बादी होगी। आप अपने जीवन में धोखेबाजी और तैरते को पानी में डुबाने वाले होंगे। आपको दुर्घटना का शिकार भी होना पड़ सकता है। किसी भी औरत के साथ नाजायज संबंध आपकी बर्बादी का कारण बन सकता है। आपका मां से अच्छा सलूक नहीं रहेगा। दवाई के व्यापार से हानि होगी। आपको चोर-डाकू, जुआरी एवं शराबी लोगों से नुकसान हो सकता है। नौकरी-व्यापार में बार-बार तबदीली का योग है। आपकी माता को 10 वर्ष बीमारी हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चोर-डाकू से संबंध न रखें।
2. सूर्यास्त के बाद दूध न पीयें।

उपाय :

1. दूध को फटा कर दूध का पानी पीयें (खराब सेहत के समय)
2. सूर्यास्त के बाद दूध न पियें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली के तीसरे खाने में मंगल पड़ा है। इसकी वजह से लाल किताब के अनुसार मंगल तीसरे खाने में हो तो व्यक्ति मांगलिक होता है। अतः आप मंगलीक पुरुष हैं। इस वजह से आप अपने लिए ख्याली पुलाव पकाएंगे और सब्ज बाग देखेंगे। दूसरों की सहायता करेंगे, नर्म स्वभाव रहेंगे। चक्रव्यूह भेदन की कला में चतुर होंगे। आपको ससुराल पक्ष से सहायता मिलेगी। आपको परिवार से अच्छा सहयोग प्राप्त होगा। आप अपनी शारीरिक और मानसिक योग्यता के द्वारा जाने जायेंगे तथा आपको योग्यता प्रदर्शन करने का अच्छा मौका मिलेगा। आपको भाई-बहन का सुख मिलेगा। आपके दोस्त हमेशा मदद करेंगे। आपका विवाह अच्छे घर में होगा। माता-पिता का पूरा सुख मिलेगा।

यदि आपने परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे, अकड़ा हुआ मिजाज रखा अधिक गुस्सा करने की आदत रखी, मांस-मदिरा के सेवन करने की आदत हुई, अय्याशी की तरफ आपका झुकाव रहा तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आप अपने जीवन में चालबाजी और धोखेबाजी से काम निकालेंगे और आप बेकार की फोकी उम्मीदें भी रखेंगे। आपकी बर्बादी का कारण आपकी अय्याशी हो सकती है। आप पर कर्ज का बोझ भी चढ़ सकता है। आपके घर में अचानक किसी की मौत भी हो सकती है। आपकी संतान की हालत मंदी हो सकती है। आपकी पत्नी को मृत बच्चा पैदा हो या

गर्भपात भी हो सकता है। घर में चोरी और नुकसान से होशियार रहें। आपके चाचा या भाई औलाद से दुःखी हो सकते हैं। आपके भाई-बन्धु, मित्र आपके विनाश का कारण बनेंगे। लड़ाई-झगड़े से दूर रहें। लड़ाई-झगड़ा आपकी मौत का कारण बन सकता है। आपकी नेकी कोई भी याद नहीं रखेगा। खून खराब या पेट में रोग हो ऐसी आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. हाथी दांत न रखें।
2. दक्षिण दिशा के मुख्य द्वार वाले घर में रिहाईश न करें।

उपाय :

1. चांदी की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. चांदी के बेजोड़ कड़े में तांबे की कील लगा कर दायें हाथ में पहनें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध तीसरे खाने में है। इसकी वजह से सदैव यात्रा करेंगे। चिकित्साकार्य में यश के भागी बनेंगे। मित्र एवं संबंधियों का सहयोग प्राप्त होगा। मिश्रित रूप से उत्तम फल प्राप्ति के योग हैं। आप सगे संबंधियों के अतिरिक्त अन्य लोगों के लिए शुभ हैं। आपके संपर्क के लोगों को लाभ प्राप्त होगा। आपको धन के लिए उत्तम फल प्राप्त होते हैं। आप फलों के काम, कृषि कार्य, कांसे के बर्तनों का काम तथा पशु पालन कार्य से लाभ प्राप्त करेंगे। संतान एवं मातृपक्ष के परिवारों के लिए आप लाभदायक हैं। आप में दमा के रोगी को ठीक करने की कला है। आप व्यापार में प्रगति करेंगे। आप लड़ाई-झगड़े से परहेज करेंगे तथा आप लड़ाई-झगड़े का दुःसाहस भी नहीं करेंगे। यद्यपि आप भयातुर नहीं रहेंगे। बुरे कार्यों से तटस्थ रहने का प्रयास करेंगे। किसी कार्य को प्रारंभ करने में अनेक विचार उत्पन्न होंगे तथा निर्णय लेने में सहायता की अपेक्षा करेंगे। आप अपनी बुद्धि का प्रयोग करने में भी संकोच नहीं करेंगे।

यदि आपको मूंग खाने का शौक हुआ, बुआ-बहन-लड़की का धन उपयोग किया, चौड़े पत्तों का वृक्ष आपके घर में हुआ, घर का दरवाजा दक्षिण दिशा में हो तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आपका जीवन धूमिल है। आपको भाई-बहन का सुख कम प्राप्त होगा। भाई-बहन से झगड़ा हो सकता है। आपकी भाग्योन्नति में अवरोध उत्पन्न होते रहेंगे। संतान-सुख विलंब से मिलेगा। जुबान में तोतलापन आ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बुआ-मामा से झगड़ा न करें।
2. चौड़े पत्तों का वृक्ष घर में न लगावें।

उपाय :
1. दुर्गा पूजन या कन्याओं की सेवा करें।
2. तोता पालें या तोते को चूरी खिलायें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में तीसरे खाने में वृहस्पति पड़ा है। जिसकी वजह से आप जिस पर मेहरबान होंगे तो उसे बड़ा लाभ होगा। आप नौकरी-व्यापार से आजीविका चलाएंगे। 40 वर्ष की उम्र तक गृहस्थ जीवन में पूर्ण योगदान करेंगे। आप न्यायप्रिय होंगे। भाई से भी सुख प्राप्त होने की संभावना है। परंतु आप स्वयं बुद्धिमान होंगे। आपको अपने भाई-बहन की सहायता करने से लाभ मिलेगा और उनसे संबंध अच्छे रहेंगे। 26 वर्ष की उम्र में आपकी दौलत बढ़ने लगेगी। आपकी औलाद के जन्म के बाद आपका भाग्योदय होगा। आप अपने जीवन में लगातार उन्नति करते रहेंगे। समाज में अच्छी प्रतिष्ठा मिलेगी। आप अपने भाई के मददगार होंगे। आपका घर-वार नेक होगा। आपका जीवन खुशहाल रहेगा। आपकी पत्नी आपके जीवन में सहायता करेगी। आपके द्वारा बुजुर्गों की सेवा से धन-दौलत में वृद्धि होगी। आप धार्मिक स्वभाव के होंगे। आप अपने भाग्य पर सब्र करने वाले होंगे, अपनी किस्मत पर संतुष्ट रहेंगे। आप बुढ़ापे में आराम पाएंगे। आप बहादुर होंगे। आप आंखों की होशियारी से ही दूसरों को भांप लेंगे।

यदि आपके घर में कटा या सूखा पीपल का पेड़, धर्म मंदिर है उसकी सेवा नहीं करते, बुरे तरीकों से धन कमाया या मित्र मार की तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से 31वें वर्ष में बीमारी की आशंका है। आप अपने मित्रों के साथ धोखाधड़ी करके या लूट कर धनवान बनेंगे। आपकी बेमतलब की बकवास/गप्पबाजी आपके आने वाले समय को खराब कर देगी। जिस पर आप बिगड़ जाएं उसका सब कुछ नष्ट कर देंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. सूखा पीपल घर में नहीं रहे।
2. घर में मंदिर बंद न रखें।

उपाय :
1. दुर्गा पाठ या कन्याओं की सेवा करें।
2. केसर/हल्दी का तिलक करें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में पांचवें खाने में शुक्र पड़ा है। जिसकी वजह से आप विद्वान, शत्रुहंता, सफेद चीजों से लाभ प्राप्त करने वाले, बच्चों और पूरे परिवार से युक्त एवं स्त्री सुख से परिपूर्ण रहेंगे। आप अपनी जाति से प्रेम करने वाले होंगे। आप दुनिया में रह कर भी दुनियादारी की बातों से अपने को मुक्त प्रमाणित करेंगे। विवाह के पांच वर्ष के बाद धन-संपत्ति और नौकर-चाकरों का सुख अधिक प्राप्त होगा। पदोन्नति भी होगी। आपकी पत्नी वफादार होगी। आपकी पत्नी के जिंदा रहने तक आपको किसी चीज़ का अभाव नहीं होगा। कोई बहुत बड़ी रुकावट नहीं आएगी। आपकी दौलत-माया बढ़ेगी। आप अपने खानदान वालों को प्यार करेंगे तो इसका असर आप पर अच्छा ही पड़ेगा। भाई के लिए भी आप अनुकूल रहेंगे। आपके परिवार में हर तरह की बरकत होगी जैसे-धन, परिवार एवं सुख शांति। आपको अपने देश से प्रेम रहेगा।

यदि आप चरित्रहीन हुए तो वृक्ष में फंसे पतंग की तरह का हाल होगा, माता-पिता की मर्जी के खिलाफ शादी या लड़की देख कर शादी की तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आप आशिक मिजाज और कामांध होंगे। जिस वजह से आपका सुख बाधित हो सकता है। गंदी सोहबत और प्रेम संबंधों में फंस कर आपकी किस्मत भी कांटों में फंस जाएगी। आप साथियों पर कई प्रकार के झंझट पैदा करेंगे। आप दिन में ज्ञान एवं रात में इश्क स्नान करने वाले होंगे। गर्भपात का भय या संतान देर से होगी, बहन-बुआ का धन नाश होगा, प्रेम-विवाह किया तो पुत्र सुख से वंचित रहेंगे, ऐसी शंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. स्त्रियों के रसिया न बनें।
2. प्रेम विवाह या अंतर्जातीय या माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध विवाह न करें।

उपाय :

1. शरीर पर दूध/दही से मलकर नहाएं।
2. गाय की सेवा करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि पहले खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपके जन्म के बाद आपकी पैतृक संपत्ति और पिता का धन बढ़ेगा। आप इंजीनियर, डाक्टर बन सकते हैं। आप शक्की स्वभाव के होंगे। लोहा/लकड़ी और नमक, आग से संबंधित कामों से अधिक लाभ होगा। आपके धन में वृद्धि होगी। आपके माता-पिता को धन की कमी नहीं रहेगी। आपकी आयु पर कोई भी बुरा असर नही पड़ेगा।

यदि आपने झूठ बोला और बदनीयती रखी, व्यसनों में मदहोश रहे, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आपकी शिक्षा भी अधूरी रह जाए या इच्छित शिक्षा नहीं मिले, ऐसी आशंका है। आप आलसी, अभावग्रस्त और अस्वस्थ रह सकते हैं। आपकी पत्नी, दौलत पर बुरा असर पड़ सकता है। आपके लिये खानदानी या जद्दी काम में बरकत नहीं होगी। आप चोरी, झूठ या धोखाधड़ी करने में भी पीछे नही रहेंगे। शरीर पर अधिक बालों का होना निर्धनता का सूचक है। आप अगर सरकारी नौकरी करते हैं तो नौकरी का फल विशेष मंदा रहेगा। सरकार से बहुत अच्छे लाभ का योग नहीं है। पत्नी को शारीरिक कष्ट हो सकता है। आपके साथ चोरी, धोखेबाजी, संतान को कष्ट या कुछ भी हो सकता है। माता को कष्ट और आपको दुःखी होना पड़े ऐसी आशंका है। आपका कारोबार बिगड़ सकता है या पिता-दादा के कारोबार का दिवाला भी निकल सकता है। भाग्य के बिगड़ने की आशंका है। आग से जलने का भय है। विद्या अधूरी, पेट में खराबी, धन की तंगी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. विवाह या पुत्र जन्म आदि पर खुशी के समय ढोल-बाजे आदि न बजाएं।
2. शराब पीना, मांस खाना और इश्कबाजी दूर रहें।

उपाय :

1. वीरान जगह में सुरमा दबायें (नौकरी-व्यापार में तरक्की के लिये)।
2. बंदर को गुड़ केला खिलायें (धन की तंगी के समय)।
3. वट-वृक्ष की जड़ के दूध का तिलक करें (स्वास्थ्य खराब के समय)।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के पांचवें खाने में राहु पड़ा है। आपकी 21 वर्ष आयु में प्रथम पुत्र और 42 वर्ष आयु में दूसरा पुत्र पैदा होगा। आपको पुत्रों का सुख मिलेगा, उम्मीद है। औलाद मूर्ख और आप ब्रह्मज्ञानी होंगे। आपकी औलाद से अधिक सुखी जीवन आपके पोते-पड़पोते का होगा। आप चंचल और अस्थिर बुद्धि के होंगे। आपकी माता का संपूर्ण जीवन बड़ा सुखमय समय रहेगा। धन-संपत्ति और औलाद में वृद्धि होगी। आपको भाई का सुख मिलेगा। आप परिवार और माया की ओर से सुखिया होंगे। धर्म-मर्यादा के मालिक होंगे। व्यापार आपके लिये सब उत्तम धन कमाने का साधन होगा, राज्याधिकारियों से लाभ होगा।

यदि आपने पत्नी से अच्छे संबंध न रखे, उससे तलाक लिया, बुजुर्गी मकान की दहलीज खराब कर ली, पिता या ससुर से झगड़ा किया तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आप बचपन में शरारती होकर पढ़ाई-लिखाई में मन नहीं लगाएंगे। शिक्षा अधूरी रह जाएगी या मन के मुताबिक पढ़ाई नही कर सकेंगे। संतान जन्म से 12 वर्ष पत्नी का स्वास्थ्य खराब रहेगा। पहली संतान नहीं बचे ऐसी

शंका बनती है। पत्नी से तलाक या जुदाई हो, ऐसी शंका है। पत्नी से तलाक/जुदाई की तो संतान का सुख न मिलेगा। आप पाप कर्म में रत हो सकते हैं। आपको पुत्र का सुख न मिले। आपकी सेहत बिगड़ सकती है तथा बेकार का धन खर्च होगा। आपकी आंखों की दृष्टि में भी कोई दोष उत्पन्न हो सकता है। आपके काम करने का ढंग भी स्थिर नहीं रहेगा। काम की चीजों को भी इधर से उधर करते रहेंगे। अस्थायित्व और चंचलता के आप शिकार होंगे। आपका बड़ा भाई अमीर या निःसंतान होगा, ऐसी आशंका है। समय साढ़े दस, 21-42वां वर्ष पिता या ससुर की आयु पर भारी रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. दूसरा विवाह न करें।

उपाय :
1. चांदी का ठोस हाथी घर पर रखें।
2. बुजुर्गी मकान की दहलीज के नीचे चांदी की पत्ती लगाएं।

नोट : यदि दक्षिण दिशा के मुख्य द्वार वाले मकान में रिहाईश हो तो भी उपरोक्त उपाय जरूर करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप बहुत धन-दौलत के मालिक होंगे। इसके श्रेष्ठ फल से आप निहाल हो जाएंगे। आपको अपने भविष्य के लिए जागरूक रहना चाहिए। आपको राजपक्ष से शासन से संबंधित कार्यों में अच्छा फल मिलेगा। खानदानी जायदाद से अधिक जायदाद अपने हाथों से बना लेंगे। आपके जीवन में उत्तम राजयोग की संभावना है। आप सरकार पक्ष से या सम्मानित व्यक्ति से लाभ प्राप्त करेंगे। आप यदा-कदा हिम्मत हार बैठेंगे। आपकी औलाद शारीरिक तौर पर अच्छे स्वभाव की और अच्छे काम करने वाली होगी।

यदि आपको काम पर जाते समय कोई पीछे से कोई आवाज दे, माता से झगड़ा या माता का विरोध किया, पुत्र संतान का लालन-पालन अच्छी प्रकार न किया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से संतान पक्ष को कुछ कष्ट की आशंका है। मां के साथ आपके मधुर संबंध में न्यूनता की आशंका है या माता को आपकी संतान से सुख नहीं मिलेगा। आपको हमेशा ही पेट में दर्द की बीमारी लगी रह सकती है। आपके पुत्रोत्पत्ति के पश्चात् माता के सुख का अभाव हो जाएगा। माता की आंखों का आप्रेशन हो सकता है। बल्कि कुछ सुस्त या नामर्दी भी महसूस करेंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और

उपाय करें।

परहेज :

1. शुभ काम पर जाते समय पीछे से कोई आवाज दे तो शुभ काम पर न जाएं।
2. व्यतीत समय को याद न करें।

उपाय :

1. काला कुत्ता न पालें।
2. काले-सफेद पत्थर के चकले पर रोटी बेल कर बनायें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

इस वर्ष मीन राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें द्वादश में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु पंचम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें सप्तम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। अतः इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों में और सुधार करने की आवश्यकता है। कार्यस्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

02 जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव सेआपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहे हैं। अपना आत्मविश्वास बनाए रखें। कार्य स्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तिओं को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। आपके उच्चाधिकारी आपको परेशान भी कर सकते हैं, जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। परन्तु द्वितीयस्थ शनि के कारण आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे।

02 जून के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे। जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। पारिवारिक सदस्यों की बीमारी पर भी आपका धन खर्च हो सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। लेकिन परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों के लिए गर्भाधान काशुभ समय चल रहा है। आपको बड़े भाईयों का सहयोग प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। उस समय आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। मातुल पक्ष के लिए यह समय ज्यादा खराब है। 31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय इष्ट मित्र, छोटे भाईयों व जीवनसाथी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। समाज में आप का मान-सम्मान और बढ़ेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। आपके बच्चो की उन्नति होगी। यदि वह विवाह योग्य है, तो विवाह भी हो जाएगा।

02 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है, जिसके फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धबहुत अनुकूल नही रहेगा। लग्न स्थान के राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। कभी कभी स्वास्थ्य अनुकूल रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होगा।

02 जून बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपका स्वास्थ्य ज्यादाप्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरुजल तत्व राशि में होने के कारण कफ,खांसीया पेट से संबंधित रोग हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेशमिल जाएगा। व्यावसायिक या तकनीकि शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेराजगार जातकों को कुछ और दिन इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। धार्मिक यात्राओं के भी योग बन रहे हैं।

02 जूनके बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्रा

करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आप अपने गुरु का सम्मान करेंगे। मन्त्र जाप या तन्त्र साधना के प्रति आपकी विशेष रूचि बनी रहेगीऔरदान पुण्य अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करे एवं नीली वस्तु का दान करें।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।अन्न दान या पीली वस्तु का दान करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यन्त ही सुख एवं आनन्दपूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय स्त्रीवर्ग से आपको वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा।साथ ही सौभाग्य से भी युक्त रहेंगे ।अतः आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगे तथा आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी उतम रहेगा। इस समय अध्ययन या ज्ञानार्जन में आपकी रूचि उत्पन्न होगी तथा इस में आप सफल भी होंगे।मित्रों तथा संबंधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे भी यथोचित सुख सम्मान एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा।साथ ही मनोच्छित द्रव्य पदार्थों की भी आपको इस मास में लाभ होने की सम्भावना रहेगी।संततिपक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा। समाज में आपकी प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा असफल आशाओं में भी सफलता अर्जित करने में आप सफल रहेंगे।फलतः आप मानसिक रूप से भी प्रसन्न एवं शान्त रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र या द्रव्यों की भी आपको इस समय उपलब्धि हो सकती है।अतः यह मास आपके लिये अत्यन्त ही शुभ एवं सौभाग्य प्रदान करने वाला रहेगा।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये मध्यम रहेगा तथा शुभाशुभ दोनों प्रकार के फल आप प्राप्त करेंगे। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा आप दुर्जनों की संगति में सम्मिलित होंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय विशेष अच्छा नहीं रहेगा। साथ ही अत्यन्त परिश्रम एवं पराक्रम से ही आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को अल्प मात्रा में सिद्ध करने में सफलता प्राप्त कर सकेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा का ही भाव अधिक रहेगा। साथ ही अन्य प्रकार से भी धन हानि या व्यय के योग बनेंगे। इस मास में मित्रों तथा संबधियों से आपके सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे तथा आपस में मन मुटाव तथा तनाव का वातावरण विद्यमान रहेगा। नौकरी या व्यापार आदि में भी इस समय अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी एवं शत्रुपक्ष से भी भय एवं चिन्ता का भाव रहेगा। जिस कार्य को भी आप इस मास में सम्पन्न सम्पन्न करना चाहेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी।अतः इससे आप मानसिक रूप से अशान्त तथा अप्रसन्न रहेंगे।

परंतु अशुभ फलों के साथ साथ यदाकदा आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे।अतः आप स्त्री से सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा बुद्धि भी निर्मल रहेगी तथा बुद्धिमता से आपके कार्य सम्पन्न होंगे तथा अन्य प्रकार से भी सुखी रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति अपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा इस मास में किसी धार्मिक कार्य क्रम को भी आप सम्पन्न कर सकते हैं।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष निर्बल रहेगा साथ ही लाभ मार्ग भी उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। फलतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। सामाजिक जनों तथा मित्रवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनके मध्य आपकी प्रतिष्ठा में आशातीत वृद्धि होगी।उच्च उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे तथा उनसे उचित सहयोग तथा लाभ भी अर्जित करेंगे। इस मास में आपका भाग्य प्रबल रहेगा तथा शुभ कार्य यथासमय सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त समस्त सांसारिक कार्यो को सिद्ध करने में आप सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा स्त्री वर्ग से भी सहयोग एवं लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके आप सुख एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में आप रूचि रखेंगे तथा समाज एवं बन्धुवर्ग से यथोचित सम्मान भी प्राप्त करेंगे।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

यह मास आप सुख तथा शान्ति पूर्वक व्यतीत करेंगे परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थ भी रहेंगे। इस समय आप अपने उत्साह एवं पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। साथ ही समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में भी पूर्ण वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे यथोचित मान सम्मान भी अर्जित करेंगे। उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग से भी आपको अनुकूल सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा। इस मास में आप मिष्ठान का उपयोग अधिक मात्रा में करेंगे।साथ ही आपका शत्रु वर्ग आपसे पूर्ण रूप से प्रभावित तथा भयभीत रहेगा एवं आपका सामना करने में वे असफल रहेंगे। इस समय स्त्री से भी आप पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यो के द्वारा भी आप धनार्जन करने में सफल रहेंगे तथा सम्पूर्ण मास सुख पूर्वक व्यतीत करेंगे।

साथ ही इस मास में आपको यदाकदा अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी।अतः आप गर्मी या पित्त द्वारा उत्पन्न होने वाले रोग से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे तथा किसी प्रकार से रक्त विकार का योग भी बन सकता है। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा पर पूर्ण ध्यान दें तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

मई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए उत्तम फल प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा अन्य प्रकार से भी विविध सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज से आपको उचित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। देवता एवं

ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनका पूजन तथा सत्कार भी आप करते रहेंगे तथा समाज में दूसरे लोगों के परोपकार के लिए भी आप कार्यो को सम्पन्न करते रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे फलतः आपके यश में वृद्धि होगी तथा पदोन्नति की संभावना बनेगी। साथ ही भाई बहिनों से आप इस समय वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके मानसिक संकल्प तथा मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी जिससे आप हृदय से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे ।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपको नवीन वस्त्रों या द्रव्यों की उपलब्धि भी हो सकती है। अतः यह मास आपके लिए पूर्णतया सुख शान्ति एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा।

जून 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रु पक्ष से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। फलतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे। पारिवारिक जनों से भी आपके परस्पर संबध मधुर नहीं रहेगे अतः तनाव का वातावरण रहेगा। आपके व्यापार या कार्य क्षेत्र में इस मास मन्दी आ सकती है तथा स्थान परिर्वतन का योग भी बनता है ।साथ ही अस्थाई कार्य यदि कोई हो तो वह छूट सकता है। समाज में लोगों से इस मास आपके तनाव पूर्ण संबध रहेंगे फलतः सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग उत्पन्न हो सकते है तथा अनावश्यक रूप से भी धन व्यय होगा फलतः आप यदाकदा दुःखी रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप वात या ठण्ड से उत्पन्न होने वाले रोगों से भी पीड़ित हो सकते हैं। इस समय आप किसी ऐसे कार्य करने के लिए प्रवृत होंगे जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। साथ ही समाज में भी आपकी अवमानना होगी। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी धन हानि का योग बनता है अतः सम्पूर्ण मास सावधानी पूर्वक अपने किया कलापों को सम्पन्न करें।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ फल प्रदाता रहेगा तथा अशुभ फल भी न्यूनाधिक रूप से होते रहेंगे। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में आप पुत्र से सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य प्रकार से भी लाभ अर्जित करेंगे। आपके सामाजिक प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। इस मास में आपके महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण होंगे तथा कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना भी उत्पन्न होगी तथा नियम पूर्वक इनकी सेवा

तथा पूजा करेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप अनुकूल एवं वांछित सहयोग तथा सम्मान भी अर्जित करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताओं से भी आप मुक्त होंगे।

परन्तु शुभ फलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा जाने अनजाने किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा गिरेगी एवं आपको इसके लिए पश्चाताप करना पड़ेगा। इस समय आप अग्नि द्वारा भी किसी प्रकार की धन हानि को प्राप्त करेंगे। अतः सोच समझकर अपने सभी कार्यों को सम्पन्न करें।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभ की अपेक्षा अशुभ ही अधिक रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा साथ ही शत्रु पक्ष के बलवान होने से आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मन में अशान्ति रहेगी। इस मास में आपके घर में चोरी होने की भी संभावना रहेगी। साथ ही ऐसे समय में उच्चाधिकारी वर्ग की भी उपेक्षा न करें एवं उनकी आज्ञा का पूर्ण पालन करें अन्यथा आपको दण्डित भी किया जा सकता है। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे तथा असफलता अधिक मिलेगी। साथ ही इस समय धन का व्यय भी अधिक मात्रा में करेंगे अतः न्यूनाधिक आर्थिक संकट भी बना रहेगा। इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते है जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इस समय आपके मित्र तथा संबधियों से मधुर संबध अल्प रहेंगे तथा तनाव अधिक रहेगा तथा आप सामाजिक उपेक्षा भी प्राप्त करेंगे एवं आपकी आशाएं भी अपूर्ण ही रहेंगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री तथा पुत्र से वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही इस मास में नवीन वस्त्र या द्रव्य भी अर्जित करने में सफल हो सकते है। इससे आप अल्प मात्रा में मानसिक सन्तुष्टि तथा शान्ति प्राप्त कर सकेंगे।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए काफी अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला रहेगा। इस समय आप स्त्री पक्ष तथा बन्धुजनों से कष्ट प्राप्त करेंगे साथ ही आपके शत्रु भी बलवान होंगे जिससे आप उनसे भी भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह में न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे एवं मन में लोभ के भाव की प्रबलता रहेगी। मित्रों एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा जिसके कारण आपके मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे। फलतः मानसिक रूप से आप अत्यंत ही अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सामाजिक जनों से भी समय समय पर वाद विवाद तथा संघर्ष होते रहेंगे

जिससे समाज में भी सम्मान में अल्पता आएगी। अतः सोच समझकर अपना समय व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्त दोषों से अस्वस्थ होंगे फलतः शरीर में निर्बलता रहेगी। इस समय रूधिर विकार भी हो सकता है अतः सावधानी पूर्वक रहें एवं दुर्घटनाओं की उपेक्षा करें। इसके अतिरिक्त इस समय आग के द्वारा भी आपकी क्षति हो सकती है। अतः यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया शुभाशुभ फलों को अर्जित करेंगे इस समय आप शत्रुओं से अनावश्यक रूप से चिन्तित एवं भयभीत रहेंगे तथा घर में किसी प्रकार की चोरी आदि होने की भी संभावना रहेगी। इस मास में आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा अतः आर्थिक रूप से आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव अल्प मात्रा में रहेगा इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे इससे आप में दुर्बलता भी आएगी। इस मास में आप दूर समीप की यात्राएं भी करेंगे।साथ ही अपने सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करने में आपको कठिनाई का सामना करना पड़ेगा इस समय मुकद्दमे आदि में भी धन का व्यय हो सकता है। अतः संयमपूर्वक इस समय को व्यतीत करें अन्यथा कई प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो सकती है।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ यदाकदा शुभ फल भी प्राप्त होंगे।अतः आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा उससे आपको वांछित सहयोग भी प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि में भी इस समय निर्मलता की वृद्धि होगी तथा धन लाभ एवं सुखार्जन करने में भी आप न्यूनाधिक सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही समाज में आप यश भी प्राप्त करेंगे।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए पूर्ण रूप से शुभ फलदायक रहेगा। इस समय आपके उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा आप किसी सम्मानीय पद को प्राप्त करने में भी सफल होंगे। इस मास में आपका धनार्जन प्रचुर मात्रा में होगा तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभ तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके घर में कोई धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न होने की संभावना रहेगी। साथ ही स्त्री एवं पुत्र से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफल सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा यथाशाक्ति आप इनका पूजन तथा सत्कार करेंगे। समाज में इस समय आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा अधिकाशं भाग्योदय संबधी कार्य भी इसी समय सम्पन्न होंगे। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता रहेगी तथा लाभदायक यात्राओं का भी योग बनेगा इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे वांछित

सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगे। इस प्रकार इस समय सर्वत्र आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से मनोवांछित सहयोग तथा सुख की प्राप्ति करेंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करके अन्य स्त्रोतों से भी धनार्जन तथा सुख संसाधन अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आप श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्यक्षेत्र में आशातीत उन्नति तथा लाभ अर्जित करने में पूर्ण सफल रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग तथा वरिष्ठ सहयोगी भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे फलतः आपकी पदोन्नति की संभावना बढ़ेगी।बन्धु एवं मित्र वर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा सुख अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा उनकी भलाई के लिए कार्यों को करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सफल होंगे। जिससे मानसिक रूप से प्रसन्नता एवं सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा निष्ठापूर्वक आप इनकी पूजा एवं सेवा करते रहेंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपका यश फैलेगा। साथ ही अन्य प्रकार से भी लाभयोग बनते रहेंगे। इस मास में आप नवीन गृह या स्थान की प्राप्ति करने में भी सफल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त विगत असफल अशाओं को पूर्ण करने में भी इस समय आपको सफलता प्राप्त होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से पूर्ण लाभार्जन तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपकी बुद्धि में भी इस समय निर्मलता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ तथा सुखार्जन में भी सफलता प्राप्त करेंगे।अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा भाग्यशाली सिद्ध होगा।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं द्वितीय भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष द्वादश भाव में रहेंगे। वक्रीगुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। लगातार प्रयास करने के बावजूद भी व्यापार में सफलता की उम्मीद कम ही रहेगी। शनि, राहु व गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रु आपके कार्यों में रूकावटें डाल जा सकते है। बड़े अधिकारी या वरिष्ठ लोगों का भी सहयोग नहीं मिलेगा। आत्मविश्वास बनाए रखें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। उच्च अधिकारियों द्वारा आपको प्रताड़ित भी किया जा सकता है।

जून के बाद समय अनुकूल हो रहा है। मित्र या पत्नी के सहयोग से लाभ प्राप्त होगा। किसी के साथ मिल कर कोई कार्य कर सकते हैं, जिसमें आपको लाभ मिल सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा। 26 नवम्बर के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नही तो ज्यादा नुकसान हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिसे वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के शुरूआत से ही धनागम के सारे स्रोत प्रभावित होंगे। कुछ ऐसे खर्च आ सकते है, जिसमें पहले से संचित किया हुआ धन भी खर्च हो सकता है जिसके फलस्वरूप आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। कोई भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस विषय में सोच विचार करना बहुत जरूरी है नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। बीमारी दूर करने में भी पैसा खर्च हो सकता है। किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

जून के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू हो जाएगा। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी आय के मार्ग खोल सकती है। आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में आपकी पत्नी एवं भाईयों का भी मुख्य सहयोग होगा। 26 नवम्बर के बाद फिर से समय प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय आपको अपने अनावश्यक खर्च पर ज्यादा ध्यान देना होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी हो सकती है। अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखें। आपको मातुल पक्ष का भी सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में फिर से शान्ति का वातावरण होगा, जिसमें आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी। तृतीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से समाज में आपका मान-सम्मान और अधिक बढ़ेगा। भाइयों का भरपूर सहयोग मिलेगा। वर्ष का अंतिम माह अधिक शुभ नहीं रहेगा ।

संतान

वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान कास्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

जून के बाद आपके बच्चों के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिल सकता है। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। यदि आपका दुसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। संतान की इच्छा रखने वाले जातकों के लिए गर्भाधान का शुभ समय है, परन्तु वर्ष का अंतिम माह शुभ नहीं रहेगा ।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। लग्न स्थान का पाप कर्तरी योग में होने के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो यह समय आपको अधिक प्रभावित कर सकता है ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा नहीं तो परेशानी बढ़ सकती है।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है जिसके प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी और आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

जून के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग

लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है। यदि व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें भी आपको सफलता मिलेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

जून के बाद तृतीय स्थानपर शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी होगी। यात्रा करते समय पूर्ण सावधानी बरतें, क्योकि मुख्य ग्रह प्रतिकूल स्थान से गोचर कर रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। चाह कर भी आप धार्मिक कार्य नहीं कर पाएंगे। अधिक आलस्य के कारण भी आपकी नित्य क्रिया प्रभावित हो सकती है। जून से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे जिससे आपके परिवार में सुख, समृद्धि एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन राहु का दान करें और प्रत्येक दिन राहु मन्त्र का पाठ करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख तथा प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आप स्त्री वर्ग से पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होते रहेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी इस मास में आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मन भी पूर्ण प्रसन्न रहेगा। अध्ययन या ज्ञानार्जन के प्रति भी आप रूचिशील रहेंगे। मित्रों एवं संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। इस मास में आपको मनोच्छित द्रव्य पदार्थो की भी प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा विगत असफल आशाओं में भी आप सफलता प्राप्त करेंगे।

साथ ही इस मास में आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव उत्पन्न होगा तथा प्रचुर मात्रा में धन तथा सुख अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाज में यश तथा सम्मान प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।अतः इस मास को आप सुखपूर्वक व्यतीत करेंगे।

फरवरी 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर मध्यम रूप से व्यतीत होगा। इस समय आपका व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा आप दुष्ट मनुष्यों की संगति से कष्ट प्राप्त करेंगे। इस समय आप आर्थिक संकट से भी उलझे रहेंगे। अतः मानसिक रूप से भी अशान्त तथा उद्विग्न रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा जिससे शरीर में दुर्बलता रहेगी। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अत्यन्त परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का भी आप यथोचित पूजन तथा सत्कार नहीं करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप हानि प्राप्त करेंगे। इस समय आपके मित्रों तथा बन्धुओं से मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक रूप से व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे। साथ ही शत्रुपक्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे तथा जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी। अतः मानसिक रूप से आप अशान्त रहेंगे।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इस समय आप स्त्री वर्ग से लाभ अर्जित करेंगे तथा बुद्धि भी निर्मल रहेगी। साथ ही धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी। जिसके फलस्वरूप कोई धार्मिक उत्सव सम्पन्न हो सकता है। इस प्रकार यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा।

मार्च 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आपके पराक्रम में नित्य वृद्धि होती रहेगी अतः इस समय आपके शत्रु वर्ग कमजोर रहेंगे एवं आप से प्रभावित तथा भयभीत रहेंगे।उच्चाधिकारी वर्ग से इस समय सम्मान एवं सहयोग अर्जित करने में आप सफल रहेंगे।साथ ही मुख्य कार्य के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभार्जन करेंगे। अतः आपकी अर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी इससे समाज तथा मित्रवर्ग में प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपके सौभाग्य में भी वृद्धि होगी तथा पूर्व विलंबित हुए शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य स्वतः सिद्ध हो जाएंगे। साथ ही सांसारिक कार्यों में भी आप सफल रहेंगे एवं सर्वत्र आनन्द एवं प्रसन्नता का वातावरण विद्यमान रहेगा।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ यदाकदा आपको अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी।अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही इस समय किसी प्रकार से रक्त विकार भी हो सकता है।अतः शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सचेत रहें। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी क्षति हो सकती है।अतः सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह के द्वारा धन लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही सामाजिक जनों से आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आपको अपने पारिवारिक जनों तथा बन्धु वर्ग के मध्य यथोचित प्रतिष्ठा अर्जित होगी तथा परस्पर संबध भी मधुर रहेंगे। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे। फलतः आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध हो जाएंगे। आपकी मिष्ठान्न भक्षण में भी इस मास पूर्ण रूचि रहेगी।आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा रहेगा तथा उसमें बल की वृद्धि होती रहेगी। शत्रुपक्ष को पराजित तथा भयभीत करने में भी आप सफल रहेंगे तथा सभी जनों से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। फलतः आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। इसके अतिरिक्त व्यापार अदि कार्यो में भी आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार यह मास आपके लिये अत्यंत ही शुभफलदायक रहेगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुखी रहेंगे तथा सन्तति पक्ष से भी सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपको नवीन वस्त्रों या वस्तुओं की प्राप्ति भी हो सकती है। अतः प्रसन्नता पूर्वक इस मास को व्यतीत करने में आप सफल रहेंगे।

मई 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये सामान्यतया शुभ रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार से सुखोपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा यश में भी वृद्धि होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। साथ ही समाज में अन्य लोगों की भलाई करने में भी

आप तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य ही रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त करेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि के द्वारा भी आप हानि प्राप्त कर सकते है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

जून 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। इस समय आपके शत्रु प्रबल रहेंगे तथा उनसे आप भयभीत तथा चिंतित रहेंगे। जिससे मानसिक रूप से आप उद्विग्नता तथा अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस समय आपके व्यापार या आजीविका संबधी कार्य में मन्दी आएगी तथा कई अनावश्यक विध्नबाधाएं भी उत्पन्न होंगी। साथ ही आपका कोई कार्य बंद हो सकता है या उसमें किसी प्रकार का परिर्वतन होने की संभावना बनेगी। समाज में अन्य लोगों से इस मास में आपका अनावश्यक विवाद या संघर्ष होगा जिससे सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का भी योग बनता है तथा शारीरिक कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप वातजनित रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे तथा किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्धारा भी किसी प्रकार की क्षति या हानि हो सकती है। अतः सावधानी एवं सतर्कतापूर्वक अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

जुलाई 2027 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आपको द्रव्य लाभ का योग बनेगा। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे तथा अच्छे समाचारों को भी आप सुनेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य या उच्चाधिकारी वर्ग से आप लाभार्जन करने में भी सफल हो सकते हैं। इस

समय आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में अभिबृद्धि होगी तथा समस्त मानसिक चिन्ताएं दूर होगी। अतः मन से आप पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं को प्राप्त करने में भी सफल हो सकते हैं। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

अगस्त 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये सामान्यतया अशुभ रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। इस समय आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे तथा उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मन में अशान्ति तथा उद्विग्नता विद्यमान रहेगी। साथ ही इस मास में आपके धर में किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है अतः सतर्क रहें। उच्चाधिकारी वर्ग से इस समय आपको पूर्ण सहयोग रखना चाहिए तथा उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए अन्यथा आप दण्डित भी किए जा सकते हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में अल्प मात्रा में ही सम्पन्न होंगे एवं धन का व्यय भी अनावश्यक रूप में होता रहेगा। अतः आर्थिक दृष्टि से भी आप शिथिल हो सकते है। साथ ही इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आप को बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। मित्रों एवं संबधियों से आपके संबधों में भी इस समय तनाव का वातावरण रहेगा तथा समाज से भी आप उपेक्षा प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय अपूर्ण ही रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पितजनित रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा दुर्घटना अदि से भी शरीर में रक्त विकार की संभावना हो सकती है। इसके अतिरिक्त इस समय अग्नि के द्वारा भी आप हानि प्राप्त कर सकते है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में होंगे। इस समय आप स्त्री पक्ष से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रुओं की ओर से भी चिन्ता एवं भय का वातावरण बना रहेगा। इस मास में आपके उत्साह में भी कमी आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। जिससे आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम के बाद भी पूर्ण रूप से सिद्ध नहीं होंगे। शारीरिक अस्वस्थता भी इस समय बनी रहेगी तथा स्वभाव में लोलुपता के भाव में वृद्धि होगी। अपने बंधु एवं मित्र वर्ग से आपके संबध अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर मन मुटाव चलता रहेगा।मित्र वर्ग भी इस समय शत्रुओं के समान व्यवहार करेंगे जिसके कारण मन अशान्त तथा असंतुष्ट रहेगा। इसके अतिरिक्त आपके सामाजिक जनों से भी वादविवाद या संघर्ष होने की संभावना बनी रहेगी जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होते रहेंगे। अतः स्त्री से

सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा बुद्धिबल से आपके कार्य सफल भी हो सकते है। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में रूचि उत्पन्न होगी। इस प्रकार आपका यह मास सामान्य रूप से व्यतीत होगा।

अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को अर्जित करेंगे। इस समय शत्रुप क्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे एवं घर में किसी प्रकार की चोरी आदि होने की भी संभावना रहेंगी। इस समय आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक कष्ट प्राप्त कर सकते हैं। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा का भाव ही अधिक रहेगा। इस मास में आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से आप शारीरिक तथा मानसिक कष्टों को प्राप्त करेंगे जिससे शरीर में दुर्बलता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी। इस समय आप दूर या समीप की कोई यात्रा भी सम्पन्न कर सकते हैं।आपके सांसरिक कार्य इस मास में अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी व्यय अधिक होगा। अतः सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ आपको समय समय पर शुभफल भी प्राप्त होंगे।अतः आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं महिला सहयोगियों से भी लाभार्जन करेंगे। आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा एवं धनार्जन प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। इस मास में धर्म का भी आप अनुपालन करेंगे तथा समाज में आपको पूर्ण यश प्राप्त होगा।

नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ तथा भाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण रूप से सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे। साथ ही आपके धर में कोई धार्मिक कार्यक्रम भी सम्पन्न होगा।संतति पक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा एवं श्रद्धा पूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करेंगे। समाज में इस समय आपके यश में वृद्धि होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा। इस मास में आपकी लाभ दायक यात्रा का योग भी बनेगा। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सम्मान तथा सहयोग भी अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा समाज में आप एक सम्माननीय तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला वर्ग से पूर्ण सहयोग एवं लाभार्जित करने में सफल रहेंगे। इस समय आपको प्रचुर मात्रा में धनार्जन भी होगा तथा सुख साधनों को भी आप अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में आपकी रूचि रहेगी तथा समाज में पूर्ण यश एवं प्रतिष्ठा व्याप्त रहेगी।

दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्ता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में पूर्ण उन्नति होगी तथा समाज में आपको उचित सम्मान तथा आदर प्राप्त होगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको पूर्ण सम्मान तथा सहयोग अर्जित होगा तथा वे आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुजनों को आप पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। सन्तति पक्ष से आप सुखी रहेंगे तथा बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आपकी असफल आशाएं भी इस मास में पूर्ण होगी। जिससे मानसिक रूप से शान्ति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

साथ ही इस मास में आप सरकार या अधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। इस समय आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी कर सकते है। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र या द्रव्यों आदि की भी आपको इस समय प्राप्ति हो सकती है।अतः यह मास आपका सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं रहेगा। दूसरे स्थान का शनि आपके कार्य-व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा। फरवरी के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। कम समय में बेहतर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आप अपना आत्मविश्वास बनाए रखें क्योकि एकादश स्थान का राहु अचानक लाभ कराता रहेगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट हो कर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। कुछ ऐसे खर्चे आ सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। फरवरी से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने से आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिल सकता है। 24 मई के बाद एकादश स्थान के राहु अचानक धन लाभ कराने के प्रबल योग बना रहे हैं।

24 जुलाई के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। बच्चे या परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। अतः अच्छा यही होगा की विपरीत स्थिति में आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं। फरवरी के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे।

तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। 28 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे एवं परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

24 जुलाई से समय फिर से प्रभावित हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखें।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप बहुत जल्दी अच्छे हो जाएंगे। सुबह सुबह व्यायाम अथवा योगा करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। फरवरी से विद्यार्थियों के लिए समय बहुत बढ़िया रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपके विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। 23 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी। व्यावसायिक व्यक्ति की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। फरवरी के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्शित रहेगा। परमात्मा की भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रुचि लेंगे। सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यवसायिक उन्नती के साथ होगा। समय समय पर उच्चाधिकारियों से लाभ मिलता रहेगा। आप कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा।

25 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल हो रहा है। आप अपने दैनिक कार्य स्फूर्ति से करेंगे और अपने कार्यक्षेत्र कुछ विशेष करेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से भी आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे। एकादश स्थान का राहु अचानक धन लाभ करा सकता है। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे।

29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में आप पर कुछ अनावश्यक खर्च आ सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। शनि ग्रह के गोचर के बाद भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों के लिए समय अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाई-बहनों के लिए समय बहुत उपयुक्त है तथा उनकी उन्नति के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। बच्चों की उन्नति के भी योग हैं।

05 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक माहौल खराब कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना लेंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य

भी प्रभावित हो सकता है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बहुत शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के बारे में शुभ समाचर मिलेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। गर्भाधान का शुभ योग बन रहा है। मार्च के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

25 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। वे अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपको उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करनी चाहिए। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक विकसित होगी। 29 मार्च के बाद मौसमजनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें।

08 अगस्त के बाद शनि का गोचर प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। किसी पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें। सुबह जल्दी उठकर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप उन्नति करेंगे परन्तु करियर में सफलता पाने के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। गुरु के गोचर के बाद समय विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

25 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या सोफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहता हैं उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

यात्रा-तबादला

तृतीय एवं नवम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी अधिक यात्राएं होंगी। उन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। 29 मार्च के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होंगी।

शनि ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वालो व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह

परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा। 25 अगस्त से आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपकी धार्मिक कार्यों में रूचि बढ़ेगी। 25 अगस्त के बाद गुरु मन्त्र ले कर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। गरीबो की सहायता करें।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। भले ही इस वर्ष कुछ ऐसे माह भी होंगे जब आपको मामूली परेशानी का सामना करना होगा लेकिन आप उन परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। इस साल की शुरुआत से ही आप अपनी काबिलियत को साबित कर सकने में कामयाब होंगे। शनि ग्रह के गोचर के बाद समय किंचित प्रतिकूल होगा किन्तु आप अपनी लगन और कार्यकुशलता से सब मुश्किलों का हल सकारात्मक रूप से निकाल लेंगे।

23 सितम्बर के बाद आपके अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम रहेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका सहयोग करेंगे

धन संपत्ति

यह साल आर्थिक रूप से अच्छा रहेगा। व्यावसायिक स्तर पर जोखिम उठाने में कोई नुकसान नहीं होगा। आपको अपने जरूरी दस्तावेजों की ओर विशेष ध्यान देना होगा। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो 17 अप्रैल के बाद लोन मिल जाएगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे परन्तु बहुत सोच विचार कर उसमें निवेश करें।

धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नही कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। 1 मई से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए यह समय बहुत शुभ है। पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग

मिलेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

17 अप्रैल के बाद चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू वातावरण में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नही रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। गुरु एवं राहु ग्रह की युति संतान संबंधित चिंताएं दे सकती है। पंचम भाव पर राहु एवं शनि ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकती है। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों को कुछ और इंतजार करना पड़ सकता है।

1 मई के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आप गौरवान्वित महसूस करेंगे। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। कार्यों के प्रति सक्रिय और अति उत्साहित होने के चलते आप पूरे साल एकदम तंदरुस्त रहेंगे। सुबह-शाम टहलना व नियमित व्यायाम अभ्यास को बरकरार रखना आपके लिए मुश्किल नहीं होगा।

17 अप्रैल के बाद मामूली संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं। स्वस्थ रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा। चिंता करने से जीवन के दूसरे क्षेत्रों में आपका ही प्रदर्शन कमजोर साबित होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य बहुत बढ़िया रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा में आपको सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। 1 मई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों का मन पढ़ाई से हट सकता है। आपको प्रतियोगिता परीक्षा एवं अपने करियर के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। इस समय किया गया परिश्रम आने वाले समय में आपको लाभ देने वाला होगा। अतः आप अपने पूर्ण मन से

प्रतियोगिता परिक्षाओं की तैयारी करें और करियर के प्रति सजग रहें।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 17 अप्रैल को शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

1 मई से आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं होने के प्रबल योग बन रहे हैं। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नति कारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति की अनुभूति होगी। इस समय आप अधिक पुण्य का कार्य करेंगे। 1 मई से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे जिससे आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

इस वर्ष वृष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

प्रारम्भ के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल आपके लिए उत्तम रहेगा। 'जो चाहना वह पाना' वाली खासियत जो आप में है, आपको सफलता के द्वार पर ला खड़ा कर सकती है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी खास ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आनंद भी लेंगे। अगस्त के बाद आपको वेतन वृद्धि या पदोन्नति के रूप में आर्थिक लाभ भी होगा। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए यह समय बहुत अच्छा रहेगा। आपकी कुण्डली में दशम भाव में गुरु ग्रह की उपस्थिति आपके हित में काम करेगी और साक्षात्कारों में भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। आपके आय के सारे मार्ग खुलेंगे। आपको कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

पूरे साल आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। रत्न आभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। योजना बनाने के लिए और उद्देश्य पूर्ति के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

9 अगस्त के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय का नया साधन मिलेगा। मातुल पक्ष के लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। परिवारिक चिंताएं बढ़ सकती हैं। 9 अगस्त से घरेलू वातावरण के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आयेंगे। आपको भाईयों का सहयोग मिलेगा।

15 अक्टूबर के बाद अविवाहित व्यक्तियों का विवाह हो सकता है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। समाज में भी आपके पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। आपका आत्म सम्मान बढ़ेगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे की शिक्षा-दीक्षा में सुधार होगा। 18 फरवरी के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी।

प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपका स्वास्थ्य काफी बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय बने रहेंगे। आपकी दृढ़ निश्चयता और सशक्त इच्छाशक्ति के कारण ही आप एकदम स्वस्थ्य रहेंगे। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

18 फरवरी से गुरु का गोचर शुभ स्थान में होने के कारण आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता आएगी। मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो रहे हैं तो जल्दी ही आप अच्छे हो जाएंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे। 18 फरवरी के बाद सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोत का सृजन करेंगे।

राहु ग्रह का गोचर विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। 15 अक्टूबर के बाद व्यावसायिक व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष कोई विशेष यात्रा के योग नहीं बन रहे। 18 फरवरी के बाद आपकी छोटी यात्राएं होती रहेंगी। सप्तम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यावसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

राहु के गोचर के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। मुख्यतः आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी। यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- काली वस्तु का दान करें या शनि मन्त्र का जाप आपके लिए लाभप्रद रहेगा।
- अपने घर में स्फटिक श्रीयन्त्र स्थापित कर उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु नमव भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुएकादश भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं एकादश में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। अपने दायित्वों को आप जिस तरह से पूरा करने के लालायित रहते हैं वह काबिले तारीफ है। 5 मार्च से द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है।

आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। 23 अक्तूबर से आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी होंगीपरन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालते हुए अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए योजना निर्धारित करनी होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तमरहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। 5 मार्च के बाद गोचर प्रतिकूल होने से निवेश व लेन देन के मामले में आप सावधान रहें। किसी पर भी बहुत जल्दी विश्वास न करें। आपके अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं।

12 अगस्त से आपको भाईयों और मित्रोंकर अच्छा सहयोग मिलने के कारण फिर से धन संचय करने में लग जाएंगे। आपके संचित धन में वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में आपको सभी इच्छित वस्तुओं की प्राप्ति होगी। 23 अक्तूबर से आपका समय फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय कोई भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़ीयानहींरहेगा। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। ऐसी

विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

12 अगस्त से सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव होने से आपके दाम्पत्य जीवन में खुशहाली का योग बन रहा है। आपके भाई व मित्रों के लिए समय बहुत शुभ है। सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहर दोनों में बदलाव आएगा। आपको प्रेम संबंधो में भी सफलता मिलेगी।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ के दो माह आपके बच्चों के लिए श्रेष्ठ रहेंगे, परन्तु 5 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके बच्चों का समय प्रभावित हो रहा है।31 मई से पंचम स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी।

उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। 23अक्तूबरसे आपके बच्चों का समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यहवर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। 5 मार्च से द्वादश स्थान परगुरु के गोचरीय प्रभाव से मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके स्वास्थ्य के लिए काफी अनुकूल रहेगा। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपशारीरिक आरोग्यता को प्राप्त करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकता है। 5 मार्च से विदेशी भाषा सीखने के लिए समय बहुत अच्छा है।

यदि आप अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर परिश्रम करते रहें तो वर्षान्त में अवश्य सफलता आपके कदम चूमेगी। तकनीकीशिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। 5 मार्च के बाद आपकीविदेश यात्रा होंगी।

12 अगस्त के बाद आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दर्शनीयस्थल या ऐतिहासिक स्थल की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। इस यात्रा के अंतराल में

आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आलस्य व लापरवाही के कारण आपकी दैनिक पूजा भी प्रभावित हो सकती है। 12 अगस्त से पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप मन्त्र जाप करेंगे। आपकी अपने इष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी तथा आप गुरुदीक्षा लेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन भी करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं नवम भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं द्वादश में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक उन्नति के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। व्यक्तिगत संबंधों में भी सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे। 18 मार्च के बाद वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपके व्यवसाय में कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा और आपको बन्धु-बान्धवों का पूरा सहयोग मिलेगा।

आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का उनके कार्यस्थल पर मान-सम्मान बढ़ेगा। वरिष्ठ अधिकारी आपके कार्यों से संतुष्ट रहेंगे। अचानक व्यावसायिक व्यक्तियों की उन्नति के योग हैं। आप अपने व्यापार को ऊंचाई तक ले जाने में समर्थ होंगे।

धन संपत्ति

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी, जिससे आपके पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं। परन्तु आप जिस तरह के चतुर और सूझ-बूझ भरे व्यक्ति हैं तो इसके चलते आप इन चुनौतियों को ही लाभकारी अवसरों में परिवर्तित कर सकते हैं।

लॉटरी, सट्टा व शेयर बजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। धन संचय करने में आपकी धर्मपत्नी का मुख्य सहयोग रहेगा। यदि ऋण के लिए आवेदन दिया है तो वह भी मिल जाएगा। पैतृक संपत्ति या भूमि इत्यादि पर केस मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी, क्योंकि अष्टम स्थान का राहु पैतृक संपति के लिए अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। द्वितीयस्थ केतु आपके पारिवारिक वातावरण में कुछ विषमता की स्थिति उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे। परन्तु चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि उस विषम परिस्थिति को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देगा। जिससे आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। आपस में भावनात्मक लगाव बना रहेगा। आपके

मातुल पक्ष के लोगों के साथ समन्वय मधुर होंगे। आपके माता पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा।

धर्मपत्नी के साथ संबंधों में मधुरता आएगी। भाई-बहनों के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। अतः आपको अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए नहीं उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके विरोधी शान्त होंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं है। पंचम स्थान का शनि आपकी संतान की उन्नति में बाधा डाल सकता है। आपको अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं वे गलत संगत में पड़ सकते हैं जो कि उनकी उन्नति में बाधक बन सकता है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत ध्यान से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

18 मार्च से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ हो रहा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसके विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं। आपके बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। बीच बीच में आपको उनके मनोबल को बढ़ाते रहना चाहिए नहीं तो अपने लक्ष्य से उनका मन भटक सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान का गुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गैस, अपच व पेट संबंधित परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। परन्तु 18 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में सुधार आना प्रारम्भ हो जाएगा।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या पर ध्यान दें। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। वाहन चलाते समय व यात्रा करने समय सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 18 मार्च से व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय श्रेष्ठ है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

वर्ष के मध्य में एकादश स्थान का मंगल प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए काफी शुभ है। उनके करियर में सफलता के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटे दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं के लिए यह समय काफी शुभ है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के अच्छे योग बन रहे हैं। 18 मार्च के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। आपकी यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक रहेंगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण स्थानान्तरण घर से दूर भी हो सकता है, जिससे आप असंतुष्ट होंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि शुभ कर्म अधिक करेंगे। आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों को खाना खिलाना, भिखारियों को दान देना, धार्मिक स्थान पर भंडारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- राहु ग्रह का अशुभ प्रभाव शान्त करने के लिए आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक स्थिति के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध हितकारी रहने वाला है। शुरुआत में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन समय के साथ स्थिति में सुधार होगा। आप अपने व्यावसायिक जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए अथक परिश्रम करेंगे और अपने सपनों को साकार करने में सफल होंगे। मुख्यतः ग्रह गोचर अनुकूल होने के कारण ऑफिस में आई किसी भी समस्या का समाधान निकालना आपके लिए बच्चों का खेल होगा। अष्टम स्थान का राहु आपके व्यावसायिक जीवन में कुछ परेशानी उत्पन्न कर सकता है, जिससे आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कुछ कठिनाइयों का अनुभव करेंगे। परन्तु यह स्थिति जैसे ही समाप्त होगा। अचानक आपके कार्यों में उन्नति मिलना शुरु हो जाएगी।

आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं। उनको इच्छित नौकरी की प्राप्ति होगी। जो व्यक्ति कार्यरत हैं उनको कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा। छोटे दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं के लिए समय बहुत ही अनुकूल है।

धन संपत्ति

यह वर्ष आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। समस्त आय के मार्ग खुलेंगे। रुके हुए या फंसे हुए पैसे वापस मिलेंगे। निवेश करने के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। 28 मार्च से द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। धन संचित करने में आपके परिवार वालों का मुख्य सहयोग होगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। 12 अगस्त के बाद सप्तम भाव में राहु ग्रह का गोचर आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। शारीरिक अनुकूलता पर धन का व्यय होगा। धार्मिक व मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। पारिवारिक सुख सुविधा के लिए अधिक धन खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

यह वर्ष पारिवारिक दृष्टिकोण से उत्तम रहेगा। 28 मार्च के बाद आपके परिवार में

सदस्य वद्धि के संकेत हैं। यह वृद्धि किसी के विवाह या शिशु जन्म से होगी। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी ।जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

आपके छोटे भाई-बहनों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध शुभ नहीं है। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगी। आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह उत्तम समय चल रहा है।

बच्चों के साथ प्रेम संबंधों में मधुरता आएगी जिससे घरेलु वातावरण में भी सुधार होगा। आपके दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। पूरा साल आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहने वाले हैं। क्योंकि लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम एवं सुबह-सुबह टहलना आदि
वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप सेहत पर ध्यान नहीं देंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। अतः बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर अनावश्यक चिंता न करें। सुबह जल्दी उठकर योगा आदि करना आपके लिए लाभप्रद है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहने वाला है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है। ज्योतिष व गुप्त विद्या के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ सकती है।

जो व्यक्ति व्यवसाय के रूप में करियर खोज रहे हैं। उनके लिए शनि ग्रह का गोचर एक सुनहरा अवसर लेकर आ रहा है। षष्ठस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपना ब्राण्ड नेम मिल सकता है, जिसमें आपको अच्छी उन्नति मिलेगी।

यात्रा-तबादला

28 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। कार्य व्यवसाय से संबंधित भी यात्रएं होती रहेंगी। 13 जुलाई के बाद द्वादश स्थान पर

शनि ग्रह की दृष्टि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, जिससे आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास उत्पन्न करेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। दान-पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपको आलसी बना सकती है जिससे आपके धार्मिक कार्यों में रुकावट उत्पन्न होगी।

- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें या अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने पूजा घर में रखें एवं उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।
- शनि व बुधवार के दिन काली व नीली वस्तु का दान करें एवं राहु के निम्न मन्त्र का पाठ करें।

ॐ भ्रां भ्रीं भौं सः राहवे नमः।

इस वर्ष कर्क राशि का शनि छठे भाव में और सिंह राशि का राहु सप्तम भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छी सफलता भी मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा व अपने से बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे।

सप्तम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में कुछ रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी हल निकाल लेंगे। यदि आप साझेदारी में व्यापार कर रहे हैं तो अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होग, जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

6 अप्रैल के बाद आर्थिक लेन-देन में जल्दबाजी न करें और बहुत सोच समझ कर ही धन का व्यवहार करें। आपको अपने व्यय पर थोड़ा नियंत्रण रखना होगा। आर्थिक मामलों में सावधानी बरतें। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि यदा-कदा आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकती है। परंतु इसका सामान्य कार्य-कलापों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उत्साह एवं पराक्रम के साथ अपनी आर्थिक स्थिति को बढ़ाने में तत्पर रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा जिससे पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 6 अप्रैल से आपके छोटे भाईयों के लिये समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य

भी संपन्न करेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे।

सप्तमस्थ राहु के कारण अचानक आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। बेहतर होगा की आप अपने विचारों पर नियंत्रण रखें और अपना आवेश या प्रेम दोनों ही दूसरों पर न जाहिर होने दें। घरेलू वातावरण में किसी प्रकार की विषम परिस्थिति उत्पन्न न हो इस पर विशेष ध्यान दें।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो इस वर्ष अवश्य उनका विवाह हो जाएगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। सप्तमस्थ राहु के कारण अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उसके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए। नहीं तो उसकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहने वाला है। आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। क्योंकि छठे स्थान का शनि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओ की वृद्धि कर रहा है। आप स्फुर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम या सुबह-सुबह टहलने जाना। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। मानसिक तनाव, उत्तेजना, अवसाद जैसी समस्याएं बहुत परेशान कर सकती हैं। लीवर और मधुमेह की समस्या भी बढ़ सकती है या प्रारम्भ हो सकती है। दिनचर्या अनियमित रहेगी और खान-पान पर नियंत्रण रखना मुश्किल रहेगा। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठतम रहने वाला है। समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य में सबसे आगे रहेंगे। विद्यार्थियों का नए-नए तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा।

मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है। जो व्यक्ति व्यवसाय में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 6 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं

के साथ आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक तीर्थ यात्रा भी करेंगे।

द्वादश स्थान पर शनि की दृष्टि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रही है। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण आप धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आ सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। 6 अप्रैल से समय धार्मिक कार्यों के लिए अनुकूल हो रहा है। आपके दैनिक पूजा पाठ में सुधार होगा। मन्दिर जाना, धार्मिक कृत्य करना, दुसरों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। जितना आप अच्छा कार्य करेंगे उतना ही आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

- पारद शिवलिंग अपने घर में स्थापित कर, सपरिवार उसका दर्शन व पूजन करें। इसके प्रभाव से ग्रहजनित सभी दोषों का नाश होगा और आपके परिवार में सुख समृद्धि का वास होगा।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। वर्षारम्भ में आपको बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको अपने कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। व्यापार में हजारों व्यवधान आने के बावजूद भी आपको मुनाफा प्राप्त होगा, साथ ही कारोबार का भी विस्तार होगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। अप्रैल के बाद समय और भी अच्छा हो रहा है।

आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता भी मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा व अपने से बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। वर्षारंभ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें आपका अच्छा खर्च हो जाएगा। 15 अप्रैल के बाद आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से भी आपको लाभ मिलेगा।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होगी। रुके हुए व फंसे हुए धन की प्राप्ति होगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई कार्य संपन्न करेंगे, जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा और बढ़ेगी।

15 अप्रैल के बाद घरेलू वातावरण बहुत ही अच्छा रहने वाला है। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। परन्तु 27 अगस्त के बाद आपकी पत्नी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। जो आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकता है।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वो अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

अप्रैल के बाद दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत ही श्रेष्ठ रहेगा। वे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे समाज में आपका मान संमान बढ़ेगा। यदि आप दूसरे संतान की इच्छा रखने हैं तो गर्भाधान के लिए अच्छा समय चल रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 13 अप्रैल के बाद समय बहुत ही बढ़िया हो रहा है। आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। क्योंकि छठे स्थान का शनि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओ की वृद्धि कर रहा है, जिससे आप स्फूर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह टहलने जाना इत्यादि।

27 अगस्त के बाद लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि के कारण आप समय पर अपना खान पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इससे भी आपकी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठतम रहने वाला है। समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य में सबसे आगे रहेंगे। विद्यार्थियों को नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा। रोजगार के नये नये अवसर भी मिलेंगे। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने करियर में सफल होंगे।

तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। 27 अगस्त के बाद आलस्य की भावना आपकी सफलता में बाधक साबित हो सकती है। अतः अगस्त के बाद आलस्यता व अत्यधिक आत्मविश्वास का त्याग करें और यथार्थवादी बनें ।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। 15 अप्रैल के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु, राहु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपकी अवश्य विदेश यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से आप दैनिक पूजा करते रहेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- श्वेतार्क गणपति अपने घर में स्थापित करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा स्थान में रखें और नित्य उसका दर्शन करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष काले धागे में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य-व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में स्थानान्तरण की भी संभावना बन रही है। 26 अप्रैल से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। साथ ही किसी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह सब आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। सप्तम स्थान में शनि ग्रह का गोचर आपके व्यापार में रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। साझेदारी में कार्य कर रहें है तो यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

सितम्बर के बाद समय और भी ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। आपके कार्यों में प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। फुटकर विक्रेता व भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं है। राजनीति व शेयर बजार से जुड़े लोगों को अचानक हानि होगी। परिवार में रोग-बीमारी अधिक होने के कारण आपका व्यय बढ़ेगा।

धन संपत्ति

वर्षारंभ में चतुर्थ स्थान का गुरु आपको भूमि, भवन, वाहन के साथ संचित धन की प्राप्ति करा सकते हैं। माता जी से धन लाभ होने का अच्छा योग बन रहा है। अप्रैल के बाद आय के स्रोत तो बढ़ेंगे परन्तु आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य पर भी ज्यादा खर्च होगा। शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आर्थिक उन्नति करने में आपको भाइयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। रुके हुए व फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं।

16 सितम्बर के बाद लेन-देन व निवेश के मामले में सावधान रहें। क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर आर्थिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आय के मार्ग प्रभावित होंगे। किसी को उधार पैसे न दें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में आपका घरेलू माहौल अनुकूल रहेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आप संतुष्ट व प्रसन्न रहेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। 26 अप्रैल से संतान व भाईयों के लिए समय बहुत

ही शुभ हो रहा है।

सप्तम स्थान का शनि आपकी पत्नी के साथ संबंध खराब कर सकता है, जिससे परिवार में किंचित नकारात्मक परिस्थिति उत्पन्न होंगी। परन्तु आप उन नकारात्मक परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। पंचमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। समाज में सभी लोग आपको यथोचित आदर एवं संमान प्रदान करेंगे। सामाजिक उत्थान के लिए आप श्रेष्ठ कार्य करने में रुचिशील रहेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। आपके बच्चे परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। बच्चों के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा।

26 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का श्रेष्ठ समय रहेगा। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो इस समय के अंतराल में उसका विवाह हो सकता है। परन्तु आपकी दूसरी संतान के लिए यह साल सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह साल अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेगी। मौसमजनित बीमारियां भी आपको तंग कर सकती हैं। पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है। अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। हालांकि छठे स्थान का राहु रोगों से लड़ने की शक्ति प्रदान कर रहा है।

अप्रैल के बाद आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे। फिर भी आलस्य की भावना बनी रहेगी। किसी भी कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। 19 अक्टूबर के बाद अचानक आपकी संतान का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त हो सकते हैं। परन्तु शीघ्र ही यह स्थिति भी ठीक हो जाएगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्ठस्थ राहु के कारण प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए साल का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहेगा। रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। अप्रैल के बाद विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय उत्तम है। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में नामांकन मिलेगा।

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। लेकिन 16 सितम्बर के बाद करियर में उन्नति के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु एवं राहु की संयुक्त दृष्टि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रही है। इस वर्ष आप परिवार सहित अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानांतरण आपके लिए अनुकूल रहेगा।

26 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। इस समय के अंतराल में आपकी व्यावसायिक यात्रा भी अधिक होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी अधिक करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन, पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 26 अप्रैल के बाद आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति रूचि बढ़ेगी। साधना, योग व ध्यान आप अधिक करेंगे। अपने गुरु के दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। गरीबों की सहायता एवं बुजुर्गों की सेवा करेंगे। परन्तु इन सभी कार्यों में आपकी पत्नी का सहयोग कम ही रहेगा।

- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष को जल चढ़ाएं और शाम के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन तांबे की लोटे में चावल, रोली डाल कर सूर्य को अर्घ्य दें।)
- अपने पूजा घर में श्वेतार्क गणपति की स्थापना कर नित्य उसका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं सप्तम भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

काम काज में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावट उत्पन्न करेंगे, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। आपके शत्रु आपको किसी षड्यन्त्र में फंसा सकते हैं तथा आप इस परेशानी से निकालने में अपने को असमर्थ समझेंगे। 11 मई के बाद समय और भी प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। कार्यस्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। फिर भी किसी अनुभवी व्यक्ति की सलाह के बिना महत्वपूर्ण फैसले न लें। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने कारण सतर्कता बरतने की जरूरत है। निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें। इस बात को न भूलें की जल्दबाजी में लिए गए फैसले अक्सर गलत ही होते हैं। आपका कोई करीबी या कोई अन्य आपके साथ धोखा-धड़ी कर सकता है। कारोबार से संबंधित सभी कार्यों में सावधानी बरतें और जो भी लेन-देन करें लिखित रूप में ही करें तो ज्यादा बेहतर होगा।

धन संपत्ति

एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आर्थिक स्थिति के लिए अच्छी है। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी फिर भी आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे क्योंकि राहु के साथ गुरु की युति अच्छी नहीं होती। 11 मई को गुरु ग्रह का गोचर आपके अच्छा संदेश नहीं दे रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऐसे में आप देन लेन के मामले में सावधान रहें। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। धर्म पत्नी एवं पुत्र का स्वास्थ्य अनुकूल करने में धन व्यय होगा। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

7 अक्टूबर से व्यापारिक व्यक्तियों को कुछ लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। जो आपके लिए अच्छा नहीं है। शेयर बाजार से दूरी बनाए रखना आपके लिए लाभदायक होगा। बिना सोचे-समझे कहीं भी निवेश करने से बचें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित रहने से आप चिंतित रहेंगे। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने का प्रबल योग बना रही है। सहनशक्ति बनाए रखें। पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाए रखने का पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए। मई के बाद आपके मातुल पक्ष के लोगों के लिए समय अच्छा नहीं है। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा।

अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल होगा। आपको भाईयों का सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान संमान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। परन्तु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए शुभ नहीं है।

संतान

यह साल संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है। जो आपके बच्चों के लिए अनुकूल नहीं है। आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिसका असर उनकी शिक्षा दीक्षा पर भी पड़ेगा। 11 मई के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। गर्भवती स्त्रियों का संतान हानि (गर्भपात) हो सकता है। अतः उस समय आपको संतान पर विशेष ध्यान देना होगा।

अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपकी दूसरी संतान की उन्नति होगी। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय काफी शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करना ज्यादा पसंद करेंगे, जिससे आपके मन में अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

11 मई को गुरु ग्रह का गोचर आपको मौसमजनित बीमारियों से परेशान कर सकता है। लग्न स्थान पर पाप ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी हो सकती है। गैस, पाचन या पेट संबंधित बीमारियां भी हो सकती हैं। इस समय के अंतराल में अचानक कोई बड़ी बीमारी होने का प्रबल संकेत दिख रहा है। हालांकि अक्टूबर के बाद समय किंचित अनुकूल हो रहा है। फिर भी अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। तुला दान या महामृत्यंजय जाप करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। पंचम स्थान में राहु एवं गुरु की युति आपकी उन्नति को रोक रही है। मई के बाद नौकरी के लिए प्रयासरत अभ्यार्थियों को प्रतियोगिता में व्यवधान व करियर में रुकावटें आ सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको अथक परिश्रम करने की आवश्यकता है क्योंकि आने वाले समय में यही परिश्रम आपकी सफलता का द्वार खोलेगा।

7 अक्टूबर के बाद समय में कुछ सुधार हो रहा है तकनीकी शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों को सफलता मिल सकती है। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए भी समय शुभ है। नौकरी वांछित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि लम्बी यात्रा का योग बना रही है। धार्मिक यात्रा का भी आनन्द ले सकते हैं। व्यवसाय से संबंधित भी आपकी यात्राएं होती रहेंगी।

11 मई के बाद आपकी विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। अक्टूबर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। सांस्कृतिक उत्सवों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे। आपके धर्म के अनुसार जितने भी पर्व होते हैं उन सभी पर्वों को हर्षोल्लास के साथ मनाएंगे। मई के बाद आप दान पुण्य में ज्यादा रुचि लेंगे- जैसे मन्दिर निर्माण, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर खूब पुण्यार्जन करेंगे। अक्टूबर के बाद आपके दैनिक पूजा-पाठ में सुधार होगा। अपनी धर्मपत्नी के साथ घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष यज्ञ अनुष्ठान करेंगे, जिससे आपको अत्यधिक मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगा।

- दुर्गा कवच का प्रत्येक दिन पाठ करें तथा सात मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं शनि मन्त्र का पाठ करें ।
- अपने बजन के बराबर अन्न का दान (तुला दान) करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित कर नित्य उसका दर्शन करें।

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक स्थिति के लिए सामान्य रहेगा। आपके अंदर काम करने का जुनून तो होगा परन्तु कोई शुभ अवसर नहीं मिलने के कारण आपका मनोबल कमजोर हो सकता है। 5 अप्रैल के बाद आप मानसिक रूप से कुछ परेशान हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है। चित्त में अस्थिरता बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे।

साझेदारी में कार्य करने वालों के लिए यह समय अच्छा नहीं है, आपको धोखा मिल सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव यह स्थानान्तरण आपके घर से बहुत दूर भी हो सकता है। 2 जून के बाद सफलता की कुछ उम्मीद दिख रही है। व्यापारिक वर्गों से आपको कुछ लाभ होगा। कुछ नया करने के बारे में विचार करेंगे, जिसमें आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परन्तु 4 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रभाववित हो रहा है। कोर्ट कचहरी व किसी कानूनी प्रक्रिया में फंस सकते हैं। आय में अनियमितता का भाव बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में रुचि से अधिक दबाव की स्थिति बन सकती है।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आर्थिक स्थिति में सुदृढ .ता बनी रहेगी। 3 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय की अपेक्षा व्यय अधिक होगा। धनागम के मार्ग प्रभावित होंगे। बहुत ही सोच विचार कर कोई भी आर्थिक निर्णय लें। लेन देन के मामले में बहुत ही सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

अप्रैल के बाद पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। कुछ अनाावश्यक खर्चे आ सकते हैं, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। धन विनियोजन को प्रबल करने के लिये आपको पराक्रम से काम लेना होगा। इस अवधि में आपका सकारात्मक बने रहना बेहतर होगा। 4 नवम्बर से वित्तीय विषयों के लिए समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ तो उत्तम रहेगा, परन्तु 3 मार्च को गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक जीवन के लिए थोड़ी मुश्किलें खड़ी कर सकता है। 7 अप्रैल को चतुर्थ स्थान में राहु ग्रह की उपस्थिति अचानक घरेलू महौल को खराब कर सकती है। आपकी रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। वाद-विवाद करने से परहेज करें। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। सप्तम स्थान में शनि की स्थिति आपके दाम्पत्य जीवन के लिए कतई अच्छी नहीं है। आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि आप रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें।

सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह साल अच्छा नहीं है। अतः आपको सभी के साथ अच्छा संबंध बना कर रखना चाहिए। छोटी-मोटी बातों को अनदेखा कर देना ही आपके लिए लाभप्रद रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के लिए भी यह समय शुभ नहीं है। 4 नवम्बर के बाद माता पिता के लिए समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। उनके स्वास्थ्य पर आपको ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

संतान

पंचम स्थान में राहु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्षारम्भ में आपको अपनी संतान को लेकर चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा-दीक्षा पर भी पड़ेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। भाग्य थोड़ा कम ही साथ देगा।

2 जून के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए यह समय बढ़िया रहेगा। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। 4 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय बच्चों के रहन सहन पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। परन्तु 3 मार्च के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशनी बनी रहेगी। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसिक चिंता भी बनी रहेगी। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। हालांकि 2 जून से समय किंचित अच्छा हो रहा है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। लेकिन वर्षान्त में समय फिर से प्रभावित हो सकता है।

4 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। अष्टमस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य सुख में कमी आ सकती है। यदि आपने छोटी मोटी बीमारियो को अनदेखा किया तो यह बड़ी चिंताजनक बनकर सामने आ सकती हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए समय

समय पर चिकित्सक की सलाह का लाभ उठाना लाभकारी रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस साल आपको परिश्रम के अनुसार परिणाम नहीं मिलेंगे। आप अपने लक्ष्य के पथ पर अग्रसर रहेंगे तथा सफलता की उम्मीद को ले आगे बढ़ते रहेंगे। 2 जून से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपका रूझान राजनैतिक, तन्त्र, यन्त्र, मन्त्र, विद्या, सिद्धि एवं चमत्कारी रिसर्च से जुड़े विषयों में अधिक होगा।

जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनके लिए यह समय शुभ नहीं है। परन्तु विदेश में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अच्छी उन्नति करेंगे। 4 नवम्बर से समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घ ार से दूर भी हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 3 मार्च के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। मोटी-माटी यात्राएं होती रहेंगी। लम्बी यात्रा का योग इस वर्ष कम ही बन रहा है। अधिकांश यात्रा आपकी अचानक होंगी।

2 जून से सप्तमस्थ गुरु के कारण व्यवसायिक यात्रा होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। 4 नवम्बर के बाद दुर्घटना या चोट चपेट का योग बन रहा है। अतः यात्रा के अंतराल में सावधानी बहुत ही जरूरी है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। आपके अंदर धार्मिक कार्य करने की इच्छा तो होगी परन्तु आलस्य के कारण कर नही पाएंगे। दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होंगे। परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे और अपने कर्मो को ही पूजा समझेंगे। 2 जून से धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। लग्न स्थान में शुभ ग्रह का प्रभाव होने से मानसिक शान्ति बनी रहेगी। अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी सांस्कृतिक पर्वों को हंसी खुशी के साथ मनाएंगे।

- सोमवार के दिन शिवलिंग पर दूध में काले तिल डाल कर चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा आठ मुखी रूद्राक्ष धारण करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं तथा काली वस्तु का दान करें।
- वीरवार के दिन बेसन के लड्डू व केला गरीबों को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। मुख्यतः सारे ग्रहो का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यापार में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। अष्टमस्थ शनि एवं गुरु के कारण गुप्त शत्रु आपके कार्यों में व्यवधान डाल सकते हैं। वर्ष के प्रारम्भ में आपको किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास नहीं करना चाहिए। उच्चाधिकारियों का सहयोग समय पर न मिलने के कारण परेशानियां बनी रहेंगी। आप अधिकारों व शक्तियों का दुरुपयोग करने से बचें। व्यावसायिक तथा सामाजिक स्तर पर उत्थान के लिए प्रयास लगन से करें क्योंकि 6 अप्रैल के बाद आपको सफलता मिल सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध और भी ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। व्यापार में हानि या साझेदारी में धोखा मिल सकता है। उन्नति के मार्ग भी प्रभावित होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके घर से बहुत दूर भी हो सकता है, जिससे आप असंतुष्ट रहेंगे। 3 दिसम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके कार्यों में किंचित लाभ होगा तथा उन्नति के मार्ग भी खुलेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु एवं शनि के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे आ सकते हैं, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। लेन-देन व निवेश के मामले में सावधान रहें तथा अपनी आत्मशक्ति बढ़ाएं क्योंकि 6 अप्रैल के बाद समय अच्छा हो रहा है। एकादश स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि धनागम में निरन्तरता बनाए रखेगी, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनी रहेगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक मामलों के लिए और ज्यादा खराब रहने वाला है। चोरी, दुर्घटना व सट्टा इत्यादि के माध्यम से आपको हानि हो सकती है। रोग-व्याधि, कोर्ट कचहरी इत्यादि में भी आपका धन व्यय होगा। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारी में शादी इत्यादि मांगलिक कार्यों में अधिक व्यय होगा। यदि आप कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं, तो 3 दिसम्बर के बाद समय शुभ हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। घरेलू विषयों को लेकर चिंताएं बनी

रहेंगी। चतुर्थस्थ राहु के कारण माता के स्वास्थ्य में कमी आ सकती है। परिवार में विचारों की भिन्नता तथा व्यर्थ के वाद विवाद सामने आ सकते हैं। किसी के साथ आपके वैचारिक मतभेद हो सकते हैं, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं, परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपको जीवनसाथी का पूर्ण सहयोग मिलेगा। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आएंगे। यदि आप विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

साल का उत्तरार्द्ध आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए अच्छा नहीं है। संतान संबंधित परेशानी बढ़ेगी। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए नुकसानदायक हो सकता है इसलिए जितना हो सके पारिवारिक मतभेदों से दूर रहें। 3 दिसम्बर के बाद सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई व उन्नति में व्यवधान आते रहेंगे। आपको बच्चों के रहन सहन व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा। 6 अप्रैल से 28 जून तक का समय आपकी दूसरी संतान के लिए अच्छा रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध और ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। पंचम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि गर्भवती स्त्रियों के लिए खराब है। उनको अपने खान पान व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा नहीं तो आपका गर्भपात हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से आप ज्यादा प्रभावित रहेंगे। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आप ज्यातर बीमार ही रहेंगे कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेंगी, परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए श्रेष्ठ है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

साल का उत्तरार्द्ध स्वास्थ्य के लिए फिर से प्रतिकूल हो रहा है। आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति की कमी होगी, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती है। तुला दान या महामृत्यंजय मन्त्र का पाठ करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः प्रतिकूल रहेगा। अधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। पढ़ाई में भी अरुचि पैदा होने की संभावना है। प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफल होने की संभावनाएं बहुत कम हैं।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर अहं भाव ना आने दें। प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ नहीं है। वर्षान्त में बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। सामुद्रिक या दर्शनीय स्थलों की यात्राएं अधिक होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप संतुष्ट नहीं रहेंगे।

नौकरी व व्यवसाय से संबंधित देश विदेश की यात्राएं होती रहेंगी। यात्रा व वाहन चलाते समय हमेशा सावधान रहें नहीं तो दुर्घटना इत्यादि का प्रबल योग बन रहा है क्योंकि इस वर्ष मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल स्थान से गोचर कर रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आलस्य व दीर्घसूत्रता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ प्रभावित होगा। आपके आस्था एवं विश्वास में कमी आ सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण गोपनीय विद्या, रहस्यमयी साधना तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथसालय या गरीब बच्चे के पढाई लिखाई पर भी व्यय करेंगे।

- प्रत्येक दिन चिड़ियों एवं चींटियों को दाना डालें।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू गरीबों में वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- महामृत्यंजय का पाठ करना या तुला दान करना आपके स्वास्थ्य के लिए उत्तम रहेगा।

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए सामान्य रहेगा। कार्य-स्थल में अपने काम को लेकर असमंजस की स्थिति बनी रहेगी। क्योंकि इस वर्ष अष्टमस्थ शनि आपको परेशान कर सकते हैं। वैसे मानसिक और शारीरिक रूप से आप काफी ऊर्जावान रहेंगे। नौकरी या व्यवसाय में आप काफी व्यस्त रहेंगे व आपका यह कड़ा परिश्रम ही आपकी सफलता में सहायक होगा। जहाँ तक हो सके अपने कार्यक्षेत्र की जिम्मेदारियों को समय पर पूरा करने की कोशिश करें। क्योंकि 6 मई के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। आप मानसिक रूप से कुछ परेशान हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है। चित्त में अस्थिरता बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों को अनुभव करेंगे।

25 सितम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। सफलता के उम्मीद दिख रही है। व्यापारिक वर्गों से आपको लाभ होगा। कुछ नया करने के बारे में विचार करेंगे जिसमें आपके भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। कोर्ट कचहरी व कानूनी प्रक्रिया से दूर रहना ही आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

धन संपत्ति

इस वर्ष अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर करने के लिए आप कठोर परिश्रम करने वाले हैं। ध्यान रखें वैसे भी सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता है। थोड़ी सूझ-बूझ और अवसर को पहचान कर आप मनचाहा धन कमाने में सफल रहेंगे। जुलाई के बाद आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार देखने को मिलेगा। साथ ही कोई पुराना फँसा हुआ पैसा भी वापस मिलने की उम्मीद है, जिससे आप काफी राहत महसूस करेंगे। शेयर बाजार में सोच समझकर ही निवेश करें। लॉटरी व सट्टेबाजी में धन न लगाएं।

25 सितम्बर के बाद आपकी आय में वृद्धि होगी। बैंक से आसानी से कर्ज प्राप्त हो सकेगा। पत्नी एवं भाईयों से भी लाभ प्राप्त होगा। किसी प्रभावशाली व उच्च पदस्थ व्यक्ति की मदद से आपको आर्थिक लाभ होने की संभावना है। जो जातक व्यवसाय करते हैं, उनके टर्नओवर में बढ़ोत्तरी होगी। व्यावसायिक यात्राएँ धन अधिक खर्च करवाएंगी परंतु आपको आर्थिक लाभ भी होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। परिवार में सुख-शान्ति का माहौल बना रहेगा। धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर रहेंगे। आपके भाईयों का पूर्ण सहयोग बना रहेगा। लेकिन 6 मई के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस अवधी में पारिवारिक समस्याएं बढ़ सकती हैं। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय ज्यादा कष्ट कारक रहेगा। रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। वाद-विवाद करने से परहेज करें। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा।

परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। यदि परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें सफलता मिलेगी। तृतीयस्थ राहु के कारण सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय रहेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। यदि आप संतान की इच्छा रखते है तो यह समय श्रेष्ठ है। प्रथम संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे।

6 मई से जुलाई पर्यन्त समय प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं, तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। परन्तु 6 मई से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ न कुछ शारीरिक परेशानियां उत्पन्न हो सकती हैं।

शारीरिक कष्ट के साथ मानसिक चिंताएं भी बढ़ेंगी। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। हालांकि जुलाई के बाद समय फिर अनुकूल हो रहा है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। अष्टमस्थ शनि के कारण दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। अतः वाहनादि चलाते समय ज्यादा सावधान रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में आपको सफलता मिलेगी। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त

होगा, जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। परन्तु 6 मई से जुलाई तक का समय प्रभावित रहेगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर अहं भाव ना आने दें। यह समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए विशेष शुभ है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह वर्ष शुभ नहीं है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। अधिकांश यात्रा आपकी अचानक होंगी। 6 मई के बाद आप विदेश यात्रा करेंगे ।

इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। परन्तु अष्टमस्थ शनि के कारण दुर्घटना या चोट-चपेट का योग बन रहा है। अतः यात्रा के अंतराल में सावधानी बहुत ही जरूरी है। 25 सितम्बर के बाद शनि भी शुभ हो जाएंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। लग्न स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि का प्रभाव होने से मानसिक शान्ति बनी रहेगी। अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक पर्वों को खुशी के साथ मनाएंगे तथा सभी सत्कर्मों में पत्नी का पूर्ण सहयोग मिलेगी। 6 मई के बाद समय किंचित प्रतिकूल होगा। उस अवधि में आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- सोमवार के दिन शिवलिंग पर दूध में काले तिल डाल कर चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा शनि मन्त्र का पाठ करें।
- वीरवार के दिन बेसन के लड्डू व केला गरीबों को दान करें।
- मंगलवार का व्रत करें तथा प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं नवम भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य क्षेत्र में इस वर्ष आपको एक नई दिशा मिलेगी। जोखिम लेने से न घबराएं और अपने कम्फर्ट जोन से बाहन निकलें। आपकी कार्यक्षमता और रचनात्मक ऊर्जा बहुत अच्छी बनी रहेगी। इसका सदुपयोग करें। आय के नए स्रोत खुलेंगे। अवसर का पूरा फायदा उठाएं। कार्यक्षेत्र में आपके विचारों की सराहना होगी। बड़े अधिकारी आपके काम से प्रसन्न रहेंगे। यदि अपना व्यवसाय आरम्भ करना चाहते हैं तो यह उचित समय है। अवसर और साधन आसानी से प्राप्त होंगे। नए कारोबारियों से आपका संपर्क बनेगा। उनके साथ काम करके आप एक नई ऊँचाईयों को प्राप्त करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध नौकरी वाले लोगों के लिए अनुकूल रहेगा। दशमस्थ गुरु के कारण नौकरी बदलने के ढेरों नए अवसर मिलेंगे। मनचाही नौकरी मिलगी और पदोन्नति भी होगी। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ परेशानियां आएंगी। लेकिन इस मुसीबत से निकलने में आप सफल रहेंगे। कुछ लोग आपकी छवि धूमिल करने की कोशिश कर सकते हैं। इसे नजरअंदाज न करें। बेहतर परिणाम के लिए आपको कठोर परिश्रम करना पड़ेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। भूमि, भवन व वाहन का सुख प्राप्त होगा। संचित धन की वृद्धि होगी। आभूषण एवं रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे तथा आय के मार्ग में आने वाली सारी बाधाएं दूर होंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु आपके दूसरे भाव में प्रवेश करने वाले हैं। उस समय आपको आर्थिक मामलों को लेकर बहुत ज्यादा सावधानी बरतने की जरूरत है। दूसरों की बातों में न आएं और दूसरों के ऊपर पैसे खर्च करने से भी परहेज करें। आपके खिलाफ साजिश रची जा सकती है लेकिन घबराने की आवश्यकता नहीं है। गलत कार्य में धन निवेश न करें नहीं तो धन हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। माता-पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आप संतुष्ट व प्रसन्न रहेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम

भूमिका होगी। आपके भाईयों की उन्नति होगी। तृतीयस्थ राहु के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

22 जून को द्वितीय स्थान का राहु ग्रह का गोचर पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाओं को ठेस पहुंच सकती है तथा परिवार में कुछ विषम परिस्थियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यहीं रहेगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ बच्चों के लिए सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनके दिल में स्नेह, आदर्श व सम्मान का भाव बढ़ेगा। आप लोगों के बीच भावनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। आपकी दूसरी संतान के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

10 जून को गुरु ग्रह का गोचर आपके बच्चों की उन्नति में सहायक होगा। आपके बच्चे अपनी योग्यता के बल पर उन्नति करेंगे तथा उनके बारे में शुभ सामाचार प्राप्त होंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। छोटी-मोटी बीमारियों को छोड़ दिया जाए तो लगभग पूरा वर्ष ही आपकी सेहत को सुधारने वाला रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं अथवा मौसम जनित बीमारियों से आपको परेशानी होती है तो आपकी सेहत शीघ्र ही सुधर जाएगी। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप योग क्रियाओं के द्वारा मन को एकाग्र करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी।

22 जून के बाद द्वितीयस्थ राहु के कारण दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा। खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। 10 जून के बाद समय शुभ हो रहा है। इस अवधि में आपको इच्छित प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है। यदि आप उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो यह समय उत्तम है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को वांछित सफलता मिलेगी। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं उनके लिए यह समय उत्तम है।

यात्रा-तबादला

इस अवधि में आपकी छोटी-बड़ी यात्राएं खूब होंगी। नौकरीपेसा व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है। धार्मिक यात्राएं अधिक होंगी। नवमस्थ शनि के कारण लम्बी यात्राओं का आनन्द लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेश यात्रा में व्यवधान आ सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी। इस अवधि में आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। नवमस्थ शनि के प्रभाव से आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए श्रेष्ठ रहेगा।

- शनिवार या बुधवार के दिन नीली वस्तु का दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- चिड़ियों, चींटियों व मछलियों के लिए दाना डालें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। पूरे वर्ष शनि तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक उन्नति के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में सफलता की मात्रा और बढ़ जाएगी। व्यापार में आपके भाईयों से आर्थिक सहयोग मिलेगा। इस अवधि में आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है तथा इस ब्राण्ड नेम से आपको भविष्य में अत्यधिक लाभ मिलेगा। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे। लेकिन आप सफलता के मार्ग पर अग्रसर बने रहेंगे।

30 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले लोगों का पदोन्नति के साथ अनुकूल स्थान पर तबादला होगा। समय समय पर आपको बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा तथा कार्यस्थल पर सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। सितम्बर के बाद अधिक व्यस्तता के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय के अंतराल में व्यापार के साथ साथ स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना लाभप्रद रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। एकादशस्थ गुरु के कारण धनागम तो होगा परन्तु अधिक खर्च होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। रोग बीमारी इत्यादि में आपका व्यय ज्यादा होगा। द्वितीय स्थान का राहु अनावश्यक खर्च बढ़ा सकता है। अतः अपने खर्चों पर अंकुश लगाएं। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आपका अधिक व्यय होगा। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके प्रतिकूल हो सकता है।

30 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं का सुख प्राप्त होगा। निवेश या आर्थिक मामलों में कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर पूरे वर्ष प्रतिकूल रहेगा।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपकी पारिवारिक जिन्दगी में कुछ उतार-चढ़ाव होते रहेंगे। 30 जुलाई

तक विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। द्वितीयस्थ राहु के कारण अनावश्यक रूप से कुछ झगड़े हो सकते हैं। जुलाई के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। माता पिता के साथ संबंध अच्छे रहेंगे। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय ज्यादा कष्टकारक रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक माहौल के लिए अच्छा रहेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा व सबका सहयोग मिलेगा। सितम्बर के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपकी दूसरी संतान का चौमुखी विकास होगा। विवाह भी हो सकता है। 30 जुलाई से 11 सितम्बर तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद पुनः अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। धार्मिक कार्यों में मन लगेगा। शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करें। 19 सितम्बर के बाद राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है।

वर्षान्त में अत्यधिक आलस्य के कारण आप स्वस्थ्य रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे तथा मानसिक तनाव भी बना रहेगा। नियमित रूप से व्यायाम करते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा कहा जा सकता है। तकनीकी शिक्षा व विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए वर्ष के पूर्वार्द्ध में सफलता के योग हैं। करियर में उन्नति के अवसर मिलेंगे। व्यापार में महत्वपूर्ण निर्णय लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अधिकारी वर्ग से तनाव होने की संभावना है। व्यापार में आप नई टैक्नोलॉजी व मशीनों का इस्तेमाल कर सकते हैं। सितम्बर के बाद आपकी परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। उत्तरार्द्ध में नौकरी में स्थानान्तरण के योग हैं यह स्थानान्तरण आपके हित में होगा। इस वर्ष आपकी विदेश यात्रा प्रभावित होगी।

30 जुलाई के बाद व्यवसाय या शैक्षणिक कार्यों हेतु आपकी यात्रा समीपवर्ती क्षेत्रों में होगी। साथ ही परिवार सहित प्रसिद्ध क्षेत्रों की यात्राएं होंगी एवं सगे संबंधियों के घर में विवाह इत्यादि शुभ कार्यों में जाने का अवसर मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपका मन पूरी तरह से धार्मिक कार्यों में संलग्न होगा एवं इसमें आपको अपने परिवार का भी पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा विभिन्न ज्योतिर्लिंग एवं शक्ति पीठों के दर्शन का सुअवसर प्राप्त होगा।

सितम्बर के बाद आपके धार्मिक कार्य किंचित प्रभावित होंगे। लग्न स्थान का राहु आपके दैनिक पूजा पाठ में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। मानसिक अस्थिरता के कारण भी आप कोई विशेष पूजा पाठ नहीं कर पाएंगे। गणेश जी का मन्त्र पाठ आपके लिए ज्यादा लाभप्रद रहेगा।

- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें।
- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- प्रतिदन सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्यक्षेत्र में सफलता के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहने वाला है। सहयोगी तथा उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। यदि आप नौकरी करते हैं तो पदोन्नति अथवा कार्यक्षेत्र में लाभ की प्राप्ति होगी। व्यापार में नीति निपुणता से काम लेना आपके लिए लाभकारी रहेगा। 16 फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय आपको सफलता प्राप्ति के लिए अधिक मेहनत करनी होगी।

गुरु एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से व्यापार में व्यवधान व परिवर्तन को दिखा रहा है। व्यवसाय में आपका निवेश अधिक होगा परंतु लाभ कम मिलेगा। हालांकि चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि पिता या किसी बड़े सम्मानित व्यक्ति की सहायता से आपको लाभ मिलेगा जो आने वाले समय के लिए बहुत ही अनुकूल है। साझेदारी में व्यापार शुरु करना आपके लिए शुभ नहीं है।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे, परन्तु 16 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। द्वादशस्थ गुरु एवं लग्नस्थ राहु के कारण शारीरिक व्याधि दूर करने में अधिक व्यय होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है तथा अपने खर्चे पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप कुछ ऐसे कामों में उलझे रह सकते हैं जो कम फायदा देने वाले होंगे। कुछ बेकार के कामों में आप पैसे बर्बाद कर सकते हैं। कुछ ऐसे खर्चे भी सामने आ सकते हैं जिनकी आपने उम्मीद नहीं की होगी। केस, मुकद्दमा व कानूनी प्रक्रिया में भी आपके कुछ अनावश्यक खर्चे हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक स्थिति के लिए अच्छी नहीं है। परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आपका वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। इस वर्ष परिवार में एक दूसरे प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग

हो सकती है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं तथा अपने बौद्धिक शक्ति के द्वारा पारिवारिक विषमता को अनुकूल बनाने की कोशिश करें।

सप्तम स्थान पर राहु की दृष्टि पत्नी के स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं है। अतः उनको स्वास्थ्य संबंधी किसी प्रकार की लापवाही नहीं करनी चाहिए। इस वर्ष आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा सामान्य रहेगा।

संतान

प्रारम्भ के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष संतान के लिए कष्टप्रद रहने वाला है। पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रथम संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है तथा आपके प्रथम बच्चे की शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ राहु के प्रभाव से आप अचानक बीमार हो सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी-मोटी बीमारियां होती रहेंगी। अतः आपको अपनी सेहत का पूर्ण ध्यान रखना होगा। खान-पान तथा रहन सहन पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग तथा इंफेक्शन के कारण होगा।

आर्थिक मुद्दे या किसी और मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इस सब का नकारात्मक प्रभाव आपकी सेहत पर पड़ेगा, जिससे आपका स्वास्थ्य और प्रभावित हो सकता है। द्वादशस्थ गुरु के कारण पेट, मोटापा व लीवर संबंधित बीमारियां हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

16 फरवारी को गुरु ग्रह का गोचर विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। पढ़ाई लिखाई में कमी या प्रतियोगिता में व्यवधान आ सकते हैं। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। फलस्वरूप आप अपने कामों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। प्रतियोगिता में प्रतिद्वंदियों द्वारा रुकावट डाली जा सकती है।

जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह साल श्रेष्ठ रहने वाला है। विदेशी शिक्षा प्राप्त करने वालों को वांछित सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष आपकी सारी यात्राओं में व्यवधान आने की संभावना है। पूर्व निर्धारित कोई यात्रा नहीं कर पाएंगे। अचानक व्यवसाय से संबंधित यात्राएं हो सकती हैं। इस यात्रा के अंतराल में आपको शरीरिक कष्ट का भी सामना करना पड़ सकता है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर तबादला होगा। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपके विदेश यात्रा होगी तथा इस यात्रा से आपको विशेष लाभ होने वाला है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है। लग्नस्थ राहु के कारण आपका मन धार्मिक कार्यों में नहीं लगेगा तथा मानसिक अस्थिरता के कारण आप पूजा-पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। तन्त्र मन्त्र व साधन के प्रति आपकी रुचि ज्यादा बढ़ेगी। धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा भी इस वर्ष प्रभावित रहने वाली है।

- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- बुधवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- प्रतिदिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- वीरवार के दिन केला व बेसन के लड्डू किसी धार्मिक स्थान पर दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2045

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरु कुम्भ राशि एंव लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष कार्य व्यवसाय में सफलता के लिए थोड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है। आप नये उद्यम शुरु करेंगे। आपको मित्रों और परिजनों से खूब मदद मिलेगी। दशमस्थ शनि के कारण आपको व्यापार में अच्छा खासा लाभ होने की संभावना बन रही है। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। काम धंधे में बढ़ोत्तरी होने से आपकी आय में वृद्धि होगी। आप कोई अच्छी योजना बना कर व्यापार में उन्नति करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पूर्वार्द्ध की अपेक्षा अनुकूल रहने वाला है। नौकरी करने वालों के लिए उच्च पद प्राप्ति का योग बना रहा है तथा आर्थिक सहायता इत्यादि भी मिलेगी। साझेदारी में किसी के साथ व्यवसाय करने की प्रबल संभावना बन रही है। द्वादशस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में अचानक कुछ अनावश्यक परेशानियां आ सकती हैं, परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उस का भी निदान निकाल लेंगे तथा अपने कार्यों में अग्रसर बने रहेंगे।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक स्थिति के लिए अच्छा नहीं है। आपके अनावश्यक खर्चे बढेंगे। अतः खर्चे पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी जिंदगी बहुत अच्छी गुजरने वाली है। आपकी आमदनी में बढ़ोत्तरी के प्रबल योग बने हुए हैं साथ ही आप धन की बचत भी कर पाएंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। आपको शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आप खूब खर्च करेंगे। व्यवसाय के माध्यम से आपका धनार्जन होगा। आपके व्यावसायिक जीवन में स्थिरता व सुदृढ़ता आएगी। आपका यह सुदृढ़ीकरण आपको अपने व्यापार में नये निवेश के लिए प्रोत्साहित करेगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। परिवार में किसी सदस्य को लेकर मानसिक चिंता बढ़ सकती है। पिता के लिए उत्तम एवं व्यावसायिक लाभ भी होगा, परंतु माता के स्वास्थ्य को लेकर आपकी चिंता बढ़ सकती है।

वर्ष के दूसरे भाग में किसी निकट संबंधी के बारे में कुछ अच्छी खबर मिल सकती है। परिवार के विरोधी दूर होंगे एवं परिवार के लोगों का व्यवहार आपके प्रति बहुत अच्छा हो

जायेगा। यदि आप अविवाहित हैं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में विवाह होने की संभावनाएं प्रबल होंगी। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्यतः अच्छा रहेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आने की संभावना बन रही है तथा उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी भी आ सकती है, परन्तु 15 जून के बाद समय अनुकूल हो रहा है, उस समय आपकी सन्तान हर प्रकार की प्रतियोगिता परीक्षा में उम्दा प्रदर्शन करेगी। धन प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होगा। आपकी सन्तान को पैतृक सम्पत्ति प्राप्ति का भी पूर्ण योग बना हुआ है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी सन्तान सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर भाग लेगी। उनके पराक्रम, प्रभाव तथा आत्मविश्वास में भी वृद्धि की सम्भावना है। इसके अतिरिक्त वे कठिन परिश्रम करेंगे तथा व्यापार में सफलता प्राप्त करके धनार्जन करेंगे।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान का राहु वर्ष के प्रारम्भ में आपका स्वास्थ्य कमजोर कर सकता है। शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे कम होती प्रतीत होगी। आपको पेट की तकलीफ परेशान कर सकती है। खान-पान पर संयम रखें, जिससे आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा एवं विवाहित व्यक्तियों को अपने जीवनसाथी से काफी सेवा भाव मिलने की संभावना रहेगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके स्वास्थ्य, आरोग्यता, व्यक्तिगत प्रभाव, आकर्षण तथा कार्य क्षमताओं में विकास होगा तथा आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा। लग्नस्थ गुरु के कारण आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए अधिक अनुकूल नहीं है। सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा फिर भी आपको वांछित सफलता नहीं मिलेगी। वर्ष का उत्तरार्द्ध करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठ रहने वाला है।

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में आप आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ जाएगी। किसी विशेष पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के लिए समय अनुकूल चल रहा है। घर से दूर जाकर पढ़ाई करने का योग बन रहा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ गुरु के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। अपने कार्यों के विस्तार व उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु विदेश जा सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए परिवर्तन का प्रबल योग बन रहा है, यह स्थानांतरण आपके लिए प्रतिकूल सिद्ध होगा। आप अपने व्यापार,

साझेदार एवं पत्नी से दूर ही रहेंगे।

यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है, क्योकि द्व ादश स्थान का राहु दुर्घटना व चोट लगने की पूर्ण संभावना बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान का राहु सभी धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है तथा आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित हो सकता है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी धार्मिक कार्यों में रुचि बनी रहेगी। पत्नी का समय धर्म संबंधी कार्यों में अधिक व्यतीत होगा, जैसे दान, व्रत, जप, पूजन व तीर्थाटन इत्यादि। सभी धार्मिक कार्यों में आपको परिवार का पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा विभिन्न ज्योतिर्लिंग एवं शक्ति पीठों के दर्शन का सुअवसर प्राप्त होगा। दुर्गाबीसा यंत्र धारण करने से द्वादशस्थ राहु के गोचर से उत्पन्न होने वाली स्वास्थ्य व कार्य संबंधी परेशानियों के निदान हेतु सहायता मिलेगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं बाल, दाढ़ी न कटवाएं।
- प्रतिदिन बेसन के लड्डू दान करें तथा विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें।
- अपने पूजा घर में लड्डू गोपाल की मूर्ति स्थापित करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(25/07/2016 - 26/07/2034)

राहु की महादशा 25/07/2016 को आरम्भ और 26/07/2034 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु पंचम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि ग्यारहवें भाव पर है। इसके पहले आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको इस दशा के दौरान सुख, अचल सम्पत्ति में वृद्धि, सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में सट्टे तथा निवेश में लाभ होगा, तकनीकी शिक्षा की प्राप्ति होगी और जीविकोपार्जन में उन्नति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपको स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपका शक्ति मिलेगी। मौसम में परिवर्तन के कारण पाचन समस्या, आँत सम्बन्धी समस्या, आल्सर और घाव, चर्मरोग और उदर-रोग (औरतों को) आदि बीमारियाँ हो सकती है। आपको बच्चे के जन्म के समय सावधान रहना चाहिए। कुछ सावधानी बरतकर इनमें से कुछ बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। सट्टे तथा निवेश से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। ग्यारहवें भाव पर राहु की दृष्टि के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा और आपके मित्र होंगे जो आपके लिए लाभदायक होंगे। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, दवा, लेख, कम्प्यूटर राजनीति, खेल, प्रबन्धन, पदाधिकारी कापद आदि का चयन कर सकते हैं। लोहा-इस्पात, चमड़े के सामान, दवा, एण्टीवायोटिक्स, रसायन आदि का व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों का कुछ परिवर्तन, आय में अचानक वृद्धि, कार्य-स्थान में अनपेक्षित प्रगति और स्थिति कठिन होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की भी अनपेक्षित प्रगति, अचानक लाभ और हानि होगी। आप अपने काय्र अथवा व्यावार में परिवर्तन कर सकते हैं। कोई भी परिवर्तन लाभदायक होगा।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल की अन्तर्दशा में आपको लाभ व सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद के लेन-देन के सभी मामलों के लिए यह समय लाभदायक है। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और चन्द्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी। यात्रा में सावधानी बरतनी चाहिए।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। इन्जीनियरिंग, प्रबन्धन, कम्प्यूटर विज्ञान, विधि, दवा, खेल आदि से संबंधित विषय आपके लिए अच्छा होगा। आप दृढ़प्रतिज्ञ हैं और आपको यश तथा ख्याति मिलेगी। परमविज्ञान में भी आपकी रुचि होगी।

परिवार :

आपके बच्चों को सफलता तथा समृद्धि मिलेगी और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी को लाभ और अर्थ-लाभ का अवसर मिलेगा और उनकी इच्छा की पूर्ति होगी। आपका आपके जीवन साथी के साथ संबंध मधुर रहेगा। आपकी माता को लाभ और समृद्धि मिलेगी जबकि आपके पिता को समृद्धि मिलेगी तथा उनकी यात्रा और तीर्थाटन होगा। आपके छोटे भाई-बहनों की यात्रा होगी, उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और यातायात में लाभ होगा और बड़े भाई-बहनों को साझेदारों से लाभ, यात्रा और वाणिज्य-व्यापार में लाभ मिलेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सम्पत्ति तथा तकनीकी शिक्षा मिलेगी। गुरु की अन्तर्दशा आपके लिए भाग्यशाली होगा यद्यपि विरोधियों के कारण कुछ मामूली समस्या हो सकती है। शनि की महादशा कष्टकर सिद्ध होगी किन्तु कुछ भौतिक लाभ और यात्रा हो सकती है। बुध की अन्तर्दशा छोटे भाई-बहनों के लिए सहायक होगी जिसमें उनकी यात्रा और व्यय होगा। केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको लाभ तथा अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा में पारिवारिक सुख और सम्पत्ति में वृद्धि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, सम्पत्ति, सुख ओर सफलता मिलेगी जबकि मंगल के फलस्वरूप सुख, बच्चे का जन्म तथा जीवन-वृत्ति में उन्नति होगी।

अंर्तदशा :- राहु - बुध
(07/07/2024 - 24/01/2027)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 25/07/2016 को प्रारंभ होकर 26/07/2034 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 07/07/2024 को प्रारंभ होकर 24/01/2027 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। तृतीय भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के नवम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके घर पर शुभ उत्सव या समारोह हो सकता है। दूसरों की भलाई करेंगे, लोग आपका भला करेंगे। बुद्धि तीक्ष्ण बनेगी, अध्ययन में रुचि होगी। जो काम भी हाथ में लेंगे, उसे पूरा करके ही दम लेंगे। व्यवहार नीतिपूर्ण होगा, व्यापारियों से मित्रता होगी। व्यापार और शेयरों में धन कमा सकते हैं। विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - केतु
(24/01/2027 - 12/02/2028)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 25/07/2016 को प्रारंभ होकर 26/07/2034 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 24/01/2027 को प्रारंभ होकर 12/02/2028 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। एकादश भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

राहु और केतु छाया ग्रह हैं। इनकी स्वयं की कोई राशि नहीं होती। सामान्यतः इन्हें अशुभ समझा जाता है, परंतु वास्तव में ये शुभ या अशुभ कुंडली में अपनी स्थिति के अनुसार होते हैं।

इस अवधि में आप बुद्धिमान और प्रसन्नचित्त होंगे। यात्राएं खूब करेंगे। सट्टेबाजी, शेयर आदि में धन कमा सकते हैं, पर धन को संग्रह करके रखना ज्यादा पसंद करेंगे। दान-धर्म में रुचि होगी और इस पर धनव्यय भी करेंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72,000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - शुक्र
(12/02/2028 - 12/02/2031)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 25/07/2016 को प्रारंभ होकर 26/07/2034 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 12/02/2028 को प्रारंभ होकर 12/02/2031 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप रोमांटिक हो सकते हैं। राजनीति में दिलचस्पी हो सकती है। लोकप्रियता बढ़ेगी, पर्याप्त मित्र होंगे। योग्यता के बल पर धन कमाएंगे। सट्टेबाजी में भी लाभ हो सकता है। सरकार से पुरस्कार मिल सकता है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 60,000 (साठ हजार) जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - सूर्य
(12/02/2031 - 06/01/2032)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 25/07/2016 को प्रारंभ होकर 26/07/2034 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 12/02/2031 को प्रारंभ होकर 06/01/2032 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप चिंतित और अप्रसन्न रह सकते हैं; व्यर्थ इधर-उधर भटक सकते हैं। दर्शनशास्त्र और तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। राजनीति में सफलता मिलना कठिन होगा। जीवन से संबंधित पहेलियों को सुलझाने में और दार्शनिक चिंतन में समय बिताएंगे। विरासत में जायदाद मिल सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- दूध और शहद का सेवन करें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
- आटा, गुड़ और तांबे के सिक्के दान करें।
- बहते पानी (नदी आदि) में तांबे के सिक्के डालें।

महादशा :- गुरु
(26/07/2034 - 26/07/2050)

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु की महादशा 26/07/2034 को आरम्भ और 26/07/2050 को समाप्त होगी। इसकी अवधि सोलह वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मानसिक अभिरुचि, बुद्धि, साहस, दृढ़ता, छोटे भाई-बहन, छोटी यात्रा, वाहन, बॉण्ड, गले, कन्धे, हँसली तथा स्नायु-तंत्र का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभग्रह है। आपकी जन्मकुण्डली में तृतीय भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि सातवें, नवें और ग्यारहवें भाव पर है और यह उक्त भावों के कार्यों को प्रभावित कर रहा है। अतः सोलह वर्षों की यह दशा आपके लिए शान्तिपूर्ण, समृद्धि दायक तथा स्वास्थ्यप्रद होगी।

स्वास्थ्य :

साहस, पराक्रम तथा शक्ति के तृतीय भाव में स्थित महादशा स्वामी गुरु के कारण आपको शक्ति मिलेगी और आप हर तरह की कठिन परीक्षा का सामना साहसपूर्वक करेंगे। आपको कोई गम्भीर बीमारी नहीं होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

धन-सम्पत्ति :

तृतीय भाव में स्थित गुरु की दृष्टि ग्यारहवें भाव (नवें और सातवें भाव के अतिरिक्त) पर है। ग्यारहवाँ भाव लाभ का भाव है इसलिए आपको धन-सम्पत्ति में वृद्धि के अवसर मिलेंगे। इस दशा के दौरान आप अपनी आय के स्रोतों और चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि करने में सक्षम होंगे।

व्यवसाय :

तृतीय भाव में स्थित ज्ञान और शिक्षा के कारक गुरु की (सातवें भाव के अतिरिक्त) ग्यारहवें तथा नवें भावों पर दृष्टि है। फलतः आपकी प्रवृत्ति साहित्यिक क्षेत्र की ओर होगी। आप लेखक या उपन्यासकार और एक साहित्यिक व्यक्ति हो सकते हैं। आप हर क्षेत्र में प्रगति करेंगे और भाई-बहनों तथा अन्य सहयोगियों, संबंधियों के सहयोग के फलस्वरूप आपको पर्याप्त लाभ मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

तृतीय भाव में स्थित गुरु की (नवें तथा ग्यारहवें भावों के अतिरिक्त) सातवें भाव पर दृष्टि है। सातवां भाव जीवनसाथी का भाव है। इसलिए आपके जीवनसाथी बहुत सहयोगी होंगे। इस दशा के दौरान आपका पारिवारिक जीवन सद्भावपूर्ण तथा अनुकूल होगा। आपके बच्चे तथा छोटे भाई-बहन आपके आज्ञाकारी होंगे।

अंर्तदशा :- गुरु - गुरु
(26/07/2034 - 12/09/2036)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 26/07/2034 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 26/07/2034 को प्रारंभ होकर 12/09/2036 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपकी इच्छाएं पूर्ण होंगी। आप बुद्धिमान हैं। कला और साहित्य में रुचि ले सकते हैं। शिक्षा पूर्ण हो सकती है। घरेलू सुख मिलेगा। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। व्यापार में साझेदारी और जनसंपर्क से लाभ होगा। नेता सफल होंगे। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी; धनार्जन उत्तम होगा। बहुत से प्रभावशाली मित्र होंगे। तरक्की के बहुत अवसर मिलेंगे।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता को साझेदारों से लाभ होगा, यात्राएं होंगी, जीवनस्तर ऊंचा होगा। माता की यात्राएं हो सकती हैं; शुभ कार्यों पर खर्चे बढ़ेंगे। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, घरेलू सुख, निवेश से लाभ, घर पर शुभ समारोह, शिशु के जन्म का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सफल रहेंगे, धनी बनेंगे, प्रभावशाली मित्र होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रशंसित होंगे; कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी। परामर्शदाताओं को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचनतंत्र का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- गुरु - शनि
(12/09/2036 - 26/03/2039)

आपकी बृहस्पति की महादशा 26/07/2034 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 12/09/2036 को प्रारंभ होकर 26/03/2039 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपके कार्यों में बाधाएं आएंगी, मगर आप उन्हें पार करने में कामयाब होंगे। धैर्य का प्रयोग श्रेयस्कर रहेगा। विवेक और दृढ़निश्चय से युक्त रहेंगे। विवाह हो सकता है। व्यपार में लाभ, विदेश यात्रा, प्रोन्नति और प्रसिद्धि की संभावना है। छोटे भाई-बहनों से सुख मिलेगा। उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे, उनकी यात्राएं होंगी, व्यापार में लाभ होगा,

जीवनस्तर सुधरेगा। आपके पिता को संतान से सुख मिलेगा; निवेश से लाभ होगा। माता के सम्मान में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहनों के लिए अचानक धनलाभ या अचल संपत्ति की प्राप्ति, कर्मचारियों से सहयोग का संकेत है।

आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो प्रसिद्ध होंगे, आय अच्छी होगी, यात्राएं होंगी।

अगर आप परामर्शदाता हैं तो अचल संपत्ति क्रय करेंगे। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आलस्य से दूर रहें। मामूली बीमारियों का तुरंत इलाज करवाएं।

अरिष्ट से बचाव के लिए भोजन से पूर्व गाय को रोटी दें।

अंर्तदशा :- गुरु - बुध
(26/03/2039 - 01/07/2041)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 26/07/2034 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 26/03/2039 को प्रारंभ होकर 01/07/2041 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाज़िरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आप लेखन, पठन, अध्यापन आदि में रुचि लेंगे। सब कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण होंगे। महत्वपूर्ण फैसले करेंगे। व्यापार में प्रवीण होंगे। कला में रुचि होगी। संचार माध्यम या कंप्यूटर से जुड़ सकते हैं। अध्यात्म में रुचि होगी। दूरस्थ स्थान के लोगों से संपर्क हो सकता है।

आपके जीवनसाथी की लंबी यात्रा हो सकती है, धनी बनेंगे। आपके पिता को व्यापार या निवेश से लाभ हो सकता है। माता के शुभ कार्यों पर खर्चे बढ़ेंगे; अध्यात्म, ध्यान आदि में रुचि लेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए ज्ञान-विज्ञान में रुचि, धनलाभ, निवेश से लाभ और शिशु जन्म का संकेत है।

आपकी संतान के नये मित्र बनेंगे, सम्मान मिलेगा, परीक्षा में सफल होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो तरक्की करेंगे, धनलाभ होगा, नये मित्र बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में सफलता मिलेगी। परामर्शदाता सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे, धनी बनेंगे। व्यापारी भाग्यशाली और धनी होंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। स्नायविक तनाव से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

ऊँ बुं बुधाय नमः

अंर्तदशा :- गुरु - केतु
(01/07/2041 - 07/06/2042)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 26/07/2034 प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 01/07/2041 को प्रारंभ होकर 07/06/2042 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और शल्य चिकित्सा का कारक है।

इस अवधि में आपके सम्मान में वृद्धि होगी, प्रसिद्ध बनेंगे। सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे, धनी बनेंगे। बहुत लोग अप्रत्याशित सहायता करेंगे। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनेगी। अपारंपरिक माध्यम से धनागम हो सकता है। बड़े भाई-बहनों से संबंध मधुर होंगे। संतान से सुख मिलेगा। अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को निवेश से लाभ हो सकता है। आपके पिता के धन और सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। माता को साझेदार के माध्यम से धनार्जन होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए लंबी यात्रा, सुनियोजित कार्य, उत्तम स्वास्थ्य और अध्यात्म में रुचि का संकेत है।

आपकी संतान को सामूहिक गतिविधियों में लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो साझेदारी से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बायें कान, पैर और उदर की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए गणेशजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- गुरु - शुक्र
(07/06/2042 - 05/02/2045)

आपके लिए बृहस्पति महादशा 26/07/2034 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 07/06/2042 को प्रारंभ होकर 05/02/2045 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आपको पारिवारिक सुख मिलेगा; सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी। निवेश और सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। सरकारी नौकरी या उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। प्रगति की ओर उन्मुख रहेंगे। प्रसन्नचित्त होंगे। मित्र सहायता करेंगे। प्रसिद्धि और धन की प्राप्ति होगी। शिशु का जन्म हो सकता है। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। शिक्षा उत्तम होगी। बड़े भाई-बहनों और चाचा से मधुर संबंध रहेंगे। मानसिक शांति और घरेलू सुख रहेंगे। धनागम होगा; समृद्ध बनेंगे।

आपके जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी। आपके पिता धनी बनेंगे; लंबी यात्रा हो सकती है। माता को विभिन्न माध्यमों से धन मिलेगा। आपके भाई-बहनों के लिए आकांक्षाओं की पूर्ति, विवाह, साझेदारी में सफलता और व्यापार में लाभ का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, प्रभाव बढ़ेगा, प्रसिद्ध होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो परिवर्तन हो सकता है; स्पर्धियों की संख्या में कमी आएगी। परामर्शदाताओं को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है, समृद्धि बढ़ेगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे, उत्तम कर्मचारी मिलेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचन तंत्र के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए भोजन करने से पहले गाय को रोटी दें।

अंर्तदशा :- गुरु - सूर्य
(05/02/2045 - 24/11/2045)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 26/07/2034 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 05/02/2045 को प्रारंभ होकर 24/11/2045 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आपका घर सुखी रहेगा, फिर भी आप थोड़ा सावधान रहें और घर में ज्यादा कठोर व्यवहार न करें, अन्यथा संबंधों में कटुता आ सकती है। मेहमानों से घर में हंसी-खुशी का वातावरण रहेगा। मित्रों की संख्या पर्याप्त होगी। भूमि क्रय कर सकते हैं। उत्तम आवास और वाहन सुख रहेगा। शिक्षा उत्तम होगी। प्रसिद्धि, प्रोन्नति और कार्यों में सफलता का संकेत है। पिता और उच्चपदस्थ व्यक्तियों से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकता है। माता के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, सफल रहेंगी, जीवन में प्रगति होगी। आपके भाई-बहनों के लिए धनार्जन, कार्यों की समाप्ति, प्रसन्नता, उत्तम स्वास्थ्य और शत्रुओं के नाश का संकेत है।

आपकी संतान को पढ़ाई में अधिक परिश्रम करना चाहिए। अगर वे कार्यरत हैं तो खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन होगा, उच्चपद मिलेगा, सरकार से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारी खूब धन कमाएंगे और सफलता प्राप्त करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अधिक उत्तेजना और अत्यधिक परिश्रम से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- गुरु - चन्द्र
(24/11/2045 - 26/03/2047)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 26/07/2034 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 24/11/2045 को आरंभ होकर 26/03/2047 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसिद्ध होंगे। शिक्षा में सफलता मिलेगी। धन और सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। माता से संबंध उत्तम रहेंगे। कार्य की प्रशंसा होगी। सुख-साधन और वाहन उपलब्ध रहेंगे। प्रसन्नचित्त रहेंगे। परिवार में वातावरण हंसी-खुशी का रहेगा।

आपके जीवनसाथी को धन का लाभ होगा; सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके पिता का धनार्जन उत्तम होगा, पारिवारिक जीवन उत्तम होगा, स्वादिष्ट भोजन उपलब्ध होगा। माता को साझेदार से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए विरासत से अचानक लाभ, अध्यात्म में रुचि, उत्तम स्वास्थ्य, अनावश्यक खर्चो और प्रगति में बाधा का संकेत है।

आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो मातहतों से संबंध उत्तम रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाता सफल होंगे। व्यापारियों को वर्तमान साधनों से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्र मंत्र का जाप करें।

ऊँ सों सोमाय नमः

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2026

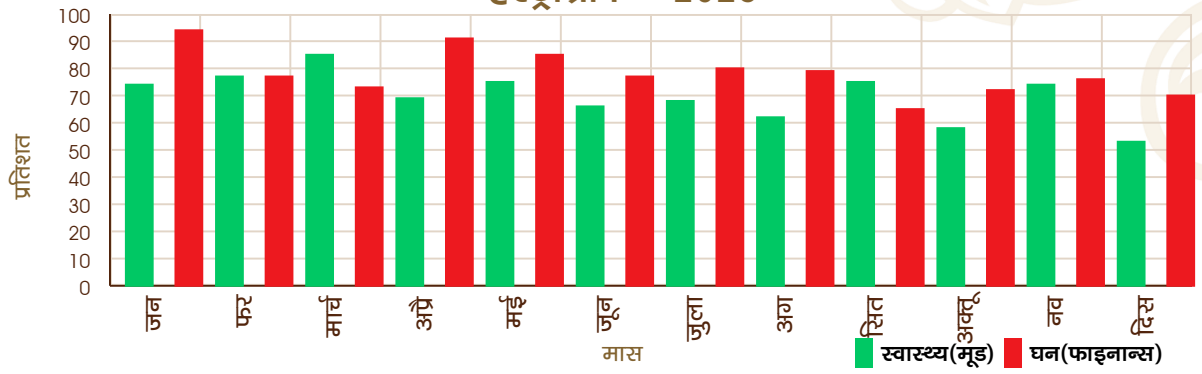

एस्ट्रोग्राफ - 2027

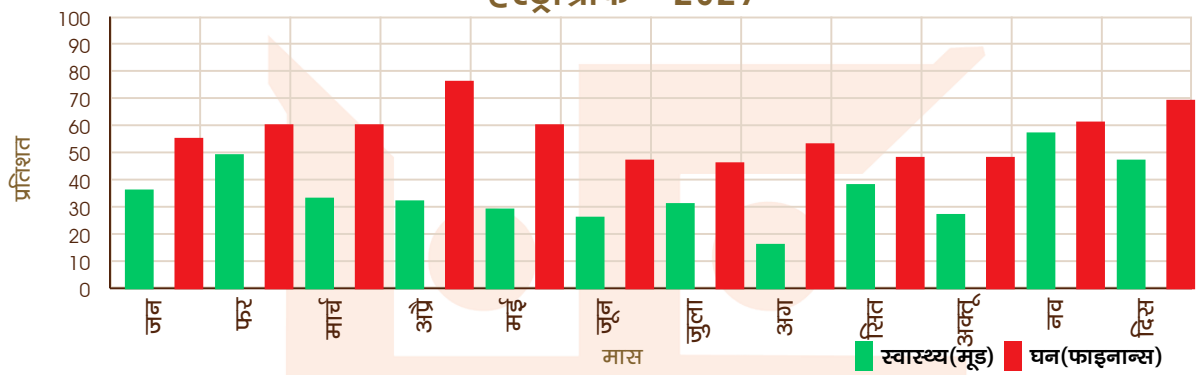

एस्ट्रोग्राफ - 2028

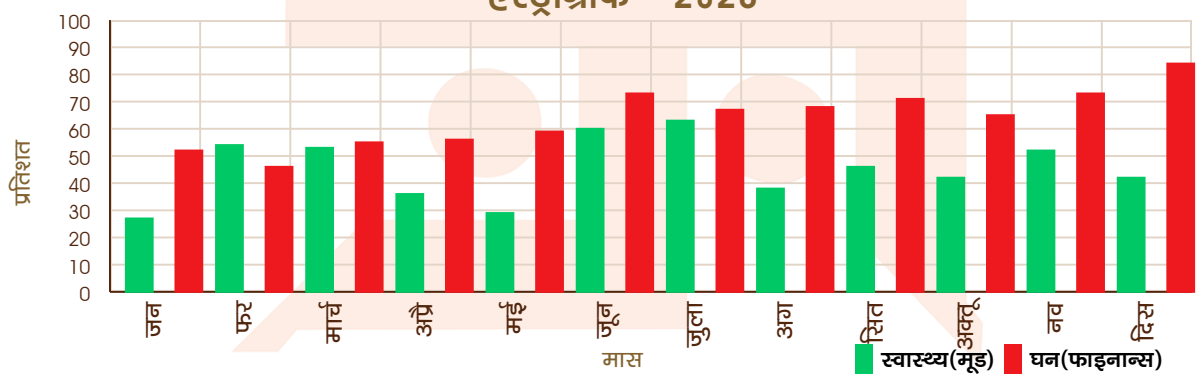

एस्ट्रोग्राफ - 2029

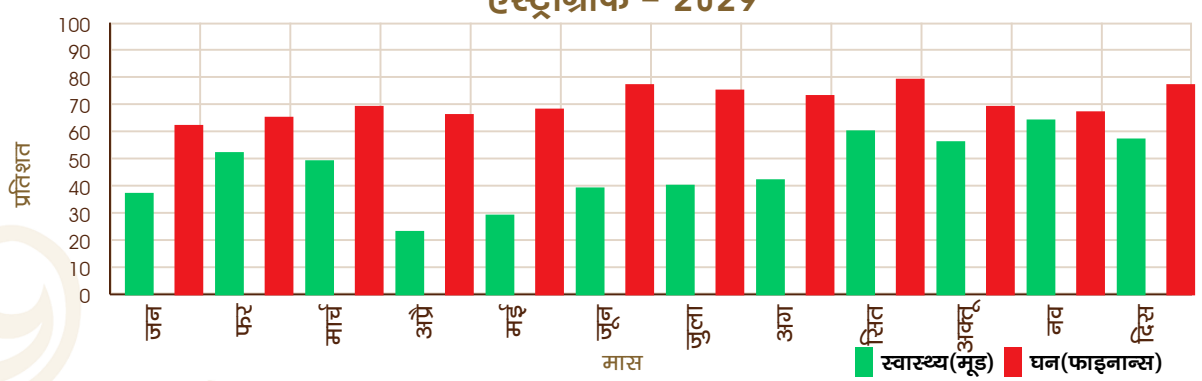

एस्ट्रोग्राफ - 2030

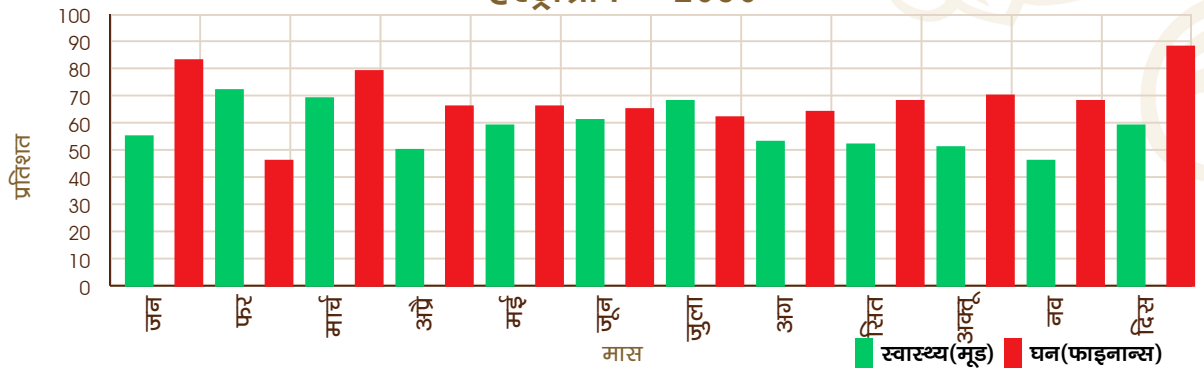

एस्ट्रोग्राफ - 2031

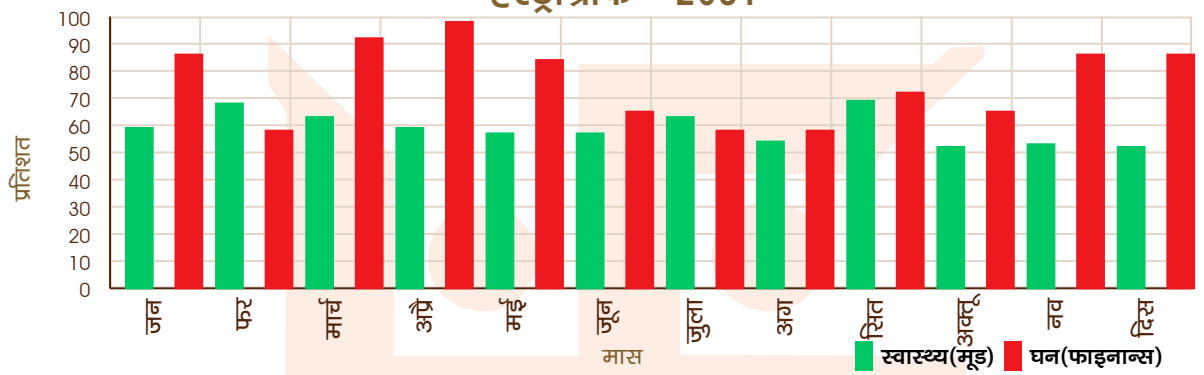

एस्ट्रोग्राफ - 2032

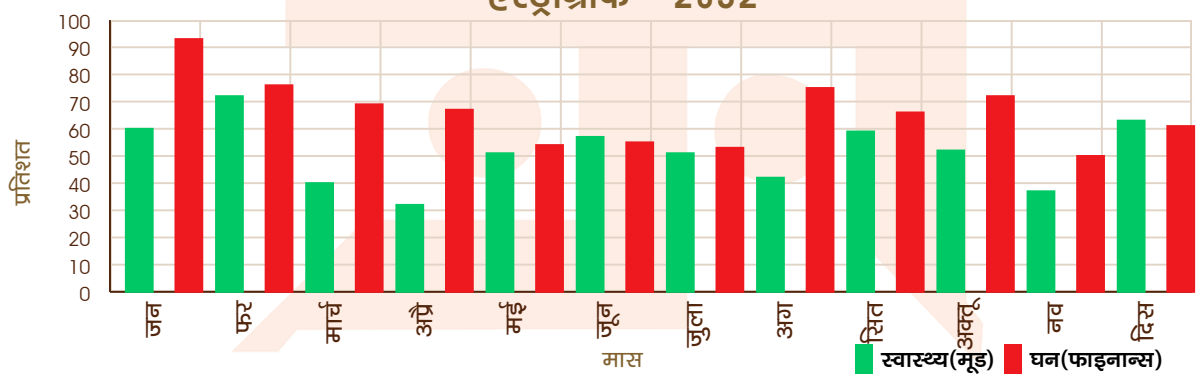

एस्ट्रोग्राफ - 2033

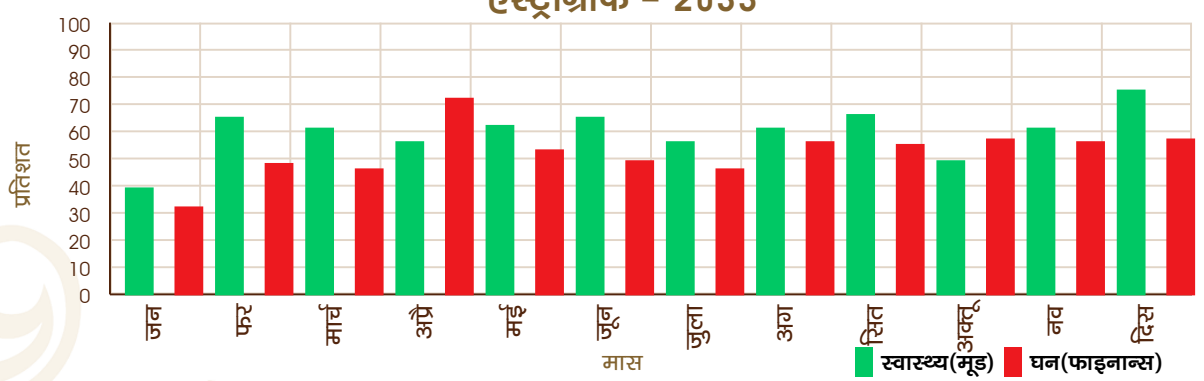

एस्ट्रोग्राफ - 2034

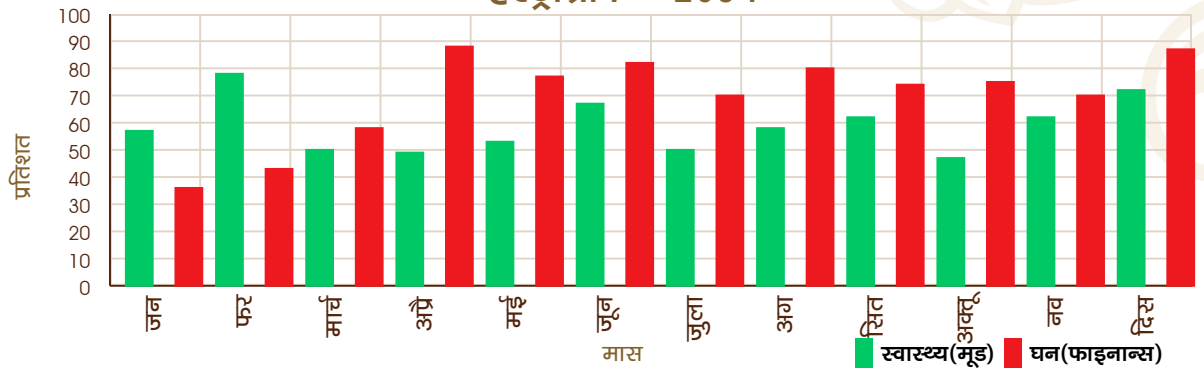

एस्ट्रोग्राफ - 2035

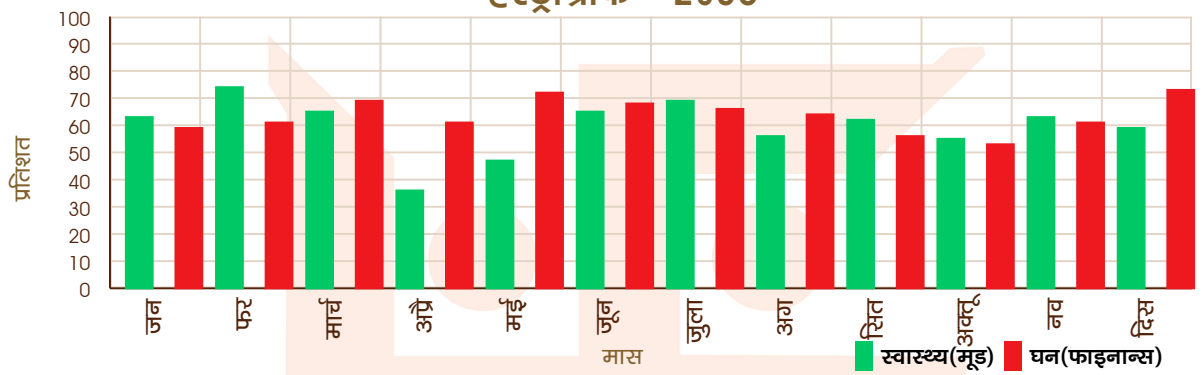

एस्ट्रोग्राफ - 2036

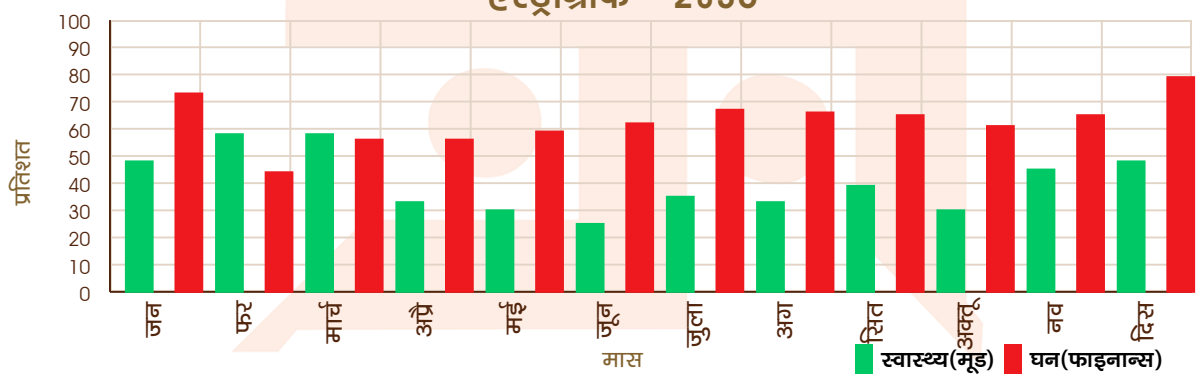

एस्ट्रोग्राफ - 2037

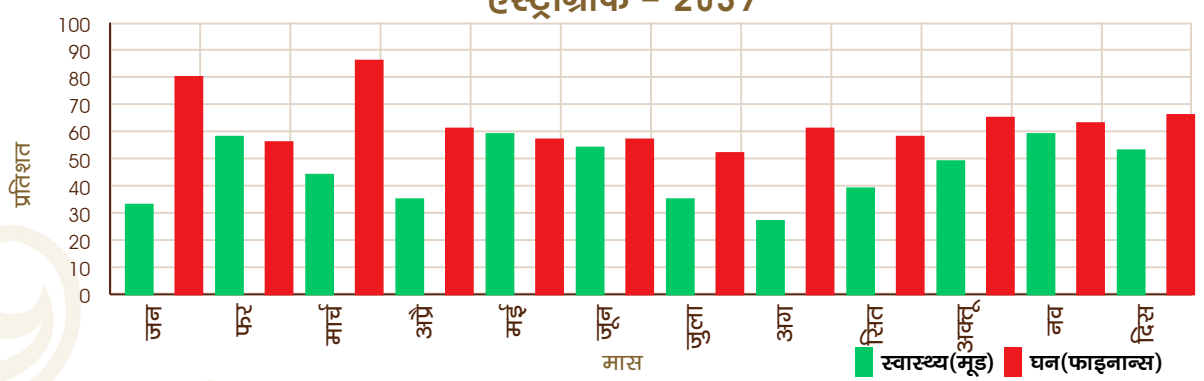

एस्ट्रोग्राफ - 2038

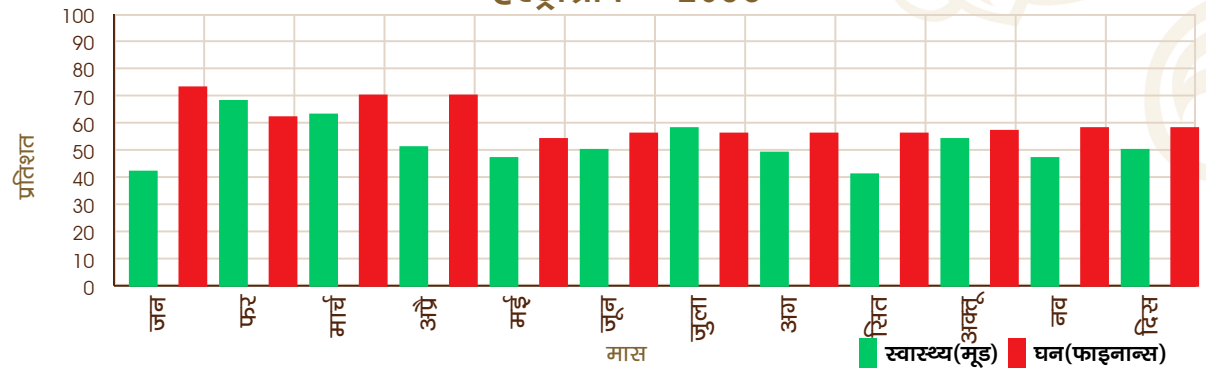

एस्ट्रोग्राफ - 2039

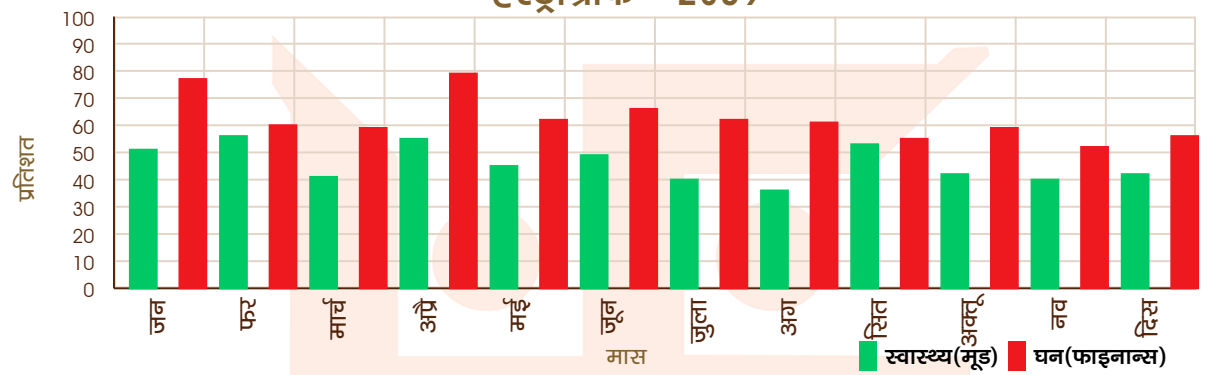

एस्ट्रोग्राफ - 2040

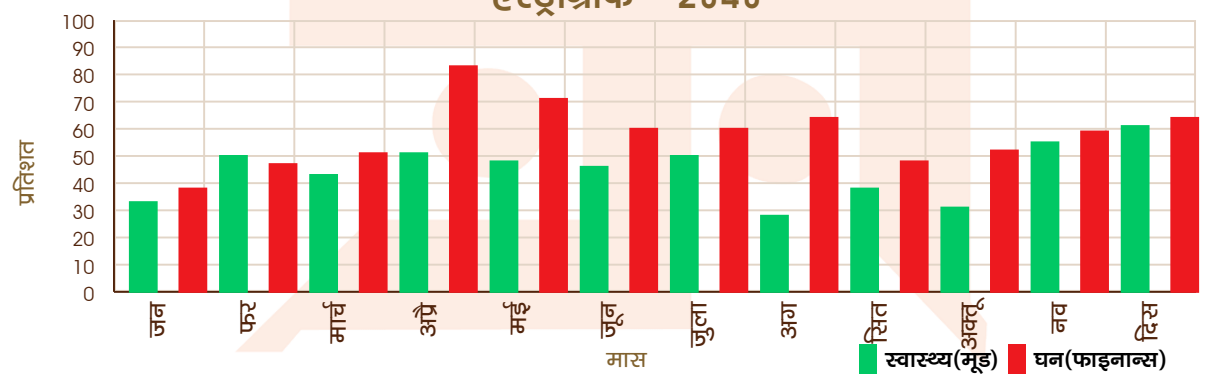

एस्ट्रोग्राफ - 2041

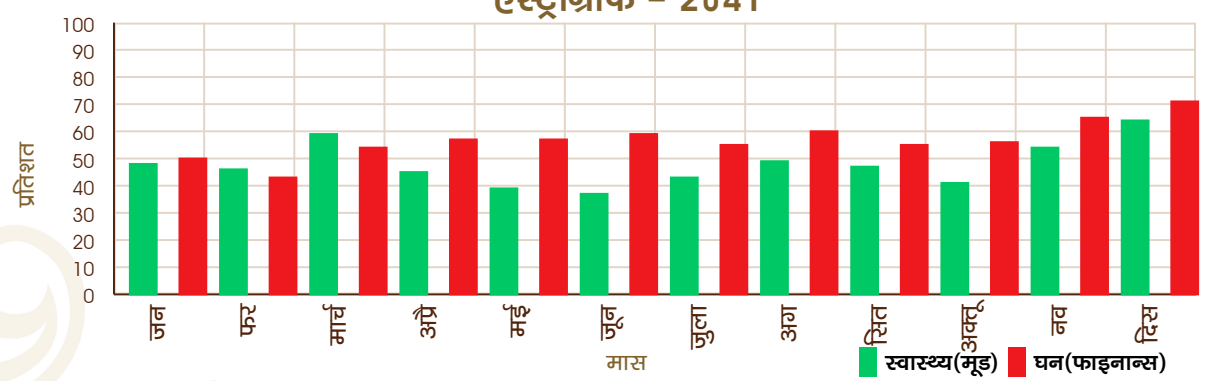

एस्ट्रोग्राफ - 2042

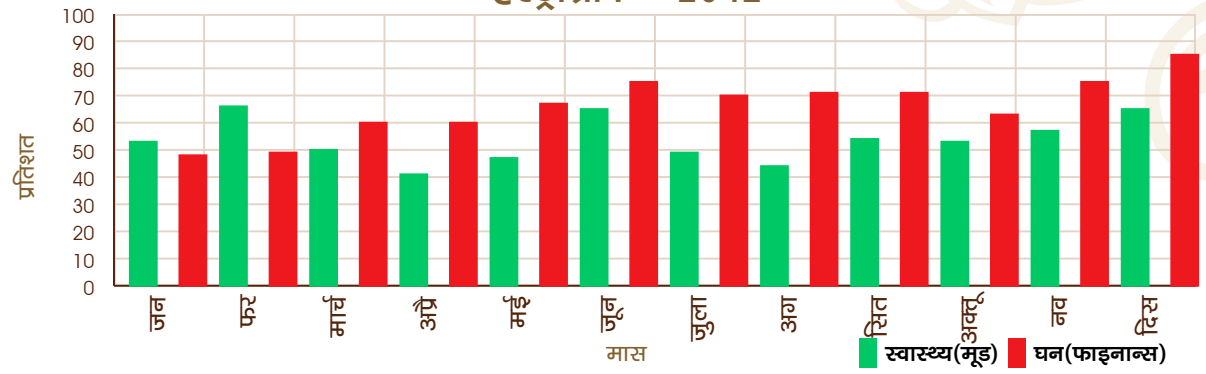

एस्ट्रोग्राफ - 2043

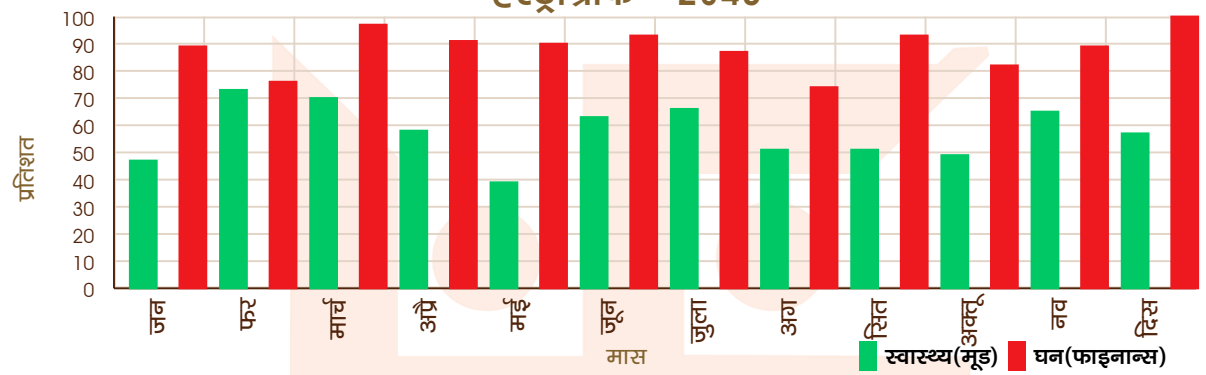

एस्ट्रोग्राफ - 2044

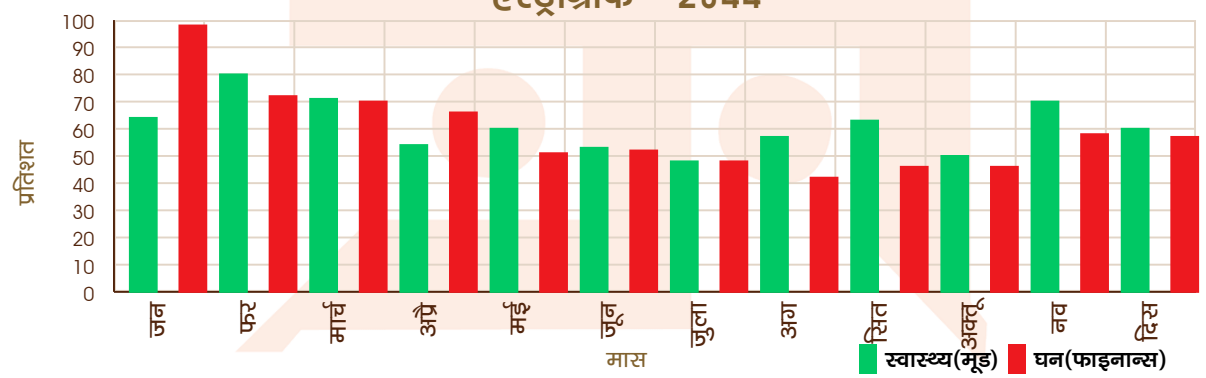

एस्ट्रोग्राफ - 2045

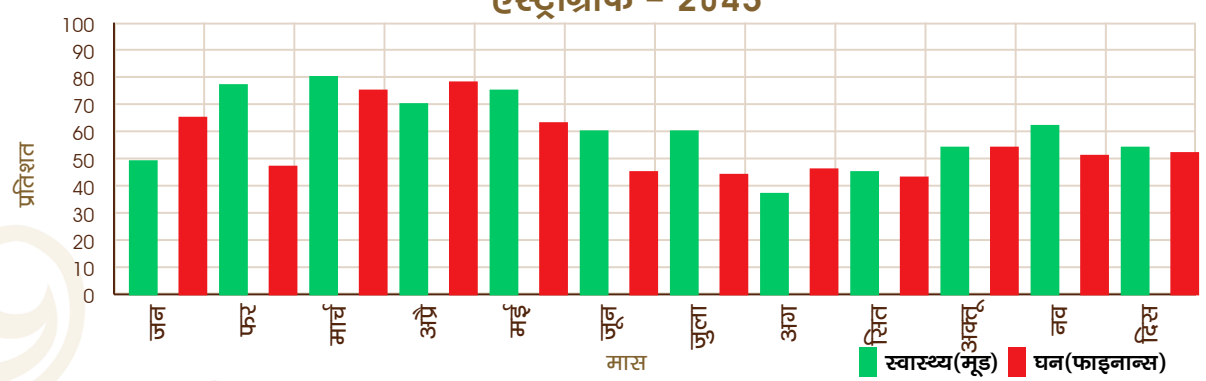

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध,गुरु,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

राजकुलोत्पन्न राजयोग

स्वोच्चत्रिकोणगृहगैर्बलसंयुतैश्च
त्र्याद्यैर्नृपो भवति भूपतिवंशजातः।
।। सारावली ।। अ. 35/श्लोक 2।।

यदि जन्म के समय में तीन या उससे अधिक ग्रह अपने उच्च में, मूलत्रिकोण तथा स्वराशि में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति राजकुल में उत्पन्न होकर राजा होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि,राहु,केतु योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको समाज में श्रेष्ठ मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अपने परिवार या कुल में आप श्रेष्ठ तथा प्रभावशाली माने जाएंगे। अपने पारिवारिक प्रतिष्ठा की वृद्धि करेंगे। आप सफल होंगे।

शकट योग

जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः।।
क्वचित्क्वचिद्भाग्यपरिच्युतः सन् पुनः पुनः सर्वमुपैति भाग्यम्।
लोकेऽप्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिःदुखी।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 14, 17 ।।

यदि पत्रिका में चंद्रमा से 6, 8 या 12 वें स्थान में बृहस्पति हो तो शकट योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप जन्मभर दुःखी रहना, जीवन व्यथित रहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना, सामान्य जीवन व्यतीत करना, भाग्यहीनता तथा पुनः भाग्य प्राप्ति के योग बनेंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाद्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

शौर्ययोग

भावैः सौम्ययुतेक्षिततैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
कीर्तिमद्भिरनुजैरभिष्टुतो लालितो महितविक्रमयुक्तः।
शौर्यजो भवति राम इवासौ राजकार्यनिरतोऽतियशस्वी।।
।। फलदीपिका ।। अ.6/श्लोक 44, 47।।

यदि जन्मपत्रिका में सहजस्थान में शुभ ग्रह हों अथवा तीसरे भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ रही हों तथा तृतीयेश अस्त न हो और अपनी राशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में हो तो शौर्ययोग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक बहुत पराक्रमी होता है और उसके छोटे भाई यशस्वी और भ्रातृयुक्त होता है। इसके भाई लोग इसकी प्रशंसा करते हैं। तात्पर्य यह है कि तृतीय स्थान का भाई, वहन, पराक्रम संबंधी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। ऐसे जातक स्वयं भी अत्यधिक यशस्वी होता है और राज्य कर्म में रत रहता है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के समान पराक्रमी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,मंगल योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्तम राजयोग प्राप्त कर शौर्यशाली व्यक्ति होंगे।

भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो. -16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

युद्ध कुशल एवं कलह प्रवीण योग

धैर्यान्वितो विक्रमराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ यदंशे ।
तदंशनाथे स्वगृहादिवर्गे युद्धे विदग्धः कलहप्रवीणः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-33 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश जिसकी राशि अंश में है, वह ग्रह अपने राश्यादि वर्ग में हो तो जातक धैर्यवान, युद्ध में चतुर और कलह करने में निपुण होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धैर्यधारण करने वाले, युद्ध में चतुर और कलह प्रिय प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-41 ।।

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरु से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांद्यादियुते विशेषात् ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-47 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांद्यंशादि युक्त हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,केतु,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

दीर्घायु भ्रातृ योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभग्रह हो तो दीर्घायु भाई होते हैं।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाई दीर्घायु होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

उच्च प्रासाद (भवन) प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गृहेशे स्वबलान्विते ।
तदीशे बलसंपूर्णे हर्म्यप्राकारमण्डितम् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-59 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भवन में शुभ ग्रह स्थित हो, चतुर्थेश अपने बल से पूर्ण हो तृतीयेश बलिष्ठ हो तो विशाल भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको महल (भवन) सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुन्दर भवन प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गेहेशे स्वबलान्विते ।
लग्नेशे बलसंपूर्णे हर्म्यं प्राकारसंयुतम् ।।
।। जातकपारिजात ।। अ.12/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभ ग्रह हो, चतुर्थेश बलिष्ठ हो और लग्नेश पूर्ण बली हो तो जातक को सुंदर भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु,शनि,शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सुंदर भवन प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,राहु,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-32 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,बुध योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

एक पुत्र योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.- 295 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान में राहु या केतु स्थित हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको एक पुत्र का सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

दन्त रोग योग

वाक्स्थानपे षष्ठगते सराहौ राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा।
दन्तस्य रोगं पतनं च तेषां भुक्तौ तयोर्वा प्रवदन्ति तज्ज्ञाः।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.- 3/श्लो.-113।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वितीयेश राहु के साथ षष्ठ स्थान में हो अथवा राहु जिस राशि में है उसके स्वामी से युक्त हो तो उसकी दशान्तर्दशा में दातों का रोग होता है तथा दन्तहीन हो जाता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जब राहु स्थित भावस्वामी की दशान्तर्दशा आएगी तब दन्त रोग होकर आपको दन्तहीन कर देगा। ऐसा प्रतीत होता है।

तालु रोग योग

तदीश्वरेणापि युतेन्दुपुत्रे सराहुकेतावरिभायुक्ते।
राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा भुक्तौ तदा तालुभवः स रोगः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-3/श्लो.-116।।

यदि जन्मकुंडली में द्वितीयेश से युक्त बुध राहु या केतु सहित षष्ठस्थान में हो अथवा जिस राशि में राहु है उसके स्वामी से युक्त हो तो तालु स्थान में रोग द्वितीयेश की दशा में होती है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु योग की संभावना : 864 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उपर्युक्त ग्रहों की दशा का काल में तालु स्थान में रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

लग्नेशेंगे द्विभार्यो जारो वा ।।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश लग्नस्थ हो तो द्वि भार्या योग होकर जार (व्यभिचारी) रहता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

विकलांग शरीर योग

केन्द्रगौ पुष्पवन्तौ विकलाङ्गः।
।। बृहद्योगरत्नाकर पृ. -5.।।

यदि जन्मकुंडली में केंद्र (1-4-7-10) में सूर्य और चंद्रमा दोनों ग्रह स्थित हो तो जातक विकलांग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अंग से हीन होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि,राहु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध,गुरु,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : शुक्र,राहु,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।